₹ 50/-

समकालीन मैथिली साहित्यक रचनात्मक उपक्रम

अनुप्रास

अनुप्रास

www.anuprasprakashan.com

वर्ष 03 अंक 05-06 जनवरी-दिसम्बर 2022

आलेख

प्रो. डा. रामावतार यादव
प्रो. (डॉ.) केष्कर ठाकुर, डॉ. कैलाश कुमार मिश्र,
विनोद नारायण झा, शंकर मधुपांश

कथा

श्याम दरिहरे, डॉ. वीणा ठाकुर
डॉ. रंगनाथ दिवाकर, रमेश रञ्जन
प्रो.(डॉ.) नवोनाथ झा

कविता

अशोक कुमार मेहता, अयोध्यानाथ चौधरी
अजित आजाद, प्रेम विदेह, देवानन्द मिश्र
सुभाष कुमार कामत

समीक्षा/गजल/लघुकथा/संस्मरण/यात्रा पत्रा/अनुवाद आ बालबाड़ी

अनुप्रास
वर्ष 03 अंक 05-06 जनवरी-दिसम्बर 2022

दूटा कविता

मेनका मल्लिक

मेनका मल्लिक मैथिलीक सुपरिचित कवयित्री, कथाकार, अनुवादक आ रंगकर्मी थिकीह। हिनक लेखनक आरंभ सेहो कवितेसँ भेलनि मुदा पहिल पोथी अयलनि अनुवादक। नेपालीसँ मैथिलीमे एखनि धरि तीन गोट पोथीक अनुवाद कयने छथि, हिनक कविताक संग्रह 'गेल्ह सभ झाड़ैत अछि पांखि' आ कथा-संग्रह 'स्त्री, राति आ प्लेटफॉर्म नम्बर तेरह' खूबे प्रशंसित भेलनि अछि। बेगूसरायसँ प्रकाशित मैथिली पाक्षिक 'दच्छिन मिथिला' आ स्त्री विमर्शक हिन्दी पत्रिका 'औरत'क संपादन कार्यसँ जुड़ल छलीह। एखनि भारतीय भाषाक अनुवाद पत्रिका 'अंतरंग'क प्रबन्ध सम्पादक छथि। टुटैत परिवार आ गाम, प्रकृतिक क्षरणसँ उत्पन्न संकट, वैश्वीकरणसँ प्रभावित जनमासक दर्द, स्त्रीक संघर्ष हिनक रचना सभक मूल स्वर छनि।

सम्पर्क : +91 7856983164

समुद्र

सूर्यास्त भ' रहल अछि
कम भ' रहल अछि
समुद्रक लहरि
घुरि रहल अछि कछेरसँ
आ, सूर्यास्त देखबा लेल आयल
लोक सभ सेहो
घुरि रहल अछि
अपन-अपन घर।

जेना-जेना
घुरि रहल अछि लोक
तेना-तेना घुरि रहल अछि
लहरि सभ सेहो।

समुद्रक लहरि सभकेँ
काल्हि फेर अयबाक छैक
बहुत रास ऊर्जाक सँग
कछेरक लोकसभमे
बाँटबाक छै उत्साह
आ चलैत रहबाक लेल ऊर्जा सेहो।

समुद्रकेँ बुझल छै
रत्न सिरजबाक कला
आ परसबाक कला
मुदा, ई कला सिखबा लेल
भेटैत नहि छै केओ

बड़का-बड़का चट्टान सभसँ
कतेको बेर खाइत रहैत अछि ठोकर
होइत रहैत अछि खूने-खून
दरकि जाइत छैक ओकर हाड़
चिर्रीचोंथ होइत रहैत छैक करेज

मुदा, से कहैत कहाँ अछि ककरो?
तैयो हँसब नहि छोड़ैत अछि लहरि
कहाँ होइत अछि उदास?
कहाँ छोड़ैत अछि
सिरजब-परसब ?

समुद्र लैत नहि अछि किछु
ककरोसँ नहि
अपन विशाल ह्दयमे
सिरजैत रहैत अछि
भाँति-भाँतिक रत्न सभ
परसि दैत अछि
अपन कछेरमे
जरुरतिक हिसाबसँ।

समुद्र हँसैत रहैत अछि
खिलखिलाइत रहैत अछि।

माफ करियह भागिरथ

चिन्हासी छनि हुनकर
भागीरथी, मन्दाकिनी,
सुरसरि, जाह्नवी आदिक नामसँ
गंगाक नामसँ अति लोकप्रिय
सबहक गंगा माइ
गंगे, हर-हर गंगे, हर-हर गंगे
पतित तारिणी गंगा
आम लोकक मुक्तिक बाट
हर-हर गंगे, हर-हर गंगे।
कल्पवास करैत वृद्धा लोकनिक
एकमात्र उसास
हर-हर गंगे, हर-हर गंगे।

गंगा मिथिलेक नहि
पूरे देशक मोक्षदायिनी बनि
भेलीह अवतरित
रहलीह सोलहो संस्कारमे उपस्थित
सोहरसँ समदाओन धरि
संतुष्ट होइत रहलीह अछि
अपन नेना सभक सानिध्यक संग
मातृत्व बंटैत
लोकक दुख-दर्दकेँ घोंटैत
ओहिना प्रसन्न रहैत छथि
जेना माय।

गंगाकेँ कष्ट होइत छनि
अरघलनि नहि कहियो
कारखानाक विषाक्त कचरा
शहरक कतोक नालासँ
हुनक जलधारमे खसैत प्रदूषित पानि
घर वा मंदिरक पूजा पाठक निर्माल्य
अंत्येष्टिक बादक अधजरुआ लहास
जकरा कौआ, कुकुर, नढ़िया प्रभृति
नोचैत रहैत अछि हुनक जलधारमे
कछेरमे सेहो
आ, ओ वेगवती रूपसँ
बनबैत रहलीह अछि
घाट-बाटकेँ चिक्कन-चुनमुन
सहैत रहलीह अछि अपार कष्ट।

गंगा सोचैत छथि
महाकवि विद्यापति धारमे पयर दैत
बुझलनि अपराध, मांगलनि क्षमा
वाह रे भक्त! वाह रे हमर संतान!
मुदा, ओ जमाना रहै
आइ क्षुब्ध छथि गंगा
एखुनक कोनो संतानकेँ नहि छनि
हुनक चिन्ता।

हुनका बुझाइत छनि
आकंठ भासल जाइ छथि ओ
सांस लेबामे भ' रहल छनि दिक्कति
पहिने तँ अधजरुआ लहास अबैत रहनि
आब बिनु मुखाग्निक
बोराक-बोरा लहास
चारू दिससँ कयने छनि
हुनका सकपंज
ओ पड़यबा लेल ताकि रहल छथि बाट।

कत' जयतीह गंगा?
गंगा कत' जयतीह ?
केओ नहि देखाइत अछि
जे करनि हुनक चिन्ता
चितासँ भरल हुनक धारक।

आर्त रूपेँ कहैत छथि शिवसँ
हे महादेव !
बड़ भेल आब
आब बड़ भेल
अबियौ
जटा खोलि क' नीचाँ करियौ
जाहि बाटे
हम नीचा उतरल रही
ओही बाटे चलि जायब अपन स्थान पर।
भागिरथ हमरा माफ करिह'
माफ करिह' भागिरथ।

•

उठह कवि, तोँ दहक ललकारा कने गिरि-शिखर पर पथिक-दल चढ़तैक रे!
—वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'

अनुप्रास

समकालीन मैथिली साहित्यिक रचनात्मक उपक्रम

वर्ष : 03 अंक : 05-06 जनवरी-जुलाइ 2022, ₹ 50/-

संरक्षक

—

परामर्शी

डॉ. तारानन्द वियोगी
धीरेन्द्र प्रेमर्षि
डॉ. कमल मोहन चुन्नू
ऋषि बशिष्ठ

प्रबन्ध सम्पादक

फुलकान्त ठाकुर
7992322719

सम्पादक

दीप नारायण
9430583847

उप सम्पादक

कुमार आलोक
9431014994
शशि कुमार शशि
8521907184

सम्पादकीय कार्यालय

इन्द्र परिसर, लहेरियागंज,
मधुबनी, मिथिला (बिहार) 847 211
मो. +91 88629 77228
www.anuprasprakashan.com
ईमेल : anuprasprakashan@gmail.com
गूगल पे/पे टी एम : 8862977228

• सम्पादकीय सहयोग पूर्णत: अवैतनिक।

• पत्रिकामे व्यक्त विचार लेल सम्पादक उत्तरदायी नहि छथि। अनुप्राससँ सम्बन्धित समस्त न्यायिक मामिलाक फरिछौट मधुबनी न्यायालयक अधीन होएत।

• अनुप्रास लेल स्वामी, प्रकाशक श्रीमती गिरिजा नारायण द्वारा थॉमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड नयी दिल्लीसँ मुद्रित।

एहि अंकमे...

सम्पादकीय
मातृभाषाक लेल नवोन्मेष... 02

आलेख
हेनरी टोमस कोलब्रुककृत Comparative Vocabularyमे *अमरकोष*:क 370 शब्दक मैथिली पर्याय– विहङ्गम दृष्टि : **प्रो. डा. रामावतार यादव** 03
संतकवि योगसाधक लक्ष्मीनाथ गोसाँइक साहित्यमे अद्वैत वेदान्त दर्शन : **प्रो. (डॉ.) केष्कर ठाकुर** 09
पटाक्षेप : एक एथनोग्राफिक उपन्यास आ लिली रे : **डॉ. कैलाश कुमार मिश्र** 12
मिथिलाक सनातन संस्कृति पर संकट : **विनोद नारायण झा** 16
मैथिली भाषा ओ साहित्यक बदलैत स्वरूप : **शंकर मधुपांश** 18

कथा
खाली बोतलक निस्सा : **श्याम दरिहरे** 20
मुखरित स्वर : **डॉ. वीणा ठाकुर** 23
भैया! हम आबि रहल छी : **डॉ. रंगनाथ दिवाकर** 26
पिपही : **रमेश रञ्जन** 30
जखन कमाएब तँ : **प्रो.(डॉ.) नवोनाथ झा** 33

लघुकथा
पोसपूत : **अरुण माया** 35
ज्ञानवर्द्धन कंठक तीनटा लघुकथा 36

कविता
त्रास : **अयोध्यानाथ चौधरी** 11
महामारीक आतंक : **प्रेम विदेह** 25
अप्पन मायक मान मैथिली : **देवानन्द मिश्र** 29
रक्षक बनल भक्षक/बहुरुपिया : **सुभाष कुमार कामत** 45
अशोक कुमार मेहताक किछु प्रेमक पाँति 46
अजित आजादक किछु कविता 47

गजल
राजीव रंजन झाक पाँचटा गजल 48
रमण यादव धीरूक दूटा गजल 51

समीक्षा
'कोढ़ियाघर स्वाहा' दन्तकथापर आधारित बाल-उपन्यास : **मोहन भारद्वाज** 49
चल गुजरनी मिथिलाक गाम : देश-दशाक कविता : **कमलानंद झा** 50

संस्मरण
चिरस्मरणीय सुधीरजी : **डॉ. अरविन्द कुमार सिंह झा** 52

यात्रा पन्ना
दोसर जन्म : **डा. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'** 37

अनुवाद
आद्य मन:संकल्प : **भैरवेश्वर झा** 41

बालबाड़ी

कथा
आन्दोलन : **परमेश्वर कापड़ि** 55

कविता
वन्दना झा / डॉ. अजय कुमार सिंह / शशि कुमार शशि 56

मातृभाषाक लेल नवोन्मेष...

सम्पादकीय

मातृभाषा माने माएक भाषा अर्थात् जाहि भाषाक संस्कारक अनुकरण बच्चा माएक गर्भहिसँ करैत अछि। गांधी जीक कहब छनि— बच्चाक मानसिक विकासक लेल मातृभाषा ओतबे जरूरी अछि जतेक बच्चाक शारीरिक विकासक लेल माएक दूध। कोनो राष्ट्रक क्षमता आ वैभव केर निर्माणमे भाषाक महत्वपूर्ण योगदान होइछ। संस्कार, साहित्य, संस्कृति, सोच, समन्वय, शिक्षा आ सभ्यता आदिक निर्माण, विकास आ ओकर वैशिष्ट्य मातृभाषेटामे सम्भव अछि। सहजता, सरलता, बोधगम्यता आ प्रवाहमयताक दृष्टिसँ मातृभाषाक स्थान शीर्षस्थ अछि।

शिक्षाक लेल भाषाक आवश्यकता होइत अछि। एहि विषयपर बहुतरास अनुसंधानसँ निष्कर्ष बहराएल जे प्रभावपूर्ण बुनियादी शिक्षाक लेल सभसँ उपयुक्त माध्यम बच्चाक मातृभाषे होइत अछि। नैसर्गिक रूपसँ मातृभाषामे बोधगम्यताक स्तर उच्चतम रहैत अछि तँ मातृभाषामे कहल गेल बात बच्चा आसानीसँ समझि जाइत अछि। कोनो तरहक अनुसंधान कार्य मातृभाषामे बहुत नीक जकाँ कएल जा सकैत अछि। एहीटासँ देश आ समाजक सर्वांगीण विकास सम्भव अछि।

विश्वक बहुतरास राष्ट्रक विकास आ ओकर संकल्प शक्तिक मूल्यांकन कएलाक बाद देखल गेल अछि जे मातृभाषाक आन कोनो विकल्प नहि अछि। चीन आ जापान तँ एकर सद्य: उदाहरण अछि— जे मातृभाषाक माध्यमसँ विकास क' आइ वैश्विक शक्तिक रूपमे स्थापित अछि।

वर्तमानमे केन्द्र सरकार दिससँ घोषित नव राष्ट्रीय शिक्षा नीतिक Table of Contents 1.7.21मे कहल गेल अछि— 'छात्र लोकनिक सुविधाक लेल नर्सरीसँ कक्षा पाँचधरि आ जँ संभव हो तँ कक्षा आठधरि मातृभाषामे शिक्षा उपलब्ध कराओल जाए।' हालहिमे 'मैथिली मचान'क एकटा लाइव कार्यक्रममे श्रीमती सबिता झा खान केर प्रश्नक जवाब दैत राष्ट्रीय शिक्षा नीतिक ड्राफ्टिंग कमिटीक सदस्य आ जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालयक प्राध्यापक मजहर आसिफ सेहो एहि बातक उल्लेख कएलनि अछि। ओना ई अलग बात जे एखन धरि बिहारक स्कूली पाठ्यक्रममे एकर अनिवार्यताक प्रति सरकारक रवैया प्रसंशसनीय नहि अछि। विचार करबाक गप्प ई अछि जे मैथिली संविधानक आठम अनुसूचीमे वर्णित भाषा थिक, जकर साहित्यक इतिहास रामायणकालसँ आबि रहल अछि। तकरा बादो आइ जँ मैथिली उपेक्षित अछि तँ ताहि लेल सरकारक संग-संग हम-अहाँ सेहो कम दोषी नहि छी। अपन वार्तालापक भाषा मैथिली रखबासँ लजाइत छी... अपन धिया-पूताक संग मैथिली बाजबासँ परहेज करैत छी। एकर अर्थ अछि जे हमरालोकनि बच्चाकेँ अपन परिवेशसँ दूर आ संस्कृतिसँ अपरिचित बना ओकर मौलिक संस्कारककेँ जड़िसँ काटि देब' चाहैत छी। काल्हि जा क' हमरा लोकनिकेँ ई नहि हुअए जे हमरा बच्चा लग संस्कार नहि अछि। ताहिसँ पहिने अपन धिया-पूताक संग मातृभाषामे संवाद, चिंतन आ विचार-विमर्शकेँ अपन जीवनचर्यामे शामिल करू। हमरालोकनिक हृदयमे अपन मातृभाषाक प्रति पूर्ण समर्पण आ अनुराग-भाव होएबाक चाही। आत्म-गौरव केर वोध होएबाक चाही मातृभाषाक प्रति...

प्रसिद्ध भाषावैज्ञानिक डा. रामावतार यादव कहैत छथि— अपने क्षेत्रमे मैथिलीक स्थिति कमजोर अछि, प्राथमिक शिक्षामे मैथिलीक पढ़ाइ कोना शुरू होएत एहि पर गंभीर चिंतनक संग एकरा दैनन्दिनक व्यवहारमे अनबाक आवश्यकता अछि।

डॉ. रंगनाथ दिवाकर मिथिला-मैथिली आंदोलन : इतिहास आ दशा-दिशा शीर्षक अपन आलेखमे लिखैत छथि जे सार्वजनिक जीवन वा कार्यालयमे आवश्यकतानुसार भले दोसरो भाषामे बात करी, मुदा अपन घरमे, समाजमे वा कोनो मैथिल संग कोनो परिस्थितिमे कतहु मैथिली छोड़ि हिन्दी-अंग्रेजीमे गप्प नहि करी। जे काज करैत छी ओहिमे मैथिलीक सर्वाधिक उपयोग करी। पंचायत अन्तर्गत पत्राचार, सूचनादि काज मुखियाजी/पंचायत सचिव मैथिलीमे करथि तँ एहिमे कोन व्यवधान? विद्यालय वा आन संस्था सेहो अपन पत्र व्यवहार मैथिलीमे क' सकैत अछि।

एतए एहि तथ्यक उल्लेख करब उचित बुझाइत अछि... जे हम मिथिला स्थित बेनीपट्टी, मधुबनीक एकटा विद्यालयमे वर्ष 2014सँ शिक्षकक रूपमे कार्यरत छी। दिसम्बर 2016सँ प्रभारी प्रधानाध्यापकक रूपमे पदभार ग्रहण कएलाहुँ। तहिएसँ विद्यालयक समस्त काज अनिवार्य रूपसँ मैथिलीमे होइत अछि। प्रत्येक दिन विद्यालयक चेतना सत्रमे 'जय-जय भैरवि...' केर प्रार्थनाक संग संविधानक प्रस्तावना सेहो मैथिलीमे वाचन कएल जाइत अछि। वर्तमान परिप्रेक्ष्यमे मिथिला क्षेत्रक समस्त विद्यालयमे प्राय: मैथिले शिक्षक होएताह। जँ सभ शिक्षकगण अपन-अपन विद्यालयमे मातृभाषा मैथिलीकेँ नेह, निष्ठा आ निष्काम सेवाभावसँ लागू करैत छथि तखन प्राथमिक शिक्षामे मैथिलीक पढ़ाइ सुगम भ' जाएत! एहि आशाक संग...

प्रो. डा. रामावतार यादव
काठमाण्डू, नेपाल
ramyadav1942@gmail.com

प्रसिद्ध भाषाविद्, पूर्वांचल विश्वविद्यालय, नेपालक पूर्व उपकुलपति, तीन बेरि प्रज्ञा पुरस्कार विजेता, प्रथम *नेपाल विद्यापति मैथिली अनुसन्धान पुरस्कार, डा. धीरेन्द्र साहित्य-संस्कृति पुरस्कार* विजेता आ कतेकहु ग्रंथक रचयिता प्राध्यापक डा. रामावतार यादवक अनेकहु अनुसंधानात्मक आलेखसभ नेपाल, भारत, अमेरिका, विलायत ओ जर्मनीमे प्रकाशित छैन्हि। ब्रिटिश काउन्सिल छात्रवृत्ति, विलायत; फुलब्राइट छात्रवृत्ति, अमेरिका; ब्रिटिश काउन्सिल भीजिटर, लण्डन; सीनियर फुलब्राइट भिजिटिङ्ग स्कौलर, अमेरिका; अलेक्जाण्डर फौन हुम्बोल्ट पोष्टडौक्टोरल सीनियर रिसर्च फेलोशिप, जर्मनी आदि प्राप्त कएनिहार प्रा. डा. यादव *मिथिला रत्न, मिथिला विभूति, पहिल शब्दकोशकार पंडित भवनाथ मिश्र साहित्य शिखर सम्मान* एवं *चेतना समिति ताम्रपत्र सम्मानसँ* सेहो सम्मानित छथि।

ब्रिटिश लाइब्रेरी, लन्दनक Asia, Pacific and African Collectionsमे अनुरक्षित ओ भारतविद्याशास्त्रज्ञ हेनरी टोमस कोलब्रुककृत *Comparative Vocabulary* शीर्षकक अद्यतन अपठित, अशोधित, एवम् अप्रकाशित हस्तलिखित पाण्डुलिपिमे उपलब्ध अमरसिंह-विरचित संस्कृतक प्रख्यात कोश-ग्रन्थ *अमरकोषः*क 370 शब्दक मैथिली पर्याय - विहङ्गम दृष्टि

1. पृष्ठभूमि

इतिहास साक्षी अछि: प्राचीन संस्कृत/प्राकृत ग्रन्थसबहुमे नव्य भारतीय–आर्यभाषा मैथिलीक लुप्तप्राय, अप्रयुक्त, एवम् दुर्लभ शब्दसभक उपलब्धताद' गहन गवेषणाकए मैथिली भाषाक प्राचीनता ओ भाषावैज्ञानिक ऐतिहासिकताक संस्थापनार्थ/प्रतिपादनार्थ कतेकहु मैथिली–भाषी संस्कृतज्ञ विद्वज्जन अदौ कालसँ भगीरथ प्रयत्न कए रहल छथि। ताहूमे जाहि कालसँ उमेश मिश्र पटना कौलेज, पटनामे 1938 ई.मे आयोजित मैथिली साहित्य परिषदक अपन अध्यक्षीय भाषणमे *वेदान्तसूत्र*क नवम् शताब्दीक *शंकरभाष्य*क वाचस्पति मिश्रकृत *भामती* टीकामे विशुद्ध मैथिलीक आधुनिक अर्थवाला एकगोट अति प्रचलित शब्द *'हड़ि'*[1] उपलब्ध होएबाक सन्दर्भक सगौरव घोषनाद कएलैन्हि (देखू: Subhadra Jhā 1958: 31–32) ताहि दिनसँ एहि विषयमादे अन्वेषण आओरो बेसी घनीभूत भेल–सन बुझना जाइत अछि। एहन प्रबुद्ध अन्वेषकलोकनिमे अति लब्धप्रतिष्ठ ओ अग्रगण्य छथि Subhadra Jha (1939–40), शशिनाथ झा (1984, 2009), तथा योगानन्द झा (1988)। प्रसङ्गवशात्, वरेण्य बङ्गाली विद्वान Sukumar Sen (1944)क उल्लेख सेहो अपरिहार्य बुझना जाइत अछि। परञ्च, ध्यातव्य जे उपर्युक्त विद्वानलोकनि प्राचीन/वैदिक संस्कृत एवम् प्राकृत ग्रन्थसभक लौकिक संस्कृत भाष्य/टीका वा कहू जे टीकाक टीकामे उपलब्ध मैथिली पर्यायी शब्दसभक मात्र चयन–सङ्कलन कएल अछि, मूल ग्रन्थपाठसँ नहि।

प्रस्तुत आलेखक अभीप्सित इष्ट अछि ईष्ट इण्डिया कम्पनीक एकगोट अत्युच्च फिरिङ्गी पदाधिकारी, पाश्चात्य भारतविद्याशास्त्र (Western Indology) विधाक संस्थापक–प्रख्यापक, एवम् प्रकाण्ड संस्कृतज्ञ Henry Thomas Colebrooke (1765–1837[2])क मैथिली शब्दकोशशास्त्रमे प्रदत्त अतुल्य अवदानद' संक्षेपमे चर्च करब। ज्ञातव्य जे कठोर साधना एवम् कष्टसाध्य परिश्रमकए हेनरी कोलब्रुक **प्रथमतः** अमरसिंह–विरचित संस्कृतक प्रख्यात कोश–कला ग्रन्थ *अमरकोषः*क 370 संस्कृत शब्दक **मिथिलाभाषा** (अर्थात् **मैथिली**) पर्यायक सङ्गहि भारतभरिक अन्यान्य कुल 12गोट स्थानीय/देशी भाषाक (Vernacular[3]) पर्यायवाची शब्दसभक तुलनात्मक शब्दसंग्रह *Comparative Vocabulary* (1807)क एकगोट सुगठित, सुपठनीय, एवम् विलक्षण हस्तलिखित पाण्डुलिपि देवनागरी लिपिमे तैयार कएने छलाह। ई भाषासभ अछि: मराठी, गुजराती, कन्नडा, तेलुगु, तामिल, कश्मीरी, पंजाबी, हिन्दी, नेपाली, **मिथिलाभाषा** (अर्थात् **मैथिली**), बङ्गाली, तथा ओड़िया। ज्ञातव्य जे ई पाण्डुलिपि अद्यतन अपठित, अशोधित, एवम् अप्रकाशित रूपेँ British Library, Londonक Asia, Pacific and African Collectionsमे अनुरक्षित अछि ओ संयोगवशात् एहि गौरवशाली कृतिक आधिकारिक डिजिटल प्रतिलिपि हमरालग सेहो अछि एवम् एहिमादे हमर अनुसन्धान गतिमान अछि (देखू: यादव 2020b, Yadav Forthcoming)।

ताही कालखण्डमे, अर्थात् उनैसम शताब्दीक पहिल दशकक उत्तरार्द्धमे, बेङ्गाल प्रसिडेन्सीक आन–आन जिलाक सङ्गहि मैथिली–भाषी क्षेत्र पूर्णिया जिला ओ भागलपुर जिलाक तथ्याङ्कगत सर्वेक्षण ('Statistical Survey') कएनिहार ईष्ट इण्डिया कम्पनीक एकगोट आओरो महती फिरिङ्गी मेडिकल अधिकृत Dr. Francis Buchanan MD (Circa 1810)क मैथिली शब्दकोशशास्त्रमे प्रदत्त पुरोगामी ओ मौलिक अवदानक विस्तृत विवेचनहेतु देखू हमर अनुसन्धानात्मक अवदान (यादव 2020a तथा Yadav ed. 2021)।

आ, तहिना, उनैसम शताब्दीक सातम दशकक उत्तरार्द्धमे प्रकाशित S. W. Fallon (1879)क हिन्दुस्तानी–अङरेजी शब्दकोशमे उपलब्ध **तिरहुती**क (अर्थात् **मैथिली**क) किछु हेराएल परञ्च अति मनोहारी शब्द/लोकोक्तिसभक रोचक वर्णन–विवेचनहेतु द्रष्टव्य अछि गोविन्द झाक (2010) वैदुष्यपूर्ण आलेख।

ओना आब एतबाधरि कहिए दी जे मिथिलाक्षरसँ संस्कृतमे अनुवाद करबामे परम प्रवीण ओ निष्णात संस्कृतज्ञ Henry Thomas Colebrooke पहिल एहन विद्वान छथि जे रोमन लिपिक अङरेजी भाषाक माध्यमैँ "On the Sanscrit and Prācrit languages" शीर्षकक एकगोट अति गम्भीर प्रकृतिक आलेख कलकत्ताक *Asiatick Researches* नामक प्रसिद्ध जर्नलमे प्रकाशित कए **प्रथमतः** मैथिली भाषाक उल्लेख **मैथिल** वा **तिरहुतीय** *'MAIT'HILA,* or *Tirhutīya'* कहि एकर विस्तृत सन्दर्भ पर्यन्त प्रस्तुत कएने छलाह:

MAIT'HILA, or *Tirhutīya,* is the language used in *Mithīlà*, that is, in the *Sircár* of *Tirhūt*, and in some adjoining districts, limited however by the rivers *Cusī* (*Causicī*) and *Gandhac* (*Ghandhacī,*) and by the mountains of *Nepál*; it has great affinity with *Bengálī*; and the character in which it is written differs little from that which is employed throughout Bengal. In *Tirhūt*, too, the learned write *Sanscrit* in the *Tirhutīya* character, and pronounce it after their own inelegant manner. (Colebrooke 1801: 225)

2. मैथिली-भाषी विद्वज्जन-सङ्कलित/प्रकाशित शब्दसूची: संक्षिप्त वर्णन-विश्लेषण

आब ई बात सार्वजनीन भ' गेल अछि जे दशम–एगारहम शताब्दीधरि अबैत–अबैत मैथिली भाषा अपन आद्यभाषा (*Ursprache*) केन्द्रीय मागधी प्राकृत वा कहू जे मागधी अपभ्रंशसँ पूर्णरूपेण विलगभए एकगोट स्वतंत्र भाषिका वा पूर्ण भाषारूपैँ विकसित/प्रष्फुटित भ' चुकल छल। एही भाषिक–ऐतिहासिकता सिद्ध करबाक प्रयोजनहेतु मैथिली भाषाविज्ञानक वरिष्ठ राजनयिक Subhadra Jha (1939–40) बड़ौदासँ प्रकाशित *Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute* नामक प्रसिद्ध जर्नलमे "Maithili equivalents to vernacular words found in Sarvanand's commentary on Amarakośa" शीर्षकक गम्भीर प्रकृतिक अनुसन्धानपरक आलेख प्रकाशित कए वन्द्यघाटीय सर्वानन्द–विरचित *अमरकोषः*क टीका *टीकासर्वस्व*मे (1159 CE) उपलब्ध कुल 300 मैथिली–पर्यायवाची शब्दसभक मनोयोगपूर्वक आकलन, सङ्कलन, ओ तकर विशद् वर्णन–विश्लेषण पर्यन्त प्रस्तुत कएलैन्हि। सुभद्र झाक प्रस्तुति निम्न शीर्षक अन्तर्गत कएल गेल अछि जे निचाँ उद्धृत अछि:

(i) Sarvānanda's Words
(ii) Early and Modern Maithili Equivalents
(iii) Sources of the Maithili Equivalents
(iv) Sanskrit Equivalents
(v) English Translation, and
(vi) Sarvānanda's *Kāṇḍa*, *Varga*, and *Śloka*. (p. 107)

वस्तुतः, पढ़लासँ इहो अभिज्ञात होइत अछि जे सुभद्र झाक आलेख हुनकहुसँ पूर्वक तीनिगोट बंगाली विद्वानसभक, यथा, बसन्त रंजन राय, जोगेश चन्द्र राय, तथा एन. पी. चक्रवर्तीक, बङ्गाली (ओ हिन्दी) भाषिक अवदानसभक संपूरक रूपैँ प्रस्तुत भेल अछि — एहि कारणैँ जे ओलोकनि अमैथिलीभाषी भेलासन्ताँ सम्भवतः सही मैथिली–पर्याय चयन/आकलन कार्यमे अक्षम–सन सिद्ध भेल छल होएताह (देखू Jha 1939–40: 106)।

ततःपर, चारि वर्ष पश्चात् Sukumar Sen (1944)सर्वानन्दक *टीकासर्वस्व*मे उपलब्ध बंगाली भाषाक सङ्गहि आनहु नव्य भारतीय–आर्यभाषासभक कुल 449 शब्दक बृहत सूची पूनासँ प्रकाशित भारत भाषाविज्ञान समाजक (Linguistic Society of India) प्रसिद्ध जर्नल *Indian Linguistics*मे प्रकाशित कएलैन्हि। देवनागरी लिपिक वर्णानुक्रम रूपैँ प्रस्तुत एहि शब्दसूचीमे बंगाली भाषाक अतिरिक्त प्राचीन एवम् मध्ययुगीन अपभ्रंश वा कहू जे मैथिलीक सिद्ध कविलोकनिकृत *चर्यापद,* चण्डेश्वरकृत *गृहस्थ–रत्नाकर,* ज्योतिरीश्वरकृत *वर्ण–रत्नाकर* आदि अपभ्रंश ग्रन्थरत्नसबहुसँ सेहो शब्द–चयन कएल गेल अछि — जाहिसँ नव्य भारतीय–आर्यभाषासभक ऐतिहासिक–तुलनात्मक–भाषावैज्ञानिक अध्ययन–अनुशीलन एवम् वर्णन–विश्लेषण कार्यमे प्रशस्त साहाय्य होएतैक। ध्यातव्य जे, संभवतः प्रजाति–केन्द्रिक भावसँ अभिभूतभए, पूर्वमे उल्लिखित तीनिगोट बंगाली विद्वानक अवदानप्रति प्रचुर आभारोक्ति व्यक्त करैतकाल सुकुमार सेन–सन सुप्रसिद्ध विद्वान सुभद्र झाक अप्रतिम अवदानक कतहु उल्लेखहु नहि कएल — जे हुनकसँ पाँच वर्ष पूर्वहि भारतक एकगोट प्रतिष्ठित जर्नलमे प्रकाशित भए प्रसिद्धि पर्यन्त प्राप्त कए चुकल छल।

सुकुमार सेनक चालीस वर्ष पश्चात्, शशिनाथ झा (1984) "अमरकोशक टीकामे उपलब्ध मैथिली शब्द" शीर्षकक पूर्ण–शोधित ओ अति वैदुष्यपूर्ण आलेख पटनासँ प्रकाशित एकगोट अप्रत्यायक ओ कृशकाय जर्नल *मैथिली अकादमी पत्रिका*मे प्रकाशित कए सर्वानन्दक *टीकासर्वस्व*मे उपलब्ध एवम् सत्तामीमांसात्मक क्षेत्रसबहुसँ (Ontological domains) सम्बद्ध 'वनौषधि', 'सिंहादि', 'मनुष्य', 'क्षत्रिय', 'वैश्य', 'शूद्र', आदि शीर्षक अन्तर्गत अनेकहु मैथिली शब्दसभक सूची अति मनोयोगपूर्वक प्रस्तुत कएलैन्हि। सङ्गहि ओ श्रीकरोपाध्यायकृत *व्याख्यामृत,* अच्युतोपाध्यायकृत *व्याख्याप्रदीप,* चतुर्भुज शर्माकृत *नामलिङ्गानुशासनवृति,* मुकुन्द झाकृत *अमरमैथिलभाषाविवृति,* तथा चन्द्रधारी सिंहकृत *चन्द्रिका टीका* (1957) एवम् *नामलिङ्गानुशासनं नाम अमरकोषः* (2001)सन प्रसिद्ध मैथिल विद्वानलोकनिक बनाओल अमरकोशक बहुमूल्य टीकासभक गहन अध्ययन/गवेषणा सेहो कएलैन्हि। मैथिली भाषाविज्ञान ओ विशेषतः मैथिली शब्दकोशशास्त्रक उद्भव ओ विकासक इतिहासमे एहि आलेखक महत्त्व स्वतःसिद्ध अछि। ओना पढ़लासँ अभिज्ञात होइत अछि जे शशिनाथ झा सुभद्र झाक वैदुष्यपूर्ण कृतिसँ कि त' पूर्णतः अनभिज्ञ छथि आ कि हुनक सन्दर्भ देबाक काजदिसि अनिच्छुक/विमुख। पच्चीस वर्ष पश्चात् उपर्युक्त आलेखक परिमार्जित–परिशोधित पुनर्प्रकाशित प्रारूप शशिनाथ झा (2009)मे पर्यन्त Subhadra Jha (1939–40)क कतहु उल्लेख नहि कएल गेल अछि, तखन Sukumar Sen (1944) तथा योगानन्द झा (1988)क त' कथे कोन।

शशिनाथ झा (1984)क चारि वर्ष पश्चात, एगारहम–बारहम शताव्दीक प्रसिद्ध जैन वैयाकरण हेमचन्द्र सूरि (1089–1172)कृत प्राकृत व्याकरणक परिशिष्ट *देशीनाम–माला*मे उपलब्ध गोट 'शताधिक' मैथिली

शब्दगुच्छ ओ मैथिली ऐतिहासिक–भाषाविज्ञानमे तकर महती योगदानद' योगानन्द झा (1988) "देशीनाममाला आ मैथिली" शीर्षकक एकगोट अति तर्कपूर्ण ओ शोधपूर्ण आलेख पटनासँ प्रकाशित *भाखा* (आब प्रकाशनातीत) नामक जर्नलमे प्रकाशित कएलैन्हि। 'देशी' अर्थात् स्थानीय/प्रादेशिक शब्दसभक एहि गवेषणात्मक अध्ययनसँ मैथिली भाषा–साहित्यक उद्‌भव ओ विकास तथा मैथिली शब्दकोशशास्त्रक उत्पत्ति–विमर्शमे प्रशस्त संबल प्राप्त होएत से विश्वास कएल जा सकैत अछि। ओना योगानन्द झाक (1988) एहि गरिमामय कृतिअहुमे शशिनाथ झाक (1984) सङ्गहि अन्य पूर्ववर्ती अग्रज शोधकर्तालोकनिक, यथा Subhadra Jha (1939–40), Sukumar Sen (1944) आदि विद्वान–शोधकर्ताक, अप्रतिम अवदानक सन्दर्भोल्लेख पर्यन्त सर्वथा अप्राप्य अछि।

एम्हर आबि, राम चैतन्य धीरज (2013: 24–25) वैदिक संस्कृतमे लिखित ऋग्वेदमे नव्य भारतीय–आर्यभाषा मैथिलीक 50गोट शब्दक उपलब्धताक दावा करैत एकगोट अति विवादास्पद/कलहपूर्ण ओ अविश्वसनीय अध्यर्थन प्रस्तुत कएलैन्हि — ओना एहि कृतिमे पर्यन्त अग्रज अध्येता–अनुसंधातालोकनि, यथा, सुभद्र झा, सुकुमार सेन, शशिनाथ झा, ओ योगानन्द झाक अप्रतिम अवदानसभक कोनहु चर्च उपलब्ध नहि अछि। धीरज (2013)मे उदाहरणार्थ प्रस्तुत शब्दमध्य ऋग्वेदक किछु शब्द — जकर रूपिमगत भाष्य 'gloss' ओ अङरेजी अनुवाद व्याख्यासहित निचाँ प्रस्तुत कएल गेल अछि —

काटब <kāṭ=a–ba> cut=LINK–FUT–1/2HON 'I/You (HON) will cut'

काटब <kāṭ=a–ba> cut=LINK–INF/GERUND 'The act of cutting'

सुनू <sun–ū > hear–IMP–2HON +1 'You (HON) listen to me'

स्पष्टत: काल, पुरुष, कक्ष, आदरार्थी आदि व्याकरणिक प्रत्ययसभसँ (affixes) अन्वित आधुनिक मैथिली भाषाक समापिका क्रियारूप–सन प्रतीत होइत अछि। धीरजक अध्यर्थनसँ आभासित होइत अछि जे कालान्तरमे बहुत पाछाँ जन्मल ओ केन्द्रीय मागधी प्राकृत/अपभ्रंशसँ नि:सृत (देखू गंगानन्द सिंह 1950, गोविन्द झा 1968, Tsuyoshi Nara 1979, Tanmoy Bhattacharya 2016) मैथिली भाषाक व्याकरण — जाहि भाषाक नामहुक एकगोट रूप ओ तकर उच्चारण पर्यन्त अद्यतन स्थिर नहि भ' सकल अछि (देखू यादव 2020a, b) — अपन जन्महुसँ पूर्वक प्राचीन वैदिक छान्दस/संस्कृतमे लिखित ऋग्वेदक व्याकरणकेँ गम्भीर रूपेँ प्रभावित कएने अछि। जेना एतबा कहब मात्र प्रशस्त नहि होअए, 6 वर्ष पश्चात, पुन: राम चैतन्य धीरज (2019) बेहिचक इहो कहि गेलाह अछि जे प्राचीन वैदिक संस्कृत आ नव्य भारतीय–आर्यभाषा मैथिलीक जन्मकाल सँगहि अछि। स्पष्टत: एहन भ्रमपूर्ण, अपुष्ट एवम् तथ्यहीन कथनसभक पुष्टिहेतु बहुतराश ऐतिहासिक–तुलनात्मक भाषाविज्ञान एवम् ध्वनि–परिवर्तनगत अध्ययन–अनुसन्धानक अपरिहार्यता अछि — से मैथिली भाषा–साहित्यक अनुसन्धित्सु सुधी पाठकजन बुझताह। अलमति विस्तरेण।

3. कोलब्रुक–सङ्कलित *तुलनात्मक शब्दसङ्ग्रह*: संक्षिप्त विवरण

3. 1. पाण्डुलिपि

जेना कि पूर्वमे कहल गेल छल एहि मूल्यवान सुपठनीय एवम् सुगठित अक्षरसँ हस्तलिखित पाण्डुलिपिमे ईष्ट इण्डिया कम्पनी कालक भारत (आ नेपालक) कुल 12गोट नव्य आर्य ओ द्रविड़ भाषाक पर्यायवाची शब्दसभ समाविष्ट भेल अछि।

कोलब्रुक महोदयक हस्तलिखित पाण्डुलिपिक भाषिक, वर्तनीगत, शब्दगत, ओ शब्दकोशजन्य विशिष्टतासभक वर्णन–विश्लेषणहेतु द्रष्टब्य अछि हमर प्रकाशनोन्मुख आलेख Yadav (***Forthcoming***)। एहि ठाम ई समीचीन होएत जे एहि पाण्डुलिपिमादेँ ब्रिटिश लाइब्रेरी, लन्दनद्वारा हमरा प्रदत्त जानकारी समग्रत: पाठकक अवगतार्थ/सुविधार्थ निचाँ प्रस्तुत कएल जाए।

Number: **8W330478P**
Shelfmark: APAC: Mss IO San 156, 157
Title: *A Polyglot Vocabulary, Prepared for Colebrooke* (Italics added)
Author: H. T. Colebrooke

Vol. 1 महाराष्ट्रभाषा (अर्थात् मराठी), गुज्जरभाषा (अर्थात् गुजराती), कर्नाटकभाषा (अर्थात् कन्नडा), तैलंगभाषा (अर्थात् तेलुगु), द्रबिड़भाषा (अर्थात् तामिल)।

Vol.2 काश्मीरभाषा (अर्थात् कश्मीरी),पंजाबअन्तरगतजालंधर-भाषा (अर्थात् पंजाबी), मध्यदेशभाषा (अर्थात् हिन्दी), पर्वतीभाषा (अर्थात् नेपाली), **मिथिलाभाषा** अर्थात् **मैथिली**), बंगलाभाषा (अर्थात् बंगाली/बांगला), उत्कलभाषा (अर्थात् उड़िया)।

Vol. 1 ओ Vol. 2क संकेत Pencilसँ देल गेल अछि ।

स्पष्टत: Vol. 2क शब्दसङ्ग्रहमे कुल ७गोट नव्य आर्य भाषाकसङ्ग मैथिली भाषासेहो समाविष्ट भेल अछि।

अर्थात् Vol. 1 ओ Vol. 2मे मिलाकए समग्रमे आर्य भाषा परिवारक भाषाक संख्या कुल 9 तथा द्रबिड़ भाषा परिवारक भाषाक संख्या कुल 3 – 9 + 3 = 12गोट भाषा समाविष्ट अछि।

ध्यातब्य जे अन्यत्र कोलब्रुकसँ सम्बद्ध सन्दर्भ–साहित्यमे एहि हस्तलिखित पाण्डुलिपिक शीर्षक *Comparative Vocabulary* रूपेँ प्रस्तुत भेल अछि।

द्रष्टब्य इहो जे एहि शब्दसङ्ग्रहक मूल प्रविष्टिक भाषा **संस्कृत** ध्वनितात्विक रूपेँ शुद्ध आ कहु जे अतिशुद्ध देवनागरी वर्तनीमे अन्तिम वर्ण (grapheme)मे हलन्तक प्रयोग कए **संस्कृत्** रूपेँ प्रस्तुत भेल अछि।

एहि गौरवशाली कृतिक आरम्भ *श्रीगणेशायनम:* सँ होइत अछि। तहिना एकर अन्त *इतिअसुरतृतीयकाण्डअव्ययवर्ग:* सँ होइत अछि।

3. 2. मूल प्रविष्टि

ई बात आब सर्वविदित अछि जे एहि *शब्दसङ्ग्रहक* मूल प्रविष्टि *अमरकोषः*मे समाविष्ट संस्कृत भाषाक चयनित शब्दसभ अछि। एकर पहिल मूल प्रविष्टि अछि *स्वर्गः* जकर मैथिली पर्याय *स्वर्ग* देल गेल अछि आ एकर अन्तिम मूल प्रविष्टि अछि *अर्वाक्* जकर मैथिली पर्याय अछि *दक्षिण दिशा १ दक्षिरा दिशा २।*

3. 3. वर्तनी

मूल प्रश्न अछि: केहन अछि त' मैथिली शब्दसंग्रहक एहि पुरानतम हस्तलिखित पाण्डुलिपिमे प्रयुक्त देवनागरी वर्तनीक स्वरूप? प्रथमहि दृष्टिमे ई निष्कर्ष नि:सृत होइत अछि जे उनैसम शताब्दीक प्रथम दशकहिमे मैथिलीकहेतु प्रयुक्त देवनागरी वर्तनी वर्तमानमे तथाकथित मानक मैथिलीमे प्रयुक्त वर्तनी सदृश परिपक्व, सुदृढ, ओ अद्वयार्थक रूपेँ स्थिर भ' गेल छल। जे परम संतोषक गप।

3. 4. मैथिली पर्यायवाची शब्दसभ

मैथिली पर्याय सङ्कलन विधिमादे पूर्ण सूचना अज्ञात अछि: अर्थात् ई विषय अद्यतन अनुसन्धानक विषय अछि। विज्ञप्तत: कोलब्रुक स्वयम् निष्णात संस्कृतज्ञ छलाह, तिरहुता लिपिसँ संस्कृतक नागरी लिपिमे लिप्यन्तरण कार्यमे परम प्रवीण छलाह, परञ्च ओ तिरहुत सरकारक कोन गामक कोन संस्कृतज्ञ मैथिली–भाषी पण्डित/ब्राह्मणकेँ अनुसन्धान सहायक/शब्द सङ्कलक रूपेँ नियुक्तकए *अमरकोषः*क मूल प्रविष्टिसभक मैथिली पर्यायवाची शब्दसूची निर्माण करबाक अभिभारा देलैन्हि से सूचना अद्यतन अज्ञात अछि।

ओना ईष्ट इण्डिया कम्पनी कालक पूर्वक हमर अनुसन्धान कार्य ई इंगित करैत अछि जे फ्रान्सिस ब्युकाननहिजकाँ हेनरी टोमस कोलब्रुक सेहो James Mackintosh (1806)क 'Plan of a Comparative Vocabulary' शीर्षकक कार्यपत्रकेँ प्रतिमान मानि तकरहि साहाय्यसँ ई गरिमामय शब्दसूची तैयार कएने होएताह: उक्त कार्यपत्रक विस्तृत विवरणहेतु देखू Yadav (ed. 2021: 36)।

निचाँ पाठकगणक अवलोकनार्थ/अवगतार्थ कोलब्रुकक गौरवशाली कृतिक हस्तलिखित पाण्डुलिपिसँ प्रतिदर्श स्वरूप आदि ओ अन्तिम पृष्ठक स्क्यान–प्रतिकृति प्रस्तुत अछि।

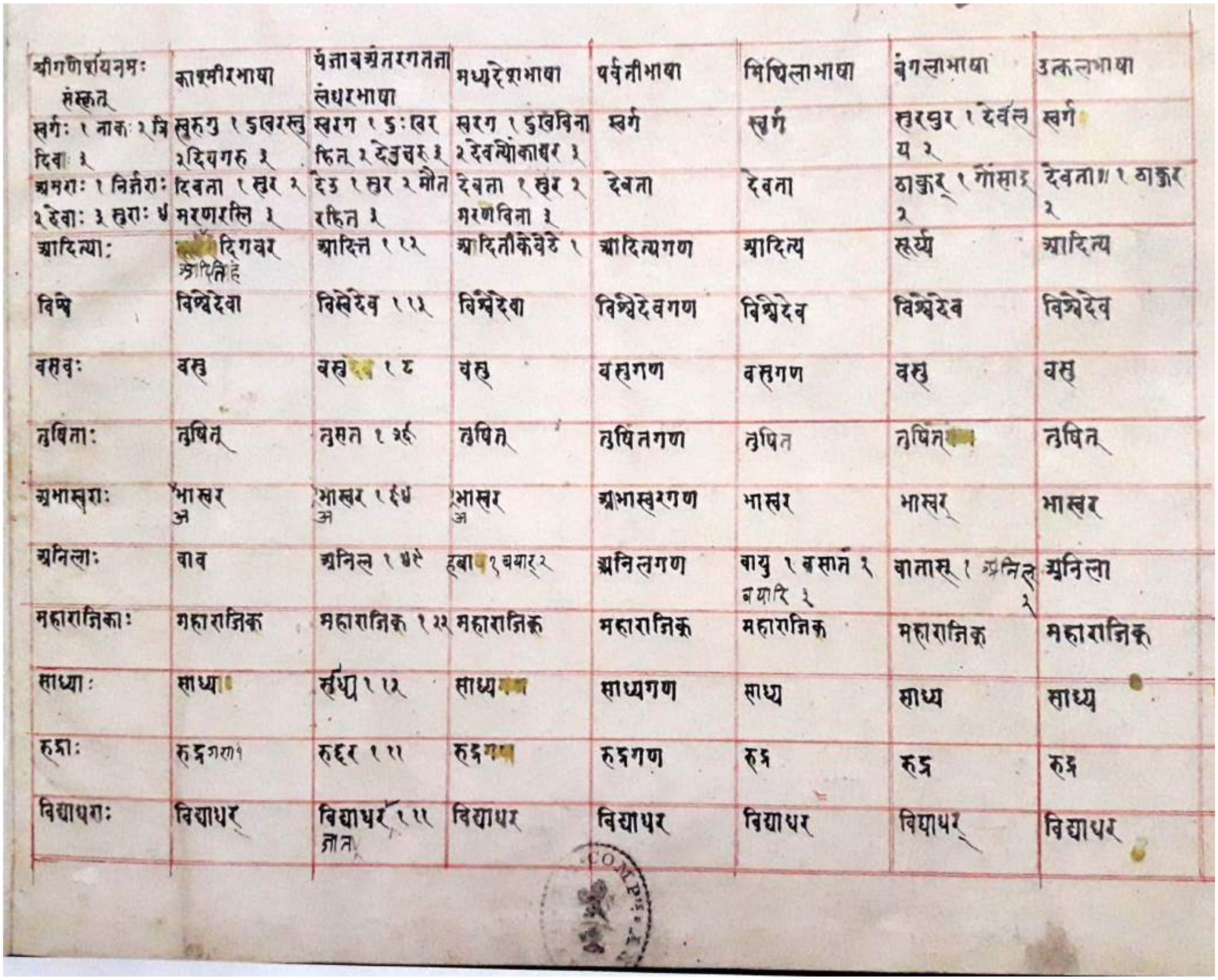

श्रीगणेशायनमः संस्कृत	काश्मीरभाषा	पंजाबअंतरगतजलंधरभाषा	मध्यदेशभाषा	पर्वतीभाषा	मिथिलाभाषा	बंगलाभाषा	उत्कलभाषा
स्वर्गः १ नाकः २ त्रिदिवः ३	सुरगु १ डुखरस्तु २ दियगरु ३	सरग १ डुःखरहित २ देउघरु ३	सरग १ दुखबिना २ देवन्हींकाघर ३	स्वर्ग	स्वर्ग	सुरपुर १ देवलय २	स्वर्ग
अमराः १ निर्जराः २ देवाः ३ सुराः ४	देवता १ सुर २ मरणरहित ३	देउ १ सुर २ मौतरहित ३	देवता १ सुर २ मरणबिना ३	देवता	देवता	ठाकुर १ गोसाइ २	देवता १ ठाकुर २
आदित्याः	[illegible] दिगवर अदितिहे	आदित्त १ १२	आदितीकेबेटे १	आदित्यगण	आदित्य	सूर्य्य	आदित्य
विश्वे	विश्वेदेवा	विस्वेदेव १ १३	विश्वेदेवा	विश्वेदेवगण	विश्वेदेव	विश्वेदेव	विश्वेदेव
वसवः	वसु	वसु १ ८	वसु	वसुगण	वसुगण	वसु	वसु
तुषिताः	तुषित्	तुसत १ ३६	तुषित्	तुषितगण	तुषित	तुषित	तुषित्
आभास्वराः	आभास्वर	आभास्वर १ ६४	आभास्वर	आभास्वरगण	भास्वर	भास्वर्	भास्वर
अनिलाः	वाव	अनिल १ ४९	हवा १ बयार् २	अनिलगण	वायु १ बसात २ बयारि ३	बातास् १ अनिल २	अनिला
महाराजिकाः	महाराजिक	महाराजिक १ २२	महाराजिक	महाराजिक	महाराजिक	महाराजिक	महाराजिक
साध्याः	साध्या	साध्य १ १२	साध्य	साध्यगण	साध्य	साध्य	साध्य
रुद्राः	रुद्रगण १	रुद्दर १ ११	रुद्र	रुद्रगण	रुद्र	रुद्र	रुद्र
विद्याधराः	विद्याधर्	विद्याधर १ ११ ज्ञात	विद्याधर	विद्याधर	विद्याधर	विद्याधर्	विद्याधर

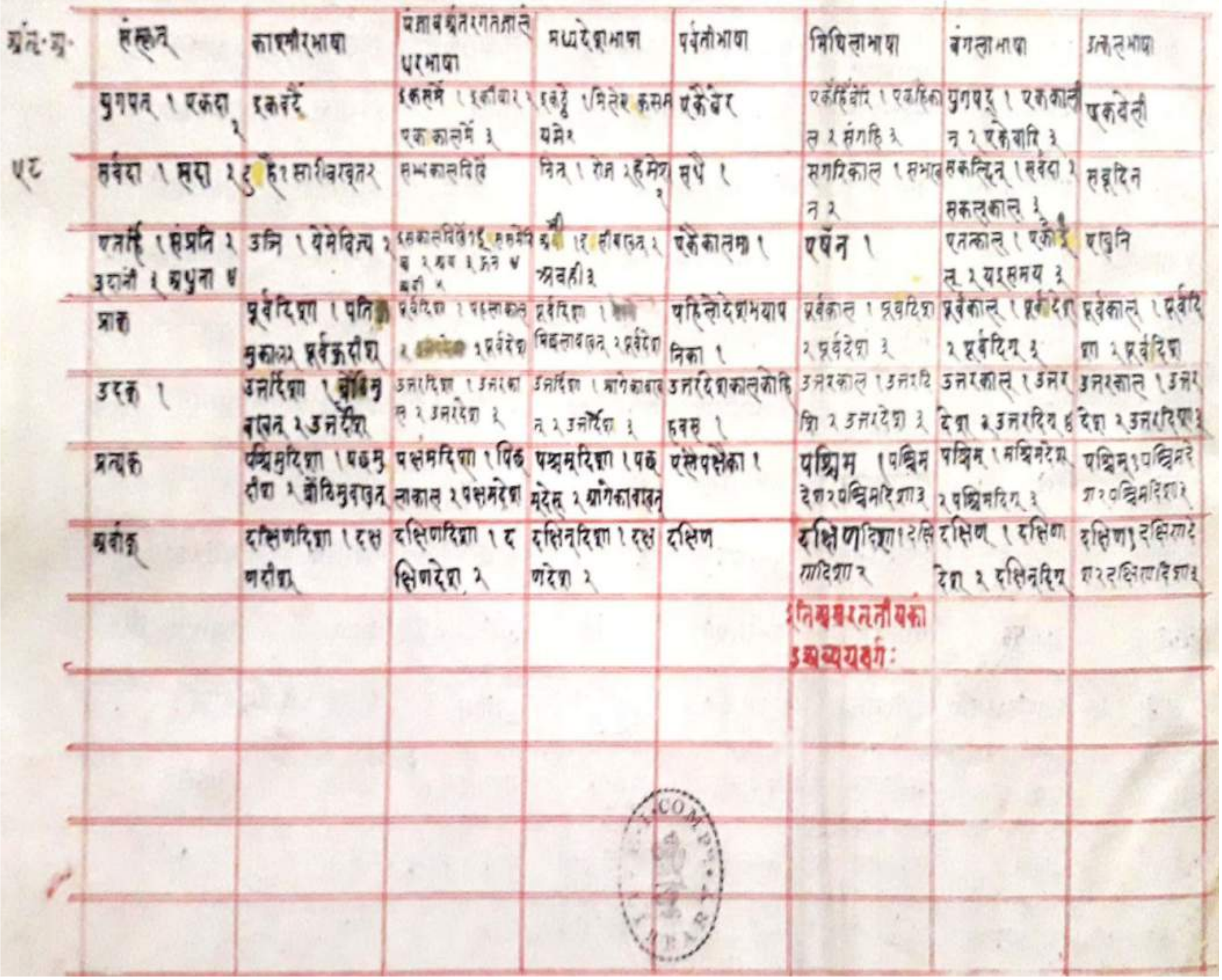

ग्रं.सं.	संस्कृत	काश्मीरभाषा	पंजाब...परभाषा	मध्यदेशभाषा	पर्वतीभाषा	मिथिलाभाषा	बंगलाभाषा	उत्कलभाषा
	युगपत् १ एकदा २	इकवटें	इकलमे १ इकीवार २ एककालमें ३	इकट्ठे १ मिलेर [illegible] २	एकैबेर	एकहिबेरि १ एकहिकाल २ संगहि ३	युगपद् १ एककालीन २ एकेबारि ३	एकदेली
५८	सर्वदा १ सदा २	[illegible]	सभकालविषै	नित १ रोज २ हमेश ३	सधै १	सगरिकाल १ सभाल न २	सकल्दिन १ सर्वदा २ सकलकाल ३	सब्बूदिन
	एतर्हि १ संप्रति २ इदानीं ३ अधुना ४	उन्नि १ [illegible] २	[illegible]	[illegible]	एकैकालमा १	एखन १	एतत्काल १ [illegible] २ यइसमय ३	एवेनि
	प्राक्	पूर्वदिशा १ [illegible] पूर्वकदीश	पूर्वदिशा १ [illegible] २ [illegible] ३ पूर्वदेश	पूर्वदिशा १ [illegible] २ पूर्वदेश	पहिलोदेशभयाप निका १	पूर्वकाल १ पूर्वदिशा २ पूर्वदेश ३	पूर्वकाल १ पूर्वदेश २ पूर्वदिग ३	पूर्वकाल १ पूर्वदिशा २ पूर्वदिश
	उदक् १	उत्तरदिशा १ [illegible] २ उत्तरदेश	उत्तरदिशा १ उत्तरका ल २ उत्तरदेश ३	उत्तरदिशा १ [illegible] २ उत्तरदेश ३	उत्तरदिशाकालकोदि हवस १	उत्तरकाल १ उत्तरदिशा २ उत्तरदेश ३	उत्तरकाल १ उत्तरदेश २ उत्तरदिग ३	उत्तरकाल १ उत्तरदेश २ उत्तरदिशा ३
	प्रत्यक्	पश्चिमदिशा १ [illegible] २ [illegible]	पश्चिमदिशा १ [illegible] २ पश्चिमदेश	पश्चिमदिशा १ [illegible] २ [illegible]	[illegible] १	पश्चिम १ पश्चिमदेश २ पश्चिमदिशा ३	पश्चिम १ पश्चिमदेश २ पश्चिमदिग ३	पश्चिम १ पश्चिमदेश २ पश्चिमदिशा ३
	अवाक्	दक्षिणदिशा १ [illegible]	दक्षिणदिशा १ दक्षिणदेश २	दक्षिनदिशा १ [illegible] २	दक्षिण	दक्षिणदिशा १ दक्षिणदिशा २	दक्षिण १ दक्षिणदेश २ दक्षिनदिग	दक्षिण १ दक्षिणदेश २ दक्षिणदिशा ३
						इति श्रीभारततीयका अव्ययवर्गः		

4. उपसंहार

निष्कर्षवत् ई कहल जा सकैत अछि जे विश्वभरिमे अद्यतन उपलब्ध प्रकाशित/अप्रकाशित अभिलेखीय सामग्रीसभक सूक्ष्म गवेषणासँ ई ज्ञान नि:सृत होइत अछि जे **वरेण्य शब्द-सन्धानी हे्नरी टोमस कोलब्रुक मैथिली शब्दकोशशास्त्रक पहिल अध्येता/अनुसन्धाता एवम् पहिल शब्दसंग्रहकर्ता छलाह**। कनेक आओरो बेकछाक' कही त' ई जे मैथिलीभाषी संस्कृतज्ञ भवनाथ मिश्रहुक (1914) बहुमूल्य अवदानसँ 107 वर्ष पूर्वहि एवम् महान फिरिङ्गीद्वय A. F. R. Hoernle & George A. Grierson (1885, 1889)क मैथिलीक पहिल प्रकाशित (परञ्च अपूर्ण) शब्दकोशसँ 80 वर्ष पूर्वहि, आ तहिना अपन समकालीन फिरिङ्गी Francis Buchanan (1810)क मौलिक कृतिअहुसँ 3 वर्ष पूर्वहि 1807 ई.मे निर्मित अपन पुरोगामी एवम् अप्रतिम अवदानकहेतु **हे्नरी टोमस कोलब्रुक एहि तुलनात्मक शब्दसंग्रहकलेल मैथिली शब्दकोश-निर्माण जगतमे सदैव स्मरणीय रहताह, स्तुत्य रहताह, अतुल्य रहताह, अमर रहताह।**

अन्त्यटिप्पणी

1. haṛī 'a circular wooden box used for stopping a madman or a thief from running away'
Subhadra Jhā (1958: 32)
हड़ि (प्रा.) — [सं.] 'काठक बेड़ी' गोविन्द झा (1993: 360)
हड़ी 'काठक बेड़ी जे बताह/अपराधीक पाएरमे लगाओल जाइत अछि। wooden log-fetter' Govind Jha (1999: 666)
हड़ि — सं., 'काठक बनल बेड़ी' मतिनाथ मिश्र 'मतंग' (1998: 437)

2. Henry Thomas Colebrookeक बृहत् जीवनवृत्तद' देखू Rocher and Rocher (2012)।

3. ईष्ट इण्डिया कम्पनी कालक प्रसिद्ध भारतविद्याशास्त्रज्ञलोकनिक (Orientalists/Indologists) देववाणी संस्कृतप्रतिक तीव्र व्यामोहक अछैतो कतेकहु नवतुरक परञ्च तीक्ष्ण बुद्धिवाला शोधार्थीलोकनि ("Young Turks") भारतक देशी/स्थानीय भाषासभक (Vernacular languages) अध्ययन-अनुशीलन ओ वर्णन-विश्लेषण कार्यमे दत्तचित्तभए प्रवृत्त भेल

छलाह — जकरा Sheldon Pollock “Vernacular Millennium” कहि अपन मूल्यवान कृतिमे वर्णित–विश्लेषित कएने छथि। एहि “Vernacular Millennium” विषयक विशद् विवेचनहेतु देखू Sheldon Pollock (2006)।

पुष्पिका

हे्नरी टोमस कोलब्रुककृत हस्तलिखित पाण्डुलिपिक आधिकारिक फोटोकौपी ब्रिटिश लाइब्रेरी, लन्दनक सौजन्यसँ लेखककेँ तखन प्राप्त भेलैन्हि जखन ओ ई. 2018मे आलेक्साण्डर–फौन–हुम्बोल्ट फाउण्डेशनक सीनियर भिजिटिङ्ग रिसर्च फेलो रूपेँ क्रिष्टिआन–आलब्रेख्ट्स विश्वविद्यालय, कील, जर्मनीमे फ्रान्सिस ब्युकाननक *तुलनात्मक शब्दसङ्ग्रहक* हस्तलिखित पाण्डुलिपि एवम् मैथिली शब्दकोशशास्त्रक उत्पत्ति, विकास, ओ इतिहासमादेँ अनुसन्धानरत छलाह। आलेक्साण्डर–फौन–हुम्बोल्ट फाउण्डेशन, बौन, जर्मनी; ब्रिटिश लाइब्रेरी, लन्दन; ओ जर्मनीक कील विश्वविद्यालयक भाषाविज्ञान–ध्वनिविज्ञान विभागक विभागाध्यक्ष प्रो. डा. जौन माइकेल पीटर्सनप्रति लेखक हार्दिक आभार व्यक्त करैत छथि ।

सन्दर्भ सूची

झा, गोविन्द 1968 *मैथिलीक उद्गम ओ विकास*, कलकत्ता: मैथिली प्रकाशन समिति।

झा, गोविन्द (संयोजक/सम्पादक 1993) *मैथिली शब्दकोश द्वितीय खण्ड*, पटना: मैथिली अकादमी।

झा, गोविन्द 2010 “अन्हारमें ठाढ़ एकटा यूरोपिअन मैथिली भक्त,” **मे:** गोविन्द झा (2010) *अनुचिन्तन*, पटना: नवारम्भ, 7–11।

झा, मुकुन्द 1924 *अमरमैथिलभाषाविवृति [अमरसिंहकृत नामलिङ्गानुशासनं नाम अमरकोषःक* मैथिली टीका/अनुवाद], मधुबनी: मैथिली यन्त्रालय।

झा, योगानन्द 1988 “ *देशीनाममाला* आ मैथिली,” *भाखा* 2: 10, 48–52।

झा, शशिनाथ 1984 “ *अमरकोशक* टीकामे उपलब्ध मैथिली शब्द,” *मैथिली अकादमी पत्रिका* 4: 3, 66–84।

झा, शशिनाथ 2009 *निबन्धमन्दारमञ्जरी*, दीप–मधुबनी: तीर्थनाथ पुस्तकालय।

झा, शशिनाथ (सम्पादक 2010) *अमर सिंह–विरचितः अमरकोषः [मैथिलीविवृति सहित हिन्दीशब्दार्थयुक्त शब्दसूचि संवलितः, विवृतिकारः वैयाकरण पं. मुकुन्द झा]*, दरभङ्गा: मिथिला संस्कृत शोधसंस्थानम्।

धीरज, राम चैतन्य 2013 *भाषा विचार आ मैथिलीक प्राचीन साहित्य*, पटना: शेखर प्रकाशन।

धीरज, राम चैतन्य 2019 *मैथिली भाषाक वैचारिक अस्मिता*, पटना: नवारम्भ।

मिश्र, भव नाथ 1914 *मिथिला शब्द प्रकाशः*, काशी: श्री भूपालचन्द्र वन्दोपाध्याय।

मिश्र 'मतंग', मतिनाथ 1998 *मैथिली शब्द कल्पद्रुम*, जमुथरि–झंझारपुर–मधुबनी: मिश्र बन्धु प्रकाशन।

यादव, रामावतार 2019 “मैथिली भाषा–साहित्यक संरक्षण: चुनौती आ निदान,” *आँजुर* २५: ८८, ३—११।

यादव, रामावतार 2020a “कखनहु आठ–आठटा कहारवाला पालकीमे बैसल त' कखनहु हौदा–कसल हाथीपर सवार एकगोट फिरिङ्गी मैथिली–सेवक: संक्षिप्त जीवनवृत्त,” *अनुप्रास* 2: 2, 3–6।

यादव, रामावतार 2020b “हेनरी टोमस कोलब्रुककृत *Comparative Vocabulary* (1807 CE) शीर्षकक हस्तलिखित पाण्डुलिपिमे उपलब्ध *अमरकोषः*क 370 शब्दक मैथिली पर्याय: संक्षिप्त परिचय,” *घर–बाहर* 20: 73, 14–15।

यादव, रामावतार 2021 “मैथिलीक वर्तमान अवस्थितिद' संक्षिप्त टिप्पणी,” *अनुप्रास* 2: 3–4, 3–8।

सिंह, गंगानन्द 1950 “अखिल भारतीय प्राच्यविद्यासम्मेलनक चौदहम अधिवेशनक मैथिली शाखाक अध्यक्ष कुमार गंगानन्द सिंहक अभिभाषण 1950,” **मे:** देवेन्द्र झा (सङ्कलयिता, 1983) *भाषणत्रयी*, पटना: मैथिली अकादमी, पृष्ठ 37–73।

सिंह, चन्द्रधारी 1957 *अमरसिंहचन्द्रिका*, मधुबनी: राँटी ड्योढ़ी।

सिंह, चन्द्रधारी 2001 *नामलिङ्गानुशासनं नाम अमरकोषः [श्री चन्द्रधारीसिंहशर्मणा विरचितया चन्द्रिकाख्यव्याख्यया समलंकृतः]*, आमुखलेखक: काशीनाथ मिश्रः, कामेश्वरनगरम्, दरभङ्गा: कामेश्वर सिंह दरभङ्गा संस्कृत विश्वविद्यालयः।

Bhattacharya, Tanmoy 2016 “Inner/outer politeness in Central Magadhan Prākrit languages: Agree as labeling,” *Linguistic Analysis* 40: 3–4, 297–336.

Buchanan, Francis C. 1810 *Comparative Vocabularies*, MSS EUR G 16, India Office Records, British Library, London.

Colebrooke, Henry Thomas 1801 “On the Sanscrit and Prācrit languages,” *Asiatick Researches*: 7, 199–231.

Colebrooke, Henry Thomas 1807 *APAC MSS IO/San.* 156–157, Asian, Pacific and African Collections, British Library, London.

Cowell, Edward Byles (ed. 1873) *Miscellaneous Essays By H. T. Colebrooke, Vol. II*, London: Truebner & Co., 57 and 59, Ludgate Hill.

Fallon, S. W. 1879 A *New Hindustani–English Dictionary with Illustrations from Hindustani Literature and Folklore*, Banaras & London: E. J. Lazarus & Trübner. [Second Edition 1884 Bharati Bhandar, Allahabad]

Hoernle, A. F. R. & George A. Grierson 1885 *A Comparative Dictionary of the Bihārī Language, Part 1,* Calcutta: Bengal Secretariat Press.

Hoernle, A. F. R. & George A. Grierson 1889 *A Comparative Dictionary of the Bihārī Language, Part 2,* Calcutta: Bengal Secretariat Press.

Jha, Govind (ed. 1999) *Kalyani Kosh A Maithili–English Dictionary,* Darbhanga: Maharajadhiraja Kameshwar Singh Kalyani Foundation, Kameshwar Singh Bihar Heritage Series–4.

Jha, Subhadra 1939–40 “Maithili equivalents to vernacular words found in Sarvanand’s commentary on *Amarakośa,” Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute* 21: 1–2, 106–114.

Jhā, Subhadra 1958 *The Formation of the Maithilī Language,* London: Luzac.

Mackintosh, James 1806 *Plan of a Comparative Vocabulary of Indian Languaes,* Bombay: Damotharjee.

Nara, Tsuyoshi 1979 *Avahaṭṭha and Comparative Vocabulary of New Indo–Aryan Languages,* Tokyo: Institute for the Study of Languages and Cultures of Asia and Africa.

Pollock, Sheldon 2006 *The Language of the Gods in the World of Men: Sanskrit, Culture, and Power in Premodern India,* Berkeley, Los Angeles: University of California Press.

Rocher, Rosane and Ludo Rocher 2012 *The Making of Western Indology: Henry Thomas Colebrooke and the East India Company,* London and New York: Routledge.

Sen, Sukumar 1944 “New Indo–Aryan vocables in Sarvānanda’s *Ṭīkāsarvasva,” Indian Linguistics:* 8: 4, 184–209. [Reprint Edition, 1965, pp. 554–572]

Yadav, Ramawatar (ed. 2021) *Historiography of Maithili Lexicography & Francis Buchanan’s Comparative Vocabularies: Facsimile Edition of the British Library, London Manuscript,* Darbhanga (Bihar, India): Maharajadhiraja Kameshwar Singh Kalyani Foundation, Kameshwar Singh Bihar Heritage Series–23.

Yadav, Ramawatar **Forthcoming** “Toward a historiography of lexicogenesis in Maithili – With special reference to the hitherto unstudied and unpublished hand–written British Library, London MS. of Henry Thomas Colebrooke’s *Comparative Vocabulary* (1807 CE).”

संतकवि योगसाधक लक्ष्मीनाथ गोसाँइक साहित्यमे अद्वैत वेदान्त दर्शन

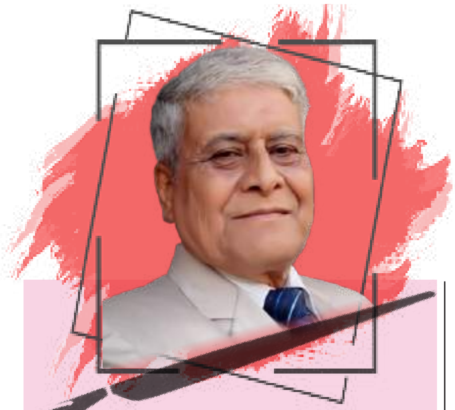

प्रो. (डॉ.) केष्कर ठाकुर
भागलपुर (बिहार)
सम्पर्क : +91 9430457204

मैथिलीक प्रसिद्ध साहित्यकार, समालोचक, समीक्षक आ अनुवादक मैथिली विभागक वरीय प्राध्यापक एवं पूर्व संकायाध्यक्ष, मानविकी, समाज विज्ञान एवं विधि, तिलकामाँझी भागलपुर, विश्वविद्यालय, भागलपुर। *मिथिला विभूति सम्मान, मैथिल प्रवाहिका, छत्तीसगढ़; मिथिला रत्न सम्मान*, मैथिल समाज, बनारस; *मैथिली शिक्षा रत्न सम्मान*, साहित्य अकादेमी एवं मैथिल प्रवाहिका, छत्तीसगढ़ आदि पुरस्कार/सम्मानसँ सम्मानित प्रो. (डॉ.) केष्कर ठाकुरक *सम्बोधित स्वर*(समीक्षात्मक निबन्ध-संकलन), *आरण्यक*(साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित बांग्लासँ मैथिली अनुवाद), राष्ट्रीय स्तरक पचाससँ अधिक आलेख प्रकाशित छनि। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भूमिजा (नेपाल) आ विश्वा (अमेरिका)मे सेहो आलेख प्रकाशित छनि। *नवनाट्य पुष्प* (एकांकी-संग्रह), *मिथिलांचलक दलित समाजमे प्रचलित लोकगाथा एवं शोधार्थी* (शोध पत्रिका)क सम्पादन कएने छथि। संगहि इन्टर एवं एम. ए., नालन्दा खुला विश्वविद्यालय, पटना एवं बिहार टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन, पटनासँ प्रारम्भिक शिक्षाक पोथीमे प्रो. (डॉ.) केष्कर ठाकुर पाठ लेखन कएने छथि।

मिथिला अन्तर जगतक सिद्धि आ उपलब्धिक देश रहल अछि। जहाँ धरि एकर भगौलिक स्थिति, जलवायु, प्राकृतिक सामग्री आदिक प्रश्न अछि, एहि संदर्भ हम कहब जे एहि देशक जनसामान्यक लेल चिंतन-मनन, दार्शनिक निदिध्यासनक लेल प्रचुर सुअवसर देने अछि। एहि ठामक धरती लोकक सुख-सम्पन्नता आ समस्याहीनता लोकक प्रति आकर्षण जगाओलक अछि आ एहि ठाम की भारतीय मनीषी लोकनि, की मिथिलाक मनीषी लोकनि आत्मा-परमात्मा, सुख-दु:ख, पाप-पुण्य, जन्म-मृत्यु, पुनर्जन्म, स्वर्ग-नर्क, दैवीशक्ति आ आध्यात्मिक तत्त्वपर प्रयाप्त रूपसँ विचार कयलनि अछि। मिथिला दर्शनादेशक सततसँ क्षितिज ओ आकाशक एक अप्रतीम सूर्य रहल अछि। एहि ठाम पूर्वसँ, गौतम, कणाद, कपिल, पतंजलि, जैमिनीक विचार-दर्शन, न्याय-वैशेषिक, सांख्य-योग एवं मीमांसा वेदांतक सूत्र परिवर्त्तनक रूपमे अनेक विशिष्ट अन्य दर्शन रश्मि मानव जीवनकेँ साश्वत सत्यक उद्घाटन करैत रहल अछि। एहि चिरंतन साश्वत सत्यक उद्घाटन करयबाला परंपरामे परमार्थ-दर्शन जकरा हम स्वतंत्र दर्शनक रूपमे कहब। एहन मनीषीक परंपरामे स्मरण करयबाला विशिष्ट व्यक्तित्व रखैत छथि, से छथि- संतकवि योगसाधन लक्ष्मीनाथ गोसाँइ जी महाराज छथि।

ई एक विलक्षण विशिष्टताक कारणेँ मिथिला की, भारत की, विश्वक मानस-पटलपर अपन रचना-वैशिष्ट्यक कारणेँ महत्त्वपूर्ण स्थान रखने छथि। ई पूज्यनीय छथि। हिनक ध्यान वर्त्तमान मानवपर ओतेक नहि अछि, जतेक भावी मानवपर। हिनक दर्शनमे हम पबैत छी जे- हम की छी? एहिसँ अधिक हमरा की होयबाक चाही? एहिपर विचार कयलनि अछि। मनुष्य एखन धरिक सृष्टिक सर्वोत्कृष्ट सृजन होयबाक अछैत एखन धरि पूर्ण नहि भेल अछि। ओ पूर्णताक क्रममे अछि आ धीरे-धीरे एक दिन ओहि मानवसँ अतिमानव धरि, मोनसँ अतिमोन धरिक यात्रा तय करबाक अछि। गोसाँइ जी महाराज एहि लक्ष्य धरि पहुँचबाक पद्धति आ क्रियापर विस्तारसँ विचार कयलनि अछि जे मानवताक प्रति हुनक गहन संवेदनाक सूचक अछि। हुनक दृष्टिमे जगत गुरू होयब मिथिलाक नियति अछि। मिथिला--भारतसँ ओकरा विश्वक मानस पटलपर भावी धर्मक भावना प्रसारित करय पड़तैक जाहिसँ सनातन धर्म जे सब धर्म, दर्शन आ विज्ञानमे सामंजस्य स्थापित कए मानव जातिकेँ एक मोन, एक प्राण, एक आत्मा बना सकय।

संत शिरोमणि श्री गोसाँइ जी परमहंस महाराजक जन्म सहरसा जिलाक सुपौलक परसरमा ग्राममे 1793 ई.क भेल। कुजिलवार दिगौन मूलक कात्यायन गोत्रीय मैथिल ब्राह्मण पंडित बच्चा झाक पुत्र। बाल्यावस्थामे श्रीकृष्ण सदृश गौचारण सेवामे आसक्ति छलाह। कालक क्रमे उपनयन संस्कारक पश्चात स्वाध्यायमे लागल रहलाह। पूर्वजसँ प्राप्त तंत्र शास्त्र हिनक मनोबल बढ़ओलक आओर तंत्र साधनामे निपुण भए अपना जीवनमे वापस प्रवेश कयलनि। हिनक गंभीर भाव-भूमि देखि अभिभावक चिंतित भए निराकरणक उपायमे हिनक विवाह कराएब सोचलनि मुदा लक्ष्मीनाथ तँ गोसाँइ छलाह। भावी साधना ओ मानवीय दर्शनकेँ स्मरण कए सांसारिक प्रलापकेँ बाधा बुझैत अपन माता-पिताक आज्ञाक उलंघन कए धर्म विरोधी जानि मानसिक द्वन्दमे किछु दिन बितओलनि। अंतमे धर्मक विजय भेल। ई विवाह कयल मुदा ई जन्मजात संत छलाह तँ मानव जीवनमे नैतिक प्रगतिक अनिवार्यताकेँ जनैत, मन ओ आत्माकेँ स्थिर करैत, जन कल्याणक हेतु, योग्य गुरूक खोजमे अग्रसर भेलाह। सौभाग्यसँ गोरखनाथ आ लाम्बानाथ गुरूक गुण ग्रहण कए योग ओ भागवत कीर्तनक माध्यमे जन-कल्याण हेतु अग्रसर भेलाह।

मानव जीवन मूल्य भावनासँ नियंत्रित, व्यवस्थित ओ निर्देशित होइत रहैत अछि। प्रत्येक युगमे प्रत्येक क्षेत्रकेँ सुधि संत शिरोमणि जन लोकनि मूल्यकेँ लए कए चिंतित रहलाह अछि। तँ अनेक महापुरूष अपना जीवनक अधिकांश समय मूल्य संबंधित चिंतन-दर्शनमे लगओने छथि। एहि मूल्य-संबंधित चिंतन क्रममे काफी वाद-विवादक अवसर आयल। शिथिलता आ उदासीनता प्रत्येक समय देखबामे आयल। कखनो कालकेँ सहमति आ संयोगक क्रम सेहो स्थिर भेल मुदा एहि शताब्दीमे मूल्यकेँ लए कए जाहि प्रकारक चिंतन-मंथन चलि रहल अछि जे प्राचीन मूल्यक विघटन आ नवीन मूल्यक स्थापना बहुत तीव्र गतिसँ आगू बढ़ि रहल अछि। एहि मूल्य चिंतनकेँ परिपूरित करबाक लेल संत साहित्यमे भक्तिपरक रचनाक खोज होमय लागल।

मैथिली साहित्यमे भक्ति साहित्यक बीज कहियासँ आ कोन परिस्थितिमे अंकुरित भेल, से विवादास्पद अछि मुदा एतेक तँ निश्चित रूपसँ कहल जा सकैत अछि जे मुसलमानक आगमन, इस्लाम धर्मक प्रचारसँ पूर्व एहि प्रकारक साहित्य हमर देशक जनजीवनक एक महत्त्वपूर्ण अंग बनि गेल छल। मिथिलामे 7म-8म शताब्दीमे बौद्ध-धर्मक धर्मचक्र परिवर्त्तनक बाद ऐतिहासिक क्रममे भक्तिक पराकाष्ठा एक टा दोसर आन्दोलन छल जे सम्पूर्ण मिथिलाकेँ प्रभावित कयलक। एहि ठाम हम ई कहब जे भक्ति साहित्य कोनो भाषा-विशेषक साहित्य नहि भए सम्पूर्ण भारतीय साहित्यक एक सामान्य विशेषता अछि जे प्रत्येक भाषाकेँ काव्य साहित्यक गौरव शिखर कहबैत अछि। साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आदि सभ दृष्टिसँ भक्ति-काव्य-साहित्य मध्यकालीन साहित्यक ओ आधुनिक कालक प्रथम चरणक संयोगमे ई एक महत्त्वपूर्ण तत्व अछि। एहि समय अद्वैत वेदान्त दर्शनक संस्थापक महापुरूष शंकरचार्यक

मत अद्वितीय, आलौलिक हिन्दुवादी विचारधाराकेँ अत्यधिक प्रभावित कयलक। हिनक असाधारण विद्वता, दार्शनिक सूक्ष्म दृष्टि, रहस्यवादी विचार, तर्क-पटुता, आध्यात्मिकता, कवित्व-शक्ति ततेक बेसी प्रभावशाली भेल जे सम्पूर्ण विश्वमे व्याप्त भए गेल। हिनका भगवान शंकरक अवतार मानल गेल छनि। हिनक दर्शन हुनक प्रतिपाद्य ब्रह्मक समान पूर्ण अछि। शंकरचार्यक स्थान विश्वक सर्वश्रेष्ट, सर्वोच्य दार्शनिकमे अछि। वेदान्तक सभ सम्प्रदाय उपनिषद्पर आधारित अछि तथा उपनिषदकेँ मूल प्रस्थान मानैत छथि मुदा शंकराचार्यक अद्वैत वेदान्त दर्शन वस्तुत: औपनिषद् दर्शन अछि। ई एहि बातकेँ पुष्ट कयलनि अछि जे अद्वैते उपनिषद्क दर्शन अछि आ अद्वैत द्वारा श्रुतिक एकवाक्यता सिद्ध कयल जा सकैत अछि। अद्वैत दर्शन उपनिषद्सँ प्रारम्भ भेल अछि एवं शंकराचार्यसँ पूर्व अनेक विद्वानक नामक उल्लेख प्राप्त होइत अछि मुदा हुनका लोकनिक वृति उपलब्ध नहि अछि जे अद्वैतकेँ प्रतिपादित करैत छलाह। गौड़पादाचार्यक कारिका अद्वैत वेदान्त दर्शनक पहिल ग्रंथ अछि। गौड़पादाचार्यक कारिकामे औपनिषद अद्वैत दर्शनक व्यवस्थित रूप देखबामे आबैत अछि जकर उत्कर्ष हमरा लोकनिकेँ शंकराचार्यक दर्शनमे प्राप्त होइत अछि।

शंकराचार्य अपन अद्वैत वेदान्त दर्शनकेँ स्थापित ओ सुप्रतिष्ठित करबाक लेल किछु तथ्यकेँ सम्पादित कए प्रस्तुत कयलनि। एहिमे ओ कहलनि जे वैशेषिक न्याय सांख्य वैदिक दर्शन नहि अछि मुदा वेदमे आस्था रखैत अछि। शंकराचार्य सांख्यकेँ वेदान्तक मुख्य प्रतिद्वन्दी कहलनि आ अद्वैतवादी होयबाक कारणेँ ओकरा श्रुति प्रतिकुल सिद्ध कयलनि।

पूर्व मीमांसा कृत वेदकेँ कार्यपरक व्याख्याक खण्डन कयलनि। पूर्व मीमांसाक अनुसार वेद क्रियार्थक अछि। वेदक ओ भाग जे स्पष्ट रूपसँ कर्मपरक नहि अछि। ई परोक्ष रूपसँ कर्म आ अंग बनि कए सार्थक भए सकैत अछि। शंकराचार्य एहि व्याख्याकेँ पलटि देलनि आ सिद्ध कयलनि वेदक लक्ष्य परम तत्वकेँ प्रकाशित करब अछि।

शंकराचार्य ब्रह्म-परिणामवादक स्थान पर ब्रह्मविवर्त्तवादक आ भेदाभेदवादक स्थानपर अद्वैत वादक प्रतिपादन कयलनि। आगू स्पष्ट कयलनि जे शेष वा निर्गुण ब्रह्म 'शून्य' नहि अछि। जे शून्यक अर्थ सर्वनिषेद हो। नेति-नेति ब्रह्म विषयक निर्वचनक निषेध करैत अछि, स्वयं ब्रह्मक नहि। निर्विशेष ब्रह्मवाद निरपेक्ष अद्वैत-अद्वैतवाद अछि। ओ स्पष्ट कयने छथि जे माया आ विद्या ब्रह्मक अनिवर्चनीय शक्तिक रूपमे उपनिषदक सिद्धान्त अछि। उपनिषदमे तात्विक भेद द्वैत, परिणाम आदिक कोनो स्थान नहि अछि।

एहि प्रकारेँ अद्वैत दर्शन सिद्धांतक प्रक्रियाक प्रत्येक क्षेत्रमे काफी उथल-पुथल भेल। एहि अवधिमे भारत पर मुसलमानी आक्रमण, इस्लामक प्रचारप्र-प्रसार, 1857मे व्यापक सिपाही विद्रोह, 1860मे भारतक व्यवस्था ब्रिटिश हाथ चलि गेल जाहि कारणेँ सामाजिक आ धार्मिक क्षेत्रमे अस्थिरता आयल जाहिसँ मिथिलामे नवीन प्रकारक चिंतन-मनन ओ दर्शनपर लोक-रूचिकेँ ध्यानमे रखैत तात्कालीन कवि लोकनि, कर्मकाण्डी, न्याय-दार्शनिक लोकनि शृंगार पदसँ अधिक भक्तिपदमे रचना करय लगलाह जे एक प्रकारेँ रहस्यवादी अद्वैतवादी प्रतीक रचना देखबामे आबैत अछि। एहि ठाम महाकवि विद्यापतिसँ लए महाराज महेश्वर सिंहक समय धरि शृंगार-भक्ति काव्य सभक रचना भेल। 18म शताब्दीक मध्य भक्तिपक दक जे परंपरा चलल ताहिमे रहस्यवादी काव्य रचनाक प्रवृत्ति देखल गेल। एहन पद भजनावली, कविता तात्कालीन साधु-संत लोकनि साम्प्रदायिक दृष्टिकोणसँ विष्णुक उपासक छलाह। तिनकर रचना भक्तिक विभिन्न प्रवाह जेना- योग दर्शन, रहस्यवाद, वैष्णव भाव, राम भक्ति, कृष्ण भक्ति, शैव-भाव आदिक अतिरिक्त अद्वैत वेदान्त दर्शनक पद सेहो लिखल जाय लागल। एहि परंपरामे प्रमुख रूपसँ साहेब रामदास, वेणीदत्त, करणश्याम, आदिनाथ, महात्मा रोहिणी दत्त गोसाँइ, महात्मा तारादत्त गोसाँइ, महात्मा रामरूपदास, महात्मा लक्ष्मीनाथ गोसाँइ, महात्मा किंकरदास, महात्मा हकरू गोसाँइ, महात्मा परमानंददास, महात्मा रघुवर गोसाँइ एवं महात्मा कमलादत्त गोसाँइ। एहिमे अधिकांश भक्त कवि उच्च जातिक छलाह जे सांसारिक भोग-विलासकेँ छोड़ि अपन समस्त जीवन अपन इष्टदेवक अराधरामे समर्पित कए सामान्य साधु-मंडलीमे लीन भए गेल रहथि। एहि कालमे कवि भक्तिमूलक जे परंपरा चलल ताहिमे वर्णाश्रम आ द्विजेत्तर धरि आत्मा-परमात्माक प्रकाश फैलल आ मिथिलामे बौद्ध धर्मक व्यापक प्रभावक कारणेँ वर्ण व्यवस्थाकेँ काफी धक्का पहुँचल। एहि कारणेँ पूर्वसँ चलि आबि रहल अद्वैत वादक प्रभावकेँ आओर आगू बढ़यबाक उद्देश्यसँ सम्पूर्ण भारत वर्षमे सिद्धपीठक स्थापना कए प्रबल जोरशोरसँ अद्वैत दर्शन सिद्धान्तक प्रतिपादन कयलनि। एहन परिस्थितमे मिथिलाक साधु-संतमे प्रमुख परमहंस लक्ष्मीनाथ गोसाँइ जी महाराजकेँ शक्ति प्राप्त भेलनि आ ई शास्त्रीय आधारपर सनातन धर्मकेँ दृढ़ करबाक हेतु अद्वैत दर्शनक माध्यमसँ अनेक प्रकारक गीत कविता लिख हिन्दुत्वकेँ शक्ति प्रदान कयलनि।

परमहंस जी महाराज पूर्वसँ चलि आबि रहल अद्वैत वेदान्तक सार श्लोक जे एहि प्रकारेँ व्यक्त अछि– ''ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापर:।'' अर्थात् ब्रह्म सत्य अछि, जगत मिथ्या अछि आ जीव ब्रह्म अछि। ई दुनू फराक नहि अछि। ब्रह्म आ आत्मा एक अछि। दुनू परम तत्वक पर्याय अछि आ जगत प्रपंच अछि। जीव मायकृत अछि। परमहंसजी महाराज अपन एहि ब्रह्म सत्यकेँ स्थापित करैत कहने छथि–

ब्रह्म सत्य अछि

दुलहा एहन करब नै गे माई, देखतहिं गौरी मम प्राण गमाई।।

....

नर शिर काटि, गाँथि डर डारे, विषधर साँपक हार लगाई।
कटिपर वासुकि, अहि फुफकारत ता पर कारिख राख चढ़ाई।
दौकर गहुमन साँप बलिया काली विषधर पग, लपटाई।
''लक्ष्मीपति'' कह सुनिय मनाइनि, ई दुलहा गौरी सुखदाई॥

एहि ठाम परमहंस जी महाराज मैनाकेँ कहैत छथि जे हिनक जे रूप देखि रहल छी से सत्य नहि अछि। ई सब मिथ्या अछि। तँ हे मैना! ई ब्रह्म स्वरूप जे दुलहा अहाँ लग ठाढ़ छथि से परम सत्य ब्रह्म छथि जिनका संगे गौरी सुख करती।

जगत-मिथ्या अछि

माया, मिथ्या, अविद्या, अध्यान आदि सब समानार्थक शब्द मानल जाइत अछि। अद्वैत वेदान्तमे एहि शब्दक विशद विवेचन प्राप्त होइत अछि। एक दिस सत्य स्वरूपकेँ नुका क' असत्य रूपमे प्रगट करयबाला माया-मिथ्या सम्पूर्ण संसारक जननी शक्ति अछि। एहि प्रकारेँ एकर वर्णनमे विरोध अछि, मुदा अद्वैत दर्शन सिद्धांतक अनुसार मायावादी लोकनि ब्रह्मवादकेँ बुझबाक लेल मायावादक सिद्धांतकेँ मानैत छथि। तहिना अद्वैत सिद्धांतमे मायाकेँ संसारक उत्पादिता शक्ति मानल गेल अछि। परमहंस जी महाराज एहि संदर्भ माया मिथ्याकेँ प्रकट करैत लिखने छथि जे—

''रे नादाने मनुआँ करि करार क्यों भूला।
गर्भवास को बात याद कर, जब तू रहे अण्ड तूला।।
जनमत हो भूख धरे मातु तन, दूध पेट भरि पीया।
खाइ, खेलाइ, गमाइ, बलापन पराधीन है जीया।।
शिशुपन बीते, युवापन आये, तिये माया लपटाया।
काम, क्रोध, मद, लोभ, छाय तन, दूरि दूराये दाया।।
थाके बल आये बूढ़ापन, काँपन लगे काया।
कफ, पित, बात गात भरि छाये, कटु भाखत सुत जाया।।
मरे, भजे नहि कबहुँ राम पद, यद्यपि बहु दुख पाया।
'लक्ष्मीपति' झूठे नर पामर, यमकेँ हाथ बिकाया।।

दोसर पद—

है तो स्वामी सबके भीतर, लेकिन लखा न होता है।
जैसे रंग रहे मेहदी में, वैसे मालूम होता है।
जैसे मकड़ा जाल जगत में, तरह तरहकेँ छाता है।
धरिकेँ देखो उसके भीतर तनिक सूत नहि मिलता है।
इन्द्रजालकेँ अजब तमासा, पुतली ताल लगाता है।

है कोइ भीतर दुसरा बैठा, नाना नाच नचाता है।
जैसे बुंद-बुंद जल से होता, जलही माह समाता है।
'लक्ष्मीपति' झूठी यह माया, ब्रह्म सत्य मन भाता है।

जीव ब्रह्म अछि, ब्रह्मसँ भिन्न नहि—

एहि संदर्भ परमहंस जी महाराज जीवकेँ ब्रह्म स्वरूप मानैत एहि रूपक एक निर्गुणवादी भजनमे जीव आ ब्रह्मकेँ आधारभूत संरचनासँ परिपूर्ण माननलि अछि। निम्न भजनमे हिनक कथन अछि जे जीव आ शरीरसँ जुड़ल एहि सांसारिक तत्वक ज्ञानकेँ प्राप्त कए लैत अछि आ ओ जीवन मुक्त भए जाइत अछि।

हंस काक गति गाबि सुनाई। माया तरूवर एक लगाई।।
मूल तीन फल दोइ सुहाइ। ताहिमे रस चारहु मधुराई।।
पाँच रिद्धि षद आतम ताई। छाल सात अठ डारि लोभाई।।
नव द्वारे, दस पत्र बनाई। पक्षी दूइ रहय तई जाइ।।
तरू अनादि संसार कहाई। वेद पुराण सन्त जन गाइ।।
'लक्ष्मीपति' बूझय सुख पाई। जीवतहिँ से ईश्वर भए जाइ।।

ब्रह्मक अनंत स्वरूप अछि—

अद्वैत दर्शनक अन्तर्गत ब्रह्मक अनंत स्वरूप परमहंस जी महाराज कहलनि अछि। एहि भजनावलीमे ब्रह्मक विभिन्न स्वरूपकेँ कोन प्रकारेँ भक्ति भावसँ निवेदित कयलनि अछि से स्पष्ट रूपसँ देखबा आबैत अछि। ब्रह्मक निर्विकार रूपकेँ स्पष्टत: चित्रण कयलनि अछि—

देखो रे एक योगिया हमरा, अद्भूद रूप बनावन हारा।
कबहूँ ब्रह्म लोकमे ब्रह्मा, चारि खानि अजावन हारा।।
धनुष, कमंडल, हंस-सवारी, चतुरान श्रुति चारि उचारा।
कबहूँ विष्णु बैकुण्ठ विराजित, तीन भुवन पालन हारा।।
धरणी भार उतारण कारण, गरूड़ासन लियो दश अवतारा।
कैलाशी सन्यासी कबहुँ, नग्न, भग्न तन बैल सबारा।
डमरू पिणाक धरे कर शंकर, पंच वदन करू जगत संहारा।।
कबहूँ फकीर फिरत है वन-वन, निशि-वासर करि भांग आहारा।
'लक्ष्मीपति' योगिया बिनु दोसर, को करिहें भव सागर पारा।।

अद्वैत दार्शनिक दृष्टिएँ योगसाधक संत लक्ष्मीनाथ गोसाँइ अद्वैत वेदान्तक समर्थक छलाह। अद्वैतक अनुसार परम सत्य एक अछि। एहिमे कोनो प्रकारक द्वैत-भाव नहि अछि। ई अद्वैत तत्त्व उपनिषदक भाषामे ब्रह्म अछि। ई परम तत्त्व अद्वैत तत्त्वक अंतिम तत्व अछि। एकरा हम मूल तत्व कहि सकैत छी जकर विकार सम्पूर्ण संसार अछि। एकरा हम सर्वाधार सेहो कहि सकैत छी। कियाक त ई सब वस्तुक मूल स्थान अछि अथवा आधार अछि। तैत्रीय उपनिषद 3/9मे कहल गेल अछि जे मात्र उएह ब्रह्म तत्व एहि जगतक मूल कारण कहल जा सकैत अछि। ई मूल तत्व जे परम सत्य अछि तकरा बाबाजी 'स्वामी केसव, भवनिधि पार उतारब' कहलनि अछि। बाबा जीक साहित्यक आधार पर एक अद्वैत ब्रह्म रूपेँ टा परमसत्य अछि। एकरे सत्य ज्ञान अनंत स्वरूप मानल गेल अछि। एहि ठाम बाबा जी महाराज पाँच तत्व ब्रह्म सत्य, सर्वव्यापी, शुद्ध चेतन स्वरूप, अनंत स्वरूप आ अन्तर्यामीकेँ स्पष्ट करैत अपन वचन प्रस्तुत करैत छथि—

''पाँच तत्त्व लै आप प्रकाशित, तब क्यों दीप धरौ।
'लक्ष्मीपति' नहि दोसर कोऊ, काके पाँव परौं।।''

परमहंस जी महाराज अद्वैत वेदान्ती होयबाक कारणेँ परमात्माकेँ जगतक उपादान आ निमित्त कारण दुनू मानैत छथि। परमात्मा अपन इच्छासँ लीला करैत छथि आ जगतक सृष्टि करैत छथि। तेँ श्रुतिमे परमात्माक लीला स्वीकार कयल गेल अछि। जेना परम पिता परमेश्वर अपन आनंदक अभिव्यक्तिक हेतु संसारमे प्राणीकेँ उत्पन्न करैत छथि तहिना परमहंस संतकवि लक्ष्मीनाथ गोसाँइ 'स्वांत सुखाय सर्वजन सुखाय' हेतु परमात्माकेँ सिद्ध मानैत भजनावलीक रचना कयलनि अछि।

त्रास

अयोध्यानाथ चौधरी
जनकपुरधाम, मिथिला (नेपाल)
सम्पर्क : +977 9864042868

सूर्य समयसँ उगथि-डूबथि ओहिना-ओहिना
दिन-राति आ राति-दिन होइछ जहिना-तहिना
पृथ्वी अपन कक्ष पर घूमथि सदत्ति निरन्तर
तेँ भेल अछि ऋतु परिवर्तन आ आममे मज्जर
मुदा मानव निष्क्रिय बनल सीमित अछि घरमे
समय कटैए कहुना त्रास आ डरमे
यद्यपि परिवार बीच, आइ ओ संत्रस्त अछि
अदृश्य जीवाणु समक्ष, निरीह आ निरस्त्र अछि
अनगिनती शोध-संस्थान सकृय अछि सब ठाम
मुदा बेबस जीवनकेँ मृत्यु जकड़ि रहल सरेआम
बिषाक्त बनल पोखरिमे माछ जेना छता रहल
समुद्रक किछेर लागि अनगिनत लाश गन्हा रहल
प्रश्न जे ई आतंक कोना, कतए, कहिया धरि
जीवन-बृक्ष हिलल अछि सोर-पोर जड़ि धरि।
आइ समस्त विश्वमे विज्ञान-बुद्धि हरण भेल
सब एक दोसर के पूछय, ई जीवन आ कि मरण भेल?

कहियो की सोचने छलिए एना हेतै एक दिन
अपने कारणसँ मानव भोगत एहनो दुर्दिन
'कोरोना' ग्रस्त आहाँक स्वजन, पति-पत्नी, माता-पिता
नै दर्शन, नै सेवा, क' नै सकब जिज्ञासा
केहनो आत्मीय हो, लाश नै ल' सकब
कतबो सन्निकट होथु, कान्ह नै द' सकब
कोना, कत' लहास गेल, आहाँ नै जानि सकब
माथ पकड़ि, देह लपटि, आहाँ नै कानि सकब
अश्रुपूर्ण अन्तिम बिदाइ तक नै क' सकब
असीम-कष्ट-नोर बहा हल्लुक नै भ' सकब
केहन दारुण ब्यथा भोगत, रहत जे जीबयबला
फाटि जायत हृदय ओकर, होयत के सीबयबला?

पटाक्षेप : एक एथनोग्राफिक उपन्यास आ लिली रे

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र
द्वारिका, नयी दिल्ली
सम्पर्क : +91 8076208498

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र मानवविज्ञान आ मानवाधिकार केर शोधकर्मी छथि। लोककला, जनजातीय जीवन, ग्रामीण भारत, लोकज्ञान, मूर्त आ अमूर्त कला, नारीवाद आदि विषय पर काज करैत आबि रहल छथि। भारत सरकार केर संस्कृति मंत्रालय, यूनेस्को आदि संग अनेक राष्ट्रीय आ अंतरराष्ट्रीय संस्था लेल काज केने छथि। एखन स्वतन्त्र लेखन मे लागल छथि।

मैथिली साहित्य मे लिली रे एक गम्भीर महिला हस्ताक्षर रहल छथि। हुनका पर बहुत काज करबाक जरुरत छैक। आब जखन लिली रे अपन भौतिक शरीर त्यागि अनन्त मे विलीन भ चुकल छथि ताहि स्थिति मे ई समस्त मैथिल साहित्यकार समाजक उत्तरदायित्व बनैत अछि जे लिली रे केर समस्त रचना पर चिंतन, मनन हो, ओकर समालोचना हो, पुनर्पाठ हो, हुनक साहित्य केर प्रचार प्रसार हो। साहित्यसँ जे इतर लोक छथि जेना कि समाजशास्त्र, मानवविज्ञान, नारीवाद, इतिहास, आदि विषय आ परिवेशक लोक, ओहो सब अपन विषय केर परिप्रेक्ष्य मे लिली रे केर कार्यक लेखा जोखा करथि। लिली रे एखनो महिला स्मिताक प्रमुख स्वर छथि। ओना त सबके लेकिन विशेष रूपसँ महिला साहित्यकार, एक्टिविस्ट, नारीवादी विचारधारा के जे आगा ल' जाय चाहैत छथि तिनका जरुर लिली रे के एक बेर नहि, बेर-बेर पढ़क चाही। गुणक चाही। हम लिली रे केर एक पोथी अपन मूल विद्या मानवविज्ञान केर परिधि मे रखैत पढने छी आ ओहने व्यख्या करबाक लघु प्रयास कएल अछि। इहो कहब जरुरी अछि जे हमर निजी पुस्तकालयमे लिली रे केर लिखल पाँचटा पोथी उपलब्ध अछि। अपन विधाक काज अतेक व्यस्त रही जे नहि पढ़ि सकल रही। एकाएक हमरा विभा रानी जी निर्देश देलनि जे हम लिली रे पर केन्द्रित एक आलेख हुनका द्वारे सम्पादित कोनो पत्रिका अथवा पोथी हेतु लिखी। ई कनि दुश्कर काज छल हमरा लेल। मुदा ताहूसँ दुश्कर हुनक निवेदनकेँ अस्वीकार करब। हम स्वीकार कएल। जखन स्वीकार कएल तँ एक दिन लिली रे केर सब पोथी अपन टेबुल पर राखल। सब पर दृष्टि देमय लगलहुँ। पोथी सबहक नामकरण, ओकर भूमिका आदि पर गंभीर होइत रहलहुँ। अंतत: लागल जे हुनक रचना पटाक्षेप हमरा पढ़क चाही आ अपन दृष्टिकोणसँ ओहि पर किछु लिखबाक यत्न करक चाही।

इ पोथी गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी आ अमीर लोकक दुआरे मजदूरक शोषण पर किछु अभिजात्य लोकक पढ़ल-लिखल अथवा दिल्ली आ कोलकाता सन महानगरमे पढ़ैत विद्यार्थी द्वारा दुखक अनुभूति, आ तकर समाधान हेतु ओहि समाजमे रहि, ओकर दुखक अनुभव करबाक चेष्टा, सहभागी अवलोकन, व्यवस्था केर सुधार करबा लेल संघर्ष, समाज, जमींदार, प्रशाशन, सरकार, पुलिस तंत्र सभसँ विद्रोह करबामे सर्वहारा वर्गक मदति पर आधारित छैक। ई पोथी पढ़लासँ ई स्पष्ट भ' जाइत छैक जे सरकारी तंत्र संग वएह टिक सकैत अछि जकरा लग अप्प्रोच छैक, जे सब सुविधासँ संपन्न घरक अछि, जाहि व्यक्तिकेँ परिवारक लोक आ सम्बन्धी सभ प्रसाशन आ पुलिसमे नीक पद पर छथिन। एहेन परिवारक युवक इहो बुझैत छथि अथवा हुनक अवचेतन मनमे ई बात छनि जे कखनो ओ मुख्यधारासँ जुड़ि सकैत छथि। कखनो अपन शिक्षा पूर्ण क' सकैत छथि। हुनका ई बुझल छनि जे हुनक सम्बन्धी जे नीक पद पर छथिन तिनक भयसँ कहियो पुलिस हुनका सब संग थर्ड डिग्री ट्रीटमेंट नहि क' सकैत छनि। कहियो जेलोंमे हिनका लोकनि संग दुर्व्यवहार नहि हेतनि। ई लोकनि पुलिससँ आ प्रशाशनसँ तर्क-वितर्क क' सकैत छथि। ई सभ कहियो आ कखनो मुख्यधारामे वापसी क' सकैत छथि। साहित्यकार श्रीमती लिली रे एहि बातक आ परिवेशक जानकारी अपन पाठककेँ बहुत इमानदारी आ दक्षतासँ द' दैत छथिन। ओ इहो स्पष्ट करैत छथि जे हुनका अपन दूनू पुत्रसँ बहुत लगाव छनि। मैत्रीभाव छनि। ओ सब हिनका संग सब बात निर्भीकता संग इमानदारीसँ कहैत छथिन। मायक दु:ख, चिंता, मानसिकता आदि बहुत नीकसँ वर्णन भेल छैक।

तीन पात्र पर पूरा केन्द्रित छैक ई उपन्यास— अनिल, सुजित आ दिलीप। तीनू तीन स्थानसँ, अनिल पंजाबी क्रिस्चियन परिवारसँ, जिनक परिवार बोम्बे रहैत छनि; सुजित बंगाली कायस्थ छलाह। मुदा दिलीप ताहूमे मुख्य पात्र भ' जाइत छथि। अनिलक परिवार बनारसमे बसि गेल छलनि। दिलीप उत्तर प्रदेशक ब्राह्मण परिवारसँ आयल छला, मुदा माय-बाप हुनक जन्मसँ पहिनहि कलकत्तामे घर-द्वार बना लेने रहथिन। (पृष्ट संख्या 22)

देखू, कतेक सावधानीसँ साहित्यकार तीनूक पृष्ठभूमि तैयार करैत छथि: "इ तीनू गोटे तीन ठामसँ स्कूली परीक्षा पास क' दिल्लीक एक्के कॉलेजमे प्रवेश लेने छलाह। पढ़बाक विषय भिन्न रहितो एक्के हॉस्टलमे डेरा भेटल छलनि। तीनू गोटे एक्के संगे सी. पी. एम. (एम. एल) पार्टी हेतु काज करबाक निर्णय लेलनि।" (22)

परिवेश केर खोइंछा छोड़ा-छोड़ा स्पष्ट करैत लिली रे आगा लिखैत छथि— "यद्यपि, ककरो ठेठ देहातक अनुभव नहि छलनि, मुदा तीनू गोटे देहातमे काज करय चाहैत छलाह।" (22)

चैलेंज कठिन छलनि। गामक लोक सब रहब। हुनकर भाषा हुनके टोनमे बाजब। हुनकर सब सन धोती पहिरब, हँसब, उठब आ बैसब। सातु घोरिकेँ सुकरब, भुज्जा फाँकब आदि आदि।

पुलिस प्रसाशनमे कोना स्वतंत्रता भेटला बादो नौकरशाही हावी छैक तकर वर्णन एक दरोगा केर मादे कहल गेल अछि— "देखू ने, एस. पी. साहेब ओतय बारह टा अरदली छनि। बजार, भानस, कपड़ा खीचब, सभटा काज अरदलीक उप्पर। नोकर पर एक्को पाइ खर्च नहि छनि, मुदामे साहेब तैओ प्रसन्न नहि। हुनक इच्छा छनि जे दस टकाक बजार एक टकामे भ' जाय। नहि तँ सिपाही चोर अछि। डी. आई.जी. साहेब ओतय साड़ी कोना सुखाओल जाइ छनि, से जानल अछि? दू सिपाही नुआक दूनू खुंट पकड़ि रौदमे ठाढ़ रहैत अछि। डी. आई.जी. साहेबक मेम साहेबक साड़ी माटि पर कोना सुखेतनि? डोरीपर सुखयतनि तँ डांडी पड़ि जयतनि।" (24)

दरोगा जी अपन फ्रस्ट्रेशनकेँ आगा बढ़बैत बजैत छथि— "एकदम सैह। काशीनाथ सिंह आ हरिहर दूबेकेँ मेरिट

अवार्ड भेटलै अछि। कथी ले? चुप्पे मुह मेम साहेबक हुकुम बजयबाक हेतु। सरिपों कहै छी, हमरा यदि आइ कन्यादान आ बेटाक पढ़ाइक चिन्ता नहि रहैत तँ हम अपने ओहिमे कूदि पड़ितहुँ। कम्युनिस्ट सभक एकोटा बात कटबा योग्य नहि होइत छैक।" (24)
इ बात तँ स्पष्ट रूपसँ प्रसासन केर असफलताक दस्तावेजक रुपमे देखल जा सकैत अछि आ एकर प्रमाणिकता पर कोनो प्रश्नचिन्ह नहि बनत!

लोक सभ पक्षक बात नहि बुझय चाहैत छथि तकर एक अनुभव हमरा भेल अछि। भारतमे विद्वान आ पत्रकार सब बातक अतिरेक करैत छथि। कियोक पुलिस आ प्रशासन केर पक्ष पर नहि बजैत छथि। एकबेर एक संगोष्ठीमे भाग लेबाक हेतु रायपुर गेल रही। संगोष्ठीक आयोजक हमरा रातिमे पूर्व डायरेक्टर जनरल ऑफ पुलिस लग ल' गेलाह। ओ बहुत आत्मिक लोक छलाह। हुनकर नामक उजागर करब उचित नहि। ओ कहलनि, "जनैत छी ई जे समाजशास्त्री, सोशल एक्टिविस्ट सब होइत छथि ने से एकरंगाह लोक होइत छथि। ग्राउंड रियलिटीसँ दूर रहैत छथि। सेमिनार हाल, यूनिवर्सिटी क्लसरूम, होटल, वातानुकूलित पुस्तकालय आदिमे बैसल पक्ष अथवा विपक्षमे तर्क देब सहज होइत छैक। कखनो जँ ग्राउंड रिअलिटी बुझथि त' बात आगा बढि सकैत अछि। मुदा ताहिसँ आ पुलिस अथवा रक्षादलक लोकसँ हिनका सबकेँ कोनो मतलब नहि। हालहिंमे नंदिनी सुंदरसँ गप्प भेल छल। बिना हमर पक्ष बुझने दनादन बाजय लगलीह। हमर बात सुनबाक कोनो प्रयोजन नहि बुझलनि। विद्वताक गुमान, मानवाधिकारक झंडा उठेनिहार आ ताहुसँ अधिक वरिष्ठ आ पावरफुल आईएएस अधिकारीक बेटी होमाक गुमान। हम सब की करी? एहेन मोचन्ड लोककेँ सिख देनाइ अत्यावश्यक बुझना गेल। सेहो पुलिसकेँ तरीकासँ। सएह कएल। एकबेर नंदिनी बस्तर अएलीह। कहलनि जे हुनका बीच जंगलमे गामक लोक सबसँ भेट करक छनि। हम सभ हुनका जएबाक तुरत अनुमति दय देलहुँ। हँ, हुनका गाड़ीकेँ आगा पाछा एक-एक पुलिस गाड़ी, दुनू गाड़ीमे सात-सात पुलिस संग भेज देल। हुनका पुलिस संग देखिते गामक लोक किछु बात नहि करनि! दोसर दिन ओ हमरा कहलनि जे ओ असगरे जेतिह। हम दलील दैत बजलहुँ— 'अहाँक जानक खतरा अछि। हम सब असगर नहि जाए देव। अहाँक सुरक्षा हमर सभक कर्तव्य अछि।' ई कहैत दोसर दिन हम एक गाड़ी पुलिस आरो भेज देलहुँ। ओ चारी दिन रहलनि आ चारि पंक्ति सार्थक जानकारी नहि ल' सकलीह।"

उपरोक्त अनुभव यथार्थ आ आर्टिफिशियल यथार्थकेँ स्पष्ट करबा लेल पर्याप्त अछि।

जखन किसना चोरक घरक भोजन दिलीप खा रहल छथि तकर वर्णन सेहो सजीव छैक आ क्लास आर्डरमे अंतर केर प्रमाण छैक— "दिलीप किसनाक आनल घीबाला भात नहि खा सकलाह। जेम्हर घी नहि पड़ल छल, तेम्हरुका भातकेँ झोरमे सानिकेँ कोनो तरहेँ गिड़ी लेलनि। सुगरक मासु सेहो नहि खा सकला। ओना, दिल्लीमे अनेक बेर हैम-सौसेज खएने रहथि, मुदा तकर स्वाद भिन्न छल। ई मासु चमड़ा सन लगलनि। सड़ल चमड़ाक तरकारी" (25)

कहानीमे अतयसँ एक त्वरित मोड़ अबैत छैक जे पूरा प्रकरणकेँ नकारात्मक पटाक्षेपमे अंतत: बदलि दैत छैक। से की? एक पंक्ति देखल जाओ— "प्रतिराति सुतबाक पहिने दिलीप अपन आत्मविश्लेषण करथि आ प्रतिबेर निराशा होइनि।" (25)

आब कनि एकर विस्तार देखू— "देहातमे काज करबाक हेतु सभसँ आवश्यक छल गामक साँचामे अपनाकेँ ढारि लेब। आ, सैह नहि क' पबैत छलाह दिलीप। की कहिओ ओ मनोज जकाँ ठेठ देहाती बनि सकताह?" स्थिति दुरूह भेल जा रहल छनि दिलीप लेल। ओ अपन परिवेश आ अहिठामक परिवेशक मध्य सैंडविच भ' रहल छथि। मुदा मोनक उफान जे समरस समाजक निर्माण हेतु शोषित संग रहैत ओकरे जीवनक हिस्सा बनैत काज करब से अधिके उत्प्रेरित करैत छनि दिलीपकेँ। फेर हुनक मोन तार झंकृत करैत कहैत छनि—

"कियैक नहि?" मनोज कहने रहथिन।

"ककरो अधिक समय लगैत छैक आ ककरो कम। अहाँमे लगन अछि, अहाँ अवश्य सफल होयब। अहाँ सोचु, यदि अहाँ दुसाधक घरमे जन्म लेने रहितहु तँ अहाँक आचार-विचार केहेन रहैत? आ सभसँ महत्वपूर्ण विषय ई जे अहाँ ओकरा सभकेँ अपन बुझियहु। तखन अहाँक भीतरमे भावना बैसि जायत, तखन अहाँ चाहे जे खाइ-पीबी, लोककेँ अहाँमे कोनो अंतर नहि बूझि पड़तै।"

"आ दिलीप दिनमे कइएक बेर अपन मोनमे दोहराबथि, 'ई हमर अपन लोक थिक। एकर दुख हमर दुख थिक। एकर सुख हमर सुख होयत।" (25)

एक बात जे विचित्र लागत से ई जे कॉमरेड बनबाक निर्णय लेलाक आ गाममे आबि गेलाक बादो दिलीप आ सुजीत जेना अपना आपके ओहि वातावरणक लोक मानसिक रूपसँ नहि बना रहल छलाह। हुनका सदैव देहातमे काज करबाक निर्णयमे गलती बूझि पड़नि। लेकिन काज करैत रहलनि। दिलीप गामक लोक जे बटाइ जमीन जोतैत छल तकरा सभकेँ ई समझेबाक प्रयास क' रहल छलाह जे कोना चीनमे साम्यवाद एलैक। कहिया धरि लोक जमींदार लेल काज करैत रहत? अहि बेर धानक फसल नहि देतैक मालिककेँ। दिलीप वाकपटु आ ज्ञानी छलाह। "जहीठाम जाथि, सभ घेरि लेनि। सभ सुनय चाहैत छल चीन देशक इतिहास, माओ-त्से-तुंगक बीस वर्षक युद्धयात्रा आ अन्तमे सर्वहाराक विजय। पूर्णिया जिलाक सर्वहारा वर्ग सेहो मरय-कटय ले तैआर छल, मुदा जमीन नहि छोड़त पकैत धानक उन्माद सभकेँ ध' लेने छलैक। ई धान ओकर थिकै। ई जमीनक हकदार ओएह थिक।" (32)

"सभ जानय चाहैत छल चारू मजुमदार, कानू सान्याल आ जंगली संतालक विषयमे। नक्सलबाड़ी किशनगंजसँ दूर नहि छल। किशनगंज पूर्णियासँ दूर नहि छल। एक गामसँ दोसर गाम, दोसरसँ तेसर, समस्त अंचलमे नक्सलबाड़ीक गप्प उड़िया रहल छल। मार्क्स आ लेनिनक नाम प्रत्येक गामक युवावर्ग सुनि चुकल छल। क्रान्तिक महँ स्वप्नकेँ पूर्ण करबा ले सभक मोन आलोड़ित भ' रहल छलैक। बुढ़बा सभकेँ बुझबामे नहि अबे, मुदा सुनबामे नीक लगै। ओसभ किछु नहि बाजय, मुदा ओकर मूक आँखिमे हँसी डबडबा जेना दिलीपकेँ कहैत होइनि, "बाबू हमहूँ कम नहि देखने छी। कहब सहज छै, करब नहि।" दिलीप मुसकिआकेँ ओकरा दिस ताकथि। मने-मन बाजथि, 'आइ अहाँकेँ विश्वास नहि होइत अछि। मुदा, एक दिन जहिआ सम्पूर्ण देश लाल भ' जायत, तँ हम फेर एहिठाम आयब। तखन अहाँलोकनि कहब, "अहाँ ओहि दिन जे आशा देने छलहुँ से सत्य बहरायल, आ देखबा योग्य होयत हिनका लोकनिक मुह पर भाव। तृप्ति, आनन्द आ उल्लासक भाव रहत सभक मुह पर।" (32)

इहो बात सत्य जे लोक सभ, विशेष रूपसँ युवक अपन अधिकार लेल साकांक्ष भ' रहल छल। एक चारि पातिक नारा अहि बातक पुष्टि करैत अछि:

"जा कँ लाल किलापर भाइ,
देबइ झंडा हम फहराइ।
राज लेबै मजदूर ओ किसानके
बोल' मुक्का ता''नके ना।।" (32-33)

जे सदैव साहित्य, सिनेमा आ नाटक केर समस्या छैक से अहि उपन्यासमे सेहो बहुत स्पष्टताक संग भेटैत अछि। से की? परम्परागत आ नव टेक्नोलॉजीमे द्वंद। आ अहि द्वंद पर सम्पन्न लोक द्वारे निर्धन मजदूर पर मानसिक आ मनोवैज्ञानिक दबाब उत्पन्न करब जे अगर ओ सब समृद्ध लोकक अनर्गल शर्त पर काज नहि करत तँ आधुनिक तकनिकीसँ उत्पन्न मशीनसँ मजदूर बला काज धनिक वर्ग करा लेत। अतय ट्रेक्टर आबि गेल छैक। जमींदार सब बटैया करयबला लोक सबके ई भय देखा रहल छैक जे अगर जमींदारक हिसाबे नहि केलक खेती तँ जमीन ल' लेल जेतैक आ लोक अपन खेती ट्रेक्टरसँ करा लेत। ई बात एक बाहरी व्यक्ति नहि बुझ्झ सकैत अछि। वैह बुझतैक जकर घरमे अन्नक आभावमे कतेक दिन चुल्हा नहि जरैत छैक।

एक बात नीकसँ देखाओल गेल छैक जे युवा वर्ग परिवर्तन चाहैत छैक। जमींदारी आ जातिप्रथा अपन अंतिम साँस ल' रहल छैक मुदा 35-40सँ अधिक उमेरिकेँ लोक एखनो भयभीत छैक। भारतक ओहि क्षेत्रमे एखनो देशप्रेम कोनो वाद पर हावी छैक। लोक कम्युनिस्ट पार्टीक विचाधाराकेँ स्वीकार करैत छैक मुदा जखन बंगलादेशक निर्माणकेर बात होइत छैक। पाकिस्तान संग भारतक युद्ध केर बात होइत छैक तँ युवा सब देशप्रेममे बौरा जाइत छैक आ सब कम्युनिस्ट आइडियोलॉजी, प्लानिंग, आन्दोलन आदिक तिलांजलि दैत भारतीय सेनामे सम्मिलित हएबाक हेतु लाइनमे ठाढ़ भ' जाइत छैक।

इहो बात कहब ओतबे जरुरी छैक जे लोक परिवर्तन पसिन करैत छैक, प्रजातंत्रक अर्थ बुझय चाहैत छैक मुदा परिवर्तन एकाएक संभव नहि छैक। सबसँ पैघ बात जे सुविधाभोगी लोकक पढ़ल-लिखल बच्चा सब ओ सब जखन संसारक तुलना भारतसँ करैत छैक तँ ओकरा ई अनुभव होइत छैक जे अतय व्यवस्थामे परिवर्तन नहि क्रांतिक दरकार छैक। क्रांतिक समय आबि चुकल छैक आ तत्काल प्रभावसँ ओकरा लेल लागि जयबाक छैक। जेना कि कहि चुकल छी ओहिमे किछु युवक रेडिकल अथवा विद्रोही बनि जाइत छथि। शोषित समाजमे सहभागी बनि रहय चाहैत छथि, शोषित समाजक वस्त्र, भोजन, सुख, दुखक सहभागी बनैत छथि अथवा बनबाक स्वांग (ढोंग) करैत छथि। सबसँ पैघ बात ई जे अपन सहभागिताक स्वीकृति शोषित समाजक मान्य प्रतिनिधिसँ लेबाक हेतु सतत तत्पर छथि। ओहि समाजक लोकमे जनचेतना, ज्ञान, वैश्विक घटनाक्रम, राजनैतिक उठा पटक आ तकर विश्लेषण लोकक मानशिक आ बौद्धिक स्तरक ध्यान रखैत प्रवचन, भाषण, बतकही आदिक मादे कहैत छथि। कहैत चली जे ज्ञानक ट्रांसमिशन कखनो-कखनो कमाल करैत छैक। दिलीपक बात लोक झट द' बुझि जाइत छैक। एकर एक बानगी देखल जाए—

"अकासी गाममे दिलीप जे किछु बाजथि, लोक तहीमे मूड़ी डोलबय लागय। दिलीपक प्रत्येक शब्दहुकेँ पीबि जाइत छल अकासीक जन-मजदूर वर्ग।

सिबना नामक एकटा चलपुर्जी छौंड़ा दिलीपक हाथ पकड़ैत कहलकनि, 'आह! कामराइट। अहाँ छी काम-रा-इ-ट। माने जे सभ काम राइट करय। अहाँ कोनो काज गलती कइए ने सकैत छी। ने गलती बाजि सकै छी।'

दिलीपकेँ हँसी लागि गेलनि। सरल ग्रामीण सभ पर स्नेह उमड़ि अयलनि। बजला, 'दोसरा बेर आयब तँ अहाँ लोकनि ले पढ़बाक प्रबंध करब। काज-धंधाक बाद कनेक ओहो भ' जायत।

'हमरालोकनि आब पढ़ि सकबै?'

'कियैक नहि?'

'अख़बार पढ़' आबि जायत?'

'तुरन्त नहि। आस्ते-आस्ते।'

'पढ़ी-लिखि क' नौकरीक आभाव तँ नहि रहत ने?'

'से रहत। जाबत एहि तरहक सरकार रहत, ताबत बेरोजगारी रहबे करत।'

'कामराइट, दोसर बेर अहाँ आयब तँ अपना संग बम लेने आयब। राक्षसक देबाल पर फेंकि देबै। एकहि संग सभ स्वाहा।'

'सत्ते, आब नहि सहि होइत अछि।'

'जे होयबाक होइ, पहिनहि भ' जाओ, फसिल कटबाक पहिनहि फैसला।'

'पुलिस सहित सभकेँ बमसँ तोपि दी।'

'रौ बमसँ तँ फसिल सेहो जरि जयतै।

ओहिसँ नीक जे बन्दूक आ पिस्तौल लेने आबी।'

सभक हाथमे एकटा बन्दूक थमहा दी। तोरा बन्दूक तँ हमरो बन्दूक। देखी कोन बापक बेटा रोकैत अछि?" (37)

एकरा स्वीकारोक्ति मानल जा सकैत अछि।

पोथी सोशियोलॉजी ऑफ कम्युनिकेशन आ स्पष्ट विचारक आदान-प्रदान सेहो करैत अछि। जेना कि दिलीप गामक लोकसँ शत प्रतिशत सहमत छला। बिना अस्त्रे विद्रोह करब आत्महत्या छल। दू जनरेशन केर सोच, द्वंद आ द्वंद भेलाक बादो युवक समाज अथवा वर्ग कोना अपन बुढ़ माता-पिताकेँ सम्मान दैत अछि, आ परम्परा लग वाद अथवा पोलिटिकल आइडियोलॉजी कोना ध्वस्त होइत अछि तकर बहुत गंभीर प्रमाण लेने ठाढ़ रहैत अछि ई पोथी। एक दिस कम्युनिस्ट विचारधाराकेँ सम्मान आ दोसर दिस अपन बुढ़ पुराणक बातक विपरीत कोना जायब ताहि बातक उभयवृत्तता। एक दिस कैडर कहैत छैक जे बटाई बला खेतक फसिल जमींदार सबकेँ नहि देतैक। जमींदार आ युवक सबहक मध्य घनघोर टेंशन छैक। दूनू दिश गहमा गहमी:

"रब्बीक फसिल तक पुलिस-दरोगाक जाल पसरि गेल छल। पैघ गृहस्थलोकनिकेँ बन्दूक रखबाक संख्यामे वृद्धि देल गेल छलनि। आब हुनकालोकनिकेँ लठैतक संग एकटा बन्दूकबाला सिपाही सेहो रहैत छल।

बुढ़बा सभ कोनो पहरेदारसँ कम नहि छल। ओ सभ फसिल लुटबाक विरुद्धमे अडि गेल छल। यदि एहिबेर ओकर हाथसँ चल जयते तँ जीवनमे फेर कहिओ भेटबाक सम्भावना नहि छलैक।

छोड़ासभ, से तर्क मनबा ले तैआर नहि छल। मुदा, संगहि अपन बाप--दादाक संग हँसेरा-हँसेरी करबा ले सेहो तैआर नहि छल।

गभीरतासँ जे एकरा एक खोजी पाठकक रूपसँ देखबैक तँ संस्कृति आ दू पुस्तक लोकक बीच सोचक द्वंद, युवा पीढ़ी द्वारा अपन बाप पिताक सोच पर साक्षात आपत्ति आ तकर बादो मर्यादाक सीमाक उलंघन नहि करबाक विवशता स्पष्ट दृष्टिगोचर हएत। जेनरेशन गैप, सोचक अंतर आ व्यवहारमे सांसकृतिक उभयवृतत्ता जेना प्रखर होइत हो। उपन्यास अतय एक अलग लेवल पर पाठककेँ ल' जाइत छैक। समाजक समाजशास्त्र जेना अपन विश्लेषण करय लगैत अछि। एकाएक जेना लिली रे नेपथ्यमे फेंका जाइत छथि आ दिलीपक रूपमे अपन समाजशास्त्रीय ज्ञान, जिज्ञासा आ विवेचनाकसंग रवींद्र रे आबि जाइत छथि। हुनकर डिक्टेशन जेना शुरू भ' जाइत अछि। फिक्शन समाजक यथार्थ बनि एक सोच, शोध, यथार्थक अकादमिक पटल बनि जाइत छैक। थ्योरी आ एप्लाइड एक संग राग टेरनाइ शुरू क' दैत अछि। यद्यपि किछुए कालक बाद ओ राग अपन लाइनसँ बेलाइन भ' जाइत छैक। नैराश्य जेना आगुक डेग पर ब्रेकर लगा देने होइक। युवक सभक समाजक व्यवस्था आ जमींदारक प्रति घृणा भाव स्पष्ट अछि। यद्यपि बुढ़बा सब ई नहि चाहैत अछि जे कोनो तरहक लूट पाट हो। ओ सब निर्णय क' लैत अछि जे खेतक मालिककेँ आधा क' फसिल बाटि देतैक—

"बुढ़बा सब कोनो पहरेदारसँ कम नहि छल। ओ सब फसिल लुटबाक विरूद्धमे अड़ि गेल छल। यदि एहिबेर ओकर हाथसँ चल जयतै तँ जीवनमे फेर कहियो भेटबाक संभावना नहि छलैक।"

"छौड़ासभ, से तर्क मानबा ले तैआर नहि छल। मुदा, संगहि अपन बाप-दादाकसंग हँसेरा-हँसेरी करबा सेहो तैआर नहि छल।" (40)

1970कैं दशककेँ गामक दरिद्रता, भरि पेट भोजन नहि भेटबाक विवशता आ जीवन रक्षा हेतु कुअन्नक भक्षण करब आदिक वर्णन अनुभवक कसौटी पर कएल गेल छैक। एकरा अहि पोथीक USP कहल जा सकैत अछि। एक उदाहरण दिलीप अपन वर्णनसँ करैत छथि:

"दिलीपक घरबैआ चारि टा आम चोराकेँ अनने छल। ओकर चारु धियापूता अधैर्य आँखिए माइक आम गारब देखि रहल छल। प्रत्येक आम गारलाक बाद आँठी एकक बच्चाक हाथमे थमहा दै। बच्चा सभ तृप्त भ' आँठी चूसय लागय।

"दिलीप सेहो गुलचा बहुक आम गारब देखि रहल छला। यदि एकटा आर आम रहैत तँ ओकर आँठी दिलीप माँगि लितथि। 'यदि चोरिए क'केँ अनबाक छलै तँ चारिए टा आम कियैक चोरौलक गुलचा?' दिलीपक मोनमे यैह प्रश्न बेर-बेर हौंडि रहल छलनि।

"आमक रसमे सभटा सातु सानल नहि भेलै। पानि मिलबय पड़लै। सानल जखन भ' गेलै तँ थारी गुलचाक आगूमे राखि देलकै। गुलचा ओहि सातुकेँ एक रंगक सात भागमे बाँटि देलक। सभक पातमे एकक टा लोइया द' देलकै। गुलचाक बहु अपन हिस्सासँ थोड़ेक खोटिकेँ गुलचाक थारीमे द' देलकै। गुलचा आपत्ति जनबैत बाजल, "अंहह:! अकसक भ' जायत।"

"नहि हेतै।" गुलचा बहु मुसकिकेँ गुलचा दिस तकलक।

"दिलीपकेँ बूझि पड़लनि जेना हुनकर ओहिठाम रहब अनुचित भ' रहल छलनि। ओ मूड़ी घुरा लेलनि। 'साथी, सरकारी हत्ताक आम चीखू।" गुलचा गर्वसँ बाजल।

सातुमे पानि मिलौनहुँ आमक गंधसँ गमगमा रहल छल। कनिएक यदि आर भेटि सकितनि दिलीपकेँ। लगले कुड़ुड़ क' मुहसँ आमक स्वाद मेटयबाक इच्छा नहि भेलनि दिलीपकेँ।

"सभक ओएह हाल छलैक। बच्चा सभ सातु खा, फेरसँ आँठी चूसय लागल छल। गुलचा अपन थारीमे पानि ढारि , तकरा आँगुरसँ चाटि रहल छह। गुलचाक बहु आमक खोइछामे पानि द' द' सिसोहि रहलि छलि। "(44)

दिलीपक खोजी आ शोधसँ भरल हृदय इहो मनैत छनि जे सम्यक समाजक संघर्ष अतेक सहज नहि छैक। एकरा लेल पर्याप्त धन आ सर्वहाराक समर्थन आ सहयोग अतिआवश्यक—

"एकमुट्ठी लोक आ एकमुट्ठी नोटसँ कोनो क्रांति सफल नहि भ' सकैत अछि। ओहि ले चाही लोकक पूर्ण समर्थन आ सहयोग।",(46)

लिली रेक समाजशात्री पुत्र अपन विषयक ज्ञानकसंग सदैव पोथीक आगुक डेग प्रसस्त करैत रहैत छथि:

"हमरा जनैत सभसँ पैघ समस्या अछि शोषितकैँ शोषक बनबासँ रोकब। से तखने भ' सकैत अछि जखन ओहि पर खुलिकैँ गप्प होअए।"

दिलीपक मानवीय पक्ष बहुत प्रबल छनि। केना ओ बासदेवक स्त्री जखन विमार भेलैक आ शहर डॉक्टर लेल ल' जयबाक हेतु कोनो साधन नहि भेटैत छनि तँ चचरी बना क' ल' जेबाक हेतु जिद करैत छथि। डॉक्टरकैँ चिकित्सा लेल बाध्य करैत छथि, थोड़ेक ठीक भेला उत्तर डॉक्टरसँ बलपूर्वक अस्त्रक भय देखा पैसा ले ओकरासँ पाइ सेहो लैत छथि।

1971कैँ बांग्लादेशक हेतु संघर्ष, शांति बाहिनीक निर्माण, देशप्रेम हेतु हेंजक-हेंज भेल युवक सभक भारतीय सेनामे जॉइन करब एकाएक जेना समस्त संघर्षकैँ ध्वस्त क' दैत छैक। कैडर केर लोक सब एक-एक क' अरेस्ट भेल जा रहल छथि। दिलीप एक ठामसँ दोसर ठाम बौआइत रहैत छथि। सब दिस सब ठाम निराश। सभ कियोक वापस जयबाक हेतु उत्साहित करैत छनि आ आंदोलन हेतु नैराश्यक भाव उत्पन्न करैत छनि। समाज एक रंग हो, कियोक भूखल नहि रहय, जे मेहनत करय तकरा जमीन पर अधिकार हो, आदि जे एक नीक आ सम्यक समाजक निर्माण क' सकैत अछि, से आंदोलन देहभक्ति केर नाम पर ध्वस्त भ' जाइत अछि। सब चारु मजूमदार, कानू सान्याल , कम्युनिस्ट, नक्सल सब किछु खत्म। लोक थाहि लेलक आ घरमुह भेल।

दिलीप एक कम्पेरेटिव यथार्थसँ संघर्ष करैत छथि। जे वस्तु संथाल आदिवासी हेतु दबाइ छैक सएह दिलीप लेल जहर। संथाल गामक यथार्थ आ ओकर सभक जीवन एकबेर पुन: एथनोग्राफिक डिटेल्स लेने ठाढ़ अछि जेना कोनो मानवविज्ञान अथवा समाजशास्त्रक गंभीर विद्वान ओकरा सब संग सहभागी अवलोकन करैत हो। ओकर जीवनक तुलना अपन जीवनसँ करैत हो। नेटिव आ अदर्सकैँ दुराव आ अंतर स्पष्ट छैक—

"वास्तवमे अढ़ाइ दिनमे ज्वर उतरि गेलनि। दिलीप गर्वसँ मोनमे कहलनि, "आब हम असल गामक लोक सन भ' गेलहुँ। "

"मुरमुक परिवार भोजनसँ अधिक दारू पर रहैत छल। राति-दिन कठिन परिश्रमसँ सभक देह कसल छलैक। तँ स्वस्थ बूझि पड़ैत छल। मुदा, गच्छमे दीर्घजीवीक मात्रा एक्के दुक्के छल। अधिकांश स्त्रीगन प्रसवकालमे शांत भ' जाइत छल। जे शिशु जनमिते नहि मरय, तँ पांच वर्षसँ पूर्व शेष। दस वर्षक आंगुर पर गनल जाइत। तहूसँ कम छल युवा पुरुषक संख्या। के कोन व्याधिसँ मरल, से के जानय? स्त्रीगणक संख्या अधिक छल। प्रति पुरुष पर तीन-चारि स्त्रीगन छलि, अत: एकसँ अधिक संगी रखबाक छूट स्त्री-पुरुष दूनूकैँ छलैक। सन्तान होयब स्त्रीगनक सर्वश्रेष्ट गुण मानल जाइछ। तँ ओकरा कोनो पुरुष लग जायब क्षम्य छल।"

साधारणत: तीन-चारि व्यक्तिक काज एक सौतार क' लैत छल। ओहि इलाकाक सभसँ परिश्रमी जाति छल सौतार। सभ अपन घर-द्वारकैँ नीपि-पोति कैँ परिछन्न रखैत छल। एतेक मुरगी अछैत ओकरा सभक घरमे कनी बीट अथवा दुर्गन्धि नहि छले। देहिक स्वच्छता सेहो कम नहि छलैक। प्रत्येक मुख्य आहारक बाद दांत मजबाक नियम रहै। सभक मुहक दाँत चकमकाइत रहै। माटिसँ घसि-घसि कैँ सभ स्नान करय। लोमरहित स्त्री-पुरुष दूरसँ प्रतिमा सन बुझि पड़य। उघार पीटक कारी रंग रौदमे आरो गढ़ा जाइ। ताहिपर टपकैत पसेना। दिलीपकैँ लगनि जेना संगमरमर पाथरक मूर्तिपर पानि छीटल होअए। पकैत धानक बीच मशीन जकाँ काज करैत कारी लोहा सन हाथ। देखैत बड नीक लगनि दिलीपकैँ। इच्छा होइन, ओहिठामक सौतार सभपर लेख लिखबक, रंगीन फोटो घिचबाक। ओकरा सभक गीतकैँटेप क' लेबाक।" (102)

कथा वस्तु नहुँ-नहुँ आगा बढैत छैक। जखन चरखी गामक चर्च करैत कहल जाइत छैक जमींदार सब जखन ट्रेक्टरसँ खेत जोति लेतैक सौतार युवक सभ लड़इले तैआर भ' जाइत छैक। अहिपर मताइ मांझीक चौदह वर्षक युवा बेटा तीर-धनुष देखबैत चिचियाक बजैत छैक—

"मजाल छियै जे ट्रेक्टरसँ जोतत? भुक्खे मरबाक पहिने ओकरा सभकैँ मारि देबै, एही तीरक निशाना बनयबै सभकैँ" (103)

दिलीपक छाती एहिबात गर्वसँ प्रफुल्लित होइत छनि—

"शाबाश!" दिलीप ओकर पीठ ठोकैत बजलाह। "एकटा छोट बच्चामे अहाँ लोकनिसँ अधिक साहस छैक। जखन भूखे मारबा पर तूलि गेल अछि तँ कियैक नहि? ओहिनो तँ ओसभ दिन-दिन हिस्साक मात्रा घटबैत जायत। अहाँ नहि तँ अहाँक धीया-पूता भुक्खे मरत। एखन यदि जागि जायब तँ कमसँ कम वर्ष दिन ले अन्नक जोगाड़ भ' जायत।"

दिलीप जखन अपन पूरान कैडर दुखना लग जाइत छथि तँ ओ हुनका सम्मान जरुर करैत छनि। भरि पेट अन्न खुआ देत छनि मुदा इहो अवश्य कहैत छनि जे बहुत केलनि दिलीप. आब स्थिति बदलि गेल छैक। आब दिलीपकैँ घर वापस चल जयबाक चाही आ विवाह करक चाही, नौकरी पकड़क चाही। भले अहिबात पर दिलीप तामसे भेड़ भ' जाइत छथि मुदा मोनक कोनो एक स्थान पर नैराश्य भरल जा रहल छनि। मोन हुनको ई कहि रहल छनि जे आब अपन घर वापस जाथि आ मता पिता संग रहथि आ पुन: पढाइ शुरू करैत एक व्यवस्थित जिनगी केर तैयारीमे लागि जाथि।

एहि तरहेँ धनिक लोकनिक पढ़ल लिखल 12 युवक जे गाम आबि लोकलेल हुनके संगे रहैत क्रांति अनबाक लेल आयल छलाह सभ कियोक एक-एक क' वापस जाय लगलाह। अंतत: अनिल आ दिलीप सेहो वापस चल अबैत छथि। सब योजना ध्वस्त भ' जाइत छनि। क्रांतिक पटाक्षेप भ' जाइत छैक। हिनक आन्दोलन रूपी नेनाकैँ बढबकैँ पुछैत अछि जन्मसँ पहिने एबॉर्शन भ' जाइत छैक। दिलीप अपन जीवन पुन: महागरक नीक यूनिवर्सिटीसँ करक प्रयत्न करैत छथि।

अंतत: ई कहब अनिवार्य होइत अछि जे ई उपन्यास कतौ यथार्थक समाज वैज्ञानिक विश्लेषण आ एथनोग्राफिक परिचय प्रशस्त करबमे पाछा नहि रहल अछि। लेखिका मौन भेल छथि आ दिलीपक रूपमे हुनक समाजशास्त्री पुत्र रवींद्र रे मुखर भेल छथि।

पाठक, मतलब हमर अहि विचारक पाठक एक प्रश्न हमरासँ पूछिए सकैत छथि जे अंतत: हमर की सोचब अछि अहि पोथीक संबंधमे? हमर सोच स्पष्ट अछि:

ई उपन्यास कम लागल, एक रोचक, प्रोफेशनल आ अन्वेषी एथनोग्राफिक एकाउंट अधिक लागल।

लिली रे एहि एथनोग्राफीकैँ एक गंभीर फिक्शन बना सकैत छलीह। हाड़ बनल एथनोग्राफिक डिटेल्समे साहित्य आ फिक्शन केर सचारसँ मास भरि सकैत छलीह। साहित्यकारक बिम्ब आ मायक अनुराग जेना कतौ कोनो मिझरमे लपटा गेल हो। कथाक अंत जेना सब आन्दोलनक क्रिया कलापक धू-धू जड़ैत अग्नि ज्वाला पर मूसलाधार पानि बरसा ओकरा मिझा देने होइक! जाहि यथार्थक परिधि पर ई कथा शुरू भेल छल से एकरा एक असाधारण उपन्यासमे बदलि सकैत छलैक। मुदा हमरा जनैत से नहि भेलैक। लेकिन बात त ईमानदारीपूर्वक कहल गेल छैक। ई पोथी मैथिली साहित्य मे अपना आपमे अलगे स्थान रखैत अछि। एकरा पढलासँ अहि तरहक विषय पर कोना साहित्य गढ़ी तकर आधार ताकल जा सकैत अछि।

एक बात आरो स्पष्ट करैत चली, ई हमर मंतव्य निजी अछि आ लिली रे केर एक रचना पर आधारित अछि तँ एहि आलोचनाकैँ एक कृतिकैँद्रित आलोचना बुझल-देखल जाय व्यक्ति अथवा साहित्यकार कैँद्रित नहि।

मिथिलाक सनातन संस्कृति पर संकट

विनोद नारायण झा

घोंघौर, राजनगर, मिथिला (मधुबनी)
सम्पर्क : +91 9431815798

पूर्व मंत्री, लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग, बिहार सरकार, भरतीय युवक कांग्रेसक राष्ट्रीय सचिव, जिला एवं प्रदेश महासचिव, भारतीय जनता पार्टीक बिहार प्रदेशक उपाध्यक्ष रहि चुकल श्री विनोद नारायण झा बिहार राज्य पाठ्य पुस्तक प्रकाशन निगममे वाईस चेयरमैन, राज्य नियोजन समिति, बिहार सरकारक सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति, उर्जा मंत्रालय, भारत सरकारक सदस्य, सचेतक, सत्तारूढ़ दल, बिहार विधानसभा आदि बहुत रास पद पर अपन कुशल कार्यशैलीक छाप छोड़ैत अमेरिकन कॉसिल ऑफ यंग पॉलिटकल लीडर नामक संस्थाक निमंत्रण पर अमेरिकी राष्ट्रपतिक चुनावक अध्ययन एवं विश्लेषणक क्रममे अमेरिकाक एगारह राज्यक यात्रा। कम्युनिष्ट पार्टी ऑफ चाइनाक नियंत्रण पर चीन यात्राक अलाबे फ्रांस, स्विट्जरलैंड, इटली, ऑस्ट्रिया, जर्मनी, वेटिकन सिटी, वियतनाम, इंडोनेशिया, कम्बोडिया, भूटान, थाईलेण्ड, नेपाल आदि देशक यात्रा कएने छथि। मैथिली साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधिमे एकडेग आगु बढ़ि क' हिस्सा लैत छथि। सम्प्रति बिहार विधानसभाक निवेदन समितिक सभापति एवं वर्तमान बेनीपट्टी(मधुबनी)क लोकप्रिय विधायक छथि।

आइ दुनियामे जतेक छोट-छोट संस्कृति छै सभपर खतरा भ' गेल छै। इंटरनेट आ एहि ग्लोबलाइजेशन केर समयमे जखन की लोकक हाथमे दुनिया छै, रिमोट पर आँगुर दबेबाक काज छै आ दुनिया भरिक संस्कृतिसभ देखाइत छै! घरक टी.वी.मे रंग-बिरंगक चैनलसभ आबैत छै जाहिसँ दुनिया केर छोट संस्कृति सभपर खतरा उत्पन्न भ' गेलैक। हमरा डर होइत रहैए जे आबै बला पीढ़ी एहि बातकेँ मोन रखतै कि नहि रखतै! कि ई संस्कृति बिसरा तँ ने जेतै आकि समाप्त तँ ने भ' जेतै! दुनिया केर बहुत देशक संस्कृति धीरे-धीरे मेटि गेलै, समाप्त भ' गेलै, जे सावधान नहि भेलै।

मिथिला एकटा विशिष्ट भू-भाग छै जे दूटा सम्प्रभु देशक बीच बँटल छै! हम कोनो संप्रभु राष्ट्र केर संप्रभुताक सम्मान करै छी। भारत संप्रभु राष्ट्र छै आ नेपालो संप्रभु राष्ट्र छै। आजुक युगमे सभ संप्रभु राष्ट्र बराबरकेँ हैसियत रखैत अछि। नहि कियो छोट छै आ नहि कियो पैघ। तँ दूटा संप्रभु राष्ट्र केर बीचमे एकटा विशिष्ट इलाका छै मिथिला, जकर अपन एकटा अलग आ विशिष्ट संस्कृति छै। हमर उद्देश्य दुनियाक कोनो संस्कृतिकेँ नीचा देखाएब वा कमतर आँकब नहि अछि। लेकिन हमरा ई आत्मविश्वास अछि जे मिथिला लग विशिष्ट आ मौलिक संस्कृति छैक! एककात हिमालय दोसरकात गंगा नदी, तेसर दिस कोसी आ पच्छिममे गंडक, एहि भूभागमे एकटा अद्वितीय संस्कृति रहलैक अछि, जाहिमे कतहुँसँ नकल करबाक कोनो परम्परा नहि रहलैक अछि। कारण छै नेपालक बाद हिमालय पार करब एक जमानामे आसान नहि रहैक तहिना गंगा पार करब सेहो आसान नहि रहैक। आइ जे गंगा देखाइत छथि से गंगा 100 साल पहिने नहि रहथि। हम जखन पटनामे पढ़ैत रही जकरा बहुत दिन नहि भेल अछि, 40-45 वर्ष भेल होएत, ओहि समयमे स्टीमरसँ गंगा पार करएमे तीन घंटा लगैत छल। आब स्टीमरसँ आधा घंटा लगैत अछि। ओहि समयमे यातायात केर ओतेक साधन नहि रहैक तँ एहि बीचमे एकटा विशिष्ट संस्कृति विकसित भेलैक आ सुरक्षित रहलैक! सभ दिनसँ आ सभ दृष्टिसँ हमर खान-पान विशिष्ट रहल! हमर खान-पान अलग अछि, हमर दनौरी, हमर तिसयौरी, हमर तिलकोर, हमर बड़ी, हमर खम्हौर अलग रहल मुदा आब ई सभ समाप्त भ' जेतैक, परम्परा मेटा जेतैक बस धिया-पूताकेँ खिस्सामे बचल रहि जेतै! आब हमरा सभ ओतए विवाह होइए तँ चाउमिनक कांउटर सेहो लागल रहैए आ ओहि कांउटरपर सभसँ बेसी भीड़ रहैत अछि। पिज्जाक कांउटर लागल रहैए, डोसा तँ लगिते छैक। लिट्टीक सेहो लागल रहलामे हरजा नहि! दुनियाकेँ सभ प्रकारक भोजन हमर धिया-पूता खाए, हमसभ खाइ। लेकिन कि हमर अपन खान-पान मेटा जेतै? कि हमर खान-पान खतम भ' जेतै?

हम1988ई.मे अमेरिका गेल रही, 'अमेरिकन कॉसिल ऑफ यंग पॉलिटकल लीडर' हमरा बजौने रहथि। ओहि समयमे हम 25-30 वर्षक नौजवान रही लेकिन हम जिद्द क'केँ धोती पहिर क' गेलहुँ! पेन्ट सेहो ल' गेल रही! 20 दिनक यात्रामे 11 राज्यक यात्रा रहैक। लेकिन जतय मीटिंगमे हम गेलहुँ हम धोतीए पहिर क' गेलहुँ तकर कारण रहै हमरा अपन संस्कृतिसँ लगाओ। भारत केर संविधान सभामे 1947 केर आजादीक बाद 1950सँ पहिने जे फोटोसभ देखै छी तँ बारह आना आदमी धोती पहिरने देखाइत छथि आ आइ पूरा विधान सभामे हम चारिगोटे छी जे धोती पहिर क' जाइ छी, बाँकी लोक सभ पैजामा पहिरैत छथि चाहे सूट! हम हुनक ड्रेसकेँ नीचा नहि देखा रहल छी। सभक अपन-अपन ड्रेस छैक, जे मोन पसंद हो से पहिरू लेकिन कि हमर अपन पारंपरिक पोशाक खतम भ' जेतै, मेटा जेतै? जे धोती-कुर्ता कहियो हमर पहिचान छल हमर परंपरा छल आइ ओकरा पहिरबामे हमरासभकेँ जेना लाज लगैत हो। ई परिवर्तन किएक भेलै? कोना भेलै? कि हमरा लोकनिक मोनमे अपन प्राचीन सभ्यता-संस्कृतिक प्रति सिनेह समाप्त भेल जा रहल अछि। अपन धरोहरकेँ जोगा रखबाक लेल हमरा सभक कोनो उत्तरदायित्व नहि बनैत अछि। वस्तुत: ई खान-पान, ई पोशाक, ई विधि-विधान आ रीति-रेवाज कोनो सभ्यताकेँ मौलिक पहिचान होइत छैक। कि एहि पहिचानकेँ बिसरा गेला पर हमरा लोकनि अपन पूर्वजक संग तदात्म कोना स्थापित राखि सकब?

हमर महान संस्कृतिक अध्ययन केर केन्द्र हमरा लोकनिकेँ विद्यापतिक काल जनौलक! निश्चित रूपसँ विद्यापति कमसँ कम 100 वर्ष जीलाह, हमरा तँ लगैये 105-106 वर्ष जीलाह। सम्पूर्ण जीवन जीवन्त जीलाह। विद्यापति हमरा लोकनिक आदरणीय छथि। हमर भाषा, हमर संस्कृति, हमर खान-पान आ हमरा

लोकनिक सोचविचारकेँ हुनकर एक-एकटा रचना प्रदर्शित करैए! सम्पूर्ण मिथिलाकेँ 'देसिल बयना सभजन मिट्ठा'क सूत्र देलन्हि आ लोकभाषाक चेतनाकेँ जीवित राखलन्हि! मिथिलाक लोक व्यवहारमे गाओल जाएबला गीत सभमे शृंगार आ भक्तिरस केर अजस्त्र धार प्रवाहित कएलन्हि जे आइयो देखल जा रहल अछि! जतए न्याय लिखल गेल, जतए नीतिक चर्चा भेल से सभसँ बेसी मिथिलामे भेल! कि ओ अध्ययन केर केन्द्र समाप्त भ' जेतै? ओकरा जानए बला कियो नहि रहतैक? आठवीं सदीमे शंकराचार्य अद्धैतवादकेँ नारा दैत अएलाह! केरलसँ बनारस होइत अएलाह एम्हर, भज गोविन्दम् भज गोविन्दम् गोविन्दम् भज मूढमतीक नारा देलखिन्ह!ओहि समयमे समाप्त भ' गेल रहै सभ पुरातन संस्कृति! सनातन संस्कृति पर बेर-बेर होइत विभिन्न धार्मिक आक्रमण एकटा शंका आ अविश्वास केर वातावरण बना देने रहैक। परिवर्तनवादी बौद्ध आ जैन धर्मक उदय भेलाक कारण पारंपरिक लोक व्यवहार आ धार्मिक अवधारणा पर विलुप्तिक संकट मड़राए लागल रहैक। शंकराचार्य जखन अएलाह बनारस तँ हुनका कहलकन्हि लोकसभ जे हमरा लोकनि किछु नहि छी, मिथिलामे एखन धरि सनातन परम्परा, संस्कृति आ ज्ञानकेँ संरक्षित रखने छथि। तखन ओ महिषी एलाह। श्री माधवाचार्य लिखित 'शंकर दिग्विजय'मे एकर विस्तृत चर्चा अछि। हुनको टक्कर भेटलन्हि एहि मिथिलामे, मंडन आ भारतीसँ! एहि प्रकारे संस्कृतिक रक्षा भेल। लेकिन कियो जँ अपन संस्कृतिकेँ जीवित रखलकै तँ ओ सम्पूर्ण भारतवर्षमे कियो आओर नहि रहै एकमात्र मैथिल रहै जे एहि संस्कृति लेल लड़ैत रहलै, मरैत रहलै मुदा खतम नहि होबए देलकै। एकरा विस्तार देबा लेल एखनो संस्कृति पर शोध आओर अध्ययनक खगता अछि।

जँ अध्ययन करै बला लोक छै, एकर विशिष्टा आ महत्वकेँ रेखांकित करबाक अभिलाषा रखनिहार लोक छैक, अपन परंपरा पर गौरवबोध केर अनुभूति होइत छैक तँ एहि संस्कृतिकेँ कहियो कियो अभिघात नहि क' सकै छै। अखनो धरि एहन लोकसभ छथि जिनका एकर चिंता छनि आ जे एकर अध्ययन कर' चाहैत अछि, शोध कर' चाहैत अछि बचाओ कर' चाहैत अछि। हमरा सभकेँ मिथिलाक ओहि संस्कृतिकेँ बचाबक प्रयास कर' पड़त। सोशल एक्टिविट बन' पड़त। एकठाम एकत्र भ'कँ एहि पर चर्चा कर' पड़त। हमसभ आपसिमे बात क' सकै छी आ एहि पर विस्तृत चर्चा क' सकै छी। एक दोसरसँ संबंध स्थापित करैत एकटा कार्य योजना बना सकै छी, जकरा द्वारा सांस्कृति आ भाषाक संरक्षण, संवर्धन आ परिपोषणक काज भ' सकैत अछि। सांस्कृतिक रुपेँ जीवित राखि सकैत छी भाषाकेँ।

हम पछिला पाँच वर्षसँ मोतिहारीक प्रभारी मंत्री छलहुँ। ओतए 'सुगाँव'केँ लोकसभ भेंट करबाक लेल आएल रहथि। एहि गाँवमे विद्यापति बहुत दिन धरि प्रवास कएने छलाह, ई कहल जाइत अछि। एहू गामक हमर जे अनुभव रहल ओहि आधारे हम कहि सकैत छी जे कियो मैथिली नहि बजैत अछि! ककरो नहि अबैत छैक मैथिली! हम एकटा बच्चा सभकेँ पुछलियनि जे अहाँ सभकेँ मैथिली अबैए? ओ बच्चासभ कहलनि- हमरा नहि अबैए, बाबाकेँ अबैत छलनि, तँ खतम भेल जा रहल अछि ने मैथिली! भोजपुरी धकियौने-धकियौने सीतामढ़ी पहुँचि गेल! हम बेनीपट्टीकेँ एम.एल.ए. छी, सीतामढ़ीसँ कनिए आगु बढ़बै तँ देखबै जे मैथिली समाप्त भेल जा रहल छैक, भोजपुरीक प्रभाव बढ़ल जा रहल छैक। ओना मैथिलीक क्षेत्र विद्यापतिक समयमे गंगाक एहि पार धरि छलैक। मुद, एत्तहि धरि नहि रहलैक, ओ एहि कातसँ ओहि कात आगु बढ़ैत बाबा धाम, बाँका, भागलपुर, झारखंडकेँ गोड्डा, दुमका धरि चलि गेल! ओम्हर हुनका धकलने छियै तँ एम्हर भोजपुरी आहाँकेँ ठेलने आबि रहल अछि। ठीक अछि, मानलहुँ जे मिथिलाक नक्शा बढल जा रहल अछि लेकिन भाषा तँ खतम होइकेँ कगार पर अछि। बहुत लोक जे मैथिलीक लेल आंदोलन करैत छथि, तिनका घरमे पनिपियाइ आ कि जलखैय नहि होइत छैक, होइत की छैक तँ लंच आ ब्रेकफास्ट! लेकिन जे अपनाकेँ मैथिल नहि कहैए तकरा घरमे अखनो पनिपियाइ होइ छै अखनो कलौ होइ छै, अखनो बेरहट होइ छै। संयोग छै ओकरा कहैमे खराब लगै छै जे हम मैथिल छी। ओ अपनाकेँ कहतै जे हम मैथिल छियै तकर प्रयास करए पड़त! ओकरा कोना लगतै कि हम ओ असली मैथिल छी! यौ, असली मैथिल ओ छियैक जे सभ दिन यैह भाषा बजैए, लेकिन ओकरा किए लगलै जे हम मैथिल नहि छी ई एकटा अलग शोधक विषय अछि! हमरा अहाँकेँ एहि पर चर्चा करएकेँ जरूरति अछि! मनमे एकटा टीस अछि, ओ टीस निकल' लगै छै उद्वेग अबैत छैक तँ शब्द निकल' लगैत छैक! दुनिया कहाँसँ कहाँ चलि गेल आ हम हमर बेटी पुतौहकेँ पाग नहि पहिरेबैक? पाग जँ हमर सम्मान छी तँ बेटी हमर आधा शक्ति छी, नारी हमर आधा शक्ति छी, ओकरा सम्मानमे कम करबै कि? महिला पाग नहि पहिरतैक, कियै नहि पहिरतैक? यदि ई मिथिलाक सम्मान छिए तँ बेटी मिथिलाकेँ नहि छिए कि? बराबरकेँ पाग बेटीयो पहिरतैक नहि तँ ई जेनडर डिसक्रिमिनेशन नहि हेतै कि? चेतना समिति जाइत छी तँ कहैत छियन्हि, मुदा ई बात बहसकेँ रूप ल' लैत अछि। बदलि गेलै दुनिया आ अहाँ जखन सभकेँ पाग पहिराबैत छियैक, लालू यादव अबै छथि तइयो आ आजम खाँ आबै छथि तइयो लेकिन बेटिकेँ नहि पहिरेबै, किएक नहि पहिरेबै? बेटियो के दोपट्टा देबैक, बेटियोकेँ दोसलबा देबै ई हमर मानब अछि। दुनिया बदलि गेलैए, बेटी आब बराबरकेँ काज करैय छथि! जतेक अहाँक आबादी अछि ताहिमे आधामे बेटी-पुतौह छथि! अहाँकेँ विकास तखनहि हेतै यदि पूरा आबादीकेँ संग ल'कँ चलबैक! बराबरकेँ भागीदारी जँ बेटीकेँ देबै तँ सम्मान सेहो बराबर क' देब' पड़त, मौका देब' पड़त, मैथिलकेँ उदार हुअ पड़त, ओहो सोचबाक चाही!

विद्यापति हमर आदर्श छथि। अपन 100 सालसँ बेसीक जीवनमे ओ शिव सिंहकेँ मित्र रहथिन जे बड़ कम दिन लेल राजा रहलखिन्ह। कीर्ति सिंहसँ ल' क' विश्वास देवी, लखिमा देवी, लक्ष्मिनिया ठोकराइन धरि जखन राजवरेलीसँ आपिस एलाह तैयो राज चललैक मिथिला केर विद्यापतिक नेतृत्वमे! विद्यापति अपने-आपमे असाधारण छलाह। यदि हुनका कही तँ सिर्फ कवि नहि छथि, प्रधानमंत्रीक हैसियतमे सेहो शिवसिंहक समयमे छलाह! सभ किछुमे ओ हमर आदर्श छलाह। विद्यापति पर्व मात्र ब्राह्मणक पर्व नहि छियैक, ई तँ छियैक एकटा बहाना मिथिलाक संस्कृति, मिथिलाक इतिहासकेँ, मिथिलाक महान गौरबकेँ आगा बढ़ेबाक! ओकरा याद करबाक ई एकटा बहाना अछि।

अंतमे एकटा बात आओर जे मिथिलामे व्यापारकेँ बढ़ाबा चाही आओर सम्मान होएबाक चाही किएक तँ जाबत धन नहि हेतै ताबत किछु सम्भव नहि हएत। मुदा, एहूसभसँ बेसी जरूरी बात ठीक जे सत्तामे अधिकार होएबाक चाही! कोनो सभ्यता-संस्कृति वा कि भाषा बेसी दिन जीवित नहि सकैत अछि जँ अहाँ सत्तामे भागीदारीसँ वंचित भ' जाइ! आइ जँ सत्तामे भागीदारी हो तँ कियो हमरा लोकनिक बाल बाँका नहि क' सकैए। अहाँ सभ प्रयास करू व्यवसायो होइ लेकिन सत्ता जँ रहतै तँ सभ किछु सुरक्षित रहब!

मैथिली भाषा ओ साहित्यक बदलैत स्वरूप

शंकर मधुपांश
बुरारी, नयी दिल्ली
सम्पर्क : +91 8851630134

मधुर स्वभाव एवं स्नेहिल व्यक्तित्वसँ सम्पन्न एक संवेदनशील साहित्यकारक रूपमे प्रसिद्ध शंकर मधुपांश गद्य आ पद्य केर अनेक विधामे रचनाशील छथि। मैथिली आ हिंदी दूनू भाषामे समान रूपेँ अधिकार रखनिहार मधुपांश, स्वनामधन्य "मधुप" जीक अंश छथि आ से पितामहक सम्मोहक व्यक्तित्व एवं कृतित्वक प्रभाव पौत्रक रचनामे सभतरि स्पष्ट दृष्टिगोचर होइत छनि। हिनक रचना सभमे विषयक मौलिकता, कथ्य केर गम्भीरता एवं शब्द सौंदर्यक संग-संग छंदबद्ध रहबाक कारण आएल नैसर्गिक लयात्मकता बहुत प्रभावित करैत अछि। शंकर मधुपांश जीक मैथिलीमे "फुलडाली" (कविता संग्रह), "बिठुआ" (मधुमाछी कथा संग्रह) एवं हिंदीमे एकटा काव्य "विरह संदेश" आ "परिचय शतक" केर मैथिलीसँ अनुवाद प्रकाशित एवं चर्चित छनि, संगहि हिनक अनेक रचना सभ मैथिली एवं हिंदीक विभिन्न पत्र-पत्रिका सभमे प्रकाशित होइत रहल अछि। सम्प्रति पूर्णकालिक लेखनमे रहि साहित्य साधना केर पथ पर अग्रसर छथि।

मनुष्य अपन जीवनकालमे विभिन्न प्रकारक संवेदनाक अनुभव करैत अछि आ ओकर अभिव्यक्ति वा कहू जे अन्य व्यक्ति तक सम्प्रेषण करबाक माध्यम बनैत अछि भाषा। संगहि इहो सत्य जे कोनो भाषाक जीवनीशक्ति समाहित रहैत अछि ओकर साहित्यमे। तैं कोनो भाषाक जीवनकाल दीर्घ आ सार्थक होएबाक लेल आवश्यक भए जाइत अछि जे ओहि भाषाक साहित्य भंडार सेहो समृद्ध होएबाक चाही। प्रचुर साहित्य सृजन बिनु कोनो भाषाक निरंतरता आ समृद्धि संभव नहि। तहिना जे भाषा जतेक पुरान रहैत अछि तकर साहित्य ततबे समृद्ध रहबाक संभावना रहैत छैक। संगहि इहो सत्य जे ओहि भाषा कें बाजनिहार लोक अथवा जनसमूहक चेतनाक क्रमश: विकास, रहन-सहनमे समयानुसार आयल परिवर्तन, आन-आन भौगोलिक क्षेत्रमे कएल गेल अल्पकालीन अथवा चिरकालीन प्रवासक संगहि सामाजिक वा सांस्कृतिक परिवर्तनसँ सेहो भाषा एवं साहित्यक दशा-दिशामे समय समय पर परिवर्तन लक्षित कएल जाइत अछि।

मैथिली भाषा बिहार राज्य ओ नेपाल देशक एकगोट विस्तृत एवं अत्यंत सघन क्षेत्रक मातृभाषा थिक। यद्यपि एहि क्षेत्रक सीमा समयानुसार परिवर्तित होइत रहल अछि आ कतिपय सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक कारणसँ एहि क्षेत्रक निवासी लोकनि आन कोनहु क्षेत्रसँ बेसी प्रवासी होइत रहलाह। नव स्थानक प्रचलित भाषाक प्रभाव आ संगहि वैश्वीकरणक कारण मैथिली भाषा ओ साहित्य दूनूमे समयानुसार परिवर्तन देखना जाइत रहल अछि। यद्यपि अत्यंत प्राचीन रहबाक कारण मैथिलीक साहित्य सेहो समृद्ध रहल अछि आ प्रसन्नताक विषय थिक जे ई साहित्यिक समृद्धि दिनानुदिन बढले जा रहल अछि किंतु संगहि गद्य ओ पद्य दूनू रूपमे अनेकानेक परिवर्तन, शब्द-भंडारमे नव-नव शब्दक समावेश आ कतिपय नव-नव विधाक प्रस्फुटन सेहो देखना जाइत अछि। समय समय पर संसारक अन्यान्य भाषाक साहित्यसँ प्रभावित होएब आ तदनुसार भाषामे परिवर्तन आएब सेहो एकटा मान्य तथ्य थिक। वस्तुत: ई नमनीयता आ भाषाक समावेशी चरित्र होएब सेहो कोनो भाषाकेँ दीर्घजीवी बनएबामे अत्यंत सहायक होइत अछि।

आजुक विवेच्य विषय थिक "मैथिली भाषा ओ साहित्यक बदलैत स्वरूप"। किंतु हमरा बुझने साहित्यमे परिवर्तन अएबाक पाछाँ ओहि भाषा ओ ओकर भाषा-भाषीक जीवनशैलीमे आएल परिवर्तन उत्तरदायी होइत अछि आ तैं एतए हम मैथिली भाषाक प्राचीन ओ वर्तमान परिस्थिति कें रेखांकित करैत आजुक परिप्रेक्ष्यमे आएल परिवर्तन ओ मैथिली भाषाक सम्मुख ठाढ भेल किछु समस्या पर संक्षेपमे विचार करब। सभ्यताक आरम्भसँ वर्तमान काल धरि भाषा ओ संस्कृतिक विलोप होएब कोनो नव बात नहि अछि आ से कतेको उदाहरण सोझाँमे अछि जतए ई विलोप तखन भेलैक अछि जखन कि ओहि भाषाक एकटा सुसंपन्न साहित्यिक भंडार एखनहुँ उपलब्ध अछि। वस्तुत: कोनो भाषाक साहित्य ओहि भाषासँ जीवनीशक्ति प्राप्त करैत अछि आ प्रचुर साहित्य रहलाक बादो ओकरा बाजनिहार लोकक अभावमे ओ भाषा कालक्रमे व्यवहारसँ बाहर होइत अंतत: नेपथ्यमे चलि जाइत अछि। उदाहरणस्वरूप संस्कृत भाषा कें देखल जा सकैये जकर असीम साहित्यिक भंडार आ अत्यंत गरिमापूर्ण अतीत रहलाक बादो ओकरा बाजनिहारक दिनानुदिन क्षीण होइत जा रहल अत्यल्प संख्याबल रहबाक कारण जनसामान्यमे ओकर प्रचलन न्यून होइत देखना जा रहल अछि। यद्यपि इहो सत्य बात जे ओकर साहित्य ओकरा मरए नहि देतैक मुदा ओकर जन-स्वीकार्यता कम होइत जा रहलाक कारण ओकर भाषिक महत्त्व प्रभावित तँ होइते छैक।

यद्यपि एखनो मैथिली बाजनिहारक विपुल संख्या आ दिनानुदिन अबाध गतियेँ होइत साहित्य सृजन केर आलोकमे कहल जा सकैये जे मैथिलीक अस्तित्व पर तत्काल कोनो संकट नहि अछि किंतु दिनानुदिन होइत जा रहल परिवर्तनकेँ लक्षित करैत ई नहि कहल जा सकैये जे मैथिली विलुप्त होएबाक खतरासँ पूर्णत: सुरक्षित अछि। भाषाक स्वरूप जँकि निरंतर परिवर्तनशील रहैत अछि आ एक्के समयमे विभिन्न स्थान पर ओकर भिन्न-भिन्न स्वरूप, बजबाक शैली आ शब्द-भंडार केर अस्तित्व एकटा वास्तविकता थिक तँ ओकरा एकटा स्थाई आ अपरिवर्तनशील रूप देबा लेल आवश्यकता होइत छैक व्याकरणक जे ओकरा एकटा बान्हल आ अनुशासित लिखित रूप प्रदान करैये। यद्यपि लोक-व्यवहार ओकरा नव-नव स्वरूप दैत चल जाइछ जे कालक्रमानुसार स्वीकार्य भए जाइछ। मैथिली भाषाक अलग अलग क्षेत्रमे प्रचलित अलग अलग

रूप कखनोकाल अलग भाषा होएबाक भ्रम सेहो उत्पन्न करैये आ किछुगोटेक निहित स्वार्थवश कतेको बेर एकरा विमर्शक केंद्रमे आनबाक प्रयास सेहो देखना जाइत अछि। एहेन परिस्थितिमे मैथिलीकेँ जीवन प्रदान करबामे मुख्य भूमिका ग्रामीण क्षेत्रक ओहि कोटि कोटि सामन्य लोकक छन्हि जे एकमात्र एकरे टा अपन संवादक माध्यम बनौने छथि। आ से एहेन लाखो व्यक्ति, गाम-घरक गरीब-गुरबा आ निरक्षरजन एखनो मैथिलीकेँ जियाकेँ रखने छथि।

विभिन्न भाषाक एक-दोसरसँ समागमक फलस्वरूप शब्दक आदान-प्रदान होइत छैक। कतेको बेर तँ एहिसँ वर्णसंकर भाषाक उदय अथवा भाषामे विकृति अएबाक सेहो संभावना रहैछ मुदा नव स्थान, परिवेश ओ संस्कृतिसँ संपर्क होएबाक कारण थोड़बो-थोड़ ई प्रक्रिया अवश्यंभावी होइछ आ एकरा कोनहु प्रकारें रोकलनहिम जा सकैये। मैथिलीभाषी एकटा बड़ पैघ जनसमुदायक प्रवासक कारण ई घटना थोड़-बहुत रूपमे मैथिली संग सेहो भेलैये। यद्यपि एहिसँ मैथिलीक आओर बेसी समृद्ध होएबाक संभावना अवश्य कहल जा सकैये किंतु आन-आन भाषाक एहेन शब्द जकर पर्याय मैथिलीमे पहिनहिसँ छैक तकर अएलासँ मैथिलीक अपन नैसर्गिक शब्द-भंडार क्षीण होएब अवश्यंभावी सन बुझना जाइछ आ जकर दूरगामी प्रभावसँ आँखि नहि मूनल जा सकैये। बदलल भोगोलिक परिस्थितिमे रहन-सहन, वेश-भूषामे आएल अंतर ओ किछु अंशमे भेल सांस्कृतिक परिवर्तनक कारण बहुतो एहेन वस्तु, परिधान, उपकरण इत्यादिसँ संबंधित शब्द क्रमश: लुप्त कही वा प्रचलनसँ बाहर भेल चल जा रहल अछि परंतु एहि प्रक्रियाकेँ रोकबाक कोनो उपाए नहि।

मैथिली भाषाक भविष्य लेल सबसँ पैघ संकट बुझना जाइत अछि विद्यालयी शिक्षा आ मुख्यत: प्राथमिक शिक्षासँ मैथिलीक पढौनीकेँ बाहर निकालि देल जाएब, आ सेहो ओहि भूभागमे जतए ई मातृभाषाक रूपमे अदौकालसँ स्थापित रहल अछि। यद्यपि महाविद्यालय एवं अन्य प्रतियोगिता परीक्षा सबमे मैथिली भाषाक उपस्थिति देखना जाइत अछि जाहिसँ अपन मोनकेँ संतोष देबाक प्रयास कैल जा सकैये मुदा प्राथमिक स्तर पर एकर शिक्षाक प्रावधान नहि रहबाक कारण दिनानुदिन क्रमश: एकर लोप होएबाक संकटसँ आँखि नहि मूनल जा सकैये। मैथिली भाषाक अध्ययन केर बहुत अंशमे व्यावसायिकतासँ असंपृक्त रहब आ ओकरा द्वारा शिक्षणेतर कोनो प्रकारक रोजगारक सृजन हेतुप्रयास नहि कएल जेबाक दूरगामी दुष्परिणाम संभव छैक।

मैथिलीमे यद्यपि साहित्य-सृजन भए रहलैये आ से गद्य, पद्य दूनूमे, कवितामे विशेष मुदा आन-आन विधामे सेहो किंतु कोनो भाषाक साहित्य केर पहुँच समाजक एकटा विशेष वर्ग तक सीमित रहैछ। समाजक एकटा पैघ वर्ग तक ने तँ ओकर पहुँच रहैत छैक आने ओकरा प्रति आम जनमानसक मोनमे कोनो जिज्ञासा। समाजक अधिकतम साक्षर वर्ग तक पहुँचि पबैत छैक ओहि भाषाक पत्र-पत्रिका, जकर अभाव मैथिलीमे देखना जाइत अछि। 'मिथिला मिहिर'सँ पहिनहुँ आ दुर्भाग्यवश ओकर प्रकाशन बंद भेलाक बादो देशक विभिन्न भागसँ अद्यावधि अनेक पत्रिकाक प्रादुर्भाव भेल किंतु ओहिमेसँ अधिकांश अलग-अलग कारणसँ असमय काल-कवलित होइत गेल आ जे किछु वर्तमानमे कोनो तरहें प्रचलित अछि ओकर पाठकवर्ग अत्यंत सीमित रहबाक कारण ओकर प्रभाव ओ उत्पादकता अत्यल्प कहल जा सकैये। कारण जे किछु रहल होइक किंतु दुखद सत्य इएह छैक जे वर्तमानमे मैथिली भाषा केर एक्को टा दैनिक समाचार-पत्र नहि अछि। जे किछु पत्रिका नियमित अथवा अनियमित रूपें मासिक, त्रैमासिक वा अर्धवार्षिक प्रकाशित होइत अछि ओहो मूलत: साहित्य आधारित। जें सर्वसाधारण जनता केर रुचि अथवा महत्त्वक सामिग्री ओहिमे नहि पाओल जाइत अछि तैं एकटा विशाल जनमानस तक ओकर पहुँच बनि पाएब अत्यंत कठिन।

वस्तुत: वर्तमान कालमे मैथिली भाषाक उत्थान लेल एकटा सबल जन-आंदोलनक आवश्यकता परिलक्षित होइत अछि जाहिमे समाजक सभ वर्गक सम्पूर्ण सहयोग प्राप्त हो, जे शासन आ व्यवस्थाक सोझाँ प्रकट करए मैथिलीभाषी (डीही आ प्रवासी दूनू) केर अंतस्थलमे उधिआइत मातृभाषाक लेल अगाध प्रेम, आ जकर लहरिमे मैथिली भाषाक विभिन्न रूपकेँ प्रयोग कएनिहार जनसमुदायक बीच शनै: शनै: उठैत अपरिचितताक देबार ढहि जाए। आवश्यकता छैक भाषा आधारित जनगणनामे अपन समेकित संख्याबलकेँ प्रमाणित करैत प्रयास करबाक जे मैथिलीकेँ पुन: अपन ओ छिनाएल अधिकार भेटैक, विद्यालयक शिक्षामे प्राथमिक कक्षासँ उच्च कक्षा धरि एकटा अनिवार्य विषयक रूपमे पुन: वैह स्थान भेटैक जे आइसँ बीस पचीस वर्ष पहिने धरि प्राप्त छलैक। यद्यपि नीक तँ ई रहितैक जे प्राथमिक कक्षामे शिक्षाक माध्यम मातृभाषा रूपमे मैथिली होइक मुदा ओहिलेल क्रमबद्ध आ चरणबद्ध रूपेँ पाठ्यक्रम, पुस्तक ओ अन्यान्य संसाधन केर समुचित आपूर्ति लेल सेहो प्रयास आरम्भ हो आ से जतेक संभव हो ततेक शीघ्रातिशीघ्र कएल जेबाक आवश्यकता छैक। संगहि जनमानसमे अपन मातृभाषाक लेल सम्मान, एकटा गौरवबोध जगएबाक नितांत आवश्यकता छैक जाहिसँ दू गोट मैथिलीभाषीक बीच कोनो सार्वजनिक स्थानक संगहि घरक चहारदिबारीक भीतर सेहो संवादक माध्यम मुख्यत: मैथिली रहए जे भविष्यक संततिक ह्रदयमे सेहो मैथिलीक स्थान सुनिश्चित करए आ तखनहि हमरालोकनि मैथिली भाषाक भविष्यक प्रति आश्वस्त भए सकैत छी।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार(2021)...

जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास 'पंगु'केँ साहित्य अकादेमी पुरस्कार (मूल), अनमोल झाक कविता-संग्रह 'लागि जो फूल अकाश'केँ साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार एवं अमित मिश्रक कविता-संग्रह 'अंशु बनि पसरि जाएब'केँ युवा पुरस्कार प्रदान कएल गेलनि अछि।

अनुवाद पुरस्कार(2021)क लेल स्व. शिखा गोयलक 'स्मरणगाथा' एवं 2022क बाल साहित्य पुरस्कार वीरेंद्र झाक 'उड़न छू' आ युवा पुरस्कार नवकृष्ण ऐहिक (रूपेश कुमार झा)क 'खुरचन भाइक कछमच्छी'केँ देल जएबाक घोषणा भेल अछि।

अनुप्रास परिवार दिससँ हिनका लोकनिकेँ हार्दिक बधाइ एवं शुभकामना।

खाली बोतलक निस्सा

श्याम दरिहरे

19 फरवरी 1954 - 25 जून 2021

झारखण्ड सरकारमे डिविजनल कमाण्डेंटक पदसँ सेवानिवृत्त मैथिली आ हिंदीक प्रतिष्ठित कवि, कथाकार आ उपन्यासकार श्याम दरिहरे जीक तीन गोट कथा-संग्रह 'सरिसोमे भूत', 'बड़की काकी एट हॉट मेल डॉट कम' आ 'रक्त सम्बन्ध' प्रकाशित आ प्रशंसित कृति छनि। उपन्यास 'घुरि आउ मान्या', 'जगत सब सपना', 'हमर जनम किए भेलै हो रामा' आ 'बाती कोन जराउ', एकर अतिरिक्त मैथिली कविता-संग्रह 'क्षमा करब हे महाकवि' आ हिंदी कविता-संग्रह 'गंगा नहाना बाकी है' सेहो बेस चर्चित कृति छनि। 'सरिसोमे भूत'क लेल हिनका किरण सम्मान, रहिका एवं 'बड़की काकी एट हॉट मेल डॉट कम'क लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार आ तिरहुत साहित्य सम्मान, हैदराबाद प्राप्त छनि। धर्मवीर भारतीक प्रसिद्ध काव्य-कृति 'कनुप्रिया'क मैथिली अनुवाद बेस चर्चित छनि। ब्रजकिशोर सम्मानसँ सम्मानित, घनीभूत मानवीय संवेदनाक कवि दरिहरेजीक कवितामे भावना, करुणा आ प्रेम, जीवनक प्रति अशेष आस्था आदिकेँ अकानल जा सकैत अछि। मैथिली साहित्यक लेल अपूरणीय क्षति भेल अछि जे आइ ओ हमरालोकनिक बीच सदेह नहि छथि। मुदा, मैथिली साहित्याकाशमे ओ अनन्त काल धरि जगमगाइत रहताह।

एकटा इमरजेन्सी मिटींग चलि रहल छलैक शराब सभक। देशी-विदेशी ब्राण्ड, देशी पाउच, महुआ आ हड़िआ सभ उपस्थित छल। सभ चिन्तामग्न छल। सभक चिन्ता एके छलैक। सरकार ओकरा सभकेँ उपटाइए देब' पर किएक बिर्त्त छैक से ने जानि। जँ सत्ते ओ अइ राज्यसँ खेहारि देतैक सभकेँ तँ कत' जाक' लेत ओ सभ शरण। की हेतैक ओकर सभक अगिला कदम। ओही फिकिरमे सभ ओझराएल छल।

एकटा कम निस्साबला शराब ठाढ़ भेल, ''भाइ लोकनि! हमर सभक जे एतेक जनसंख्या बढ़ल आ लालसा ठेकल अकाश से सभटा अही मुख्यमंत्रीक किरदानी छैक। तखन आइ बड़का साधु बन' चलल अछि।''

''से कोना यौ?'' एकटा देशी भट्ठाक महुआ दारू पुछलकै।

''तौँ सभ तँ चुप्पे रह अगिलेसुआ नहितन। तौँही सभ गामे-गाम, टोले-टोल हा-हड़कम्प मचा देलहिन जाहि कारणे आइ हमरा सभकेँ ई दिन देख' पड़ि रहल अछि।'' एकटा विदेशी शराबक बोतल बीच्चेमे डपटि लेलकै।

''हइ तौँ अपन बड़प्पन अपना लेल राख। तौँ बड़का लोकक निस्सा तँ हमहूँ सभ जन साधारणक खासम-खासे निस्सा छी। सौंसे राजमे धन्न हमर सभक परचार जे तोरो सभक एतेक बिक्री-बट्टा बढ़लौ। आइ जे एतेक जोरसँ बाजक मुँह भेलौए से हमरे सभक घरे-घर परचारक कारण। सेहो हम सभ की अपना मोने गैरकानूनी पसरि गेलिऐ? यैह मुख्यमंत्री सरकारी खजाना भरबाक लोभे हमरा सभकेँ घरे-घर पहुँचौलक। आइ ओ जे सतबरती बनि लिअए, मुदा लोककेँ पानि छोड़ि दारुएक सेवन प्रारम्भ वैह करबौने छै।'' देशी पाउच कहलकै।

''तौँ अपन जुस्ता हमरा नइ देखा रे देशी पाउच! एकटा व्हीस्कीक बोतलक दाममे सौंसे ड्राम बिका जेतौ तोहर! आ गाल तँ तेना बजबै छें जेना कतेक महान।'' एकटा दोसर व्हीस्कीक बोतल टिपलकै।

''तौँ सभ चुप रहबें कि नहि। माथ पर विपत्ति बिसाएल छै तकर निदानक चिन्ते नहि आ अपनेमे मथ-फुटौअल कर' पर बिर्त्त अछि सभ।'' फेर वैह पहिलका शराब जे असलमे विदेशी सैम्पेनक देशी संस्करण छल बाजल।

सभ सटकि गेल।

तखन फेर ओ देशी सैम्पेन बाजल, ''तौँ दुनू गोटे अपना जगह ठीक छें। देशी दारूक पाउच जँ एतेक उताहुल नहि भेल रहितै तँ आइ ई सर्वनाशक दिन देखबाक समय नहि अबितै। तहिना इहो बात सत्ते छै जे ई देशी पाउच सभ सेहो अपना मोने ओहन उत्फाल नहि मचौलकइ। एकरो पाछू ओही मंत्रीक हाथ छै। वैह गिरगिट जकाँ अपन रंग बदलैत रहैत छै।''

''से ई मंत्री की घोड़ा-घोड़ीक माउस खएने छै जे एना करैत छै?'' एकटा ब्राण्डी पुछलकै।

''देखहिन ई मुख्यमंत्री छै बड़का शातिर खेलाड़ी। मुख्यमंत्री पाँच साल लेल वोटसँ चुनाइत छै। पछिला मुख्यमंत्री पनरह बरिसमे खाली लूटहेमे लागल छलैक। अपन सम्पूर्ण खनदानकेँ धन बटोर पर लगा देने छलैक। गाय-महींसक नादिसँ सानी धरि हँसोथि लैत छलैक। ओहि पनरह सालमे ओ खजाना खाली क' देने छलैक। ई मंत्री जखन कुर्सी सम्हारलक तँ खजानाक हाल देखि चकबिदोर लागि गेलै जे एहन खाली खजानासँ की ओ नहाएत आ की गारत। तखन ओ बजौलक पदाधिकारी सभक मिटिंग। पदाधिकारी सभ तँ आर बड़का शैतानक बाप होइत छै। ओ सभ मीलिक' नवका सरकारक कान फुकलकै जे पुरना मुख्यमंत्री खाली जातियेक कारण पनरह बरस गद्दी पर नहि रहलै। ओ तड़िपिब्बा सभक लेल ताड़ी आ माछक चखना फ्री क'क' बड़का वोट बैंक बना लेने छलैक। जँ ई सरकार सेहो चाहए तँ एहने एकटा बड़का दाओ मारि सकैए।

''से कोना?'' नवका मुख्यमंत्री पुछने छलैक।

''सर देखिऔ!'' मुख्य घाघ पदाधिकारी कहने छलैक, ''राज्यक एकटा बड़का जनसंख्या ताड़ी नहि पिबैत छैक। ओकरा चाही देशी दारू। एखन ओ सभ चोरा-नुका क' पिबैत अछि किएक तँ लाइसेन्स बला दोकान बड़ कम छैक। जँ देशी दारूक भट्ठा गाम-गाम खोलि दी आ बिक्रीक ठेका टोले-टोलमे द' दिऐक तँ दरूपीब्बा सभक एकटा बड़का वोट बैंक तैयार भ' जायत। राजस्वक बड़का श्रोत बनि जाएत से फराक। एके लाठीसँ दुनू साँप मरि जाएत। अहाँक राज सभ दिन बनल रहत आ मलाइ कटबाक जोगाड़ से भ' जायत। पुलिस आ दारू विभाग चानी काटत से अलग।''

वजीरकेँ ई बात अरघि गेलैक। ओ सीधे अपन दरबारमे गेल आ अपन प्रस्ताव मंत्रीमंडलक समक्ष राखि देलकैक। कनेक काल लेल गुम्म भ' गेल। तखन मुख्यमंत्री आगू कहलकै, ''देखिओ बन्धु लोकनि, खजाना खाली छैक। आन सभ राजस्वसँ मात्र कर्मचारी सभक वेतनादिक खर्च चलैत छैक। विकासक लेल एकटा छदामो ने बचैत छैक। तखन सड़क, पुल, पुलिया, बिजली, बाढ़ि, सूखाड़ सभक बन्दोबस्त कोना क' करबै। जँ से नहि हेतैक तँ जनता चुप नहि बैसत। तँ ई एकटा सहज आमदनीक उपाय अछि। जनताक पैघ भाग दारूक निस्सामे रहत तँ आन्दोलनो सभ कम हैत आ खजाना भरल रहत अलग। तँ ई सभसँ नीक उपाय अछि।''

''कोनो आन उपाय नहि छैक?'' किछु मंत्री सशंकित छल।

''छैक ने किए! तकबै तँ कोनो ने कोनो उपाय भेटबे करत। एकटा दोसर उपाय छैक जे सभ वस्तु पर जबरदस्त टैक्स लगा देल जाइक। मुदा तकर प्रतिक्रिया जे हेतै से सम्हारब कठिन भ' जाएत। दारू तँ टैक्स नहि छैक। ई तँ दोकान छैक। ककरो संग कोनो जबरदस्ती नहि। जे चाहए से कीनए आ आनन्द उठाबए। तँ एतेक पलंजर करबाक कोन काज जखन कि एकदम सहज उपाय हाथमे अछि।'' मुख्यमंत्री अपन एकलंगी लगौने छल।

तखन मंत्रीमंडल चारू नाल चित्त भ' गेल छलैक। तकर बादक खिस्सा तँ अहाँ सभ गोटे जनिते छी।'' एतेक कहिक' ओ सैम्पेन बैसि गेल।

''हम अगिला खिस्सा कहू?'' देशी पाउच कहलकै।''

सभ सभासद ओकरा दिस देख' लगलै। केओ किछु नहि बाजल।

पाउच आगू बाजल, ''नवका ठीकेदार सब तँ एकठामक लाइसेन्स लेलकै आ टोले-टोल फ्रेन्चाइजी बाँटि देलकइ। कि चाह-पानक दोकान कि लटगेनाक दोकान कि मिठाईक दोकान! सभ ठाम दारू बिकाए लगलैक। पुलिस आ एक्साइज बला विभाग सभ प्रसन्न भ' गेलै। पढ़ुआ सभ जँ शिकाइतो करै तँ चोट्टे कहि दै जे सरकार जखन अपने दारूक व्यापार करै छै तँ हम सब की करब। अहाँ नइ पीबू मुदा दोसरकेँ पीबासँ रोकबै तँ राजद्रोहक मोकदमा चलत। तँ राज्यक नीक लोक डरे सटकल छल आ देशी दारूक डंका चारू दिस बाज' लगलै। दारूपीब्बा सबहक बीच सरकारक जय-जयकार होइत छलै। लोक अपन घरक सम्पैत, बहूक नूआ गहना धरि बेचिक' पीब' लागल। शहरमे म्यूजियम बनाबक नाम पर हजारो करोड़ रुपया उड़' लगलै। एहिना एकसँ एक तुगलकी योजनाक नाम पर रुपयाक लूट होइत रहलै। गामे-गाम साँझमे गाछी-बिरछीमे दारूक हाट सज' लगलै। खुजलइ घरे-घर मधुशाला आ घर दुआर केवाड़ धरि भेलइ मतवाला। जे सब पहिले कहिओ चिखनो नइ छल सेहो सब हाथ अजमाब' लागल आ किछुए दिनमे दारूपीब्बा बनि गेल।''

''तखन आब किए अइ सरकारक माथमे कीड़ा काट' लगलैए जे हमर सभक नाश कर' पर लागि गेलए?'' एकटा रेड वाइनक बोतल पुछलकै।

''जखन कोनो चीजक अति हेतै तँ यैह ने हेतै। गामे-गाम जखन निस्सा पसरि गेलै आ समूचा राज्य तड़मड़ाए लगलै, तँ राज्यक स्त्रीगणक नजरि फुजलै। ओ सब अपन-अपन समूह बनाक' नेता सभकेँ खेहारब शुरू कएलक। कतेको नेताकेँ बाढ़निक मारि पड़लै। दस बरस धरि चानी कटलाक बाद मुख्यमंत्रीकेँ चुनाव हारक डर भ' गेलै। तखन ओ एक बेर फेर वेश्यासँ तपस्विनीक भेष पकड़बाक नाटक केलक। ओ एहन पलटी मारलक जे सभ विरोधी तकिते रहि गेल। ओ अपने पसारल गूहकेँ साफ करबाक वादा क' लेलकै आ वोटक दोबर फसिल काटि लेलक। तैओ मुख्यमंत्री बनबाक लेल अपन पार्टीक सट्ठा नहि भेलैक। तखन ओ फेर ओही नेतासँ घेंटाजोरी क' लेलक जे अपन सात पीढ़ीक लेल धनक ओरिआओन करबाक लेल गाय-महींसक चारा धरि खा गेल छलैक। जखन की ओकरे अत्याचारसँ त्रस्त भ'क' राज्यक जनता अइ नवका के चुनने छलै। ओही कुकर्मकेँ नुकाब' लेल ई महात्माक बाना ओढ़ि लेलक। तँ सभसँ पहिले वैह निर्लज्ज भावे दारूक निन्दाक ढ़ोंग कर' लागल। आ से ओ बन्न कइएक' रहल किएक तँ ओकर बेर निकिलि गेल छलै।'' सैम्पेन बाजल।

''एतबे नइ ई ढोंगी जहाँ तहाँ शराबक विरूद्ध प्रवचन सेहो करौलक।'' व्हीस्की बाजल।

''परबचन के केलकै आ की कहलकै?'' पाउच बाजल।

''से की तौं सभ नइ सुनलें ओ प्रवचन? के की कहलकै से आब हमरो मोन नइ अछि।'' वैह व्हीस्की बाजल।

''अनकर तँ नइ मुदा एकटा सत्तेक महापुरुषक कहल किछु बात हमरा मोन अछि। जँ सभक विचार होअए तँ हम कहि सकैत छी।'' एकटा बीयरक बोतल बाजल।

''तो कोन निस्सा छें जे अइ सभामे आबि गेलें? तइ परसँ आब तोहर परबचन सेहो सुनू? कलेमचे बैसल रह।'' देशी दारूक पाउच ओकरा डपटलक।

''रे पाउच! एना किए कहै छहिन तौं एकरा? निस्सा तँ एकरोमे छैकेँ। तखन हँ कने कमजोर अछि बेचारा। तैओ एकर बात तँ सुनि ले। बाज रे बीयर बाज की मोनमे रखने छें महापुरुषक प्रवचन।'' सैम्पेन कहलकै।

बीयरक बोतल खखसि क' बाजल, ''ओ जे कहलखिन से हुनकेँ शब्दमे सुनैत जाउ। 'मनुखक जिनगी दुखसँ भरल छैक। दुखसँ बचबाक दूइए टा उपाय छैक। एकटा छैक बेहोशी आ दोसर छैक जागृति। दुखक अनुभव भेल तँ जाक' शराब पिबि लेलहुँ दुख बिसरा गेल कि कहू जे अपन विस्मृति भ' गेल। मुदा ई उपाय तँ एकदम अस्थायी अछि। दू घड़ीक। जहाँ निस्सा उतरल कि फेर दुख घेरि लेलक। मद सेहो मात्र शराबेक नहि होइत छैक। मद तँ धनक, पदक, सेक्सक आ सत्ताक सभक होइत छैक। एहन धरि जे निस्सा यश आ कीर्तिक सेहो भ' जाइत छैक। ई सभटा निस्सा बजारमे भेटैत छैक। कीनल जा सकैत छैक। हँ एकर सभक बजार आ दोकान भिन्न-भिन्न छैक। मुदा सभटा मद कि निस्सा कखनो ने कखनो उतरैत छैक अवश्य। कोनो दू घड़ीमे कोनो दू दिन आ दू घंटामे ओ कोनो किछु वर्षमे उतरैत छैक। तँ बेहोशी दुख मिटाबक स्थायी उपाय नहि किछु काल लेल बिसराबक उपाय छैक। तँ दुखसँ निवृतिक एकमात्र उपाय छैक अपन चैतन्यकेँ प्राप्त करब। जेना-जेना चैतन्यक मात्रा बढ़ैत जाएत तहिना-तहिना दुखक अनुभव कम होइत जाएत। मुदा ताहि लेल जे साधना छैक से कठिन आ दु:साध्य छैक। तँ लोक शराबक निस्सामे अपन दुख बिसराबक प्रयासमे अपन दुख आर बढ़ौने जाइत अछि। सन्त लोकनि मात्र एहि दुआरे शराबक विरोध करैत छथि आ संगे ओ उत्थानक लेल विकल्प सेहो दैत छथि। निस्सा तँ आत्मबोध पर आर बेसी मलिनताक आवरण चढ़ा दैत छैक। सत्तालोलुप नेता द्वारा शराब विरोधक पाछू मात्र ओकर स्वार्थ छैक। आर किछु बुझबाक ओकरा अवगतिए कहाँ छैक जे दुखसँ निवारणक कोनो उपाय देतैक कि कहतैक। अपनाकेँ बेहोश क' लेलासँ ककरो जिनगीक अन्हरिआ दूर नहि भ' सकैत छैक; एहि लेल एकटा दीया जराबक खगता छैक।''

''अइ प्रवचन सभक कोनो असरि दारूपिब्बा सब पर नइ पड़ि सकैत छै। हम नीक जकाँ एकरा सबकेँ आ अइ नेताकेँ जनैत छिऐ।'' पाउच टपकल।

''मुदा जनता तँ शराबबंदीक समर्थन क' रहल छै आ विपक्षक नेता सेहो।'' एकटा देशी रमक बोतल बाजल।

''जनता एहि प्रवचनक कारणे समर्थनमे नहि छैक। असलमे साधारण जनता कहिओ शराबबन्दीक समर्थन आ विरोधमे रहबेने कएल। अदौसँ चुपचाप अति नियंत्रित रूपे शराब चलैत रहल छैक। यैह नेता अपन खजाना भरबाक लेल शराबक नदी बहौलक। घरे-घर आ जने-जन शराब-दारू पहुँचौलक। जनता दारूक मारिसँ त्राहि-त्राहि एही मुख्यमंत्रीक कारणे कर' लगलै। तँ जखन ई हत्यारा, ढोंगक चद्दरि ओढ़ि अपने अत्याचारकेँ बन्द करबाक बात कहलकै तँ त्रस्त जनता समर्थन कर' लगलै। जनता तँ मात्र एहि शराबी- शोषण आ अत्याचारक विरुद्ध अछि।'' बीअरक बोतल बाजल।

''देखह इतिहास आ भूगोलक बखान तँ बेस करै जाइ गेलह। आब सोचक बात छैक जे हम सभ की करी।'' फेर देशी सैम्पेन बाजल।

एतेक कालसँ चुपचाप बहस सुनि व्हीस्की बाजल, ''सुनह, हम एकटा बात कहैत छिअह। एतेक आदंकक कोनो काज ने। हमर सभक रक्षा करब नेता आ ओकर पछुलगुआ सभक मजबूरी छैक।''

''से कोना?'' ब्राण्डी पुछलकैक।

''साधारण शराबीकेँ दारू नहि भैटतैक तँ मोन मसोरि क' रहि जैत मुदा

सत्ताक मदमे चूर अइ नेता आ ओकर चमच्च सभकैँ शराब अवश्य चाही। देखौका नहि भेटतै तँ चोरौके सही। मुदा किछु ने किछु जोगार ओ सभ अवश्य करत। फेर ओकर देखादेखी ओकर सभक मित्र आ बेपारी शुरू करतै। तखन भारी तस्करी प्रारम्भ भ' जेतै। पुलिस आ मद्यनिषेध विभाग हमरे सभक बल पर जीबैए। ओ सभ चुप थोड़बे ने बैसल रहतै!'' व्हीस्की कहलकै।

''मुख्यमंत्री पर घमंडक निस्सा तँ सदिखन चढ़ले रहैत छै। देखै नइ छहक, ओ अपनासँ पैघ भगवानोकेँ कहाँ बुझै छै।'' दारूक पाउच बाजल।

''ओ फेर जकरासँ मिलिक' सरकार बनौलकए ने वैह ओकर सर्वनाश क' देतै। ओ सभ एखनो खाली दबकल छलै सुधरि थोड़बे ने गेलैए।'' रम बाजल।

''हँ, रमभाइ एकदम ठीक कहलकै। नेता सभ तँ अपने शराब, गाँजा, भांग आदिक आदती अछि। सभ तस्करीसँ माल मँगाओत आ निस्सा करत। हम सभ अपन-अपन तस्करीक क्षेत्र बाँटि ली आ कहुना जिबैत रही। नीक दिन आब'मे बहुत वर्ष नहि लगतै।'' व्हीस्की कहलकै।

''हम मंत्री आ ओकर परिकरक परिसर लेब।'' देशी दारूक पाउच अलगटेट जकाँ बाजल।

''इह! एकर मुँह बड़ चिक्कन! मंत्री सभक आवासमे तोरा केओ पुछबो करतौ रे महुआ? ओइठाम तँ एकछेहा विदेशी चलै छै।'' बीयर बाजि उठल।

आब स्काचकेँ नहि रहल गेलैक। बाजल, ''देशी दारूक हनक बेसी होइत छैक। आ ई सरकार एहि राज्यक आ हमरो सभक सत्यानास सेहो देशीए दारूएक पाउचसँ दस बरस धरि करैत रहलैए। ओकर सभक शुरूआत पाउचसँ भेल छैक आ एखनो ओही स्तरक लोक अछि ओ सभ। तँ एहि पाउचक माँग विचारणीय छैक।''

सभ सहमति व्यक्त कएलक। सभक सहमतिसँ क्षेत्रक बटबारा क' देल गेलैक। अन्य छोटका मंत्री आ नेता सभ आन शराबक क्षेत्रमे पड़लैक मुदा देशी दारू मुख्यमंत्री, सहयोगी पार्टीक नेता आ ओकर पछुलगुआ अपराधी सभक क्षेत्र हथिआ लेलक। सभा समाप्त होअएसँ पहिले सभ शराब सप्पत खएलक जे अपन-अपन क्षेत्रमे खूब मनोयोगसँ नाश करत।

ओहि बैसकीक किछुए दिनक बाद मुख्यमंत्री अन्हरिआ सहयोगी पार्टीक कहला पर बुद्धिजीवी आ सकारात्मक तत्व सभसँ झगड़ा बेसाहि लेलक। तकर बाद ओकर घमंड एहन बढ़लैक जे ओ ओही अन्हरिआमे पैसि अपन घर बना लेलक जाहिसँ निकालबाक लेल राजक जनता ओकरा वोट देने छलैक। अन्हरियाक संगति होइते मुख्यमंत्री अपन अहंकारक हनक देखा देलकै। ओ एकटा अध्यादेश निकाललक जे एहि राज्यमे जकरा घरसँ शराबक खालीओ बोतल, ओकर मुन्ना, ओकर रैपर अथवा खाली पाउच भेटतैक तकरा सपरिवार आजीवन कारावास देल जेतैक। जकरा घरसँ दारुक गन्ह औतैक ओहि घरक बूढ़-बीमारो माए-बापकेँ फाँसी चढ़ा देल जेतैक आ नाबालिग सभकेँ दस वर्ष धरि सुधारगृहमे बन्न राखल जेतैक। जकरा मुँहसँ शराबक कि शराब सन गन्ह निकलतै तकरा ठामे फाँसी द' देल जेतैक। पुलिस आ शराब विभाग ककरो घरमे कखनो ढुकि सकैए। ओ सभ किछुओ क' सकैए ओकरा केओ नहि रोकतैक।

तकर बाद सौंसे राजमे कोहराम मचि गेलै। पुलिस आ शराब विभागक कर्मचारी मिलिक' जनताक शोषण कर' लागल। ओ सभ शराबक बोतल ल'क' घरे-घर जाए तकर बरामदगीक भय देखाक' मुद्रामोचन करए लागल। सरकारी अपराधी सभ शराबक तस्करीमे जुटि गेल। हत्या-बलात्कार-लूटक घटनाक बाढ़ि आबि गेलैक। अपराधी सभक गाड़ीक आगू-पाछू चलनिहारक हत्या होअए लागल। रेपीस्टकेँ खुलेआम घुमबाक अवसर देल गेलैक। पत्रकारक हत्या सरेआम होब' लगलैक। बड़का हत्यारा सभ जेलसँ छुटिक' घूम' लागल। एक बेर फेर राजमे पलायनक स्थिति आबि गेलैक। व्यापारी, उद्योगी सभ आन ठाम ठेकान ताक' लागल। अहंकारी मुख्यमंत्री अपन दम्भमे एहन धुत्त भेल जे मालजालक सानी चोर सहयोगी पार्टीक छोड़ि ककरो किछु नहि सुनैत छल। नित नव-नव आदंक पसर' लागल। जनता तँ सभ दिनक मुँह दुब्बर, से त्राहि-त्राहि करैत रहल।

ओही बीचमे एकटा घटना भेलैक जे सहयोगी पार्टीक ओहिठाम दारूक देहाती ठीकेदार सभ एकदिन जुटल। गोहारि कएलक, ''सरकार! हम सब शुरूसँ अहाँक बन्हुआ वोटर छी। सब बदलि सकैए मुदा हम सब किन्नहुँ बदलैत छी। तखनो हमरा सबसँ ई सरकार दुरंगी करैए।''

''से की हौ?'' बॉस छगुन्तासँ पुछलकै।

''शहरी ठीकेदार सभ जखन अपन चोला बदलिक' स्मगलर भ' सकैए तँ राज्यक चौहद्दीक राज्यसँ पाउच अनिक' हमरो सबकेँ वितरणक अधिकार भेटबाक चाही। एहिमे जतेक कमाइ छै ततेक तँ शराबक शहरी स्मगलर सपनो ने देखत। हम सब अहाँक हिस्सा प्रतिमास पहुँचा देल करब।'' देहाती ठीकेदार बाजल।

''साफ-साफ बजइ जे कते पहुँचएबे?'' बॉस पुछि लेलकै।

''सरकार एक करोड़ प्रतिमास।'' ठीकेदार बाजल। ओ गणना कइएक' आएल छल।

''ठीक छैक। तौँ सभ काज शुरू क' दे। पुलिस आ शराबी विभाग किछु बजौ तँ हमरासँ बात करा दिहनि।'' बॉस आश्वस्त केलकै।

किछुए दिनक बाद एहि वार्त्ता आ आमदनीक सभ सूचना गुप्तचर विभागसँ मुख्यमंत्रीकेँ भेटि गेलैक। ओ तुरत अर्थमंत्रीकेँ बजौलक आ सभ बात कहलकै।''शराब-दारूसँ सरकारक खजानामे जतेक धन अबैत छलैक आ एखन शराबक स्मगलिंगसँ हमरा कोषमे जे धन आबि रहल अछि ताहिमे कतेक अन्तर छैक।'' पुछलकै।

''अहाँक कोषमे एक तिहाइ धन आबि रहल अछि सर।'' अर्थमंत्री कहलकै।

''जँ देहातीओ क्षेत्रमे दारू तस्करीक छूट द' देल जाए तँ कतेक धन आओत?''

''तीन गुणा सर। मुदा देहाती क्षेत्रक कमाइ तँ सहयोगी पार्टीक नेता हँसोथि रहल छथि।''

''हम सोचैत छी जे विरोधी पार्टी सेग फेर हाथ मिलाक' सरकार बना ली आ एकरा सरकारसँ दूर करी।'' मुख्यमंत्री बाजल।

''लोक की कहत सर जे शराब कमाइ लेल अहाँ पाला बदलि लेलिए!'' अर्थमंत्री बाजल।

''अरे लोकक बात छोड़ू। चुनाव एखन बहुत दूर छैक। अहाँ देहाती ठीकेदार आ तस्कर संग बैसकी क'क' सभटा फिक्स करू। हम सरकार बदलैत छी। हँ पब्लिकक मान दोसर दिस बहटार' लेल एकटा अध्यादेस निकालि दिऔ जे- जेना कतेक ठाम तीन बेर तलाक बजलासँ बौहु फराक भ' जाइत छैक तहिना जँ केओ तीन बेर शराब, शराब, शराब लगातार बाजत तँ ओकरा फाँसीक सजा भ' जेतैक। सभ पुस्तकालयक पुस्तकसँ शराब शब्द मेटाओल जाएत। शराबक तस्करीमे शामिल अपराधीकेँ फाँसी हेतैक। लोक एहि बातमे ओझराएल रहत आ अहाँ अपन काज सुतारैत रहब।'' मुख्यमंत्री कहलकै।

तकर बादसँ सभ गाममे पहिलहुँसँ बेसी सुभीतासँ दारू भेटि रहल छैक। अहाँक गामक तँ अहाँ कहब मुदा हमरा गाममे सत्ते बड़ सुविधा भ' गेलैए। आब घरे-घर डिलेवरी भ' जाइत छैक। कने दामे ने बेसी लगैत छैक। से तँ उचिते ने भाइ। डिलेवरी कर' वलाक कहब छैक जे ओकरा आब बहुत दुआरिक कुकुरकेँ कौरा पहुँचाब' पड़ैत छैक। हँ एकटा बात अवश्य भेलैए जे गाछीए-गाछी दारूक हाट लागब बन्न भ' गेलैए। आखिर कानूनो तँ कोनो चीज छैक कि ने!

मुखरित स्वर

डॉ. वीणा ठाकुर

दरभंगा, मिथिला (बिहार)

सम्पर्क : +91 9471640191

ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगाक स्नातकोत्तर मैथिली विभागक वरीय प्राध्यापिका एवं विभागाध्यक्षा आ साहित्य अकादेमी दिल्लीमे मैथिलीक पूर्व संयोजिकाक रूपमे प्रतिष्ठितश्रीमती वीणा ठाकुरक रचना संसार बहुत वृहत छनि। मैथिलीमे हिनक उपन्यास 'भारती', कथा-संग्रह 'आलाप', परिणीता' समीक्षा 'मैथिली रामकाव्यक परम्परा', 'विद्यापतिक उत्स', 'इतिहास दर्पण', 'वाणिनी', 'मैथिली गीत साहित्यक विकास आ परंपरा' एवं अनुवादक पोथी 'हाट-बजार' आओर 'आधुनिक भारतीय कविता संचयन : हिंदी' प्रकाशित छनि। एकरा अलावे 'विद्यापति गीत रचनावली', 'मैथिली प्रबंध काव्यक उद्भव ओ विकास' सहित कएगोट पोथी एवं पत्रिकाक संपादन सेहो कएने छथि।

सरस्वती सम्मानक लेल गठित मैथिली भाषा समितिक संयोजिका डॉ. ठाकुरकेँ हुनक कथा-संग्रह 'परिणीता'क लेल, साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित सम्मानित कएल गेल छनि।

वैदेही सौन्दर्यक प्रतिमा छथि। हुनक असाधारण आओर अनुपम सौन्दर्यक समक्ष आभूषण आओर देदीप्यमान भ' जाइत अछि। वैदेही तीन मासक छलीह, हुनक माय स्वर्ग सिधरि गेल छलीह, मुदा पिता-माय, बनिक' अत्यन्त दुलारसँ हुनक पालन-पोषण कयलनि। अपन सार्मथ्यक अनुसार सम्पन्न परिवारक ग्रेजुएट वरसँ अपन कन्याक विवाह कयलनि, संगहि समुचित उपहारक संग हुनका सासुर पठौलनि। ई घटना लगभग दस वर्ष पूर्वक थिक।

सासुरमे डेग रखलाक पश्चात् वैदेही कहियो नैहर नहि गेलीह, एहि मध्य तीनटा सन्तानक माय सेहो बनि गेलीह। वैदेहीक पिता छह मासमे अथवा सालमे एक बेर वैदेहीक सासुर जाइत छथि, कुशल-क्षेम पुछिक' घुरि जाइत छथि। चाहे कतहु रहय, मानव-मात्र अपन-आत्मीयव जनक कुशल-क्षेमक कामना करैत अछि। वैदेहीक पिता मोहन बाबूकेँ एहि बेर छह माससँ बेटीक कुशल समाचार प्राप्त नहि भेल छलनि। ओ कतेको पत्र लिखलनि, मुदा एकहुटाक उत्तर नहि भेटलनि।

वैदेहीक सासुर अत्यन्त सम्पन्न छनि। ओ सभ एखनहुँ जमीन्दार कहल जाइत छथि। वैदेही सासुर अयलीह तँ स्वत: जमीन्दारिणी बनि गेलीह। अदौकालसँ वैदेहीक सासुरमे माघी अमावस्या दिन, दान करबाक परम्परा रहल अछि। जाबत धरि वैदेहीक सासु जीबैत छलथिन, हुनकहि हाथे दान-क्रिया सम्पन्न होइत छल, आब एहि दायित्वक निर्वहण स्वयं वैदेही करैत छथि।

किछु वर्षसँ वैशाख पूर्णिमा दिन सेहो दरबार दिससँ परोपट्टा। भरिमे दानक वस्तु वितरित कयल जाइत अछि। एहि बेर एहि आयोजन हेतु आधा एकड़ क्षेत्रफलमे व्याप्त ओहि महलक चतुर्दिक पंडाल बनाओल गेल अछि। वैशाख प्रतिपदासँ वैदेही व्यस्त भ' जाइत छथि। आयोजन दिन जाहि सभ वस्तुक आवश्यकता होयत, तकर सूची अलग-अलग तैयार क' रखबा दैत छथि।

पूर्णिमा दिन जमीन्दारिणी वैदेही ब्रह्ममुहूर्तमे जागिक' स्नान कयलनि आओर पूजा-पाठ समाप्तक' पंडालमे प्रवेश कयलनि। प्रतिवर्ष सदृश सूर्योदयसँ पूर्वहि पण्डित, ब्राह्मण-वटुक, अहिवाती स्त्रीगण तथा गरीब-उपेक्षित अपन-अपन निर्देशित स्थान पर आसीन भ' जाइत छथि।

लगभग सात बजे जीमन्दारिणी सत्यकार कार्यक्रमक श्री गणेश कयलनि। ब्राह्मणगण मन्त्र-सूक्त एवम् श्लोकक पाठ कयलनि, उपहार प्राप्तक' जमीन्दारिणीकेँ आर्शीवाद देलनि। तत्पश्चात सभगोटे अपन-अपन घर घुरय लगलाह। दस बजेक लगभग लोकक भीड़ कम भ' गेल। पंडालमे दूर धरि बैसल लोकपर वैदेही दृष्टिपात कयलनि, हुनका अनुभव भेलनि जे हुनक आत्मीय व्यक्तिमेसँ कियो नहि आयल छथि। ओ पंडालमे बैसल प्रत्येक व्यक्तिकेँ ध्यानसँ देखलनि। हुनक हृदय व्यथित भ' गेलनि, 'एखन धरि कियैक नहि आयल छथि,..कियैक नहि अयलाह?

'चलित्तर, विश्मभर आओर हुनक कनियाँ दुखिया एखन धरि नहि आयल छथि। काल्हि साँझे हुनका सभकेँ समाद पठा देने छलहुँ। अहाँ स्वयं जा' क' हुनका सभकेँ लेने आउ।' चलित्तर मलिकाइनक आदेश सुनिक' तखनहि विदा भ' गेल। तावत् धरि अंग-वस्त्र आओर लोटाक ढ़ेरी घटि गेल छल। चाउरक बोरा लगभग खाली भ' गेल छल। मधुरक थारी सेहो लगचिया गेल छल।

काठक पैर, काँखमे दबाओल वैशाखीक सहारे विश्मभर एक-एक डेग साम्हारिक' रखैत चलल आबि रहल छलाह। हुनक कातमे चलैत दुखिया अपन हाथक सहारा दैत हुनका लेने आबि रहल छलीह। ओहि हृदयविदारक दृश्यकेँ देखिक' वैदेहीक आँखिसँ नोरक धार प्रवाहित होमय लगलनि। ओतय उपस्थित लोकसभकेँ प्रतीत भ' रहल छलनि, जे हुनक आँखिसँ नोर नहि अपितु शोणितक बून्द टपकि रहल छनि।

ई दृश्य जमीन्दारिणी गत चारि वर्षसँ देखि रहल छथि, मुदा प्रत्येक बेर हुनक दुख अहिना बान्ह तोड़िक' बहि जाइत छनि। नहि जानि कहिया ओहि पूण्य दम्पतिक दर्शनसँ हुनक हृदयमे प्रेमांकुर फुटि गेल छलनि।

वैदेहिक द्विरागमन भेलनि, तँ ओ सहजहि सासुर अयलीह। सासु राजमाता राजलक्ष्मी देवी हृदय खोलिक' हुनक स्वागत मात्र नहि कयलनि, अपितु अपन हृदयमे सेहो स्थान देलनि। एतबे नहि राजमहलक नियम-कानून, रीति-रिवाजक प्रशिक्षण सेहो देमय लगलीह। तथापि राजमाता अपन एकमात्र पुत्र विश्वनाथ बाबूक व्यक्तिगत जीवनक सम्वन्धमे कोनो स्पष्ट जनतब वैदेहीकेँ नहि देलनि।

विवाहक पाँच-छह वर्षक भीतर वैदेही दूटा सन्तानक माय बनि गेलीह। बाल्यावस्थामे हुनका व्यवहारिक ज्ञानक शिक्षा नहि भेटल छलनि, सम्भवत: माय नहि छलथिन तँ। मुदा बात-व्यवहारमे राजसीठाठ प्रकट करबाक विद्या हुनका जन्मजात भेटल छलनि। सासुर अयलीह, तथापि हुनक भीतर मिलनसारिताक गुण

विकसित नहि भेलनि। यैह कारण छल जे पतिक संग हुनक व्यवहार सामान्य कहियो नहि रहलनि। दुनू गोटेक मध्य सहज प्रेम विकसित नहि भेलनि। मुदा तकर सभसँ महत्वपूर्ण कारक-तत्व छल विश्वनाथ बाबूक विलासितापूर्ण जीवन-शैली। राजमहल हेतु ई सामान्य बात छल, पैघ लोकक जीवन-शैली तँ अदौकालसँ अहिना रहल अछि। मुदा वैदेहीकेँ ई सहज-स्वीकार नहि छलनि।

वैदेही ककरहुँसँ प्रत्यक्ष रूपसँ भेंट नहि करैत छथि। अपितु खबास-खबासिनी द्वारा वार्तालाप करबाक परिपाटी सदृश बनि भेल अछि। हुनक स्वभाव विचित्र भ' गेल छनि। सन्तानक संग सेहो हुनक व्यवहारमे वात्सल्य नहि छनि। एकबेर हुनक छह वर्षक पुत्र बीमार पड़ि गेल। डॉक्टर बच्चाक खान-पान, निन्दा आदिक विवरण पुछलनि। वैदेहीक स्थान पर खबासिनी सभटा जनतब डॉक्टरकेँ देलनि। ताहि पर डॉक्टर हुनका बुझबैत कहलनि जे, 'देवी जी, कमसँ कम वीमारीक स्थिति मे बच्चाक प्रति सावधानी राखब आवश्यक अछि। खवासिनी पर निर्भरता उचित नहि अछि।'

ई बात जमीन्दारिणी वैदेही देवीकेँ अत्यन्त अप्रिय लगलनि, आओर ओ तत्काल डॉक्टरकेँ बदलि देलनि। पतिक संग औपचारिक वार्तालाप आओर अधिकारी लोकनिक संग साक्षात्कार धरि हुनक जीवन सीमित रहलनि। ओ कहियो पतिक व्यवहार आओर हुनक अभिरुचिक सम्बन्धमे जिज्ञासु नहि रहलीह। ओहि महलमे वैदेही देवीक हेतु किछु कोठली आरक्षित छनि, विश्वनाथ बाबू हेतु अलग व्यवस्था अछि। एम्हर किछु वर्षसँ विश्वनाथ बाबू बीमार छथि। हुनक व्याधिक सम्बन्धमे वैदेही विशेष जिज्ञासासँ नहि तँ पूछताछ करैत छथि, पूछितो छथि तँ जमीन्दार समुचित उत्तर नहि दैत छथि। ओहि दम्पतिक मध्य मात्र आदर प्रदर्शित करबाक औपचारिकता बचल अछि।

जमीन्दारिणी वैदेही देवी ग्रीष्मकालमे भवनकेँ शीतल रखबाक प्रवन्ध करैत छथि। चैतमासमे वैदेही निर्णय ल' लैत छथि, जे एहि वर्ष कोन पहाड़ पर जयबाक अछि। मुदा दू वर्ष पूर्व हुनक समक्ष विकट विपदा उपस्थित भ' गेल छलनि। भोरे उठिक' टहलैत काल जमीन्दार विश्वनाथ बाबू वेहोश भ' क' खसि गेल छलाह, तथा हुनक वाणी बन्द भ' गेलनि। आरम्भमे तँ शहरक नामी चिकित्सक इलाज कयलक, मुदा आब स्थानीय चिकित्सक प्रतिदिन आबिक' हुनक परीक्षण करैत अछि। तँ पंडाल आओर टाट बान्हिक' ओहि स्थानकेँ शीतल रखबाक व्यवस्था कएल जाइत अछि। ओहि दिन बाँस ल' क' विश्मभर आओर दुखियाक जोड़ी जीमन्दारक महल दिस विदा भ' गेल। लोकगीत गबैत, यौवनक उमंगमे एक दोसरकेँ ठेलैत, खेलोड़ करैत ओ सभ राजमहल पहुँचल। तखन आठ बाजि रहल छल।

वैदेही देवी दुखिया आओर विश्मभरकेँ बुझबैत कहलनि जे पश्चिमी कोठलीक आगाँ ओसारा सदृश बनाक' टाट बान्हि देथि, जाहिसँ गर्मीक तीक्ष्णता भीतर नहि पहुँचत, संगहि वायुक प्रसारण सेहो होयत। एतेक बुझाक' ओ महलक भीतर चलि गेलीह।

'हमर राजा, काज शुरु करु। एतय-ओतय खाम्ह गाड़ि दियौ। रस्सी जेबीमे राखि लिअ आओर धोती थोड़ेक उपरक' बान्हि लिअ।' दुखिया अनुरोध करैत कहलनि।

'अहाँ बड़ पैघ-पैघ गप्प करैत छी। कोदारी ल' आउ, बैसल-बैसल खाली सलाह दैत छी....अछिने?' विश्म्भर अनुरागसँ कहलनि।

विश्मभर एक गज गहींर खाधि खुनिक' ओहिमे खाम्ह गाड़ि रहल छथि। दुखिया खाधिमे माँटि भरिक' घुरमुसक' रहल छथि। घुरमुसक काज समाप्त भेल तँ दुखिया देवालसँ सटाक' सीढ़ी लगा देलनि। लगभग बारह गजक उँचाईसँ ढ़लाउ बनबैत ओकरा सात-आठ गज धरि आनय पड़ल। एकटा सीढ़ीक लम्बाई पर्याप्त नहि छल, तँ दूटा सीढ़ीकेँ जोड़ीक' रस्सीसँ कसिक' दुखिया बान्हि देलनि। से देखिक' विश्मभरक ह्रदय उल्लाससँ भरि गेलनि, ओ कहलनि, 'प्रिय, एनाक' रस्सी बान्हि रहल छी जेना ब्रह्माजी गीठ्ठ' बन्हने होथि। इहो सोचलहुँ जे जौँ रस्सी ढ़ील भ' जायत अथवा टूटी जायत, तखन की हयत?'

'सोचलहुँ कियैक नहि? अहाँक गोबर-गणेश माँथमे ई बात आबि गेल। एना क' बन्हने छी जे टुटबाक सम्भावना अछिये नहि।' दुखिया उल्लाससँ कहलनि।

'ओह, कतेक पसेना छुटि रहल अछि। अहाँ अपन आँचरसँ पोछि दिअ। भोरमे जे माँड़ पीलहुँ, लगैत अछि पचि गेल अछि।'

'भात आओर रोटी अन्ने छी, एमहरका टाट बान्हि क' खा' लिअ।'

'हम असगर खा' लेब? अहाँकेँ भूख नहि लागल अछि?'

'हमहुँ खायब, अहाँकेँ क'र बनाक' देब।'

गीत अलापैत, रस्सी आओर छूरा जेबीमे राखिक' सीढ़ी-सीढ़ी चढ़ैत जा' रहल छथि विश्मभर, बीच-बीचमे दुखियासँ कहि रहल छथि, 'हमरा दिस नहि देखु, सीढ़ी कसिक' पकड़ने रहु।'

'हम तँ अहाँक कौशल देखि रहल छी। बड़ बात बनबैत छी, काजमे फूर्ति तँ अछि नहि। एहि टाटकेँ ओहि खुट्टासँ बान्हि दियौ।' दुखिया उसकौलनि। 'अहाँ की बुझबै काजक मर्म? नहि जानि अहाँ कोन देशक छी? केहन गामक छी?' विश्मभरकेँ अन्ट-सन्ट राग अलापैत देखिक' दुखिया खिलखिलाक' हँसय लगलीह।

हुनक वार्तालाप वैदेही देवीक कानमे पड़लनि। ओ फटकारैत कहलनि, 'अहाँ सभ काज करय हेतु आयल छी, अथवा हँसी-मजाक करय लेल? तखनसँ हम सभटा तमाशा देखि रहल छी। लगैत अछि काज समाप्त भ' गेल अछि।'

'मलिकानि, ई हमरा काज करयसँ रोकि नहि रहल छथि। हम हिनकर बातमे कखनहुँ नहि अबैत छी। हिनकर चालिऐ एहन छनि। माइ जी हम अपन काज रोकिक' हिनकर बात नहि सुनैत छी।' सीढ़ी परसँ विश्मभर बजलाह।

'दुखिया! सभटा लाज छोड़िक' हुनका बेर-बेर कियैक टोकैत छियनि? काज करय दियौन।' वैदेही खौँझाइत कहलनि।

'माइ जी! जाबत धरि हम मजाक नहि करब, गीत नहि गायब, हिनकासँ काज कयल नहि होइत छनि।' दुखिया जेना चुनौती देलनि।

'हिनका सभक यैह स्वभाव छनि।' सोचैत वैदेही देवी भीतर चलि गेलीह।

हुनका भीतर जइतहि दुनू गोटे खिलखिलाक' हँसय लगलाह। ओहि हँसिक' ध्वनी तरंगित होइत चारु दिस पसरि गेल।

'हमर स्वामी, हम सभ मुँह बन्द क' काज क' सकैत छी? ई सभ ककरहुँसँ गप्प कयने बिना अपन-अपन कोठलीमे बैसिक' समय बिता दैत छथि। हम तँ एकहु क्षण एना नहि रहि सकैत छी।' दुखिया हँसैत बजलीह।

दुखिया मोनकेँ आह्लादित कयनिहार राग अलापि रहल छथि। विश्मभर सेहो हुनक सुरमे सुर मिला रहल छथि। उत्फुल्ल ह्रदयसँ दुखिया समस्त जगतकेँ रागमय करैत गीत गाबि रहल छथि। विश्मभर सीढ़ी पर पैर रखने एक हाथसँ बाँस पकड़ि, दोसर हाथसँ छूरा पलटिक' खाम्ह गाड़ि रहल छथि। ओ अपन ध्यान काजपर केन्द्रित कयने छथि।

एतबेमे ऊपरसँ भारी वस्तु खसबाक ध्वनि भेल। 'हे भगवान!' जोरसँ चिकरबाक ध्वनि वैदेही देवीक कानसँ टकरा गेलनि।
वैदेही बाहर आबिक' देखलनि, सभ मजदूर विश्मभरकेँ घेरने अछि। सभ पूछि रहल अछि, की भेल? कोना खसि गेलाह?'

विश्मभरक दूनू पैर ठेहुनक नीचाँ लटकि रहल अछि। शरीर शोणितसँ लथपथ अछि। ओ पीड़ासँ चिचिया रहल छथि।

'हे भगवान! अहाँक पैर टुटि गेल अछि।' कहैत दुखिया आँचरसँ हुनक मुँह पोछि रहल छथि। ओतय एकत्रित लोक दुखियाक दुखसँ दुखिभ' रहल अछि। सभक आँखिसँ नोर बहि रहल अछि।

ओहि दृश्यकेँ देखिक' वैदेही देवीक ह्रदय सेहो द्रवित भ' गेलनि।

वैदेही मोटर गाड़ीसँ विश्मभरकेँ अस्पताल पठा देलनि, एकटा मुंशीकेँ सेहो संग क' देलनि। विश्मभरकेँ अस्पताल पठाक' जमीन्दारिणी दुखियासँ दू-तीन गजक दूरी पर ठाढ़ भ' गेलीह आओर हुनका निहारय लगलीह।

'अहाँ अहि कारणेँ कानि रहल छी जे विश्मभर आब अहाँक पालन-पोषण नहि क' सकताह।' वैदेही आक्रोशसँ पुछलनि।

'माइ जी, जौँ ओ हमर पालन-पोषण नहि क' सकताह, तँ हम हुनका पोषि सकैत छियनि। पथिया-सूप बनाक' हमहुँ कमाइत छी। मुदा ओ हँसैत-चलैत फेरसँ अओताह तखन ने? सासुर अयला हमरा चारि वर्ष भ' गेल, एकहु दिन हेतु हम नैहर नहि गेलहुँ। हमरा भरोस नहि अछि जे ओ अपन हाथे खा' सकताह, आओर चलल-फिरल हेतनि।' कहिक' दुखिया हाक्रोस करय लगलीह।

किछु क्षण पश्चात् दुखिया शान्त भेलीह तँ वैदेही पुछलनि, 'अहाँक जातिमे पुनर्विवाहक प्रथा अछि ने? तखन अहाँ कनैत कियैक छी?'

'माइ जी, के दोसर विवाह करय चाहैत अछि? हमर मरद हमरासँ प्रेम करैत अछि। ओ कहियो हमर हृदय नहि दुखौलनि, कहियो झगड़ा-झंझट नहि कयलनि।' एतेक कहिक' दुखिया भोकारि फाड़िक' कानय लगलीह। डाँढ़ पर हाथ रखने ठाढ़ि वैदेही देवीक दुरहंकार अपन आच्छादनकेँ उतारिक' फेकि देलक। तत् पश्चात् ओ खबासनिसँ पानि मंगबाक' दुखियाकेँ पिया देलनि। हुनका चबुतरा पर पारिक' स्वयं कुर्सीपर बैसि गेलीह।

ओहि मजदूर दम्पतिक चेष्ठा प्रारम्भमे वैदेही देवीकेँ घृणास्पद आओर कृत्रिम प्रतीत भेलनि, मुदा पश्चात् ओएह हृदयाकर्षक बनि गेल। पति सन्दर्भमे वैदहीक हृदय सर्वदा अर्द्धफुलायल काँढ़ी सदृश रहि गेल छनि। मुदा दुखियाक हृदय परिपक्व भ' क' अनुरागसँ पूर्ण भ' गेल छनि। मुदा हुनक हृदय...?

वैदेही देवी अपन जीवनक अवलोकन करैत दुखियाक मुँह निहारैत रहि गेलीह। पुन: दुखियाक निकट एकटा खबासनीकेँ बैसाक' पतिक कोठलीक भीतर चलि गेलीह।

विश्वनाथ बाबूक कोठलीक केवाड़ सटाओल छल। वैदेही कोठलीक भीतर गेलीह तँ देखलनि जे खबास पलंगक उपर झुकल छल। शिथिल देहकेँ समेटिक' पलंग पर पड़ल पतिकेँ ओ अपादमस्तक निहारिक' देखलनि। किछु क्षण हेतु वैदेही जड़वत भ' गेलीह। असमयमे दर्शन देनिहारि वैदेही देवीकेँ देखिक' विश्वनाथ बाबू आश्चर्यचकित भ' गेलाह। खबासक सहायतासँ ओ उठिक', कागज-कलम हाथमे लेलनि आओर ओहि पर लिखलनि, 'जमीन्दारिणीकेँ एखन अकस्मात अयबाक कोन कारण अछि? खबास नहि अछि?' पुन: कागज पत्नीकेँ देखौलनि।

वैदेही देवीक संकेत बुझिक' खबास कोठलीसँ बाहर चलि गेल। वैदेही किछु क्षणधरि पति दिस निर्मिमेष दृष्टिसँ देखैत रहलीह। पुन: पलंगक नीचाँ बैसीक' अपन माथ पातिक छाती पर रखैत बजलीह, 'हम तँ अहाँक अर्द्धांगिनी छी, जमीन्दारिणी नहि छी। हमरा दुनूक मध्य ककरहुँ आवश्यकता नहि अछि।'

विश्वनाथ बाबूक मुँहसँ विस्मय भरल स्वर बरायल, 'कि कहलहुँ अहाँ?' दू वर्ष पूर्व अवरुद्ध भेल अवाज एहि शब्दक संग मुखरित भ' गेलनि।

महामारीक आतंक

प्रेम विदेह
जनकपुरधाम, मिथिला (नेपाल)
सम्पर्क : bidehaprem@gmail.com

सड़क
लगैत अछि डेराओन दिनोमे
गुड़कैत अछि कखनोकाल
साइकिल, मोटरसाइकिल, खाद्यान्न-गाड़ी
दौगैत अछि बीचबीचमे प्रहरी-भ्यान
भगैत अछि चिकरैत एम्बुलेन्स
शहर
लगैत अछि मसान
बूझि पड़ैत अछि घर, कारागार
भ' गेल अछि जिनगी कैदीसन।
चीबा गेल अछि लाखो मनुक्ख-देहकेँ
कोरोना-काल
धपाएल अछि अखनो
बओने अछि मुँह-हाँउ
घोंटबाक लेल हजारो जिनगीक
भेन्टिलेटरपर वा घरेपर
गनि रहल अछि जे अपन साँस
पसरल अछि चारूभर त्रास।
किएक?
किएक तँ अपराधी अछि आदमी
कएने अछि बलात्कार बारि-बारि
प्रकृति-देवीकेँ
क' देने अछि तहस-नहस
ओकर अङ्ग- प्रत्यङ्गकेँ
नदी-पर्वतसङ दुर्व्यवहार
जङ्गलपर क्रुर प्रहार
निकालने अछि भूगर्भक अँतड़ी- भोंतड़ी
टनक-टन
क' देने अछि भूँड़ आकासक छातियोमे
कोंचैत आएल अछि मसोड़ि-मसोड़ि
अपन पेटमे
हजारो पशु-पन्छी, कीट-पतङ्गकेँ
बिसरि गेल अछि
सहअस्तित्वक महत्व
परस्पर निर्भरता- जीवनक परिभाषा
तँ
करैत रहलि अछि विद्रोह प्रकृति-देवी
समय-समयपर
दैत रहलि अछि सजाय आदमीकेँ
मचा रहलि अछि सम्प्रति
महामारीक आतंक
ल' रहलि अछि बदला
क' रहलि अछि अदृश्य हथियारसँ वार।
ताहिलेल
भ' जाइ सावधान-सचेत
आबह हमरालोकनि
बन्न करी अपन उत्पात
करी नव सङ्कल्प
तुलसी-ताम लए हाथमे
सहअस्तित्व आ प्रकृति मैत्री जीवनक
बान्ही धीरज किछु मास
भगबे करत महामारीक अन्धकार
पसरबे करत उज्ज्वल प्रकाश
साहस
ल' ली पैंचा
ओहि बहादुरसभसँ
लड़ल अछि जे सभ महामारीसँ
आ जीतल अछि
जीवि रहल अछि खिलखिलाइत जीवन!

डॉ. रंगनाथ दिवाकर

सम्पर्क : rangnath.chy@gmail.com

डॉ. रंगनाथ दिवाकर बिहार प्रशासनिक सेवामे अनेक उच्च पद सभकेँ सुशोभित करैत अपर सचिव रूपमे सेवानिवृत्त भेल छथि। 'ब्रह्मभट्ट वैभव', 'सहदेव सुषमा : पं. सहदेव झा स्मृति ग्रंथ', 'मधुबनी दर्पण', 'विरासत मधुबनी', समस्तीपुर जिला गजेटियर 'समेटियर', 'विरासत मुजफ्फरपुर', श्री विजय ना. मिश्र 'प्रवासी साहित्यालंकार'क एकमात्र काव्य संकलन 'प्रवासी प्रतिबिम्ब', 'भामती' आदि ग्रंथ/ स्मारिका सभक सम्पादन कयने छथि। स्वतंत्र पोथीमे 'हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में मिथिला का योगदान', 'मिथिला गौरव प्रतीक कन्दर्पी', मैथिली कथासंग्रह 'भखरैत नील रंग', 'सुलतानपुर सौरभ', 'महाकविक महाप्रयाण' प्रमुख अछि। साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित पंजाबी कथासंग्रह 'अमर कथा' (ले. गुलजार सिंह संधू)क हिनका द्वारा कयल मैथिली अनुवाद साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित भेल अछि। शोधमे रूचि रखैत छथि आ मिथिलाक इतिहास आ संस्कृति विषयक अनेक विवादास्पद घुरछीकेँ सफलतापूर्वक सोझरा देने छथि। एहिमे श्रीधर केर काल-निर्धारण, मण्डन मिश्र-शंकराचार्यक कथित शास्त्रार्थ, मैथिल करण कायस्थक कर्णाटसँ कथित आव्रजन, महाकवि कालिदासक मैथिलत्व केर निर्धारण, कन्दर्पीघाटमे मैथिल शौर्यक दिग्दर्शन आदि प्रमुख अछि। कन्दर्पीघाटमे मिथिला विजय स्तम्भक निर्माणक लेल ओ अपर ग्रियर्सन रूपमे समादृत छथि। किरण पुरस्कार, मिथिला विभूति सम्मान, मिथिला रत्न सहित अनेक पुरस्कार/ सम्मानसँ अलंकृत छथि।

भैया! हम आबि रहल छी

डॉ. प्रवीण अन्ततः नहि माननलनि। लंदन केर आकर्षण छल, अपने तत् मत् करैत छलाह जे जाय वा नहि। भैया सेहो मना कयने छलाह। केहन नीक सरकारी डॉक्टर छी, कतेक जमि गेल अछि प्रैक्टिस। सर-समाजमे मान अछि। एत' पद, प्रतिष्ठा, पाइ सभटा अछि। लोक आदर दैत अछि। ओत' लंदनमे के पुछत? आ पुछबे करत त' ओकर कोन मोल! जंगलमे मोर नाचा किसने देखा!

तथापि नवविवाहिता पत्नीकेँ मोन छल जे विदेश घुमि आबी। अंतमे हुनके इच्छासँ लंदन जयबाक निर्णय लेलनि। आइ अंधराठाढ़ीक सरकारी अस्पतालमे एकटा छोट-छीन विदाइ समारोह राखल गेल छल। एहिमे स्थानीय पदाधिकारीगण आ परोपट्टाक प्रतिष्ठित लोक सभ रहथि आ रस्ता कातमे क'ल जोड़ने चुपचाप ठाढ़ आमजन ! मात्र अढ़ाइ बरखक एत' केर सेवा छल। अस्पतालसँ बाहर देखलापर लोक फीसो दइते छल, कखनो कोनो गरीब-गुरबा नेहोरा करैत छल तेकरा छोड़ियो दैत छलाह। ओकरा सभकेँ फिजिशियन सैम्पल वला दबाय ओहिना द' दैत छलाह। लोक सभसँ कोनो निमंत्रण भेटलापर जाइत छलथि। फुटबॉल मैच आयोजित भेल छल आ प्रमुखजी आयोजन समितिक अध्यक्ष हिनके बना देने छलाह। आयोजन सफल भेल छल। अपन नोकरी आ साँझमे प्रैक्टिस करिते छलाह। वेतन आ फीस भेटिते छल तेकर बादो बजैत काल बेसी लोक राति-बिराति भेल उपकारक चर्च करैत भावुक भेल छल। प्रवीण स्वयं बजैत काल भावुक भेल रहथि। भावनाक अतिरेकमे बजा गेल जे एमआरसीपी क' प्रशिक्षण ल' हम फेर आपस आबि जायब। विदाइमे कपड़ा, मिथिला पेंटिंग कयल पाग आ डोपटा भेटलनि। पता नहि जे एहि खर्च सभक इन्तजाम कोना भेल होयत। गाड़ीमे किछु आम महिला बिनु कोनो नामोल्लेख वला सीकी-मौनीसँ बनल किछु सामान राखि देने छलीह। उद्गार प्रकट करबाक ई केहन कला छल जे अबैत काल प्रवीणक कोँढ़ फाटि गेल, हाथ जोड़ा गेल छल।

प्रवीण लंदन अयलाह तखन किछु दिन अजीब लागल। अपन परिचित कोइ नहि आ अनभुआर जगह। ओह! फेर कोर्स, कॉलेज आ अस्पतालमे रमि गेलाह। पूजाक पत्र आबय त' एकमात्र नेहोरा आ जिद जे जल्दीसँ आबि हमरो ल' चलू। छओ मासपर भारत अयलाह। लोककेँ बहुत जिज्ञासा छल, ओ लंदनक बहुत कथा कहलनि। भैया पुछि देलनि, "कॉक्सटन हॉल केहन छैक?"

"पता नहि! की छै ओतए"? ओ अनभुआर छलाह।

"ओतहि ने उधम सिंह ओडायरकेँ मारि अंग्रेज सभसँ जलियांवाला काण्ड केर प्रतिशोध नेने छलाह।"

"ओह! नहि पता रहए। पुलिस हेडक्वार्टरक लग हेतै। एक बेर ओम्हर गेलो रही मुदा कोनो निशानी वा बोर्ड सब नहि छैक तेँ किछु थाह नहि लागल।"

"ओ स्थल भारतीय गौरव केर प्रतिनिधित्व करैत अछि। ओत' अवश्य जाउ। नीक लागत आ आत्म-गौरव केर बोध होयत।"

"अवश्य जायब हम।"

एहि बेर पत्नी संगे आएल छलीह। कतेक जोगारक बाद त' हुनक पासपोर्ट-वीसा भेटल छल। बकिंघम पैलेस, बिग बेन, संसद भवन, टॉवर ब्रीज, वेस्टमिनिस्टर एबे, टेम्स नदी आ ओकर नीचा पातालमे बनल सुरंग, पार्क, होटल, नाइट क्लब आदि केर आकर्षण कम्मे नहि होइत छल जे गाम-समाजक सुरता अबैत। मोबाइलक युग नहि छल आ ट्रंक कॉल बड़ मँहग। चिट्ठी-पतरीक सिलसिला सेहो शनैः शनैः कम भ' गेल। नन्दा भैया आ भौजीक पत्रसँ दू चारि मासपर हाल-चाल जानि लेथि। लंदन केर जीवनमे दुनू प्राणी रीतिया गेल छलाह। सब महत्त्वपूर्ण स्थल देखि लेलनि। कॉक्सटन केर ध्यान नहि रहल। एहिनामे एक दिन...

दुनू गोटे एक नाइट क्लबमे कोनो पार्टीमे मगन छलथि। एक अंग्रेज अपन चढ़ल आँखि गुराड़िकेँ पूजा दिशि लगातार ताकि रहल छल। सहसा ओ आएल आ 'ओ इंडियन ब्यूटी ! लेट अस डान्स' कहैत पूजाक डाँढ़मे हाथ द' देलक। पूजा ओकर हाथ झटकि देलनि। ओ निसाँमे छल। हाथ झटकारलासँ ओ तमसा गेल, "आइ विल किश यू नाउ। दिस इज आवर राइट सिन्स ब्रिटिश पीरियड इन इंडिया। वी वेयर रुलर्स!" कहैत पूजाक माथ पकड़ि चुम्बन लेबाक प्रयास कयलक। ओकर तलमलाइत हाथसँ पूजाक खोपा खुजि गेलै। पीठपर करिया नागिन जुट्टी केर स्पर्श पूजाकेँ नागिन बना देलकै। ओ ओकर हाथ झटकारि कॉलर धरैत फुफकारलनि, "एण्ड दिस इज इंडियन

वीमेंस राइट!" प्रवीण हतप्रभ छलाह। लोक सभ थोर-थाम करैत ओहि अंग्रेजकेँ कात कयलक। ओ अंत धरि बड़बड़ाइते रहल– "वी वेएर रूलर्स! दिस इज ऑवर राइट!..."

दुनू प्राणी चुपचाप अपन घर आबि गेलाह। प्रवीणकेँ पहिल बेर लंदन असभ्य आ बेकार लागल छल। दोयम दर्जाक नागरिक होयबाक भाव अभरल। मोनमे कचोट रहि गेल जे ओकर कॉलर धरबाक काज हम किएक नहि कयलहुँ। एहन आत्महीनता! ओह! आँखिसँ पूजाक माथ पकड़ने चुम्बनातुर ओहि अंग्रेजक चेहरा हटिए नहि रहल छल। कानमे ओकरे स्वर– वी वेएर रूलर्स! दिस इज ऑवर राइट!गूँजि रहल छल। अपमानित! पददलित! पूजा आरामसँ सुतल छलीह मुदा प्रवीणक आँखिमे नीन नहि, वैह दृश्य अबैत-जाइत रहल। कछ-मछ करैत कहुना भोर भेल। अनायासे नन्दा भैयाक स्वर ध्यानमे आएल– ओतए आत्म-गौरव केर बोध होयत! पूजाकेँ सुतले छोड़ि बाहरेसँ गेट लॉक क' ओ गाड़ी निकालि विदा भ' गेलाह। पुटनेसँ आगाँ बढ़ि विक्टोरिया स्ट्रीटसँ ब्राडवे पकड़ि कॉक्सटन स्ट्रीट। फेर एहिमे पामर स्ट्रीट जतए मिलैत अछि ओहि कार्नरपर अवस्थित कॉक्सटन हॉल मात्र बीस मिनटमे आबि गेलाह। भोरे-भोर ओतए के भेटैत? एकदम सून-मसान लगैत छल। ओ एक कात गाड़ी पार्क कयलनि आ कखनो एहि गाछक जड़िमे बैसथि कखनो ओहि गाछ त'र, कखनो टहलि जाथि। सरदार उधम सिंहक विषयमे सोचलासँ रतुका टीसक सान्द्र भाव जेना पतरा रहल हो। किछु काल बाद एकटा सफाइकर्मी मेन गेट खोलि साफ-सफाइमे लागल देखाओल। प्रवीणक अनुरोधपर ओ हॉल देखा देलक। एतहि सरदार उधम सिंह पंजाबसँ हजारो किलोमीटर दूर लंदन आबि गवर्नर ओडायरकेँ मारि जलियाँवाला बाग नरसंहारक प्रतिशोध नेने छलाह। पता नहि की भेल जे सहसा डॉ. प्रवीण ठेहुनपर बैसि ओहि स्थलकेँ प्रणाम कयलनि। रतुका अपमान दू ठोप बनि टघरि गेल आ निरभ्र भेल मोन गर्वसँ भरि उठल। नन्दा भैया ठीके कहने छलाह- ओतए आत्म-गौरव केर बोध होयत! जखन आपस अयलाह तखनो पूजा सुतले छलीह। प्रवीण पूजाक माथ हँसोथैत कहलनि– "उठू हे हमर उधम सिंह!" पूजा विहुँसैत उठि अगड़ाइत दुलार कयलनि। ओहिना ऊर्जासँ भरल आ प्रफुल्लित! रतुका घटना, ग्लानि, अपमान सभक कोनो छुति नहि छल।

जिम्मीक जन्म भेल तखन प्रवीण नन्दा भैयाकेँ पत्र लिखने छलाह। एकरो बरख दिन भ' गेल। एक बेर सासुरमे बियाह छल ओहिमे आएल छलाह तखने दादी अपन पोता जिम्मीक मुह देखलनि। आब त' दोसरो आबि गेल छल। बहुत दिन भ' गेल छल एम्हर नहि आबि सकलाह। माँ दोसर पोताक मुह देखएबाक लेल कतेक कलपिकेँ कहने रहथि फोनपर। प्रवीण एमआरसीपी क' किछु दिन रॉयल अस्पतालमे काज कयलनि फेर एकटा छोट-छीन नर्सिंग होम पुटनेमे शुरू कयलनि। किछु ओल्ड एज होम सभक पे रॉलपर छलाह। ओहि सभमे पलखति कत'! समय अपन चालिसँ चलि रहल छल। दुनू बेटा कोना समर्थ भ' गेल किछु पता नहि चलल। छोटका पोता जॉनीक मुह देखबाक सेहन्ता नेने पितामह चलि गेलाह। प्रवीण ओहिमे भारत आबियो नहि सकल छलाह। पाइ पठा देने रहथि। छओ मास पहिने भतीजीक बियाहमे गेले छलाह। दू बरख बाद माए बीमार अछि से फोन आएल छलनि। मुदा जाबत सभकेँ लैत पटना अयलाह मायक वाक् हरण भ' गेल छल। कोमामे चलि गेल रहथि। आँखि तकैत छलीह मुदा आर कोनो स्पन्दन नहि। प्रवीण गोर लागैत बजलाह,

"देख! यैह छियौ छोटका पोता जॉनी!" मायक आँखिक डिम्मा कने घूमल आ धीरे-धीरे पथरा गेल। मुनल आँखिसँ नोर टघरि गेलै जेना पोतेकेँ देखबाक आशमे प्राण लटकल रहल हो।

प्रवीण नन्दा भैयाकेँ कहने रहथि- हमरा सभक पढ़ाई-लिखाई, बियाह-दान, श्राद्ध, सर-कुटुम्ब, नौंत-पिहानी सब दिन अहीँ केलियै! एहि बेर माएक श्राद्ध हमरे कर' दिय'। ओहिनो अहाँ उत्तरीय लेब। कतहु जा नहि सकब। हम सब सम्हारि लेब। भैयाक आँखिक नोर माथपर खसैत एकरा स्वीकार कयलक। बहुत नीकसँ सब काज सम्पन्न भेल। पन्द्रहम दिन फेर प्रवीण परिवारक संग विदा भ' गेलाह।

भारतसँ आपस भेना अखन मासो दिन नहि भेल छल कि एक दिन मि. फ्रेडरिक हिनका ओत' अयलाह। हुनका अपन पत्नीक बीमारीक मादे किछु जिज्ञासा छल। ओ विदा भेलाह तखन प्रवीण अपन बालकोनीसँ हुनका जाइत देखि रहल छलाह। फर्स्ट फ्लोरसँ उतरि जखन ओ रोडक कातमे लागल अपन कार तक पहुँचलाह तखने तलमलाइत खसि पड़लाह। प्रवीण सीढ़ी फनैत हुनका अपनेसँ उठा अपन नर्सिंग होम आनि उपचार कयलनि। मायोकार्डियल इनफारक्शन (हृदयाघात) छल जे क्विक मेडिकल इंटरवेनशनसँ ठीक भ' गेल। मि. फ्रेडरिक कृतज्ञता व्यक्त कयलनि। फेर मिसेज फ्रेडरिक सेहो अयलीह। ओ सेहो प्रसन्न होइत घर गेलीह।

समय नीकसँ व्यतीत भ' रहल छल। नर्सिंग होम चलि गेल। एकर सामने स्ट्रीटक दोसर कात एकटा बड़का कोन्डो हाउस प्रवीण कीनलनि। सब इच्छा पूर्ण भेल मुदा एक मिनट केर फुर्सत नहि।

एहिनामे एक दिन बड़का आ छोटका घरमे एकहि बेर बम फोड़लक जे हमसब अगिला मासक 4 तारीखकेँ चर्चमे विवाह करब। पूजा किछु बजती ओहिसँ पहिने जिम्मी बाजल, "वी आर एडल्ट नाउ मॉम। यू नीड नोट टू इंटरफेयर इन ऑवर पर्सनल लाइफ।"

पूजा सकदम्म रहि गेलीह। प्रवीणकेँ कहलनि। किछु क्षणक लेल ओ बौक भ' गेलाह, माथ पकड़ि बैसि गेलाह। फेर किछु काल बाद प्रकृतस्थ होइत एतबे कहलनि- "जखन कहने रही जे एकरा सभक संग मैथिलीए बाजू तखन हमरा कोना भँभोरने रही जे बच्चा सब जल्दी अंग्रेजी सीखि सकय तेँ अपनो सब आब अंग्रेजीए बाजी। आब बजैत रहू धुरझार अंग्रेजी! अखन की भेल! आब देखू ने जे की की होइए!!.. खैर, चलू चर्चेमे अपनो सब आशीर्वाद द' देबै। जेहने देश तेहने भेष!"

एकरो अवसर नीकसँ नहि भेटल। 4 तारीखकेँ दुनू भाय भोरमे बिनु किछु कहने घरसँ बहरा गेल। तथापि पूजा जतनपूर्वक दुनूक रूमकेँ गेंदा, गुलाब आ रजनीगंधाक लड़ी सभसँ सजा देलनि। द्वारपर दू टा पितरिया कलशमे प्रस्फुटित कमल रखलनि। आरतीक थारी सजबैत रहथि तखने एसएमएस आएल- सेंट मैरी चर्च, 11 a.m. समय देखलनि त' साढ़े दस बाजि गेल अछि। धड़फड़ाइत विदा भेलथि दुनू प्राणी। गिरिजाघरमे जिम्मी वाउ (प्रतिज्ञा पत्र) पढ़ि रहल छल। भाव छल जे जीवन भरि सदा-सर्वदा अहाँक संग रहब! अहाँ हमर जान छी, सपनोमे अहाँक कष्ट नहि देब...। फेर पंजीपर हस्ताक्षर भेल, एक-दोसराकेँ औंठी पहिरओलक, फर्स्ट किश भेल। पादरीक प्रार्थना आ प्रवचन भेल। इयूकेरिस्टमे प्रवीण आ पूजा दुनू नहि गेलाह। पता छल जे एहिमे मात्र कैथोलिक जाइत अछि। नॉन कैथोलिक छातीपर अपन दुनू हाथसँ क्रास बना आशीर्वाद ल' सकैत छथि। पूजाकेँ अपन बियाहक घोल-फचक्का, लोक सभक जुटान आ विधि-व्यवहार, भोज-भात सब मोन पड़ि रहल छल। ओ ओहि स्मृतिमे मुदित छलीह मुदा प्रवीणक मोन तमसा रहल छल। एहन कतहु बियाह हो! बियाह छल वा नाटक! तथापि दुनू प्राणीकेँ ई नीक लागल छल जे चारू गोटे वाउमे मात्र एहि जन्मक गप्प कयने छल हमरा सभ जकाँ सात जन्मक नहि।

पूजा छोटकी पुतोहु ग्रेसकेँ अपन दुनू कंगन आ बड़की लुसीकेँ अपन हार उतारिकेँ पहिरा देलनि। प्रवीण ओहि ठामक परम्परानुसार पहिल समधिन आ दोसर समधिकेँ औंठीक दाम केर चेक काटिकेँ द' देलनि। ओ दुनू सेहो एम्हरका औंठीक दाम देब' चाहलनि मुदा प्रवीण मना क' देलनि।

विवाहक बाद दुनू भाय घर कहाँ आएल! पूजा द्वारा सजाओल गेल फूल सब प्रतीक्षे

करैत रहि गेल आ दुनू भाय पहिनेसँ आरक्षित कराओल द सैंडरसन होटल चलि गेल। ओतहि छोटछीन पार्टी छल। प्रवीण सैंडरसन होटलसँ अबैत काल ओकर हिसाब कयलनि। हुनकर मोन त' छल जे हनीमूनमे ई सब भारते जाथि। सिरागूमे गोर लागि फेर कश्मीर जाथि। मुदा ओ सब स्विट्जरलैंड गेल। प्रवीण सब व्यवस्था क' देने छलाह।

हिनका सभक सौभाग्य रहल जे बियाहक बादो बहुत कहला-सुनलापर दुनू बेटा घरमे रहबाक लेल तैयार भ' गेल। एत' त' बियाहक पहिने बेटा बापसँ भीन भ' जाइत अछि।

समय बीति रहल छल। एहिनामे साल भरिक बाद एक दिन पूजा बेहोश भेलीह आ फेर चटपटमे अपने नर्सिंग होमसँ विदा भ' गेलीह। दुनू भाय कहुना डेनहम विद्युत शवदाह गृह जयबाक लेल तैयार भेल छल। दोसरे दिन नहा-धुआ अपन उऋणताक घोषणा क' देने छल। मुखाग्नि, तेराति, डाबा, कर्म, अरघा, एकादशा-द्वादशा श्राद्ध आदि पूजाक भाग्यमे नहि लिखल छल। किछु कहब उचित नहि मानि प्रवीण मौन भ' गेल छलाह। हारल-थाकल प्रवीण जेना जीवनसँ निराश भ' गेल होथि। बेसी काल अस्पतालक भार दोसरेपर रहैत छल। रहथि अस्पतालेमे मुदा एकदम शान्त, कोनो उहि नहि, कोनो उत्साह नहि, एकदम निस्तेज! जाहि बेडपर पूजाक प्राण छूटल छल ओकर चद्दरि रोज अपने हाथसँ बदलि दैत छलाह मुदा पता नहि किएक कोनो आन पेशेंटकेँ ओहिपर जाए नहि दैत छलाह। भरि भरि दिन ओहि बेडकेँ गुमसुम निहारैत रहैत छलाह।

ग्रेसकेँ अपन सभ्यता-संस्कृतिपर कनी बेसिए गुमान छलै। भारतीय सभ्यता-संस्कृति हुनक दृष्टिमे रस्टिक (देहाती भुच्चर) आ ऑबसोलिट (अप्रासंगिक) छल। सदिखन व्यंग्य बाण सन्धान करैत छलीह। बेटासँ होइत भारी डिस्कशन देखि-सुनि प्रवीण असहज भ' जाइत छलाह। मुदा ग्रेसक बहसल ठोरक लिहाजसँ गुम्म लाधि लैत छलाह। ओहिनो एकहि घरमे रहितो ससुरकेँ देखना कतेक दिन भ' जाइत छल। बात-चीत भेना त' किछु मास भ' गेल होयत। लुसी संग एहन बात नहि छल। ओ ससुरक ध्यान रखैत छलीह। सासुक गेलाक बाद कने बेसिए, आब ओ आर सेवाभावी भ' गेल छलीह। जखन-जखन प्रवीण अपसेट होइत छलाह ओ पूजा द्वारा देल गेल हार आनि प्रवीणकेँ देखबैत छलीह– "प्योर गोल्ड! सो हैवी नेकलेस! प्लीज टच एण्ड फील द मेमोरी ऑफ माइ मदर-इन लॉ!" प्रवीण देखैत छलाह, हारकेँ छुबैत छलाह आ भावुक होइत छलाह। तथापि ई हुनका नीक लगैत छल। लुसीकेँ मोनसँ आशीर्वाद दैत छलाह। ओह! एकहि स्काटलैंडक दू बेटी! दुनूमे कतेक अन्तर छैक!

लुसीकेँ फैशनपर आइएफएमे एक पेपर पढ़बाक छल। दुनू प्राणी पेरिस गेल छल। घरपर ग्रेस रहथि। ओ एकटा कुतिया सायना पोसने छलीह। सटले घरमे मि. बायरन सेहो एकटा कुकुर पोसने छलाह। ओहि दिन मिसेज बायरन कोनो काजसँ ग्रेससँ भेंट करए अयलीह। गेटेपर दुनू गोटे गप्प करैत छलीह तखने मि. बायरन केर कुकुर पता नहि कोना एहि घरमे ससरि गेल। ग्रेस घर अयलीह त' देखैत छथि जे ओ कुकुर सायनाकेँ लंघन द' रहल अछि। अपरतीब लागल। ग्रेस पेपरवेट उठा तामसमे जोरसँ मारलनि। कुकुरक पछिला एक पएरक नह थकुचा जकाँ गेलै, कने खून अभरि गेलै। प्रवीण बिटाडीनसँ खून साफ करैत रहथि। ओ कुकुर कैं कैं किकिया रहल छल। पता नहि पुलिस आ एनिमल वेल्फेयरवला सब कोना पहुँचि गेल। ग्रेसकेँ संग ल' गेल। डॉ. प्रवीण दौगैत थाना पहुँचि गछि लेलनि जे पेपरवेट हम फेकने रही ग्रेस नहि। ग्रेस आश्चर्यचकित छलीह। एहनो कोइ क' सकैत अछि से हुनका विश्वास नहि छल। ओ सकदम्म छलीह! किछु फुरा नहि रहल छल। एसएचओक कहलापर ग्रेस डेरा आबि गेलीह। द एनिमल प्रोटेक्शन एक्ट 2006सँ छओ मासक जहल भ' सकैत छल। घरक इज्जतक कारणेँ प्रवीण ग्रेसक कयल अपराधक दंड स्वयं भोगबाक लेल तैयार भ' सब अपराध अपना सिर ल' लेलनि।

कोर्टमे मि. फ्रेडरिक ई मामला देखलनि। ओ प्रवीणकेँ चीन्ह लेलनि। ओ मानबाक लेल तैयारे नहि छलाह जे डॉ. प्रवीण कोनो जीवपर प्रहार क' सकैत छथि। जे व्यक्ति कोनो अनजान आदमीकेँ खसैत देखि सीढ़ी फानि लग आबि अपने हाथमे उठा नर्सिंग होम आनि ओकर जान बचा सकैत अछि ओ कोनो जीवकेँ चोट कोनो हालतमे नहि पहुँचा सकैत अछि। चेतावनी आ किछु जुर्माना-बॉण्ड भरलाक बाद प्रवीणकेँ छोड़ि देल गेल। कोनो दिनक कयल परोपकार आइ काज आबि गेल।

ओहि राति आठ बजे मि. फ्रेडरिक प्रवीणक कोण्डो हाउस आबि गेलथि। प्रवीणकेँ सकुचाइत देखि ओ आश्वस्त कयलनि जे फैसला आब पलटि नहि सकैत अछि। आब अहाँ पूर्णरूपेण मुक्त छी। हमरा अखनो विश्वास नहि अछि जे अहाँ कुकुरकेँ मारने होयब। हमसब भरि दिन लोकक मनोविज्ञाने पढ़ैत छी। सत्य की अछि से कहि दिय'। बहुत आग्रहपर प्रवीण सत्य कहि देलनि जे परिवारक प्रतिष्ठाक लेल ई सब कयल। घरक स्त्रीगण हमरा सभक लक्ष्मी, हमरा सभक मान-प्रतिष्ठा! हुनका जहल जाइत कोना देखि सकैत छलहुँ!

"ओ! माय सरमाइज वाज राइट। यू आर रियली ए जेम ऑफ ह्युमिनेटी डॉ. प्रवीण!" कहैत मि. फ्रेडरिक ग्रेससँ भेंट करबाक इच्छा प्रकट कयलनि। ग्रेसकेँ कक्षमे अबिते कॉफी छोड़ि ठाढ़ होइत ओ कहलनि, "दिस जेंटलमेन वाज रेडी फॉर ए प्रिजन ऑफ सिक्स मंथ्स बट नोट रेडी फार ह्यूमिलेशन ऑफ हिज डॉटर-इन लॉ। रियली ए रेयर एक्शन। ऑनली ए रियल इंडियन कैन थिंक लाइक दिस। प्लीज फोलो हिज सिम्पैथी एंड सेक्रीफाइसेज।"

मि. फ्रेडरिक केर बातक प्रभाव ग्रेसपर किछु मास रहल। एकर बाद हुनका कल्याणक योग्यता भेलनि। फेर मि. फ्रेडरिक केर बात बिसरा गेल। वैह दिनचर्या, वैह बात-बातपर तामस, वैह श्रेष्ठताक मिथ्या दम्भ, ओहने हॉट डिस्कशन...

अस्पतालसँ पोताक संग अयलीह आ रूमक आगू 'नो इन्ट्री'क एकटा बोर्ड टँगि गेल। डॉ. प्रवीण स्वयं चिकित्सक छलाह, सदिखन संक्रमण सभक प्रति अत्यन्त सचेष्ट रहथि। पोताकेँ देखबाक सेहन्ता छलनि मुदा सख्त मनाही छल ओहि रूम जायसँ। विकल भ'कँ रहि जाथि। अनायासे पिताक स्मरण भेलनि। आइ पिताक ओहि भावनाक मोल बुझलनि जे कोना ओ छोटका पोताकेँ देखबाक लेल छटपटाइत रहल होयताह। आइ ओहि विकलताक सान्द्रत्वकेँ अनुभव कयलनि। गुड़क मारि धोकरे जनैत छैक! एक दू बेर रौदमे दैत काल दूरेसँ अझक्के देखने छलाह। चिल्का बेटा जॉनी सन लागल। भरि पोख देखि नहि सकैत छी। कोरा नहि ल' सकैत छी। स्पर्श नहि करबाक स्पष्ट फरमान छल। आइ अपन स्थितिसँ पिताक ओहि व्यग्रता केर गांभीर्यक भान भेलनि। ओहि संत्रासक अनुभव कयलनि जे पिता भोगने रहथि। ओ जॉनीकेँ देखबाक सेहन्ता नेने चलि गेलाह। फेर मोनमे भेलनि जे ओ त' सात समंदर पार छलाह तेँ सन्तोष क' नेने होयताह! हम त' एतहि छी, सातो फीटपर नहि छी। मात्र एक देवाल आ ओहिमे लागल दरबज्जा! तथापि हमर हाल जे पोताक मात्र चिहुँ-चिहुँ कानब सुनि सकैत छी, ने देखि सकैत छी आ ने कोरामे ल' सकैत छी। यैह हमर नियति। हम की कयलहुँ जीवनमे! पाइ त' एत' बड़ कमएलहुँ। बड़का घर, कूक, मेड, गाड़ी, शोफर, बैंक बैलेंस... संसारक समस्त सुख-सुविधा उपलब्ध अछि। मुदा की हम अपन जीवनकेँ सफल कहि सकैत छी? नहि! आब ने अपन अस्पताल बन्द क' देलहुँ पहिनेहिए कोन एत' केर लोक मोजर दैत छल! अंधराठाढ़ीसँ अबैत कालक दृश्य मोन पड़ि गेलनि जे लोक सभ कोना तरहत्थीपर रखने छल। कोना विदा कयलक! एत' सेहो वैह इलाजे करैत छी मुदा एत' केर लोक सभक लेल धनिसन! बाहर भेटलापर कोनो भाव नहि। कतबो करी, किछुओ करी सम्मानक ओहि दृष्टिसँ कहाँ देखैत अछि लोक! एत' बी ग्रेड सिटीजन मानैत अछि। ओत' अत्यन्त महत्त्वपूर्ण व्यक्ति छलहुँ। ओह! जिनकर इच्छाक सम्मान करैत अपन देश छोड़ि एत' अयलहुँ आ एतहि रहि गेलहुँ वैह

हमरा एहि विदेशमे एसकर औनाइत छोड़िकँ चलि गेलीह। हाय रे हमर भाग्य!

चिल्का चिहुँ-चिहुँ चिचिया रहल छल आ जॉनी-ग्रेसमे वाद-विवाद बजरल छल। एक दू बेर आवाज देलनि– "जॉनी! ग्रेस! बेबी इज क्राइंग। लूक एट हिम!"

दुनूक वाद-विवाद बढ़िए रहल छल। ग्रेस स्काटलैंडक सम्प्रभुताक पक्षधर छलीह आ जॉनी ग्रेटब्रिटेनक संग स्काटलैंडकेँ रहबाक हिमायती। स्काटलैंडक स्वतंत्रता आन्दोलन आ ग्रेटब्रिटेनक इतिहासक नव-नव पृष्ठ खुजि रहल छल मुदा निष्कर्षपर मतान्तर छल। ओम्हर पोता चिचिया रहल छल एम्हर बेटा-पुतोहु दुनू देशक इतिहासपर बहस करैत छल। प्रवीणक आवाजक कोनो प्रभाव दुनूपर नहि पड़ल। एक दू बेर फेर आवाज देलनि मुदा परिणाम वैह। पोताक क्रन्दन जखन कानमे पसीझल गरम शीशा जकाँ लागए लागल तखन प्रवीण यंत्रवत् हाथ सेनिटाइज कयलनि आ नो इन्ट्रीक साटल बोर्ड हटबैत घरमे प्रवेश क' गेलाह। कनैत-कनैत चिल्का बेहाल भेल छल। मुह एकदम लाल भ' गेल छलै। प्रवीण आइ दू मास बाद पहिल बेर पोताकेँ एतेक लगसँ देखलनि। सहसा चौंकि गेलाह। अँय, ई त' अनमन हमरे जकाँ अछि। हमर बच्चावला फोटो एकदम एकरे सन अछि। प्रवीण अत्यन्त सावधानीपूर्वक पोताकेँ क्रेडलसँ उठा अपन छातीमे सटा लेलनि। दुलारसँ पीठपर थपकी देलनि। मानव देहक अनुभूतिसँ ओ चुप भ' गेल। टुकुर-टुकुर अपन पितामहकेँ देख' लागल। नहुँ-नहुँ मुस्की देब' लागल। प्रवीण नेहाल भ' गेलाह। अपन प्रतिरूपकेँ देखि जीवन केर सार्थकताक एहसास भेलनि। पूजाक गेलाक बाद आइ पहिल बेर मोन आनन्दित भेल छल। आइ पूजा रहितथि तखन कतेक नीक लगैत! नेनाक कानब बन्द भेलापर ग्रेसकेँ शंका भेल। ओ नेनाकेँ देखबाक लेल अपन बैठकासँ उठि जहाँ क्रेडल लग अयलीह कि ससुरक कोरामे नेनाकेँ देखिते चिचिया उठलीह, "हाउ डेयर यू कम टू दिस रूम! टचिंग माइ बेबी वाज स्ट्रिक्टली प्रोहिबिटेड फॉर यू बट यू रस्टिक इंडियन्स नेभर फॉलो एनी रूल्स एंड एटिकेट! यू नॉनसेंस इंडियन!" अवाक् भेल ससुरक हाथसँ एक झटकामे ओ नेनाकेँ छीन लेलनि। झिका-तिरीसँ ओ फेर चिचिआए लागल। जॉनी ग्रेसकेँ समझएबाक प्रयास कयलक त' ग्रेस ओकरो डपटि देलनि– "यू शट अप!"

जॉनी बापकेँ कहलक– "ओह.. पापा! यू शूडोन्ट हैभ इन्टर्ड दिस रूम ह्वेन इट वाज फॉरबिडेन। वी वेएर डिस्कशिंग द फेट ऑफ स्काटलैंड एंड जीबी! वी केयर फॉर ऑवर कन्ट्रीज... !"

प्रवीण अकचका गेलाह। मि. फ्रेडरिक केर इजलासमे क'ल जोड़ने ठाढ़ अपन रूप मोन पड़लनि। एहने नट्टिनक लेल जहल जाइत छलहुँ। हे भगवान्! केहन सरियत देलक ई जोधिन! ओह! तामस चढ़ि गेलनि। एक क्षणमे निर्णय लैत चिचिया उठलाह, "येस माइ सन! यू केयर फॉर योर जीबी एंड शी केयर्स फॉर स्काटलैंड! ओके! नाउ आइ विल केयर फॉर माइ मदरलैंड, माइ मिथिला एण्ड माय इंडिया! हीयर मी! आइएम लीविंग लंदन फॉर एभर राइट नाउ!"

"नो पापा! यू केन्नोट डू दिस। वी बेग योर पैरडन। काइंडली फॉरगिभ अस।" लुसीक शब्द कानमे पड़ल।

लुसी आ जिम्मी तखने अपन कक्षसँ दौगल। लुसी एत' केर हाल जानि पघीलि गेल छलीह। कानए लगलीह, "डू यू नो माइ बायोलिजिकल फादर डेसर्टेड माइ मदर ह्वेन आइ वाज ऑनली थ्री इयर्स ओल्ड? सिन्स देन आइ वाज इयरनिंग फॉर दिस लव। यू ऑनली मेड मी रियलाइज द एफेक्सनेट लव ऑफ ए फादर। प्लीज डोन्ट गो। वी लभ यू पापा!" लुसी विह्वल भ' गेल छलीह।

"स्टिल आइ लव यू माइ सन! यू विल आलवेज रिसीभ वार्म वेलकम इन इंडिया। यू कैन कम ह्वेनएभर यू लाइक। आइ विल वेलकम यू इन पूजा मेमोरियल हास्पिटल इन माइ विलेज।" कहैत प्रवीण कनैत लुसीकेँ छातीसँ लगा आशीर्वाद देलनि– "गॉड ब्लेश यू माइ सन!"

पोतामे अपन प्रतिरूप देखि आनन्दक जे भाव अभरल छल से तिरोहित भ' गेल। मोनमे लन्दनक प्रति वितृष्णा भरि गेल छल। रूमसँ बाहर आबि ह्वाट्स एप्प कॉल पटना नन्दा भैयाकेँ लगा देलनि। तखन एत' साँझ छल मुदा पटनामे रातिक साढ़े एगारह बजैत छल। नन्दा भैयाकेँ डर भेलनि जे एतेक रातिकेँ फोन किएक आएल! उहो पूजाक मृत्युक कतेक दिनक बाद केर पहिल फोन। अदंक पैसि गेल छलनि कहुना 'हैलो' कहलनि आ स्पीकर ऑन क' देलनि जे रिंगटोन सुनि ल'गमे आएल बिछान ल'ग ठाढ़ पत्नी आ बेटा सेहो सुनि सकए। ओम्हरसँ प्रवीणक भावुक भेल स्वर छल– "भैया! हमरा माफ करब। एत' बहुत कमएलहुँ, सम्पत्ति अरजलहुँ। मुदा लोक मात्र पाइ लेल नहि जीबैत अछि। एक सीमाक बाद ई अर्थहीन भ' जाइछ। हम एतए केर सब अरजल सम्पत्ति छोड़ि- छाड़ि अपन देश घूरि रहल छी। गामक धरती बजा लेलनि हमरा! गाममे छोट-छीन अस्पताल शुरू करब आ ओतहि रहि गामक सेवा करब। एक दू मास जाबत सब तैयार होयत ताबत अहीं लग पटनेमे रहब। अपन धरती अपन लोक अपने होइ छै। ई विदेश हमरा नहि धारलक। बी ग्रेड सिटीजन बना अस्तित्वहीन क' देलक। गाममे फेरसँ अपन दोसर पारी शुरू करब। अहाँक आ भौजीक आशीर्वाद भेटैत रहत तखन हमर ई जीवन सफल भ' जायत। हँ, एकर ध्यान राखब जे जहिया कहियो हम मरी, हमरा मुखाग्नि अवश्य देल जाय। दू-दू बेटा अछैत पूजाकेँ ई भाग्यमे नहि छलनि। राकेश कतहु रहथि आबिकेँ मुखाग्नि हमरा अवश्य देथि। बेटा आ भातिजमे कोन फर्क! भोज-भात भले नहि हो मुदा संस्कार अपन देश अपन माटिपर अवश्य हो। ई दुनू भाय त' आब घूरिकेँ भारत कहियो अएबो नहि करत। दुनूकेँ ई लंदन नगरी पचा लेलकै। आधुनिकताक टेम्स नदीक धारमे बहि गेल दुनू। संभव जे बड़की पुतोहु लुसी कहियो आबथि। छोटकी ग्रेस त' आइ...। ओह! हम परसू पटना पहुँचि जाएब। फेर सब कोइ गाम चलब। भैया! हम आबि रहल छी..." कनैत छोट भायक स्वर नन्दाकेँ विह्वल क' देने छल। हुनको आँखिसँ दहो-बहो नोर बहि रहल छल। लगमे ठाढ़ बेटा राकेश भावुक भ' गेल छल आ ओकर माए सेहो साड़ीक आँचरसँ अपन आँखि पोछि रहल छलीह।

अप्पन मायक मान मैथिली

देवानन्द मिश्र

जलसैन, रुद्रपुर, मधुबनी।
सम्पर्क : +91 7061288658

पढ़ू बिलाइती भाषा सबटा
जूनि करियौ अपमान मैथिली।

सूट बूट आ टाइ लगबियौ
धोती-कुर्ता परिधान मैथिली।

मंडन, उदयन, गार्गी, सीता
तैयो आइ विरान मैथिली।

जूनि बिसरू मैथिल सपूत गण
हमरा सभक गुमान मैथिली।

करूपल्लवितसबकियोमिलिकेँ
अप्पन खेत-खरिहान मैथिली।

जोहि रहल अछि बाट उद्धारक
विद्यापति केर गान मैथिली।

आउ सब मिलि फेर सजाबी
अप्पन घर-दलान मैथिली।

निज भाषा सम्मान मैथिली
अप्पन मायक मान मैथिली।

बसी शहर दिल्ली वा मुम्बइ
सबसँ सुंदर गाम मैथिली।

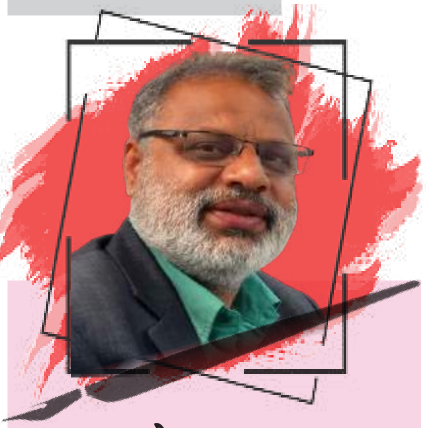

रमेश रञ्जन

काठमाण्डू, नेपाल

सम्पर्क : +977 9854024143

रमेश रञ्जन मूलतः रंगकर्मी छथि। तीन दशकसँ बेसी समय ओ रंगक्षेत्रकेँ समर्पित कएलनि अछि। अपन निर्देशन, अभिनय आ लेखन कार्यमे सक्रिय नाटककारक रुपमे हिनक प्रमुख कृति 'मुर्दा', 'बगिया', 'बुधियार छोड़ा' आ 'राक्षस' आदि अछि। 'खोंता', 'सिंगार', 'डेग', 'लेहुआयल आँचर', 'हमरा नेपाल चाही' आदि नाटकक कुशल निर्देशन कएने छथि। नाटकक अभिनय आ निर्देशन संगहि ओ कविता आ नाटक लेखन सुरू कएलनि। आ तीनू विधामे हिनक उपस्थित ठोस रूपेँ स्वीकारल गेल। मूलतः मैथिली भाषामे मौलिक शिल्प, लोकबिम्बक प्रयोग आ तकर अर्थक स्थापना आन साहित्यकारसँ रमेश जीक पृथक बनबैत अछि। हुनक लेखनमे सामाजिक आ राजनीतिक विषय सहज शैलीमे विशिष्ट ढंगसँ उठाओल गेल अछि। स्पष्ट वैचारिक दृष्टिकोणक संग सृजन-संसारमे सकारात्मक परिवर्तनक आग्रही सेहो देखल जाइत अछि। सम्प्रति नेपाल सरकारक संगीत नाटक प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे कार्यरत छथि।

पिपही

मैकू राम मुह बओलक से बओनहे रहि गेल। ओकर घरबाली सिवर्ती ओकर मुहक उचाँइ अनुसार अपन आँखि तनने छल। ओकर पपनी उपरे लटकल रहि गेलै। बड़ी जोरसँ छीकलक मैकू। छींकक आवाज ओकर घरे नइ अरोस परोसक घर तककेँ दलका देलकै।

दल्की तँ नइ रहै। छींक रहै। छींकक लक्षणसँ पुरा ग्लोव हीलरहल छै तँ फेर मैकूक संसार किए ने हिलौक। से ओकरा घरबालीक विस्तार भेल आँखिमे सङ्कुचन नइ अएलै। टोल परोसक लोक मैकूक घरमे हुलकी मार'सँ गुब्दी मारब उचित बुझलक। मैकू तरहत्थीपर तमाकूकेँ ओहिना रगड़घस्स क' रहल छल। चाटी मारिरहल छल।

सिवर्ती समझबै ओकरा, 'नइ नीमन हल्ला–गुल्ला हइ। खैनी छोड़ि देतै तँ नइ होतै?' मैकू अपना घरबालीकेँ जवाब नइ दिए। खाली ठोढ़ हीला क' सङ्केत करए जकर भाव रहै, 'बेकारकेँ बोल नइ बोलौ।'

सिवर्तीकेँ कोनो सेहंता नइ लागल रहै अपना घरबलाकेँ एकटा अम्मल छै ओहो छोड़ा दी। मुदा ओकरा लग आफत रहै बेटाकेँ लाएल टिभी आ बेटा हाथक मोबाइल। टिभी तँ आब गाममे रङ्ग–विरङ्क देशी विदेशी च्यानलक सविधा देने छै। मोबाइल तँ छैके शैतानक खोपड़ी। आमक टिकोला खसल तँ कहि देलक आकाससँ तरेगन खसलैए।

टिभी कहलकै छींक हएब कोरोनाक लक्ष्ण छै। याद अबिते सिवर्तीक रोइयाँ ठाढ़ भ' गेलै। टिभिएकेँ बोलल बात रहितै तँ नहियो पतियैतै। मोबाइल तँ बातकेँ रब्बर जकाँ तानि–तानिक' तेना ने करोना–करोना चिचियाइत रहै छै जे आदमी तँ आदमी बाघो डेरा जेतै। पहरेदारीमे बैसल शासकसभकेँ थरथरी पैसि गेल छै कोरोनाक नामसँ। सिवर्तीकेँ अपना मर्दपर तामस उठै, 'केहन बकलेल हइ बलु ई।'

खुल्ला दिशा–पिशाव मुक्त घोषणाकेँ कएक वर्ष भ' गेलै। खूब नाच–गान भेल रहै। भोज–भातमे खाना आ पीना दुनु रहै। गामकेँ कलाकारसँ काम नइ चललै तँ जनकपुर आओर कहाँ–कहासँ कलाकार आएल रहै। पाइयो सरकारिए रहै। मोट पाइ... जते खर्च भेल रहै तइसँ बेसी देखाओल गेल रहै। दू–चारि दिन खूब चिचियएलै माइकपर। खेनाइए नइ हगनाइयोपर पहरा बैसा देलकै। घरमे पैखाना छैहे नइ। खेत आ रस्तापर पहरेदार बैसल छै। कोना दिसा उतरतै। गामक भरभलादमीक जान उपरे टाङ्गल छै, 'एहन राज जिनगीमे नइ देखली, बहि बाहर भितर नइ जाए देतै।' छौड़ासभ जवाफ दै, 'भितर जाए देतै, बाहर नइ जाए देतै।'

स्वच्छ हवा आ स्वच्छ जलभण्डार अर्थात कलकल नदी आ विशाल पोखरिक भीड़पर कल्लापर हाथ ध' क' बैसबाक आ शौच साधना करबाक सुख की जाने गेलै एहन कानून बनोनिहारसभ। एहने विवादक बिच समय घुसकैत गेलै। सरकारी पैसा खतम आब सरकारी रखबारसभ स्वयं बाटपर बैस लागल। एखन समय फेर खुल्ला प्रेमीकेँ छै। जखन मोन होइ छै, सड़क, खेत, मैदान गाछी-बिर्छी हरेक जगह भोर– साँझ खुल्ला प्रेमीसभक कुथनाइक ध्वनी सुनाई देब लागल छै। से मैकू ओहने आनन्दक किछु क्षण बीताक' घर दिस ससरल छल। हाथ साबुनसँ धोएबाक बाते नइ छै, ओहो बीस सेकेण्डधरि रगड़ि रगड़िक'। सुनैए तँ मैकूकेँ कीदन झरकि जाइ छै, 'दौक न साबुन आ कहौक न रगड़ैत रह, छिनरीकेँ हाथे खियाएत की साबुने खियाएत। देतै सुथनी ने।' मैकूक छौड़ा गणेशिया मोवाइलमे देखैत रहल आ फरमाइस करैत रहल– ई कर आ ऊ नइ कर।

खुल्ला जगहपर सौंच पश्चात घर आबिरहल मैकू रङ्गविरङ्गक व्यवहार बात देखलक। सोचाए लगलै, 'गाममे छुवाछुत हेरा गेलै। संविधानमे लीखा गेलै जे छुआछुत कर'बलाकेँ खैर नइ। हमरा देखिक' रस्ता कटैए लोक। मुह झपै हए। मुह घुमा लै हए। लगमे गेली तँ आँखि तरेर क' तकै हए। बुझाइ हइ जे काँचे गीर जाएत। एहन जुलुम। संविधानसँ बौखगर भ' गेलै ई आओर। हम तँ थानामे नालीस द' देबै।

बिसो वर्ष भ' गेलै। सिराहा जिल्लामे भेल आन्दोलन नइ बिसराएल छै। ओकरे जाति समाङ्ग रहै। मर नइ फेकबाक लेल अड़ि गेलै। मुदा बड़का तँ बड़के होइ छै। मैकू जातिक लोककेँ घर जरा देलकै। इज्जतिकेँ तँ तुर्रीतुर्री उड़िया देलकै। रस्ता पएरा बन्द क' देलकै। जत्ते द' सकै छलै तते उछन्नर देलकै। मुदा मैकूक जाति दु:ख आ अपमान सहियो क' मर नहिए फेकलकै।

ओ हवा जे पुरुवसँ चलल रहै से सौंसे पसिरि गेलै। गामगाममे मैकूक जातिसभ कहि देलकै– नइ चाही गरिहत। गाम नइ चाही। हमसभ ओ काम नइ करब, जइ कामसँ हमरा जातिकेँ आ हमरासभकेँ इज्जत धसै हय।

'ई कथी भनभनाइत रहै हइ?' ओकर घरबाली बजलै। मुदा ओ अपना मगनमे छल। सिवर्ती टोकारा दैत ओत'सँ निकलि गेल। मैकू फेरसँ रडियोकेँ पुरने मीटरपर घुसकि क' आबि गेल, 'दुध पितै कियो, घास खुअबौ कियो। माउस खेतै कियो, पोसते कियो आउर। हर जोततै ककरो खेतकेँ आ...जीन्दा मालजालकेँ दुधसँ गोबर तक ओकरेसभकेँ चाही। मरतै तँ मरी फेकनाहर हमसभ। कहलकै जे...।' सिवर्ती मैकूक फुदफुदाइत आवाज सुनि क' खोखिं देलकै। मैकूक बड़बड़ैनी कनेकाल लेल बन्द भ' गलै।

सिवर्ती विस्मयक अवस्थामे छल। सोचै छल, 'मरदवाकेँ किछो होइ तँ नइ हइ। 'घुमिक' फेरसँ देख अबैत छल, जेना ओ कतौ एखनो हेराएले रहै, 'हई ई कत' हेराएल हइ?' मैकू हँसी केलकै, कतौ गेबे नइ कएलिय तँ हराएब केना? तू हमरा नइ देखै छे? अतै तँ छी!' सिवर्तीक शरीरकेँ छुबि' अपन उपस्थिथिक प्रमाण दैत बाजल मैकू। सिवर्ती अपना शरीरकेँ दूर खिंचैत बाजल, 'एगो बात बुझल हइ आदमी हेराइयो जाए तँ ओकर मोन नइ हराइकेँ चाही।' मैकू दाँत खिसटैत बाजल, 'सुन तँ कनी पिपही निकाल त। हेराएल मोनकेँ वापिस बोलबै छी।' बडा अप्रत्याशित लागल छलै सिवर्तीकेँ ई बात। पिपही कैला कहलकै निकाल से ओकरा समझमे नइ आबि रहल छलै। 'पिपही आ की ढोल धाएल–धाएल बौक भ' गेलै आ एकरा कीदुन फुराइ हइ?' सिवर्ती हिम्मत क' क' पुछलकै, 'अखनी की करतै पिपही?'

ओ बाजल किछु नइ, खाली ओकारा चेहरापर तनाव बढ़लै। तनाव जखन बढ़िए गेलै तँ ओकर बहु नइ बुझतै तँ के बुझतै? सिवर्तीकेँ पता छै, बहु बनिक' सासुर आएब आ बहु बनिक' रहबमे की फरक होइ छै। ओ झोल मकड़जालसँ छाड़ल ओहि बाजा सभकेँ झाड़झुड़ कर' लागल। लाबि क' आगूमे ध' देलकै। 'धी...धीरेसँ धरौ बड़ कोमल होइ हइ। एकरती बल लागि गेल तँ बोल बिगड़ि गेल।' मैकूक स्नेहपूर्ण बोल ओकर अपन बाजाक लेल छलै।

मरी बहिष्कार आन्दोलन जखन चरमपर छलै तखन पण्डितपट्टीमे जोड़े बरद धरामसँ खसलै, प्राण उड़ि गेलै। मरि गेलै तँ मरि फेकक लेल मैकूकेँ बोलबटि भेलै। आन्दोलनमे अडिग रहए मैकू। पण्डितकेँ बोलाहटिसँ एकक्षणक लेल सुन्न भ' गेल। ओकरा मोनमे अएलै, 'आन्दोलन हइ से तँ पण्डितो आउरकेँ बूझल हइ। हमरा नइ तँ कमसँ कम अन्दोलन क' रहल हजारो लोककेँ इज्जत तँ राखि दितै?'ओकर ध्यान ओतै टाङ्गल छलै, 'बरद मरि गेलै, तकर शोक होतै। माछी भिन्क' लागल होतै। फेनो गन्हाए लगतै। कते मोश्किल हइ हुनका आउरकेँ।' मैकूक मोन ओकर बाजासन कोमल छै। पण्डितक अवस्था सोचि डेग बढ़बए आ आन्दोलन याद अबै तँ डेग घिचाइ पाछु। एहि द्वन्द्वमे आगू–पाछू करैत रहल। पण्डितकेँ दु:ख नइ देब' चाहैत छल मुदा बर्षहुँ दमित, शोषित अपन प्रियजनप्रति माया छलै। ओ अपनाकेँ कतबो बुझाबए मोन नइ मानै। दुविधाक कारण अनिर्णयसन अवस्थामे रहए। दुनू फरी बैसल। निर्णय कएलक– मरी तँ नइ फेकबै।

गाममे पसाही लेसा गेलै। पण्डितसभकेँ बकझर लागि गेलै। भोरका मरल बरद साँझतक नइ फेकेलै। दोसरो दिन नइ फेकेएलै। तेसरो दिन मड़ल बरद दरबज्जापर पड़ल रहै। शङ्का भेलै कही गीद्ध तँ ने घरपर मड़राएत! गर्मी महिना मर गन्हाए लागल छलै। सभ दियादे कोदारि ल' क' खधा खुनि ठामहि खसा देलकै बरदकेँ।

'बहि दुध खो तू, खेत जोताउ तोहर आ मरी फेकू हम।' मैकूक ठोर पटपटेलै। दाँत बाजिरहल छलै। ओकरा ठोढ़ जहिना थरथरारहल छलै तहिना थरथराइत आङ्गुर पिपहीक पोरपोरकेँ सहलारहल छलै। ओ स्नेहसँ पोछिपाछि क' ठोढ़सँ लगौलक। एकटा स्वर लहरी दूर बहुत दूर तक यात्रा करैत आगू बढैत चलि गेलै।

हरहोरि पैसि गेलै गाममे। मैकूक पिपहीक आवाज सेहो करोनाक महाविपति कालमे। बुढ़बा सभ चौंकल। छौड़ाछौड़ी मोवाइलमे मस्त। कनियाँसभ कानबात नइ देलक। अपना बियाहमे एहन बाजा थोड़बे सुनने छल। एखनुक कनियाँसभक बियाह तँ 'डिजे' साउण्डपर भेल छै। तकरबादो किछु खास तँ लागल छलै सभकेँ।

मैकू मस्त फूकि रहल छल आँखि मुनने। सोहर, बधैया, खेलौना मिथिलाक माटिएसन सुच्चा आ सोहनगर सङ्गीत। स्वच्छ, प्रिय आ मधुर सङ्गीत। पहिलबेर अपना लेल मैकू बाजा बजारहल छल। पहिने तँ ककरो मुड़न, उपनयन, बियाह, दशैं–छठिमे बजबैत छल। किछु सेर सीधा आ किछु टकाक लेल। ओहो लेब'मे तीन तरेगन। ओकरा आँखिक आगूमे जेना विगत घटित भ' रहल होइक, 'एकरासभकेँ कूल–खूँटमे ककरा सेवा नइ कएलियै। मरद–मौगी ढेनमा ढुनमी सभ कामकेँ घरमे जुटान भेबे कएल। मौगीसभ ढेउरल लुक्खी नाहिंत इमहर–ओमहर करिते रहल। जहाँ पिपही बन्द भेल की मुहसँ बोल नइ आगिक लुत्ती बोकर' लागल। आगिकेँ लुत्तीसँ सौंसे देह दगा जाइ छल। नाउ जनलक से मैकूआ आ नइ जनलक से चमरा। कतेक ऐढ़ल हइ जिबिया।'

मुदा मैकू आइ अपना लेल बजारहल छल पिपही। ओकरा ककरोसँ नइ सीधहा लेबकेँ छै आ ने सगुन। जोड़ लगाक' फुकलक जाहिसँ पूरा गाउँ गुञ्जायमान भ' जाइ। जेना उदघोष होइक क्रान्तिकेँ, विरोधकेँ, युद्धकेँ। पिपही फुकनाइ बन्द करिते बड़ भावसँ देखलक। जेना कोनो प्रिय ओकरासँ दूर भ' गेल होइक। बर्षहुँ बाद ओकरासँ अचक्के भेंट भेल होइक। पिपहीकेँ लत्तामे बड़ जतनसँ लपेट' लागल। जान–प्राण आ सञ्चित धन सभ ओएह तँ छलै।

इएह तँ छलै पूर्खाक अर्जित सम्पति। के नइ बजौलकै बाबा, बाप आ अपनो। मनमे स्मरणक परतसभ टूटिरहल छलै, 'कथी छोड़िक' जाइ छलै हमरासभकेँ बाबा–दादा। खेती पथारी की महल–अटारी? नइ, इहे ढोल आ पिपही। हमरासभकेँ महल तँ इहे छलै। ढोल पिपहीसंगे खेलैत जखन बढ़ैत गेल तँ सोर–पोरमे कलाकारी हिलकोर मार' लगल। बाजा बजबिते बच्चासँ जवान आ जवानसँ बूढ। बस्स बाजा रहि गेल जिनगी चलि गेल। ओहो बाजा छिन लेलकै मर विद्रोह। ढोल पिपही बिना कोनो शुभ काम नइ होइ छलै। केशमे छुरा लगलै, पिपही फुक। देवी–देवताकेँ बली चढ़लै, पिपही फुक। मड़बाकेँ माटि कोड़ोलै, पिपही फुक। पिपही नइ फुकने डेग कथी एगो औरी नइ आगू बढ़ै छलै आ से सब एकेबेर बन्द। बर्षहुँकेँ दमन, अपमान आ विभेदक टीससँ मैकूकेँ दर्द उखड़ि जाइत छै ओ छिलमिला जाइए। ने तँ ओकरा एखनो मोन होइ छै घर, टोल आ पावनि–तिहारमे पिपही बजब'के। ओकरा कलाकारीक नशा नइ उतरलैए।

मैकूक दिमागमे चलैत ई घटना भयावह अन्हरक रुप ल' रहल छलै। ओ पुन: मर फेकबाक घटनाक स्मृतिमे चलि गेल। पण्डित सभकेँ हिम्मतिक संग कहलकै, 'हमसभ आब मर नइ फेकबो। हमर जाति भाइ सगा सम्वन्धि कियो ने फेकतो। से जे फेकवो तँ हमरा सभकेँ बेटी बेटियारे बन्द भ' जाएत। विन्ती नेहोरा कएलियै। पैर दाह्री पकड़लियै। बाउ हौ बाउ एहन चण्डाल। पोन्हपर लात मारिक' बिलगा देलक।'

मैकूकेँ कोन काम नइ अबै? हर जोत'। कोदार पार'। घर गृहस्थि सभ काम कर' अबै। सब बन्द। जमीन तँ पण्डितसंगे छलै। पहिने गाममे ओ स्वयं डिगडिगिया पिटै छल। एहिबेर ओकरे सबकेँ आदमी डिगडिगिया पीटक' गाममे पसाही लेस देलकै, 'एकरासभकेँ कियो काममे नइ लगा। जे हमरा सभसँ काम करउतै ओ पण्डित आओरसँ अरारि लेतै। मङ्नीमे दुश्मिनी आ सेहो पण्डित आओरसँ, के लेतै? हमरा सभकेँ काम बन्द। ठीक हइ काम बन्द। ढोल पिपही तँ बजबबितै। कोनो शुभ काम बाजा बिना नइ होइ छलै। केना शुभकेँ अशुभ बना देलकै ई पण्डित, धनिक, कहबैका बलु बड़का जतिकेँ छी। शुभ–सगुनकेँ दू लत्ती मारिक' दूर हरका देलकै।

आइ फेर खुल्ला दिशा क्षेत्रक प्रयोगक बाद मैकू घर आबिरहल छल तँ बाटमे टोकरा देब'बलासभ भेट गेलै। कहलकै– आइ फेर फुकै छला पिपही! घुन नइ खएने छो? सोना चानी जकाँ पेटीमे बन्द क' क' रखने छलै। लगन नइ

बितलैए। एखन अबहेके छै। रे एहिबेर डिजे बाजा नइ बन्हबिहे, मैकूकेँ ढोल पिपही बन्हा ले। बेरोजगार भ' गेल छै वेचारा। आखीर पुस्तैनी लुड़ि छै ने कर' दही। पेटकेँ अन्न भेटतै! रे पुस्तैनी तँ चमरोक कारबार छलै तँ किए ने कएलक?

थाल–कादो ओकरा शरीरपर फेकाइत रहलै। ओ काछि काछि क' अपना शरीरसँ हटबैत रहल। कहुना डेग तँ आगू बढैत रहलै मुदा आङनमे अबिते थुस्ससँ बैसि गेल। स्वाभिमानक अन्दोलनमे तनिक' ठाढ़ मैकूक रीढ़क हड्डी जेना गलि गेल होइक। छौड़ा माएकेँ मोवाइल देखारहल छलै। मोवाइल देखैत माएक मुहपर मुस्कान रहै। जेना मोन खीलल होइक। छौड़ा ओतैसँ बजलै, 'बुझलहो कुछो?' मैकू नजरि उठौलक। सिवर्ती कहलकै, 'बाउ की बुझतौ ई तँ बकलेल हउ।' छौडा मोवाइल ल' क' आएल आ बापकेँ देखबैत कहलकै, 'ई देखहो के हइ?' निरारि क' देखैत रहल मैकू। बड़ी देरकेँ बाद बाजल, 'मोबाइलमे हम केना पैसि गेलियै!'

मगन भ' जखन मैकू पिपही बजारहल छल तँ ओकर बेटा अपना मोवाइलसँ भिडियो ल' लेने छलै। ओएह भिडियो फेसबुकपर अपलोड क' देने छलै। मैकू अपन भिडियो एकटक्क देखरहल छल, छौडा मोवाइल हाथसँ ल' लेलकै। आ कहलकै, की सब लीखल हइ से बुभल हओ।

एह, बहुते बात लिखने छो।

– मिथिलाकेँ मौलिक बाजा।

– महान कलाकार सलाम।

– लोप होइत बाजाकेँ बजौनिहारकेँ संरक्षण होएबाक चाही।

बहुते–बहुते बात हइ।

'सब बतपदोना हउ। पिपही फुकैत–फुकैत दम निकलि गेल। फेफड़ा सुखा गेल। हमरा सभकेँ दादा पुरखाकेँ अकालेमे जान गेलै। बुढारी अएबो नइ कएल की स्वाँस उपरे। कथी कहै हइ–दम्मा। एकटा गोटियो कीन क' ओकरा सभकेँ खूढ़ खानदानकेँ कियो नइ होतै देने।' मैकू बमकल रहए। छुच्छ दुलार ओकरा कहियो ने नीक लगलै। 'जकर बाप दादा छाहसँ छुआइ हइ, ऊहे आब मिश्रीसन बोली बोलै हय। ऊहेसभ तँ नइ बजब' देलकै। हम थोड़बै कहलियै नइ बजाएब।'

मोन तँ रहै तमसाएल मुदा बाजल सिनेहसँ, 'सुन फेक दे गटिपिटिया। ने तँ ऊ सुन तोरो अपनेसन बना देतौ। अपना छोडि ककरो नइ आदमी बुझै हइ। छिहलैत पालिस मारल बोली बोलतौ, सेहो कण्ठकेँ उपरेसँ। कण्ठक नीचा दरेग नइ हइ। फेक दे फेक।

चिचियाएल ओतैसँ, गे कथू खाए ला हउ तँ ला, बही तेहन बात बोलल जे भोरे भोरे जे भूखसँ अतड़ी दुखाए लागल।'

छौड़ाकेँ हँसी नइ रुकै बापक बात सुनिक'। बापक फदफदी आक्रोश अनावश्यक बुझाइ। ओ भयावह समय बादक उत्पादन छल। तें ओकरा लग जातीय पेशागत उत्पीडनकेँ सामाजिक व्यवस्थासँ जोडबाक शूत्र नइ छलै। ओ इएह बुझैत छल जे अभाव आक्रोशकेँ जन्म दै छै आ ओ सम्पन्नप्रति लक्षित रहै छै। गरिवीसँ हिनताभाव जन्मै छै। ओहि हीनताभावसँ ओकर बाप नइ निकलि सकलै। मैकूक बेटा कोनो मोटका कीताब नइ पढने छल। ने कोनो बड़का स्कूलक क्लास रुममे लेक्चर सुनने छल। मुदा चुपचाप, अनजान, अपन बापक वैचारिक वर्गिय कीत्तासँ दूर भ' रहल छल।

गणेशी हाथक चमत्कारी मोबाइल नित्य एहन खीस्साक जनन–प्रजनन करै छै। जे ओकरा बापक यथार्थ पीडाक कम्पनक अनुभूति नइ होमए दै छै। ओकर संवेदना मोबाइलक शब्द आ समाजिक सञ्जालक पोष्ट, प्रतिक्रिया आ प्रभावक भारसँ दबि गेल छै। विगतक भयावह प्रतिविम्वनक कथामे यथार्थ कम आ फेन्टासीक मात्रा बेसी भेटै छै। सञ्चार, समाजिक सञ्जाल आ मनोरञ्जनक मैदानमे आनन्द आ हँसी ठट्ठा खोजैत अछि गणेशी सनक युवा। बेटाकेँ अपने ढङ्गे बुझैत अछि मैकू। बुझैत अछि– बेटामे बचकाना छै। गणेशी अपन कपड़ा, हाथक मोवाइल आ जेबीमेके सय–पचास रुपैयाक बलपर अपनाकेँ ककरोसँ कम नइ बुझैत अछि।

मैकू कहै छै– 'रे सुन, ऊ सुन मदारी हइ। सौंसे जिनगी ओकरे इशारापर नचबे आ तोरा लगतौ अपने नचलिय। ऊ हइ ओइ आरि आ हम सभ छी अइ आरि।'

बेटाकेँ बापक कथनीमे जड़ि फुनगी नइ भेटै। प्रविधिमे सामान्य पहुँचक कारण भ्रमक मकडजालसँ छड़ाएल अछि ओ। बापकेँ पुरना युगकेँ अज्ञानी बुझैत अछि। ओकरा बुझाइ छै, 'हमर बाप अतीतमे जिबैए आ ओहीमे रह' चाहैए। अतीतक गोहियासँ निकलैत तँ ने देखैत दुनिया। से कैला दुनियाँसँ दूर भेल छै ओकर बाप?'

'नइ हइ कथु खाइ लए? सिवर्ती रतुका सोहारीपर नुन मिरचाइ आ पियाउजक ढेसर देलकै। मैकू खाए लागल। बेटा बापक प्रवचन सुनसँ नीक घरमे जाएब उचित बुझलक। सिवर्ती आगूमे बैस गेल। मैकूकेँ नजरि गेलै तँ कहै छै, 'कौर गनै हइ अइज बैठ क'।' सिवर्ती टन्नसँ बाजल, 'हँ। कते दिनासँ बैठ क' खाइ हइ? की बुझै हइ, घर नइ खलियाइ हइ? आमदनी बन्द। छौड़ाकेँ बाहरसँ अएला कते ने कते दिन भ' गेलै। छौड़ा तँ रोज दस–बीस घीना क' लैए लै हइ। काम कुछो नइ करै हइ।'

रोटी चिबबैत घरबालीक बात सुनैतरहल मैकू। महामारीक कारण हाटबजार बन्द भेला महिनो भ' गेलै। आमदानीक उपाय जुत्ता–चप्पलक मरम्मत छलै। ओइपर चुकुल चढ़ि गेलै। ओना सरकारी राहतकेँ दिन–राति हल्ला चलिरहल छै। स्वाति नक्षत्रक बर्षाक बुन्द गायक मुहमे खसै छै तँ गौलोचन होइ छै, बाँसमे खसल तँ वंशलोचन भेल आ सितुवामे खसल तँ मोती भेल। सरकारी राहतक अक्षत बुन्द कहिया खसतै ताहिलेल आकाशदिस मुह बओने बैसल अछि बहुतो। 'सरकारी आदमी नाम लिखै हइ, मारे चिउज बँटतै जाउक न।' अनसोहाँत बात नइ बाजल छल सिवर्ती। मैकूकेँ मोन अपने सन छै, एहन समयमे शङ्काक बिहारि ओकरा मनमे बह' लगै छै। हमर नाउ कैला लिखतै पण्डित सुन। ऊ सुन कहबे करै हइ, बलु हम बड़ टेढ छी। ऊ सभ केहनकेँ टेढ़ कहै छै से मैकू एखनो नइ बुझि पाएल अछि।

मैकूक क्रोध आ घृणा स्थायी भ' गेल छै। ओ अपना रङ्गमे अबैत छल तँ बेटा नजरिसँ दूर भ' गेल। सिर्वती कतिअएबाक कोशिश करैत रहल। मैकूक गर्जन असह्य भेलाक बाद पहिने तँ बेटा आ फेर घरबाली घरदिस घसकल। बेटा मोवाइलमे आँखि गड़ौने बटनपर हाथ चलारहल छलै।

'बाहरसँ कमाक' लएले से तँ पेटमे भसम भ' गेलौ। टन्डेली कएलासँ गुजर जएतौ? माएक बात सुनिक' गणेशीक नजरि मोबाइलसँ हटिक' माएदिस घुमि गेल छलै। माएकेँ बिनु पलक झपकौने देखैत रहल, ओ जेना मौन प्रश्न क' रहल होइक जाउ, फेनो जाउ दिल्ली? तोरा सभकेँ छोड़िक'। किछु ने किछु अतै कर' पड़तै। की अछुतक सन्तान होएबाक कारणे हम किछु कैए ने सकै छी?

मैकू बाहरमे फेर चिचियाएल जोड़ जोड़सँ गे...गे...गै...भोट नइ छुआइ हइ, छाह छुआइ हइ। अखिनतो! तोरा बेटाकेँ गिटपिटिया चलौने की होतौ...देश विदेशकेँ फोटो देखक' की होतौ? तूति खियाक' रेसम हगब' जनै हइ ऊ सुन। दू–चारि किलो द' देतौ राहतकेँ नामपर अक्षत। देवताकेँ चढ़ौनामे काम लगतौ, फिकिर नइ कर।' मैकू डाँरमेसँ तमाकू आ चुना निकालि क' रगड़' लागल। नोंसि नाकमे ल' क' कसिक' छिकलक ओ। चौंकल सिवर्ती आ बेटा घरसँ बाहर अएलै। बाबु तोरा राखि देतो कोराइन्टाइनमे– एना छिकबहो त। मैकू हँसैत बाजल, 'तोहर माइ कहै हउ ने बकलेल, से हम बकलेले छी। हमरा तँ तोहर कहल बात कहलो नइ होइ हय। कथी? कथीमे रखतै? रखतै कहाँदुना? चल हट, कहादुना रखै हइ! निकाल पिपही आ एगो तुहू पकड़। फुक पिपही आ बजा ढोल।

सिवर्ती पिपही आ ढोल निकालैत अछि। दुनु बापते पिपही फुक' लागल। ढोल पीट' लागल सिवर्ती। गाम गुञ्जयामान भ' गेलै। बाजाक मधुर धुनसँ त्रेसी रणभेरीसन गर्जन क' रहल छलै बाजा।

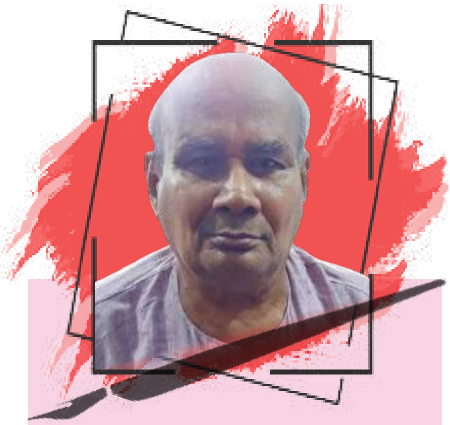

प्रो.(डॉ.) नवोनाथ झा

मधुबनी, मिथिला (बिहार)
सम्पर्क : +91 9955941015

सबौर महाविद्यालय, सबौर, भागलपुर (मैथिली विभागाध्यक्ष)सँ अवकाश प्राप्त विश्वविद्यालय प्राचार्य प्रो.(डॉ.) नवोनाथ झाक गुल्फल-गुल्फल मुँह, करामात (मैथिली कथा-संग्रह), गेनाक फूल (मैथिली कविता-संग्रह) प्रकाशित छनि। साहित्यक विभिन्न विधासँ सम्बंधित कतिपय आलेख मैथिली एवं हिंदीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित छनि। पुष्पिता(सबौर महाविद्यालयक पत्रिका)आ मिथि-मालिनी (मिथिला-परिषद भागलपुरक पत्रिका) क सम्पदान कएने छथि। सम्प्रति पूर्णकालिक साहित्य साधनामे लागल छथि।

जखन कमाएब तँ...

एक सारंगी जोगी आएल। ओ गीत गाएब शुरू केलक, ''मुझे दे दे माँ फटी एक गुदरी'' पुतोहु सासुकेँ कहलनि जे ओ तँ छोटका बाबू छथिन। पुतोहुक नाम नेहा छलनि। सुषमा बड़ ध्यानसँ सारंगी जोगीक गीत सुनए लगलीह।

नेहा सारंगी योगी कँे गप्पमे लगओने छलीह। ओ गप्प तँ अपन मातृभाषामे करबाक प्रयास केलनि, किन्तु योगी जखन मैथिली नहि बाजए तँ दुनू गोटाक हिन्दीए मे गप्प भेलनि।

नेहा कहलनि जे ''जोगी तँ झूठ नहि बजैत अछि।'' हमजे पूछब से आहाँ सही-सही कहब।

जोगी तँ कोनो गप्प करबाक हेतु तैयारए नहि छल। हम जोगी छी, भिक्षाटन कए रहल छी। हमरा एक फाटल-पुरान दए दिअ। हम चलि जाएब। हमरा गप्पमे नहि ओझराऊ। किन्तु नेहा तँ पढ़ल-लिखल महिला छलीह। ओ रंग-बिरंगक गप्पसभ जोगीसँ करथि। अन्तत: जोगी तैयार भए गेल जे पुछू की पूछब ?

नेहा पुछलनि— ''जोगी जी अखन तँ अहाँ युवक छी। जुआनी तँ जोगक नहि भोग होइत अछि। अहाँकेँ ओहिमे मन लगैत अछि की ?

— खूब मन लगैत अछि।
— अहाँ तँ नीक परिवारक बुझाइत छी। अहाँ ई धंधा किएक अपनेलहुँ?
— हमरा नसीबमे वैह लिखल छल?
— अहाँ कँे जोगी भेला कतेए दिन भेल?
— बारह वर्ष।
— अहाँ कतेक भाइ छलहुँ?
— दुइ भाइ।
— अहाँ कतेक पढ़ने छी?
— बी. एससी. पास छी।
— पास कोर्ससँ की?
— नहि, प्रतिष्ठासँ।
— कोन विषयमे प्रतिष्ठा छल?
— गणितमे।
—कहिया प्रतिष्ठा केलहुँ ?
— 1964 ई० मे।
— कोन विश्वविद्यालयसँ?
— पटना विश्वविद्यालयसँ।
— अहाँक घर कतए भेल?
— मधुबनी जिला।
— कोन गाम?
— छोडू ओ गप्प सभ।
— अहाँकेँ बारह वर्ष पूरि गेल, तँ माएसँ भीख लेबाक हेतु अयलहुँ अछि की?

जोगी से सुनितहि विदा भए गेल, किन्तु माए कैसक' जोगीक हाथ पकड़लनि। पुतोहु चट गेटमे ताला लगा देलनि।

सासु, पुतोहुकेँ कहलनि — इएह हमर छोटका बेटा शेखर छी। ओकर दहिना गाल पर तिलबा हएत से तँ ओ दाढ़ी बढ़ौने अछि, पता नहि चलत। देखू तँ ओकरा बामा कानमे लितबा अछि कि नहि ?

की देखथिन माए, छोटके बाबू छथिन्हे। ओ तथापि देखलनि। सासुकेँ सेहो बामा कानमे तलिबा देखा देलनि।

जोगी तखन तँ जबर्दस्ती भागए चाहल, किन्तु माएक समक्ष ओकर किछु नहि चलल।

शेखरकेँ घरसँ निकलि जाएब, जोगी भए जाएब एक अद्भुत घटना छल।

शेखर दुइ भाइ ओ दुइ बहिन छल। निशान्त सभसँ जेठ भाइ रहथि। शेखर सभसँ छोट छल। बीच मे दुइ बहिन प्रेयसी ओ रूपसी। प्रेयसी जेठ छलि ओ रूपसी छोट।

ओहि दिन भातृद्वितीया छल। शेखर खुशी पूर्वक दुहू बहिनसँ नोत लेबाक हेतु गामसँ एक दिन पूर्व विदा भेल। माए दुहू बहिनक हेतु अलग-अलग सनेस देलनि।

माए पूछलनि जे रातिमे ककरा ओहिठाम रहबे। शेखर कहलक प्रेयसी दीदीक ओहिठाम।

शेखरकेँ छोटका बहिनोइसँ बड़ पटैत छल। बहिनोइ सेहो तखन आएल रहथि। ओ भोरका अर्घ्य दिन विशाखापत्तनम चलि जेताह।

शेखर सएह करबहुँ केलक। रातिमे प्रेयसीक ओहिठाम रहल। भोरहि ओकरासँ नोत लए विदा भए गेल। रूपसीसँ सेहो नोत लेलक। जाबत तक बहिनोइ रहलाह ताबत तक ओहीठाम रहल, दूनू सार-बहनोइमे बड़ हँसी -मजाक हुअए। छठिक भोरका अर्घ्य दिन बहिनोइकेँ गाड़ीक आरक्षण रहनि। ओ चलि गेलाह। शेखर सेहो छठिक प्रातभने गामक हेतु विदा भए गेल, किन्तु ओ गाम आएल कहाँ?

रूपसी पूछलक हमरा तुँ की देबए, सएह प्रेयासी सेहो पूछने छलि।

शेखर दूनू बहिनकेँ कहने छल अखन जे माए-बाबू देलखुन्ह से ले। अखन तुँही हमरा दे। हम जखन कमाएबतँ देबहुँ।

शेखर जखन गामसँ विदा भेल छल, तँ माए पूछने छलीह जे अएबँ कहिया बौआ? ओ माएकेँ कहने छल जे भोरका अर्ध्य दिन ओझाजी चलि जेताह। छठिक प्रात:काल हम चलि आएब, किन्तु छठि भेला तँ दशहुँ दिनसँ बेसी भए गेल। शेखर एखन धरि कहाँ गाम पहुँचल ? फलत: ओकर माए ओ बाबू दूहूकेँ अनदेशा होबए लगलनि। निशान्तकेँ बैंकमे नौकरी भए गेल रहनि।

आनन्द बाबू स्वयं दूहू बेटीक ओहिठाम गेलाह। हुनका जखन बेटीसँ ज्ञात भेलनि जे शेखरकेँ गेला तँ सात दिन भए गेल त' ओ बेसी चिन्तित भए गेलाह।

माए जखन बुझलीह तखन तँ ओ विचलित भए गेलीह। हुनक दूहू आँखिसँ दहो-बहो नोर बहए लगलनि। धनिकेँ पुतोह जे हुनका सम्हारथि। प्रतीत होइत छल जे हाड़-माउसक बनल शरीर कोनो पैघ नदी भए गेल हुअए एवं दूहू आँखि पानि निकासिक नाली, जाहिसँ अनवरत पानि बहल जा रहल छल, बहल जा रहल छल। अन्तत: नदी सुखेबाक नौबति आबि गेल। ताबत धरि तँ दूहू बेटी सेहो आबि गेलनि, किन्तु ताहिसँ की?

सुषमा जखन मरनाशील भए गेलीह, तँ, आनन्द बाबू सतर्क भेलाह। हुनकहुँ तँ सैह स्थिति छलनि। ओ पत्नीकेँ अस्पतालमे भर्ती करओलनि।

शेखरक दूहू बहिनतँ स्वत: परेशान छलि। ओ दूहू बहिनकेँ कहिक' विदा भेल छल जे जखन कमाएब तँ देबहुँ। आब के देत रौ बौआ? कहैत-कहैत भावुक भए जाइत छलि। आँखिसँ नोर बहए लगैत छलनि।

आनन्द बाबूक सम्बन्धीसभकेँ जेना-जेना समाद गेलनि, सभ अबैत गेलाह। शेखरक कतय-कतयने खोज भेल, किन्तु ओकर कतहुँ कोनो पता नहि चलल।

समय अपन गतिसँ बितैत गेल। सुषमा जखन-तखन भावुक भए जाथि, किन्तु भ्रातृद्वितीया जहाँ आबए कि ओ विचलित भए जाथि। आनन्द बाबूकेँ हुनका सम्हारब मोश्किल भए जानि।

भ्रातृद्वितीया दिन दूहू बेटी माएकेँ की सम्हारत? ओ दूहू स्वयं आब हमरा ओतए के सनेस ल' क' आओत रौ बौआ कहैत-कहैत बड़ भावुक भए जाए। फलत: बड़ कारूणिक स्थिति उत्पन्न भए जाए।

समय गतिशील रहल। भ्रातृद्वितीया अबैत रहल। माए-बेटी भावुक होइत रहलि। समयक अन्तरालमे आनन्द बाबूक निधन भए गेलनि। निशान्त जे पिताक काज मे गाम अएलाह से काज सम्पन्न भेलाक बाद माएकेँ संगहि जमशेदपुर लय चलि गेलाह।

शेखर तँ प्रयास केलक जे माएसँ भिक्षा लए निकलि जाई किन्तु ओ निकलि नहि सकला। माए-पुतोहु ओकरा चिन्ह गेलीह। ओ पकड़ा गेल।

माए जाहि बेटाक हेतु प्राण धरि उत्सर्ग करबाक हेतु तैयार छलीह, जाहि बेलक हेतु तखनहुँ यदा-कदा नोर बहबैत छलीह, ऐ बेटा माएक माया जालसँ कोना निकलि जातए?

निशान्त तखन बैंकमे रहथि। तखन दुइ बाजि रहल छल। निशान्तकेँबैंकसँ लौटबामे विलम्ब भए जाइत छलनि। ओ नओ बजे रातिसँ पूर्व डेरा नहि अबैत छलाह, किन्तु ताहि दिन शनि छल। तँ छओ बजे तक लौट जेताह। छओ बजबामे सेहो तखन चारि घंटा विलम्ब छल।

शेखर भाइ नहि देखि भगबाक भरपूर प्रयास केलक, किन्तु सासु-पुतोहुक समक्ष ओकर किछु नहि चलल। सभसँ तँ कमाल निशान्तक आठा वर्षक बेटा चुन्नू ओ छओ वर्षक बेटी लोली कए रहल छलि। ओ दूहू सेहो जोगीकेँ कसि काय पकड़ने छल। सभ मीलि कए जोगी कँ घरमे बन्द केलनि।

चुन्नू ओ लोली आश्चर्यचकित छलि जे जोगीकेँ माए ओ बाबी किएक बन्द केलनि? ओ दूहू तँ वास्तवमे एक जोगीकेँ पकड़ने छल, तँ ओकरा दूहूकेँ आश्चय्रित हैब स्वाभाविक छल। माएने अपन बेटाकँ एवं नेहा ने अपन देओरकेँ पकड़ने छलीह।

बाबी जखन अपन पोता-पोतीकेँ कहलनि जे ओ तोहर काका छौक। तखन तँ ओ दूनू अपन काकामे रमि गेल, आब हम सभ संगहिं खेलाएब काका, बाबी अहाँ हेतु बड़ कनैत छलथिन, अहाँ किएक भागि गेलियैक? अहाँकेँ की कहलनि? आदि-आदि बहुत किछु, किन्तु काका किछु बाजि कहाँ रहल छल?

बाहरसँ केबाड़ खटखटाएकल। छओ बाजि चुकल छल। नेहा जाय केबाड़ लोललनि, निशान्त रहथि। किछु बजितथि, तावत् दूनू भाइ-बहिन बाजलि-बाबूजी... अएलखिन अछि। ओकरा दूहूकेँ तकर जबाव कहाँ छल? पत्नी कहलनि छोटका बाबू छथिन, सँ सुनितएँ निशान्तके प्रसन्नता ठिकाना नहि रहल। कोना नहि होइत?

सहोदर भाइ छलनि। निशान्तसँ बहुतछोट छलनि। बिना कोनो कारणेँ घरसँ चलि गेल रहनि। निशान्त ओकरा तकबाक हेतु कतय-कतय नहि बौआएल रहथि, किन्तु कतहुँ पता नहि चलल रहनि। हुनका माए ओ बाबूक दयनीय स्थिति ओहिना स्मरण छलनि, से भाइ अनायासहिँ आबि गेल छलनि। तखन हुनका कोना नहि प्रसन्नता होइतनि?

निशान्त भाइकेँ देखितहिँ भाइसँ लिपटि गेलाह- तोरा कोन कष्ट भेलहुँ तोरा के की कहलकहुँ? जे चलि गेलाह कहि-कहि कानय लगलाह। खूब कनलनि। माए चुप केलनि।

निशान्त अपन सभ सम्बन्धीकेँ शेखरकेँ घर वापस आबि जेबाक खुशनामा पठओलनि, किन्तु शेखरतँ किछु बाजिये नहि रहल छल। ओ तँ शायद अचम्भित छल जे 'कोन नाटक सभ भए रहल अछि'

शेखर की सोचि रहल छल? ओकरा होनि जेना भारी पश्चाताप कय लेलनि जे कोनो स्थिति मे शेखरकेँ पुन: नहि जाय देब।

निशान्तक जेना-जेना समाद हुनका सम्बन्धी सभकेँ पहुँचलनि, तेना-तेना अबैत जाइत गेलाह, किन्तु सभसँ पहिने शेखरक छोटकी बहिन-बहिनोइ अएलाह। रूपसीकेँ तँ अनुजकेँ देखितहिँ जेना प्रतीत हुअए जे ओकरा सर्वस्व भेट गेल हुअए, किन्तु ओ सेहो बड़ भावुक भए गेलि जे हमरा भरोस दए जे जखन कमाएब तँ देबहुँ ओ कोन कलंक लगा देले? हम तँ किछु कहने नहि रहिअहुँ।

रूपसीक कानब जेना आँखिक नहि बाजब जेना मुँहक नहि वरन ह्रदयक हुअए, से सुनि शेखर सेहो अपनाकेँ नहि रोकि सकल-हमरा माफ कए दे दीदी, हम तोरा सभकेँ बड़ कष्ट देलिअहुँ। हम अपराधी छी... बाजि-बाजि बड़ हाक्रोश केलक। ओकरा आएला तँ पंद्रहुँ दिन सँ बेसी भए गेल छल, किन्तु ओ पहिल बेर ओही दिन बाजल।

शेखर पुन: बाजल जे, हम जे कहने छिअहुँ ''जखन कमाएब तँ देबहूँ'' ताहू बचनक पालन करब।

नहि बौआ तुँ मात्र स्थिर भए कए रह, बाबूजी चलिये गेल, माएकेँ तोरा बिनु बड़ कष्ट भेलहूँ, अन्न-पानि सभ किछु त्यागि देलकहूँ, मरनासन्न भए गेलहूँ। आबहूँ तुँ ओकरा ह्रदयकेँ संतुष्ट कए दही। हमरा सभ आओर किछु नहि चाही।

ओहि दिन रवि छल। प्रेयसीक सेहो सैह स्थिति छलि। निशान्त प्राय: सभ सम्बन्धी आबि गेल छलखिन। सभ गोटेँ स्वर्णरिखा नदीक घाट पर गेलाह। शेखरक

नह, केश , दाढ़ी कटओलनि। ओकर सभ जोगी वाला कपड़ा केश, दाढ़ी आदि नदीमे भसा देलनि। सभ गोटेँ स्नान करैत गेलाह। शेखरकेँ नव वस्त्र पहिरओलनि।

शेखरक दिनचर्या पूर्णत:बदलि गेल। ओ एम. एस. सी गणितक पुस्तक सभ कीनलक। स्वयं परिश्रम करय, कोचिंग करय तथापि असुविधा होइक तँ ट्यूशन करए।'' बुझाइते ने छल जे ओ वैह जोगी अछि। तखन बुझाइत छइ जे ओ कोनो परिश्रमी छात्र अछि।''

शेखर खूब नीक जकाँ बुझैत छल जे सरकारी नौकरी प्राप्त करबाक अवस्थामे तँ जोगी बनलहुँ। कतय-कतय ने घुमलहुँ। तखन तँ एकहिँ गोट विकल्प रहि गेल-व्याख्याक खूब, ताहि हेतु तँ नीक अंकसें एम एस सी करय पड़त। ताहि अनूकूल स्वयंकेँ ढ़ारए पड़त।

मनुखसँ किछु असम्भव नहि। ओ जँ निश्चय कय लेत जे अमुक काज करब, तँ वैह निश्चय ने ओकरा सँ सभ किछु करबाएत, ओहि अनुकूल ओकरा बनाएत, परिश्रम करवाएत सफलता दिआएत। शेखर से निश्चय कय लेने छल।

शेखर ओहि बेर खूब तैयारी कए एम एस सी (गणित)क परीक्षा राँची विश्वविद्यलय से देलक। कमाल कए देलक शेखर ओकरा एम एस सी (गणित)मे प्रथम श्रेणी भेल।

संयोगसँ गणितमे व्याख्याताक पद पर शेखरक नियुक्त सेहो भागलपुरक मारबाड़ी महाविद्यलयमे भए गेल। शेखर पहिने जे कहने छल जे जखन कमाएब तँ देबहुँ, से समटल।

सितम्बर बीत रहल छल। दुर्गा-पूजा, दीवाली, छठि आदिक छुट्टी होबए वाला छल। महाविद्यालय आब छठिक बादहिँ खुलत।

शेखर भागपलपुरक सोनापट्टी बाजार गेल। दूनू बहिनक हेतु गर्दनिक सोनाक हार कीनलल।

शेखर ओहिबेर भ्रातृद्वितीयासँ दुइ दिन पूर्वहिँ प्रेयसीक ओहि ठाम गेल। भ्रातृद्वितीया दिन भोरहिँ प्रेयसीसँ नोत लय रूपसीक ओहिठाम गेल ओकरहुँसँ नोत लेलक। दूनू बहिनक आँजुरमे सोनाक हार राखिक बाजल ''आब हम कमाइत छी दीदी।''

छूहू बहिन निहारि कए देखलक- अँए सोनाकहार। दूहूक आँखिसँ आनन्दक धार बहि रहल छल। दूहूक मुँहसँ अनायासहिँ निकलि गेल बहुत उत्तम उपहार, तकर उम्मीद कहाँ छल? युग-युग जी बौआ।

लघुकथा

पोसपूत

अरुण माया

श्रीखण्डी भिट्ठा, सीतामढ़ी, मिथिला (बिहार)

सम्पर्क : +91 9572995880

भगवानक देल पुनीत बाबू लग सभ किछु छलन्हि खेती-बाड़ी, फुलवारी इनार-पोखरि, कोनो यज्ञ-प्रयोजन आदिमे गमकौआ बासमतीकेँ लेल पथ्य-पानि हेतु दू-चारि बरखक पुरान चाउरक लेल जखन गाममे लोक खोज-पुछारि करए तँ लोग झट द' कहि दए अहाँ! इम्हर-ओम्हर कतौ ने घूमूँ सीधे चलि जाऊ पुनीत बाबू ओहिठाम मुंडन-उपनयन विवाह-श्राद्धमे या गामक लोकक अन्य बेगरतामे पुनीत बाबूक कोठी सदिखन खुलले रहल नित्य पूजा-पाठ खेती-बाड़ीसँ घर-गृहस्थी हँसी-खुशीसँ चलैत छल पुनीत बाबू तँ कम मुदा हुनक पत्नी मानपुर वालीकेँ दुखक कोनो ओर-अंत नहि! एकटा दुख मधुमेहक बीमारी जकाँ भीतरे-भीतर शरीरक संग आत्माकेँ सेहो घुन जकाँ चाटि रहल छल कतेको कबुला-पातीक बाद सेहो मानपुरवाली जिनका लोक लाल काकी कहैत छल हुनक कोखि खाली छल। मुह पर तँ नहि मुदा परोक्षमे लोक लाल काकीकेँ बाँझ कहैत छल। लोकक ई बात लाल काकी जनैत छली, मुदा अपना हाथमे तँ किछु नहि रहैत छैक ने! कोन शहर कोन डॉक्टरकेँ इलाज नहि चलल। बिधाताक लिखल के मेटा सकैत अछि?

बाँझ-राड़, मोसमात! ई ओ शब्दबाण अछि जे कोनो नारीकेँ जिबते मारि दैत अछि। एहि घाओकेँ कोनो शास्त्र-पुराण आ ज्ञान आइ धरि नहि भरि सकल। अचानक पुनीत बाबू एकदिन अमावस्याक राति अंतिम साँस लेलनि आ दुनियासँ बिदा भ' गेला। लाल काकी अपन पतिक स्वयं आगि देबक इच्छा प्रकट कएलीह, मुदा सम्पूर्ण समाजक फसिला स्त्रीक पक्षमे कहियो नहि भेल छल। एहि बेर सेहो विपक्षेमे भेल। समाज अपन सुबिधानुसार अपन बिधान खुद गढि लैत अछि। निर्णय भेल पुनीत बाबूक भातिज सत्यनारायण मुखाग्नि देता, ओहो तँ बेटे दाखिल छथि। कर्ता माछ-माउस धरि सभ किछु ठीक चलल, मुदा ओहिकेँ बाद शुरू भेल लाल काकीक करिकबा सन दिन-राति लाल काकीक दियादनीक बेटा सत्यनारायण लाल काकीकेँ फुसला क' कखनो ऊँच-नीच समझा क' डेरा -धमका क' अपन गुटकेँ लोकसँ लालकाकीक चित्त बुझा धन-संपत्ति सभ लिखबा लेलक आब लाल काकी मलकिनी नहि अपन घरमे अपन पोसपूतकेँ खवासिन छलीह। अपन छोट-मोट जरूरतक लेल पोसपूत आ पुतहु पर आश्रित छलीह।

एक दिन लाल काकीकेँ पुरान नुआ फाटि गेल छलनि। लालकाकी अपन पुतहुक देहकेँ उतारल नुआ मोटरीसँ निकालि पहिर लेलीह आ मधुर स्वरमे बजलीह— दुलहिन! बौआकेँ कहबैक भिट्ठामोरसँ एकटा साड़ी किनि... रंडी! बाँझ! मोसमात! अइ उमरमे हिनका पटोर चाहि छौड़ा-मरदकेँ देखाएब लेल किछु खेत-पाथर की लिखि देलक हर हमेशा हमरा सभकेँ एटीएम समझि लेलक फरमाइश पर फरमाइस! लाल काकी सुन्न रहि गेली। ओहि राति कोरोनासँ संक्रमित भ' दम तोड़ि देलीह भोरे पोसपूत आ पुतहुक रुदन चीत्कारसँ समूचा टोल उदास छल। ओहि रुदनमे छिपल मुस्कान लाल बुझक्कड़ सेहो नहि भाँपी सकल।

आई लालकाकीक श्राद्ध अछि भिट्ठा, कोरियाही, बलहा नेओतल अछि सर्वत्र सत्तो बाबूक जय-जयकार भ' रहल छल। बेटा होइ तँ सत्तो बाबू सन।

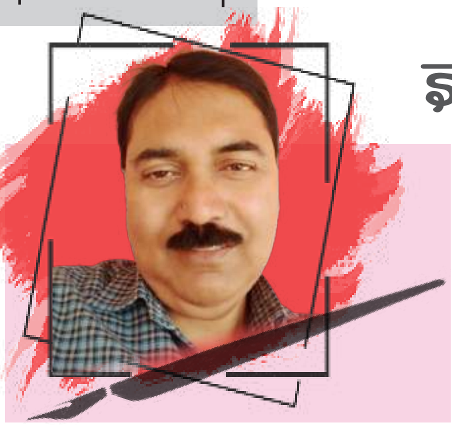

ज्ञानवर्द्धन कंठक तीनटा लघुकथा

मैथिली लघुकथाक क्षेत्रमे एकटा जगजिआर नाम राजकीय शिक्षक पुरस्कार-2015, कर्णप्रिय ललिता सम्मान-2020 एवं 2021सँ सम्मानित ज्ञानवर्द्धन कंठ जीक एखन धरि छओटा लघुकथा-संग्रह ककिया, दद्दा, लुखिया, पचहीबाली काकी, भाइरस आ स्पीड पोस्ट प्रकाशित छनि। लहर आ अपराजिता (बिहार शिक्षा परियोजना, पूर्णियाँ), मंच-स्मृति (सहदेव अभिनय संघ,बिसहथ,दरभंगा) आदिक सम्पादन कएने छथि। सम्प्रति जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) छतौनी, पूर्वी चम्पारण, मोतिहारीमे व्याख्याता पद पर कार्यरत।

सम्पर्क : +91 9934726678

मुँहतक्का

एकटा अधबयसू मनसा 'विष्णु वस्त्र निकेतन'क सोझाँ दू घंटासँ अबैत-जाइत छौड़ी-मौगी सभक मुँह ताकि रहल रहैक। ओकरा देखि ओ सभ रंग-बिरंगक चौल-चपट करैत आ हँसैत-भनभनाइत ओतयसँ चलि दैक। जेना, –मुँहतक्का नहितन। बूढ़ भ' गेलाह आ नाक लगले छनि। बुझलीह गै?जँ-जँ बूढ़ होइत जेतौक मनसा, तँ-तँ लगतौ जुआनोक कान काट'! जेना जनानी नहि देखने होइक कहियो!मार बाढ़नि!एहन-एहन मुँहतक्काकेँ मुँहे-तका लगाबी एक घरमेचा। केहन गब्बर छैक ?आदि-आदि।

तखने एकटा स्त्री एकटा किशोरीक संग बहुत रास कपड़ाक झोरा लेने दोकानसँ बहरेलैक आकि ओ मनसा घिघिया उठलैक– ''ग्घी...ई...'' आ ओहि दूनूक पछोर ध' घुसक' लगलैक। दूनूक कानमे ओकर स्वर गेलैक आ ओ सभ उनटि क' तकलकैक। किशोरी बाजि उठलैक–

"माय गे माय! देखही ओहि बुढ़बाक हाथमे की छियैक?" माय बाजि उठलैक–"गे मैया गे मैया!ई त' अपने पियरका पन्नी छियौक, सोनरबाबला। कखनि खसि पड़लैक गे दाइ सभ?"

तावत ओ मनसा ओहि पन्नीकेँ ओकरा थमा फेर घिघिया उठलैक– "ग्घी..ई... घो..."

दूनू जनी पन्नी खोलि देखलीह– दूनू कानक सोनाक झुमका अनामति रहैक। ओ मुँहतक्का घुसकैत-घुसकैत बहुत आगाँ चलि गेल रहैक।

चिन्हलहुँ नहि?

सूरे बाबू बड्ड सुराह लोक। बच्चामे इस्कूल जयबाकाल पंचू-गाछीमे आमक डारिमे दूनू टाँगक कैंच फँसा घंटो-घंटा लटकले रहि जाथि। इस्कूल जयबाक सुरतिए नहि रहनि। पढ़' बैसथि त' एक्के रातिमे 'भाषा सरिता'क एक-एक शब्द रट्टा मारि घोरिक' पीबि जाथि। भार्गव-डिक्शनरी एक सूरमे सुना देथि। देश-राजधानी आ राज्य-राजधानी जीहपर लिखल रहनि। जेहने पढ़ाकू, तेहने जिदियाह। बौकूकेँ एकदिन पोखरिमे नहाइ काल कहलथिन जे हमरासँ 'दोस' लगा। ओ जतेक बेरि 'नहि' कहैक,ई ततेक बेरि ओकर नाक-मुँह-मूड़ी पानिमे डुमाक' कहथिन–"आब बाज, नहि लगेबें दोस?" हारि-थाकिक' ओकरा कंगुरिया आँगुर सटाक' हिनकासँ 'दोस' लगाब' पड़लैक। सूरे मारि- झगड़ामे सेहो पूरे पास। एक सूरमे एकहत्तरि गारि पढ़ि जाइत छलाह। ककरो कान-कपार झाड़ि अबैत छलाह। कोनो दिन अबंच नहि होइ जहिया हिनकर उपराग नहि आबनि। बाप अँगनामे उठा-उठा पटकि देथिन जाहिसँ ओतहुक माटि बज्जर भ' गेल रहैक,मुदा हिनक चालि अज्जर बनल रहल। सूरे गीत सेहो बड्ड नीक स्वर आ सुरमे गबै छलाह। मुदा बेसी मेहनतिया नीक,बेसी तेजगर नहि नीक। हिनकासँ भुसकौलहा सभ नोकरी-काज पकड़ि लेलक,मुदा ई बाड़ीक रखबारी आ गाछीक अगोरबाहीमे रहि गेलाह। संयोगसँ मुखिया-हाथे मास्टर-बहाली हुअ लगलैक। हिनका सुतरि गेलनि। मास्टरमे बहाल भ' गेलाह। ओतय हिनका सन तेजगर आ गारिखर लोक पाबि हिनके शिक्षक-संघक जिला-अध्यक्ष बना दै गेलनि। आगाँ-पाछाँ मुँहलग्गा सभ डोल' लगलनि। आब हिनक पएर भूमिसँ दू बीत उपरे रह' लगलनि। अखबारमे रोज-रोज अपना नामसँ प्रेस-विज्ञप्ति देब' लगलाह। कोनो हाकिम-हुकुम हिनका देखितहि 'त्राहि कृष्ण' कर' लागय जे किंसाइत ई बेज्जत ने क'दिअय। ताहिसँ ई विशेष मोनबढ़ू भ'गेलाह। कतहु जाथि त' अपन परिचय देथि– "हमरा नहि चिन्हलहुँ? अरे,हम सूरे,जिलाध्यक्ष,शिक्षक संघ,...। हमरा डरे बड़का-बड़का हाकिम छुल-छुल मूत' लगैए। अखबार नहि पढ़ैत छियैक?ओहिमे हमर नाम छपिते रहैत अछि। ..."

अजुका अखबारमे हुनकर नाम फेर छपलनि अछि। एकटा दारू बेचनिहार बच्चा पकड़ाक' आयल रहैक। 'किशोर न्यायालय'मे हिनक बजाहटि भेल रहनि। ई ओकर जन्म-तिथिमे ढिट्ठे हेर-फेर केने रहथिन। न्यायाधीश महोदयकेँ ई अपन परिचय अपने स्टायलमे देलथिन। ओ जहलक आदेश क' देलथिन। हिनकर अपने पायजामा गील भ' गेलनि। सभटा ऐंठी 'सटक सीताराम' भ' गेलनि। मुँहलग्गा सभ पतनुकान ल' लेलकनि।

ड्राइवरक मेनू

भाड़ाक इनोवासँ उतरि भड़कदार मोछबला एकटा अधवयसू व्यक्ति अपन कनियाँ-बेटा-बेटीक संग 'कौशिकी' लाइन-होटलक सुसज्जित ओहारबला कक्षमे प्रविष्ट होइत छथि। टोमैटो-सूपक संग स्टार्टर अबैत छनि। तदुपरांत टेबुलपर बेरा-बेरी मुर्ग-मोसल्लम, कटलेट, ऑमलेट,नान,तंदूरी रोटी आ भाँति-भाँतिक भोज्य-सामग्रीक पथार लागि जाइत छनि। छुरी-काँटा प्लेट सभक उपर नृत्य करय लगैत अछि। हाँ-हाँ-ही-ही सेहो चलि रहल छैक। बाहर गाड़ीक ड्राइवर गाड़ी बन्न क' टॉयलेटसँ निवृत्त भ' एकटा टेबुलपर बैसि जाइत अछि। किछु कालक अभ्यंतर ओकरहु सोझा प्लेट आबि जाइत छैक आकि ओकरा आगि लागि जाइत छैक–

"रै, लाबो हमरो मुर्गा!हम गाड़ी हाँकै हती त' हमरा तड़का-रोटी आ ओकरा लागी मुर्गा?ऊ हय बड़का आ हम हती छोटका? जे-जे ओकरा देलही ह' से-से सभ्भे ला हमरो!उहे मेनू रहतौ हमर!रै,ढेउवा देबौ,ढेउवा!फोकटमे न कहै हतियौ। ओकरा पलमे रुपिया हइ आ हम कथी हती,छुच्छा?रे तूहो नोकर,हमहू नोकर!हम गाड़ी चलबै हतियौ, त' तू हमरा चलेबे?भेँटे न भेलौ ह' डरेबर से!..."

पूरा होटलक स्टाफ ओकरा लग जमा भ' गेलैक। ओमहर ओहि कक्षमे टेबुलपर राखल सभटा आइसक्रीम घमिक' बहि रहल रहैक।

दोसर जन्म

डा. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'
लौफा, मिथिला, मधुबनी
सम्पर्क : +91 9831037532

वैज्ञानिक डा. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी' परमाणु ऊर्जा विभागसँ अवकाश प्राप्तिक बाद मैथिलीक लेखन आ मिथिलाक साहित्य-संस्कृतिकेँ विश्व पटल पर पहुँचेबाक लेल अंग्रेजी अनुवाद कार्यमे लागल छथि। साहित्यक विभिन्न विधामे हिनक एक दर्जनसँ बेसी पुस्तक प्रकाशित छनि। 'विज्ञानक बतकही' (विज्ञान लेख संकलन), 'किछु तीत मधुर' (विदेश यात्रा कथा), 'अकटा मिसिया' (कथा संग्रह), 'रोबो'(नाटक,अनुवाद), 'चूल्हिचन पुराण'(उपन्यास) आदि हिनक चर्चित कृति छनि। एकर अलाबे मणिपद्मक उपन्यास 'भारतीक बिलाड़ि'क अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित छनि। 'विज्ञानक बतकही' लेल मिथिला सांस्कृतिक परिषद हैदराबादसँ तिरहुत साहित्य सम्मान, मैथिली साहित्यमे योगदान लेल 'साहित्यिकी सम्मान' आ चेतना समिति पटनासँ 'सुलभ समाज सेवा पुरस्कार'सँ पुरस्कृत डा. 'वियोगी' गाममे स्कूली बच्चासभक विज्ञान प्रैक्टिकलकेँ प्रशिक्षण आ कैरियर सम्बन्धी मार्गदर्शन सेहो करैत छथि।

प्रायः सौ-डेढ़ सौ वर्ष पहिने गाम घरसँ कियो कियो बदरी-केदार जाइत छल। यात्रा बहुत कठिन छलैक आ कमे लोक सकुशल घुरैत छल। जे घुरि अबैत छल ओकरा लेल कहल जाइत छलैक जे फलाँ व्यक्तिक दोसर जन्म भेलनि। एहन दोसर जन्म लेनिहार व्यक्ति खुसी मे भगवानक पूजा आ भोज करैत छल।

समय बदललैक, यात्राक सुविधा बढ़लैक, सड़क नीक भेलैक, बस, टैक्सी सेहो प्रचुर चलए लगलैक तखन बेसी संख्या मे पूरा देशक लोक उत्तराखंडक चार-धाम यात्रा, जाहि मे यमुनोत्री, गंगोत्री, बदरीनाथ आ केदारनाथक यात्रा सामिल छैक, करए लागल। ई यात्रा पहाड़ी इलाका मे होइत छैक आ कतबो लोक सावधान रहओ, पहाड़ी रस्ताक यात्राक खतरा बनले रहैत छैक जाहि मे मुख्य छैक बस, गाड़ी आदि कें सैकड़ो फुट नीचा खाधि मे खसि पड़ब आ पहाड़क धसना धँसब। दून दुर्घटना मे कतेको लोक जान गमबैत अछि, से तीर्थयात्री होथि आ कि स्थानीय निवासी। एहि पहाड़ी क्षेत्र मे बरखा सेहो तंग करबे करैत छैक। तें एहि तीर्थ सबसँ घुरनिहारक लेल पुरना जमानाक कहबी जे हिनक दोसर जन्म भेलनि से एखनहु प्रचलित छैक।

इस्वी 2005 मे जखन हमसब एहि यात्रा पर विदा भेलहुँ तखन एहने अनुभवो भेल। बूझू जे हमरो सबहिक दोसर जन्म भेल, आ ई खिस्सा कहबाक लेल जीबैत रहलहुँ।

कलकत्तासँ हम दू मित्र सपत्नीक एहि यात्रा पर सितम्बर के उत्तरार्ध मे विदा भेल रही। हम सब जाहि समय विदा भेलहुँ तखन वर्षा प्रायः समाप्तप्राय छलैक आ दुर्गापूजाक छुट्टी हेबा मे दू सप्ताहसँ बेसी समय छलैक। एतबे होशियारी कएल जे दुर्गापूजाक छुट्टी बला तीर्थयात्रीक भीड़सँ बचल रही। कलकत्तासँ विमान द्वारा दिल्ली, फेर ट्रेनसँ हरिद्वार आ तकर बाद रोडसँ यात्रा करबाक छल। अपनहि मोने हम सब कलकत्ते मे फैल प्रोग्राम बना कए हरिद्वारक अतिरिक्त सब ठाम बाबा काली कमली के धर्मशाला बुक करबा लेने रही। ई काज हमर मित्र सुरेन्द्र केलनि, ओ बैंक मे छलाह आ हुनक किछु सहकर्मी पहिने एहि यात्रा पर गेल छलखिन। हरिद्वार मे बैंकक रेस्ट हाउस मे आरक्षण भ' गेल छल।

कलकत्ता मे वर्षा समाप्त भ' गेल छलैक। मुदा जखन हवाइ जहाज दिल्ली पहुँचलैक तखन मौसम एतेक खराप भ' गेलैक जे करीब आधा घंटा तक हवाइ जहाज कें उतरबाक अवसरे नहि भेटलैक, आकाश मे चक्कर कटैत रहल आ हमरा सबहिक हर्ट रेट बढ़ैत रहल कारण उतरि कए चेकइन सामान लेबाक छल आ तखन टैक्सीक लाइन मे जा कए टैक्सी पकड़ि पुरानी दिल्ली स्टेसनसँ हरिद्वारक लेल ट्रेन पकड़बाक छल। कहुना समय पर स्टेसन पहुँचि पौलहुँ।

अगिला दिन हरिद्वार मे सेहो मौसम खरापे रहलैक, चारू गोटे दसटकहिया बरसाती कीनैत गेलहुँ आ शुरू भेल गंगा स्नान, विभिन्न दर्शनीय स्थलक भ्रमण। अगिला दिन ऋषिकेश गेलहुँ त' पूरा भीजैत रहलहुँ। हरिद्वार आ ऋषिकेश मे विभिन्न स्थल जे देखल से प्रायः सबकें बुझले अछि, किछु नव कि विशेष भेबो नहि कएल। तें एकर वर्णन नहि लिखैत छी।

साँझ मे मौसम नीक भ' गेलैक। हरिद्वारक बस स्टैण्ड पर एकटा एम्बैसेडर गाड़ी ठीक कएल अगिला बारह दिनक यात्रा लेल। अधवयसू ड्राइवरक संग यात्रा करबाक छल। व्यक्ति शान्त बुझाएल जे पहाड़ी इलाकाक यात्रा लेल बहुत महत्वपूर्ण होइत छैक।

अगिला दिन हरिद्वारसँ सबेरे विदा भेलहुँ। आब नीक रौद भ' गेलैक। पहिल दिन हमरा सबकें जेबाक छल यमुनोत्री। रस्ता मे मसूरी मे किछु मामूली समय रुकि कए पहुँचलहुँ केम्पटी जलप्रपात। वाह, की सुन्दर दृश्य छलैक! एतेक ऊँच जलप्रपात हम सब पहिने नहि देखने छलहुँ। एतए किछु काल रुकि जेबाक विचार कएल। हम सब सड़कसँ नीचा उतरि गेलहुँ जतए झरनाक जल जमा होइत छलैक आ कतेको लोक जलक्रीड़ा आ स्नान मे व्यस्त छल। हम सब त' मात्र पएर भिजौलहुँ आ किछु फोटो खिचेलहुँ। फेर आगूक यात्रा। रस्ता मे एक ठाम ड्राइभर गेल जल भरबाक लेल। कहलक ई जल शुद्ध आ शीतल दून छैक। पहाड़ी इलाका मे कतोक सतह के चट्टान आ गाछ वृक्षक जड़िसँ छनाइत जल सत्ते शुद्ध भइए जाइत हेतैक। बुझा गेल नैचुरल मिनरल वाटर एकरे ने कहैत छैक। तकर बाद चलैत रहलहुँ। रस्ता मे यमुना नदीक दर्शन होइत रहल। नदी एकदम पातर आ बहुत नीचा खाधि मे बहैत। चलैत चलैत दिन अछैते पहुँचलहुँ हनुमानचट्टी। एतए कहल गेल जे हमरा सबहिक गाड़ी आगू नहि जा सकत। हमरा सबहिक धर्मशाला छल जानकीचट्टी मे, करीब सात किलोमीटर दूर। ओहि रस्ता लेल स्थानीय लोकक जीप पर सवार होमए पड़ल, ड्राइवर गाड़ीक संग हनुमानचट्टी मे रुकि गेल। ई व्यवस्था एक तरहें खराप लागल कारण रस्ता ठीके छलैक मुदा स्थानीय लोक सब अपन रोजगार लेल एहन व्यवस्था क' लेने छल।

अस्तु, साँझ होइत होइत हम सब पहुँचलहुँ बाबा काली कमलीक धर्मशाला। एकदम यमुनाक कछेर मे बनल ई मकान। यमुना एतए बहुत पातर धारा, दसो मीटर चाकर नहि, मुदा पहाड़सँ खसैत जलक कलकल ध्वनि यात्राक थकान हरि लेलक।

यमुनोत्री तीर्थ एतएसँ करीब पाँच किलोमीटर उँच पहाड़ पर, प्राय: सीधा चढ़ाइ। हमरा सबकें घोड़े पर जेबाक छल। कतेको घोड़ैया सब तखने हाजिर भेल, एक गोटेसँ चारि टा घोड़ाक बातो कएल मुदा अगिला दिन ओ ठकि लेलक। आशाबाटी मे किछु समय नष्ट भेल। फेर कोनो दोसर घोड़ैया कें ठीक कएल। फल भेल जे कने देरीसँ विदा भेलहुँ यमुनोत्री। कोनो बात नहि, हमरा सब कें आजुक रात्रि विश्राम एतहि करबाक छल। करीब दस बजे हम सब उपर पहुँचलहुँ। यात्रीक भीड़ एकदम नहि, बूझू चालीसएक लोक। एतए पहिने लोक गर्मजलक कुण्ड मे स्नान करैत अछि से कएल, मोन आर प्रसन्न भेल। भीड़ नहि रहलासँ जल्दी बाहर निकलि जेबाक कोनो बाध्यता नहि। ओतेक उँच पहाड़ पर ठंढा त' लगिते छलैक मुदा कुण्ड मे आनन्द अबैत छलैक। पूजा अर्चना कएल, किछु पेट पूजा आ तखन बैसि गेलहुँ यमुनाक कछेर मे। एतए यमुना पाथर पर खेलाइत धुपाइत नीचा उतरैत छथि। किन्तु जल बहुते ठरल। मात्र अनुभव करबा लेल जल मे कनेक पएर डुबाओल से कनकनी हिला देलक।

चारू कातक दृश्य अतिशत मनोरम आ वातावरण शान्त। लोक कें जँ पेट नहि रहितैक आ ओकरा भरबाक लेल रोजगारक चक्कर नहि रहितैक त' सुधिबुधि हेराएल एहन दृश्य देखैत बैसल रहैत, अन्यत्र जेबाक कोनो काज नहि रहितैक। मोन कखनहु नहि अखछाइत। प्राय: पुरान जमाना मे ऋषि मुनि एहिना करैत होएताह आ तखन शान्त वातावरण मे शास्त्र रचना करैत गेलाह।
हम सब करीब तीन बजे नीचा उतरि गेलहुँ। जानकीचट्टी बहुत छोट गाम, खाली घोड़ैया सब रहैत। मुख्य दृश्य यमुना नदीक कछेर मे दूनू कातक ऊँच पहाड़क बीच जल के उतरैत देखब।

अगिला दिन सबेरे विदा भेलहुँ फेर ओहने जीपसँ हनुमानचट्टी जतए ड्राइवर प्रतीक्षा करैत छल। गाड़ी मे सवार भेलहुँ उत्तरकाशी शहर लेल। पहुँचबा मे साँझ पड़िये गेलैक। एतए सेहो बाबा काली कमलीक धर्मशाला एकदम भागीरथी नदीक कछेर मे, पैघ परिसर। सुरेन्द्र लोकसँ परिचय क' कए टिटकारी दैत अपन काज सुतारबा मे दक्ष छथि। हुनका पता लागि गेलनि जे स्थानीय मनेजर कियो अरुण कुमार झा छथि। बस आब की ? ओ मनेजरक गामसँ ल' कए जन्मकुण्डली तक पता क' लेलनि ओ ओकरासँ दूटा नीक रूम एलॉट करबा लेलनि। दुतल्ला पर हमरा सबहिक दूनू रूम छल। अन्दर मे श्वेत वस्त्रादिक साज सज्जा कोनो थ्री स्टार होटलसँ नीक। आ खिड़की खोलू त' सामने नीचा मे भागीरथी। एहिसँ सुन्दर आवास त' शहरक भीतर कोनो थ्री-स्टार होटलो मे नहि भेटैत। सामान राखि नीचा उतरलहुँ। बगले मे झूला पुल। भोजनक समय तक घुमैत रहलहुँ, आनन्द आबि गेल।

अगिला दिन हमरा सब कें जेबाक छल गंगोत्री। एहि रस्ता मे गंगनानी नामक जगह पर गर्म जलक कुण्ड छैक। एतए हम सब स्नान कएल। चार धाम यात्रा मे सब धामक रस्ता मे अपन अपन कुण्ड छैक। यमुनोत्री आ बदरीनाथ मे त' मन्दिरक स्थले मे कुण्ड अवस्थित छैक मुदा गंगोत्री लेल गंगनानी आ केदारनाथ लेल गौरीकुण्ड छैक। स्नान केलाक बाद पराशर मुनिक आश्रम देखैत हम सब आगू बढ़लहुँ। किछु दूर गेला पर हर्सिल घाटी आबि गेल। एहि इलाका मे मिलिटरीक छावनी सेहो देखल आ सेवक बगान भरल। गाछ सब मे लाल लाल सेब आकर्षित करैत। कतेक ठाम गामक बगल मे रस्ता पर लोक सेव बेचैत। हम दूनू गोटे त' फ्रांस प्रवास मे सेवक बगान देखने छलियैक मुदा मित्र सुरेन्द्र आ हुनक पत्नी लेल ई नव अनुभव छलनि।

गंगोत्री तीर्थस्थल तक गाड़ी जाइत छैक। ई सुविधा ने यमुनोत्री मे आ ने केदारनाथ मे। मन्दिरसँ किछु हटि कए गाड़ी पार्क कएल गेल आ हमसब चल गेलहुँ पूजा अर्चना करए। भागीरथीक जल एतए बूझू शून्यक तापमान पर, यमुनोत्री मे यमुना जलक तुलना मे बेसी ठंढा। कहुना हम सब पएर धोलहुँ, आ माथ पर जल शिक्त कएल। मुदा हमर धर्मपत्नी स्नान कइये लेलनि। तकर बाद हुनका जे कँपकँपी छुटलनि से हम डरा गेलहुँ मुदा गंगा मैयाक कृपा, किछु भेलैक नहि, गर्म कपड़ा पहिरलाक बाद ओ स्वस्थ भ' गेलीह।

एतहु तीर्थयात्री विरले। फैलसँ मन्दिर मे प्रवेश कएल, पूजा कएल। समयक कोनो झमेला नहि। तकर बाद एतहि किछु भोजन कएल आ घुरती यात्रा पर विदा भेलहुँ। करीब 20 किलोमीटर आएल होएब कि एक ठाम सामनेसँ किछु गाड़ी आबि रहल छलैक। पहाड़ी इलाकाक सड़क पर चलैत एक कात त' पहाड़े रहैत छैक आ दोसर कात गँहीर खड्ड। हमसब एखन खड्ड दिस छलहुँ। ड्राइभर ओना त' अनुभवी आ शान्त छल मुदा एखन की फुरेलैक, ओ जे साइड देब' लगलैक ताहि जगह पर सड़क पर करीब एक फुट लम्बा आ करीब ओतबे चौड़ा मामूली खाधि बनल छलैक। ओहि उपर घास उगल। ओ ड्राइभर कें देखबा मे नहि एलैक। ओहि छोट खाधि मे अगिला बामा चक्का फँसि गेलैक। कतबो ओ कोशिश करए गाड़ी आगू बढ़बे नहि करैक। तकर बाद गाड़ी पाछू सेहो नहि जाइक। दोसर लेनक गाड़ी सब अपन चल जाइत गेल। हम सब फँसि गेलहुँ। बामा कात एतबो जगह नहि जे गेट खोलल जा सकए। कनियो देहक संतुलन बिगड़ल कि सोझे नीचा खड्ड मे। पाछूक दहिना गेट खोलि कए हमर मित्र आ दूनू महिला उतरि गेलीह। हम अगिला बामा भाग मे फँसले रहलहुँ कारण ड्राइभर एहन स्थिति मे गाड़ी छोड़ि नहि उतरए चाहैत छल।

डर ईहो छल जे जतेक चक्का घुमतैक ततेक खाधिसँ माटि उड़तैक, खाधि आर गहींर होइत जेतैक आ कनियो संतुलन बिगड़लैक त' दू सौ फुट नीचा खसब। तखन के जीबैत रहत से भविष्यवाणी के करितए ? कने काल बहुत असमंजस के स्थिति बनल रहल। संयोग जे पाछूक गाड़ी सब हमरा सबहिक पराभव बुझि गेल छलैक आ कनिए हटि कए ओ सब ठाढ़ भेल छल। ताबत सामनेसँ एकटा जीप मे किछु विदेशी नवयुवक लोकनि आबि रहल छलाह। ओ हमरा लोकनिक गाड़ीक दशा देखलनि, चोट्टहि निर्णय लेलनि, सब गोटे उतरि कए आगूसँ गाड़ी के फँसल चक्का कें कने उठबैत पाछू दिस धक्का देलखिन जाहिसँ चक्का ओहि खाधिसँ निकलि गेलैक। कतहुसँ जान मे जान आएल। ओहि देवदूत लोकनि कें हृदयसँ धन्यवाद देलिएनि आ गाड़ी कें पहाड़क साइड मे अनैत ओहि जगह कें पार कएल। एखनहुँ ओ घटना मोन पड़ैत अछि त' रोमांच भ' जाइत अछि।

हरिद्वारसँ विदा होइत आइ चारिम दिन छल। एहि चारू दिन मौसम खूब साफ आ रौद सेहो, तखन त' पहाड़क रौद कतेक विश्वासी से त' अनुभव केलेसँ लोक बुझैत अछि। साँझ मे उत्तरकाशी पहुँचलहुँ। भोजन करबाक समय वर्षा होएब शुरु भ' गेलैक। एखन त' किछु करबाक नहि छल। रात्रि विश्राम कएल।

पाँचम दिन, अगिला भोरे हमरा सब कें जेबाक छल रुद्रप्रयाग। राति जे बरखा शुरू भेलैक से भैए रहल छलैक। बरखे मे विदा भेलहुँ। रस्ता टिहरी जल विद्युत परियोजनाक जलक्षेत्र होइत। ओहि समय बान्ह त' बनि गेल छलैक मुदा जल छोड़ल नहि गेल छलैक तें इलाका डूबल नहि छलैक आ रस्ता पर आवाजाही छलैके। मुदा आइ बरखाक कारण कतेक ठाम सड़क डूबि गेल छलैक आ हम सब रस्ता भोतिया गेलहुँ। कहुना मुन्हारि साँझ मे पहुँचलहुँ रुद्रप्रयाग मे बाबा काली कमली के धर्मशाला। एतहु धर्मशाला हिसाबें एकदम ठिकिआएल जगह पर जतए अलकनन्दा आ मन्दाकिनी के संगम स्थल छैक। एतए मन्दाकिनी अस्तित्वहीन भ' जाइत छथि आ आगू अलकनन्दे नामसँ नदी बहैत छथि जे देवप्रयाग मे भागीरथीसँ मिललाक बाद हमरा सबहिक गंगा बनैत छथि।

डिक्की खोलि जखन बैग सब बहार कएल त' बुझबा मे आएल जे सब किछु भीजल छल। डिक्की मे अन्दर प्लास्टिक के झँपना छलैक नहि। दिन भरि गाड़ी बरखे मे चलैत रहलैक। की कएल जाए ? कमरा मे जा कए सब टा कपड़ा बहार क' कए कहुना पसारि देलियैक। यद्यपि कने अन्हार जकाँ भ' गेल छलैक तथापि संगम स्थल देखबा लेल गेलहुँ। रातियो मे दूनू नदीक दू रंगक जल स्पष्ट देखा रहल छल। ओतए शिवजीक मन्दिर मे पूजा कएल। नीचा उतरबाक लेल सीढ़ी बनल। ओमहर पानि गोंगिआइति से भयावह लगैत। तैयो सीढ़ी उतरि जलक स्पर्श कैए लेल हमरा लोकनि।

अगिला दिन सबेरे विदा भेलहुँ केदारनाथक रस्ता पर। पहिने जेबाक छल गौरीकुण्ड। आइ मौसम साफ भ' गेल छलैक। करीब एगारह बजे पहुँचलहुँ। पहिल बेर किछु बेसी लोकक भीड़ एतए देखल। कारण ई जे केदारनाथ गेनिहार

आ ओतएसँ घुरनिहार दूनू तरहक लोकक लेल ई संगम स्थल छलैक। संगहिं एतए घोड़ैया सब सेहो बहुत रास तें भीड़ आर बेसी। आगू केदारनाथक यात्रा बहुत कमे लोक पैदल करैत अछि, अधिकांश लोक लेल घोड़ेक सहारा। ओना त' केदारनाथ जेबाक लेल हेलिकॉप्टर सेवा सेहो छैक किन्तु ओ विशिष्ट लोक लेल विशेष परिस्थिति मे। ओकर की चर्चा करब?

गर्म जलक कुण्ड मे स्नान कएल आ शिव-गौरीक पूजा करैत गेलहुँ। गौरीकुण्ड लेल कतेको दंतकथा प्रचलित छैक। एतए अहिवाती महिला लोकनि लेल गौरीक पूजा करबाक विशेष महत्व छैक। ओही हिसाबें महिलाद्वय अपन पूजा करैत गेलीह। तकर बाद भोजन कएल।

एतए गाड़ी छोड़ि देबाक छल। आगू चढ़ाइ आ घोड़ाक सवारी। सेहो हमरा सब कें एके दिन मे चौदह किलोमीटर घोड़ा पर चढ़ि कए केदारनाथ नहि पहुँचबाक छल। आधा रस्ता पर रामबाड़ा नामक छोट गाम मे रात्रि विश्राम कए अगिला दिन फेर सात किलोमीटर चढ़बाक छल। रामबाड़ा मे सेहो काली कमलीक धर्मशाला किन्तु जगहक हिसाबें छोट। घोड़ा बला कहलक जे भोर मे ओ सब आबि जाएत। हम सब अपन रूम मे विश्राम करैत गेलहुँ। एहि छोट जगह मे अन्यत्र घुमबा फिरबाक कोनो स्थल नहि। साँझ मे बेस रुचिगर भोजन भेटल, गरम गरम आ हिसाबें अपना सामने मे बनाओल।

अगिला दिन हम सब करीब दस बजे पहुँचि गेलहुँ केदारनाथ। एखन तक मौसम ठीके छलैक। धर्मशालाक रूम मे सामान राखि स्वस्थ भेलहुँ। एतए त' गर्म जलक कुण्ड छैक नहि। ओ काज गौरीकुण्ड मे कैए लेने छलहुँ। स्नान लेल गर्म जल बीस रुपैया मे बाल्टी मुदा से कहबाके लेल, जल मात्र आधा छोट बाल्टी मे भेटल। दू बाल्टी जल मँगाओल तखन दूनू गोटे स्नान कएल। आब एगारह-बारह हजार फुटक उँचाइ पर ठंढा त' नीक जकाँ पड़िते छलैक। बहुत रास कपड़ो भिजले छल आ ठंढा मे कतबो सुखाएत, कनकन लगबे करत। फेर शरीरेक गर्मीसँ ओ धीरे धीरे गर्म होएत। सएह अनुभव भेल।

चल गेलहुँ बाबा केदारनाथक दर्शन पूजा करए। एतहु तीर्थयात्रीक कोनो भीड़ नहि। फैलसँ पूजा करैत गेलहुँ। दुपहरिया मे टहलि गेलहुँ शंकराचार्यक समाधिस्थल। ई सब इलाका शान्त छैक। साँझ मे आरती देखल। अगिला दिन सबेरे फेर पूजा केलहुँ आ जलपानक बाद घोड़ा ठीक क' कए विदा भेलहुँ नीचा गौरीकुण्ड। आइ पूरा चौदह किलोमीटर उतरबाक छल। कोनो मध्यस्थलक विश्राम नहि। घोड़ा पर चढ़ि उतरैत काल बेसी सावधान रहए पड़ैत छैक, शरीर कें आगू नहि करबाक छैक कारण संतुलन बिगड़ैक सम्भावना छैक। उपर चढ़ैत काल शरीर पाछू नहि आ उतरै काल आगू नहि। ई सब त' यमुनोत्रीक यात्रा मे सिखनहि छलहुँ किन्तु ओ यात्रा मात्र पाँच किलोमीटर छलैक आ ई चौदह किलोमीटर।

गौरीकुण्ड पहुँचैत करीब एक बाजि गेल। भोजन कएल, ड्राइभर कें ताकल आ विदा भेलहुँ गुप्तकाशी कें।

रस्ता मे ड्राइभर हमरा सब कें त्रियुगीनारायण मंदिर देखौलक। ई प्रसिद्ध तीर्थस्थल छिऐक। जनश्रुति छैक जे एतए भगवान विष्णुक उपस्थिति मे शिव-पार्वतीक विवाह भेल छलनि। देवी-देवता सब कें सेहो बियाह करबा काल गवाहीक आवश्यकता होइते छलनि। से भगवान विष्णु गवाही बनि कए ठाढ़ छलखिन। एतए मंदिर परिसर मे एकटा अग्निकुण्ड मे निरन्तर आगि जरैत रहैत छैक। मान्यता छैक जे ई अग्नि शिव-पार्वतीक विवाहेक दिनसँ जरि रहल छैक।

एकर आगू हम सब कनिये काल मे पहुँचि गेलहुँ गुप्तकाशी। बाबा काली कमलीक धर्मशाला मे जखन हम सब पहुँचलहुँ तखन रूम त' भेटि गेल किन्तु भोजनक ओतए कोनो इन्तजाम नहि। केयरटेकर कहलनि जे एखन यात्रीगण बेसी अबैत नहि छथि, ओहि दिन हम सब एकमात्र यात्री छलहुँ। भोजन नीचा मे कोनो मिश्राजीक होटल मे भेटि जाएत। उतरि कए ओ होटल पता कएल। गपसप मे बुझबा मे आएल जे ओ नवयुवक मिश्राजी शिवहर जिला वासी छलाह आ रोजगारक क्रम मे एतए आबि गेल छलाह। नवयुवती पत्नी सेहो संगहि रहैत छलखिन। किछुए मास पूर्व हम अपन दोसर कन्याक विवाह केने छलिएनि, से ओना त' हमर समधि सब टाटा-वासी भ' गेल छथि मुदा मूल रूपें शिवहरे जिलाक वासी छलाह। ई चर्चा हम जखन हुनका सुनाओल तखन त' हम सब घरक पाहुन भ' गेलहुँ।

भोजनक इन्तजाम लेल कहि कए हम सब गुप्तकाशीक प्रसिद्ध विश्वनाथ मंदिर देखबा लेल चल गेलहुँ। घुमलाक बाद जखन फेर ओहि होटल मे गेलहुँ त' हुनकर पत्नी दूनू महिला कें भीतर ल' गेलखिन। हम दूनू मित्र पाहुन जकाँ घरक सुस्वादु भोजन कएल। बहुत दुविधाक स्थिति मे पड़ि गेलहुँ जखन ओ मिश्राजी भोजनक लेल टाका लेब अस्वीकार क' देलनि। महिलागणक बातचीत खतम भेला पर धर्मशाला जाए रात्रि विश्राम कएल। दोसर दिन भोर मे मिश्राजी चाह बना कए उपर धर्मशाला आबि गेलाह सपत्नीक, हमरा सब कें विदा करबाक लेल। हम चारू गोटे आ ड्राइभर चाह पीबैत गेलहुँ तखन फेर टाका देबाक बात आएल। ओ सब कोनो तरहें लेबाक लेल तैयार नहि। फेर मित्र सुरेन्द्र ई कहि हुनका दूनू कें मनौलनि जे ई भोजनक दाम नहि, हमरा सबहिक दिशसँ कनियाक लेल सारीक दाम बुझियौक। एहि मे ड्राइभर सेहो कने सहयोग केलक। अन्त मे हुनका दू सौ टाका दैत हम सब विदा लेलहुँ। तीनू महिला बेस भावुक भ' गेल छलीह। किन्तु कएले की जाए ? जिनगीक नियमे छिऐक प्रत्येक मिलन के बाद बिछुड़न होइते छैक।

गुप्तकाशीसँ आइ हमरा सब कें बदरीनाथ पहुँचबाक छल, ओतए दू रातिक लेल धर्मशाला बुक कएल छल। पहिने हम सब उखीमठ मे ओंकारेश्वर मंदिर देखल, एतहि बाबा केदारनाथ छओ मास लेल शीतकालीन विश्राम करैत छथि। कालिए त' हुनकर असली ग्रीष्मकालीन घर देखने छलिएनि आ आइ दोसर घर देखि रहल छलहुँ। असल मे भगवान त' भक्तलोकनिक इच्छानुसारें रहैत छथि, भक्त जेना राखथि, जतए राखथि। आ भक्त लोकनि कें बेसी बर्फ बर्दास्त नहि होइत छनि तें भगवान कें कनहा पर टँगने ओ सब नीचा उतरि जाइत छथि। मन्दिर दर्शनक बाद जलपान करैत हम सब आगूक यात्रा पर विदा भेलहुँ।

बदरीनाथ जेबा लेल जोशीमठ मे गाड़ी सब कन्ट्रोल कएल रहैत छलैक। समय समय पर गेट खोलल जाइत छलैक उपर जेबाक लेल। साँझ मे छओ बजेक बाद लोक बदरीनाथ नहि जा सकैत छल। तें हमरा सब कें छओ बजेसँ पहिने जोशीमठ पहुँचब आवश्यक छल मुदा भगवान वासुदेव कें किछु आर खेला देखेबाक छलनि।

करीब एक घंटा चललाक बाद सड़क पर विचित्र दृश्य देखबा मे आएल। गाड़ीक पैघ कतार ठाढ़ भेल। कतहु ओरछोर नहि। ड्राइभर कहलक जे आगू रस्ता बन्द छैक। आब की कएल जाए ? कोनो उपाय नहि, ओही लाइन मे

ठाढ़ भ' गेलहुँ। सामने करीब आधा किलोमीटर दूर सड़क पर पहाड़सँ धँसना खसल छलैक से प्राय: सौ मीटर तक सड़क कें छेकने, माटि, पाथरक पैघ ढेरी रस्ता कें रोकने। दूनू कात सब यात्री प्रतीक्षा करैत। हमरा सबहिक लेल ई प्रथम अनुभव छल। हमर ड्राइवर त' एही खेला मे जिनगी बितौने छल। ओकरा लेल कोनो नव बात नहि। सुनलियैक जे जोसीमठसँ जेसीबी मसीन मँगाओल जेतैक, तखन सबटा माटि हटाओल जेतैक, तखने रस्ता खुजतैक। आजुक दिन बैग मे जे बिस्कुट आदि पड़ल छल ताही पर निर्वाह करबाक छल। कतेक समय लगतैक कोनो ठेकान नहि।

रौद बेसी तिक्ख भ' गेल छलैक। हमसब बैगसँ भीजल कपड़ासब निकालि सड़कक कात मे घास आ झाड़ी आदि पर सुखाइ लेल द' देलियैक। हमरा सामने जे गाड़ी ठाढ़ छल ओहि यात्री सबसँ गप करए लगलहुँ। पता चलल जे ओ लोकनि कर्नाटकसँ आएल छलाह, बदरीनाथ मे पितरक लेल पिण्डदान करए जा रहल छलाह आ एहि इलाका मे एक सप्ताहसँ चक्कर काटि रहल छलाह। बदरीनाथ जेबाक पहिल दू प्रयास निष्फल भ' गेल छलनि, एक बेर बहुत वर्षाक कारण सड़क बन्द भ' गेल छलैक दोसर बेर अन्यत्र कतहु एहिना पैघ लैंडस्लाइडक कारण रस्ता बन्द छलैक। ई तेसर प्रयास छलनि आ एखनहु भगवान वासुदेव हिनका लोकनिसँ जेना भागिए रहल छलखिन।

करीब पाँच घंटा प्रतीक्षाक बाद रस्ता खुजलैक मुदा आब दूनू कातक गाड़ी कें सम्हारब पैघ समस्या छलैक। रस्ता जतेक खूजल छलैक ताहि बाटें एकेटा गाड़ी पास क' सकैत छलैक। कहुना कए बेराबेरी किछु एमहर के, किछु ओमहर के गाड़ी कें निकालैत सड़क खाली होमए लगलैक। ओहि स्थल तक आबि आगू जेबा मे तैयो हमरा सब कें प्राय: एक घंटा आर लागि गेल।

आब बदरीनाथ पहुँचब असम्भवे छल। रात्रि विश्राम जोशीमठ मे करब छोड़ि कोनो विकल्प नहि। जोशीमठ हम सब आठ बजे राति मे पहुँचलहुँ। एतए बाबा काली कमलीक धर्मशाला ताकल। ओतए मनेजरसँ अपन खिस्सा कहल, बदरीनाथक बुकिंग के कागज देखाओल। ओ व्यक्ति हमरा सब पर एतेक कृपा केलनि जे दूटा रूम द' देलनि किन्तु अलगसँ चार्ज लागिए गेल। कोनो बात नहि, कने नीचा उतरि भोजन कएल आ फेर रात्रि विश्राम।

अगिला भोरे हम सब बदरीनाथ धामक यात्रा पर विदा भेलहुँ— चार धाम यात्राक अन्तिम चरण, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय जपैत। रस्ता मे कतहु कतहु अलकनन्दा नदीक दर्शन भेल। मौसम नीक भ' गेल छलैक। आब सबटा कष्टक अन्त भ' गेल छल। धर्मशाला पहुँचि कमरा लेल, सामान राखल आ विदा भेलहुँ स्नान पूजा हेतु। धर्मशालासँ मन्दिरक रस्ता मे 'जय बदरी विशाल' के भक्तिपूर्ण नारा गुँजायमान। एतहु गर्म जलक कुण्ड मन्दिर परिसरे मे छैक। बहुत नीक व्यवस्था। एखनहु कोनो भीड़ नहि। स्नान केलाक बाद जखन दर्शन करए गेलहुँ त' देखल भीड़ कें सम्हारबाक हेतु बनल ढाठक कियारी सब मुदा एखन ने कोनो भीड़ ने कोनो लाइन। ओ ढाठ सब टकटक तकैत। सामने भगवान वासुदेव अपन दिव्य रूप मे आ हम सब ठाढ़ हुनकर दर्शन करैत, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय जपैत, किछु लोक 'जय बदरी विशाल'क पाठ सेहो करैत। भगवान वासुदेव आ हमरा सबहिक बीच मात्र छओ-सात फुटक जगह जे एकटा पातर रस्सी द्वारा सांकेतिक रूपें अलग कएल, इएह रस्सी हमरा सब कें बोध करबैत जे हम सब पुजेगरी नहि, तीर्थयात्री छी। कथी लए कियो कहत आब बहुत देरी भ' गेलैक, एतएसँ हटि जाउ। गामक पंडा भेटि गेलाह, बहुत रास 'प्रसाद' अनलनि, सएह भोजन भेल।

गंगोत्री जकाँ बदरीनाथक इलाका प्राय: समतल, बेसी उतार-चढ़ाव नहि, अर्धशहरी वातावरण। गाड़ी सबतरि चलैत। शहरक हिसाबें चारू तीर्थ मे सबसँ बेसी विकसित आ पसरल। हाट-बजार सेहो नीक। तकर कारण जे अन्य तीनू तीर्थक तुलना मे एतए यात्री बेसी पहुँचैत छथि। हरिद्वारसँ सोझे बस सेबा उपलब्ध रहलासँ जे तीर्थयात्री हरिद्वार अबैत छथि ओहि मेसँ अधिकांश अन्यत्र नहियो जाथि, बदरीनाथक दर्शन करबाक लेल चले जाइत छथि।

भोजनक बाद हम सब घूमए गेलहुँ सीमा पर अन्तिम गाम 'माना'। गाम देखलासँ त' नहिए बुझबा मे अबैत छैक जे एकर आगू भारतीय सीमा मे कोनो बस्ती नहि छैक। एतुका प्रमुख आकर्षण व्यास गुफा देखल आ भीम पुल सेहो। महाभारतक खिस्सासँ सम्बन्धित। साँझ मे फेर मन्दिर मे आरती देखल। एतए ओ कर्णाटक वासी परिवारसँ फेर भेंट भेल। आइ हुनका लोकनि कें पिंडदान सम्भव भेलनि।

अगिला दिन फेर स्नान पूजा कएल। तकर बाद रूम मे आबि पंडाक विध पुजाओन भेल। हुनका रजिष्टर मे नाम लिखाओल, दक्षिणा देलिएनि आ अन्तिम बेर भगवान वासुदेव कें प्रणाम करैत ओतएसँ विदा भेलहुँ। आब घरमुहा छलहुँ, देवप्रयाग मे भागीरथी आ अलकनन्दाक संगम देखैत साँझ तक हरिद्वार पहुँचि गेलहुँ।

आब दुर्गापूजा शुरू भ' गेल छलैक आ हरिद्वार तीर्थयात्रीसँ भरि गेल छलैक। दिल्ली लेल ट्रेन राति मे एगारह बजे छल। सामान बैंकक रेस्ट हाउस मे राखि जखन हर की पौरी मे गंगा आरती देखबाक लेल गेलहुँ त' पहिल बेर प्रचंड भीड़क अनुभव भेल। धक्कामुक्की बला भीड़। जल्दीए घुरि अबैत गेलहुँ। भोजन केलाक बाद स्टेसन आबि गेलहुँ। ट्रेनसँ दिल्ली आ फेर फ्लाइटसँ कलकत्ता घुरि अएलहुँ। सोलह दिनक एहि यात्रा मे उत्तराखंडक सौन्दर्यक संग सड़क मार्गसँ यात्रा करबाक खतराक पूर्ण अनुभव भैए गेल। अपन दोसर जन्म पर खुशी भेल।

एहि यात्राक प्राय: डेढ़ दशक बाद जखन ई लेख लीख रहल छी तखन विचारि रहल छी जे एखन तक जतेक तीर्थयात्रा हम केलहुँ ताहि मे बाबा बैद्यनाथ धाम, सिंहेश्वर स्थान, शिरडी आदि कें छोड़ि कतहु बेसी भीड़ मे नहि पड़लहुँ। देवी-देवता लोकनिक कृपासँ कोनो ने कोनो रूपें हमरा सबहिक लेल नीक अवसर बनिये जाइत छल। 1992 मे माता वैष्णोदेवीक दर्शन करए गेलहुँ त' हमरा सबकें उपर पहुँचि गेलाक बाद राति मे वर्षा भ' गेलैक आ कटरासँ यात्री कें उपर चढ़ब रोकि देल गेलैक। अगिला दिन उपर मे यात्री घट' लगलैक। दुपहरिया मे हम सब जे दर्शन करए गेलहुँ त' गुफा बला मार्ग खोलि देल गेल छलैक। ई विरले होइत छलैक। ओहि गुफा बाटें जाकए देवीक दर्शनक आनन्दक अनुभवे कएल जा सकैत छलैक, वर्णन कोना करत लोक ? संगहि ईहो आश्चर्य लगैत छैक जे कोना कए एतेक दूर पहाड़ी पर एहि गुफा मार्गसँ जा कए लोक माताक खोज कएने हेतनि। एतहि प्रचलित दंतकथा जे माता कोनो साधु कें स्वप्न मे दर्शन दए अपन स्थानक जानकारी देलखिन सत्य सन बुझना जाइत अछि।

हमरासब जखन गर्भगृह मे प्रवेश कएल, ओतए एकोटा भक्त नहि। मन्दिरक पुजारी हमरा सब कें रोकि लेलनि, गपसप करए लगला। कोनो भीड़भाड़ बला मंदिर मे एहन सुनने नहि छलिऐक मुदा माता हमरा लोकनि पर ओहि दिन कृपा केने छलखिन। सामने माताक भव्य मूर्ति हम सब अपलक निहारि रहल छलहुँ, कियो कहनिहार नहि जे जल्दी निकलू। बच्चा सब कें पुजारी पँचपैसाही सिक्का सगुनक रूप मे देलखिन। एखनहु ओ सिक्का सब रखले अछि।

तहिना द्वारका, सोमनाथ, त्रयंबकेश्वर, श्रीशैलम, घ्रिश्नेश्वर, ओंकारेश्वर, महेश्वर, श्रीलंका मे सबटा शिवमंदिर आदि जगह मे बिना भीड़ के दर्शन भेल। धक्कामुक्की बला भीड़ निपत्ता। अक्टूबर 2012 मे सोमनाथ मे दू दिन रहि मंदिर परिसर मे घुमैत रहलहुँ, बाबाक दर्शन करैत रहलहुँ, कखनहु कियो नहि टोकलक जे जल्दी निकलू। भुवनेश्वर मे रहैत पुरीक जगन्नाथ मंदिर त' कतेको बेर गेलहुँ। ओतए त' भगवानक चबूतराक स्पर्श आ परिक्रमा पर्यन्त कएल। कोनो भीड़ नहि। उज्जैन मे महाकाल दर्शनक दिन त' वर्षा ततेक भेलैक जे भीड़क कोनो सबाले नहि। किछु ने किछु कारण भ' जाइत छलैक जे हमरा देवी देवताक दर्शन हमेशा फैलसँ होइत रहल। तकर फल ई भेल जे कनियो भीड़ मे अपना कें सम्हारबाक लूड़ि नहिए सीखल। कलकत्ता मे दक्षिणेश्वर कालीक दर्शन लेल जरूर सब दिन पैघ लाइन रहितँहि छैक। मुदा प्रशासनक चुस्तीक कारण एतए धक्कामुक्की नहि होइत छैक। एकर विपरीत कालीघाट मे धक्कामुक्की प्रसिद्ध छैक। ओतुका कालीजीक दर्शन केना कतोक युग बीत गेल। आब त' चर्चो नहि करैत छिऐक। तैयो लगैत अछि जे हमरा लोकनिक भक्तिभावसँ देवी-देवता प्रसन्ने छथि आ प्रार्थना इएह जे एहिना प्रसन्न रहथु।

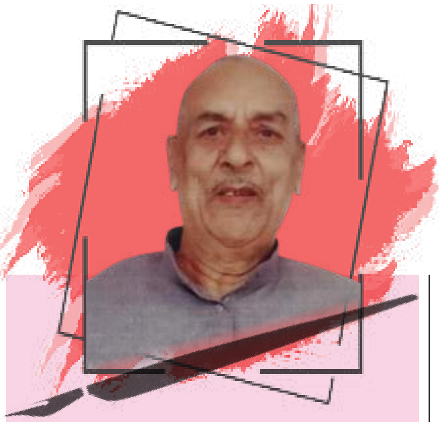

भैरवेश्वर झा

लालगंज, मिथिला (मधुबनी)

सम्पर्क : +91 6204628326

प्रसिद्ध अनुवादक आ प्राध्यापक, भैरवेश्वर झा अंग्रेजी विभाग, एच.पी.एस. कॉलेज, मधेपुर (मधुबनी)सँ अवकाश प्राप्तिक बाद अनुवाद कार्यमे लागल छथि। 'इफोरेसेन्स ऑफ रियलिज्म', 'शैली ओ समीक्षावृत्ति', 'पंडित गणेश्वर झा रचनावली', भाग I आ II, 'एक फेरीवलाक मृत्यु' (डेथ ऑफ ए सेल्समैनक मैथिली अनुवाद), 'द स्क्रैच्ड वाल' (दकचल देवालक अंग्रेजी अनुवाद), 'अन्तरगीत' (सम्पादित), 'लालगञ्जक इतिहास', आ 'ए बँच ऑफ पोएम्स' (मैथिलीक किछु कविताक अंग्रेजी अनुवाद), हिनक प्रकाशित आ चर्चित कृति छनि। कोलरिज एवं अभिनव गुप्ता (ले. डॉ. श्री कृष्ण मिश्र) क मैथिली अनुवाद, अनुप्रास प्रकाशनसँ शीघ्र प्रकाश्य छनि।

कोलरीज द्वारा बहुधा एवं प्रमुख रूपेँ विवेचित शब्द-द्वयक(Imagination एवं Fancy) सांगोपांग एवं तुलनात्मक अध्ययन स्व. डा. श्रीकृष्ण मिश्र अपन "Coleridge and Abhinavgupta" नामक ग्रंथमे कएने छथि। एतए Imagination(मनः-संकल्प)क किछु अनुवादित विवृत्ति अछि। मूल पोथी शीघ्र प्रकाश्य अछि।

आद्य मनः - संकल्प

"हम सभ ताबत तक अपनो विषयमे किछु नहि जनैत छी जाबत तक अपन अवस्तुताक ज्ञान नहि होइत अछि। (एक गंभीर सत्य उद्धेश्यक विपरीत एवं प्रतिकूल जाहिमे विचार संयोगसँ शब्द' बनि जाइत अछि।)"

– लेटर्स 951, C.L, III, 530

"... तथा यथार्थ मन:-संकल्पक, एक क्षणमे अपन निरन्तर प्रवाही आननसँ संश्लिष्ट करैत...।"

– लेटर्स 954, C.L, III, 542

"अस्तित्व स्वयमेव सत्वमे ग्रसित भए जाइत अछि..."

– लेटर्स 412, C.L, II, 750

"ओ छायात्मक अर्ध-सत्य, मन: संकल्पक सान्ध्य प्रकाशमे तथा ठीक चेतनाक देहरि पर शैशविक अस्तित्वक ओ अवस्था... तथा ओ अवधारणादि, मनोगत् स्पष्टतासँ परावृत होइत, भावनाक प्रकृतिक समीप तथा ओकरा द्वारा वाग्छादिक संग आओर अधिक सन्निकटता एवं आत्यन्तिकता प्राप्त करैत अछि।"

– लेटर्स 445,C.L, II,814

"... एक प्रकारसँ अपन चेतनाक पात्रान्तीकरण एवं संचरण द्वारा स्वयंकेँ वस्तुसँ अनन्यीकृत करब-"

– लेटर्स 1215, C.L, IV,975

"प्रत्येक व्यक्ति अपन विचारकेँ सार्वलौकिक बनाओत तथा तैओ प्रत्येक विविध रूपें परिमत अछि। तेँ पुनऐक्य करब (समाधान ताकब) भावित व्यक्तिक यथार्थ कार्य थिक।"

– लेटर्स, 2208

"ज्ञानम् हि विषयाकार प्रकाश परिनिष्ठितम्।"

– मा. वि. वा., कांड-1,पद्य-584

"उच्यते सर्व एवायम् बोध: संवित् प्रभामय:।"

– बैह, I 25

कोलरीज कहैत छथि जे ज्ञानक प्रत्येक क्रियाक पूर्वार्ध मूलभूत धारणा अर्थात् शाश्वत अहँकेँ पूर्व कर्मोह्योगक अचेतन पुनरावृत्ति थिक; तथा दूनू हिस्से मेसँ पूर्वार्ध अर्थात् मानसिक पूर्वाभाव अधिक महत्वपूर्ण अछि। कोलरीजक ई अन्वेषण हुनक अनुबोधक अवधारणा अर्थात् ज्ञानक प्राथमिक क्रिया तथा सामान्य लोकक अनुबोधक अवधारणाक मध्यक अन्तरकेँ देखबैत अछि। सामान्यजनक ई अवधारणा लौकवादी होइत अछि। सामान्य जनक ई विश्वास होइछ जे मनस् अपन योग्य इन्दियक माध्यमसँ कोनो वस्तुक सम्पर्कमे अबैत अछि। एहि तरहे सम्पर्कमे आएल वस्तु अपन प्रभाव मनसक स्वच्छ पटल पर छोड़ैत अछि, जे निष्क्रिय रूपें ओकरा ग्रहण करैछ। पश्चात्, स्मृतिमे क्रियाशील साहचर्यक सिद्धान्तकेँ (Law of association) सहायतासँ मनस् वस्तुकेँ ओही स्वरूपमे जनैत अछि। यैह थिक लॉक महोदय द्वारा प्रतिपादित अनुबोधक व्याख्या। अनुबोधक एहनो व्याख्यामे लॉकक मौलिकताक कोलरीज आलोचना करैत छथि तथा एहि मिथ्याधारणाक मूलक पता 'Ideas' शब्दक क्रमशः क्षरित होइत अर्थमे लगबैत छथि। एहि शब्दसँ लॉकक अभिप्राय छल "मनसक मौलिक क्षमता एवं प्रवृत्ति तथा मानव चिंतनक नियमादिसँ" कोलरीज कहैत छथि जे " एहि शब्दक (Ideas) अनुवाद (Moulds) - संस्कार होएबाक चाही नहि कि (Forms) आकार"। मनसक आनुभाविक अवधारणाक (Empirical concept)मूल लेखक थिकाह अरस्तू। हॉब्सक 'tabula rasa' तथा जॉन लॉकक "Unwritten sheet of paper' अरस्तूक अवधारणाक अनुवाद मात्र थिक। अरस्तूक विचारमे "क्षमताक दृष्टिकोणसँ मनस् विचार समुच्चय थिक, किन्तु वास्तवमे सोचबासँ पूर्ण ई शून्य थिक। भाषाक प्रचलित प्रक्रियामे Ideas नहि केवल मनसक एहि सभ मौलिक संस्कार/साँचा (Moulds)केँ द्योतित करैत अछि अपितु एहि संस्कार सभमे जे किछु देल गेल ओहिना जेना हमरा सभक भाषामे 'Seal' एवं 'Impression' दूनूक लेल 'seal' शब्देक व्यवहार होइत अछि।" कोलरीज देखबैत छथि जे पश्चात् चलिकेँ "Idea" शब्दक पर्याय बिम्ब भए गेल तथा कखनहुँकेँ स्मृतिमे निहित बिम्बक संग। संक्षेप मे,

a priori लक्षणक तिरस्कार भए गेल तथा a posteriori लक्षण पर जोर देल गेल। एहि वृथा जोरक परिवर्तनमे कोलरीजक अपन अवदान अछि। हुनक नजरिमे एही वृथा/अनुचित जोरक कारणें हमरा लोकनि चिंतन वा बोधक प्रकृतिमे यथार्थ अन्तर्दृष्टिसँ देखबामे असफल रहैत छी। ओ सोचैत छथि जे हुनक एहन प्रयासमे हुनका प्लेटो एवं बेकन समान विख्यात चिंतक लोकनिक संबल छन्हि।

ई पूर्वे कहल जा' चुकल अछि जे सभ ज्ञान एवं सभ अस्तित्वक आधार थिक अनन्त शाश्वत आत्मचेतना अर्थात परम आद्य (a priori) एवं तात्कालिक क्रिया जकरा कदापि लुप्त नहि कएल जा' सकैछ। शाश्वत उद्धेश्य अर्थात् अनन्त अहं (I) अपनाकेँ जनबाक लेल बाह्य प्रकटीकरण करैछ। ई स्वयं अपनहि विधेय भए जाइत अछि। ई विधेय अन्य कोनो वस्तु नहि भएकेँ उद्धेश्येक आत्माक अनुकृति होइछ। एना अनन्त अवस्थामे होइत अछि जखन हम सभ काल एवं दिक्क परिसीमनसँ परे भए जाइत छी जे सविशेष वा गोचर जगतक कारण होइछ। परिमित मात्र बूझि पड़ैत अछि, ओकर वास्तवकि अस्तित्व नहि होइत छैक।

किन्तु समस्या अछि : सविशेषक गोचर जगत्मे कोनाकेँ अनुबोध एवं अवधारणाक व्याख्या कएल जाए। कोलरीज दर्शनक ई आधारशिला रहल अछि जे पूर्णतया असमान कोनो दू वस्तुमे परस्पर क्रिया नहि भए सकैछ। पाइथागोरियन सिद्धान्त पर दृढ़तासँ आधारित भए कोलरीज अपना समयमे प्रचलित भौतिक एवं आदर्शवादीविचारक आलोचना कएलन्हि। ओ कहैत छथि:" आदर्शवादएवं भौतिकतावाद दूनू परस्पर विरोधी वस्तुक बीच अन्त: पारस्परिक क्रियाक असंभवतामे आधारित अछि तथा दूनू पक्ष द्वारा एतए ई मानि लेल जाइत अछि जे बोध (Perception) इन्द्रियबोधक (Sensation) एक प्रभेद वा कम-सँ-कम एक सहायक व्युत्पत्ति थिक- एतेक दूर धरि जे अनुभावीक (बोध कएनिहारक) अपन सत्वक परिवर्तन वा परिवर्धन पूर्णतया ओकर अनुबोधक वस्तु होइत अछि।" कोलरीज देखलन्हि जे बर्कलेक समान आदर्शवादी जे पदार्थ मिश्रित जगतक अस्तित्वकेँ अस्वीकार करैत छलाह तथा लॉकक समान भौतिकवादी जे प्रभावक (Impression) वास्तविक स्रोत भौतिक पदार्थादिकेँ मानैत छलाह जकरा अभावमे मनस् अस्तित्वहीन होइछ, दूनू अन्हारगलीमे हाथ-पयर मारैत छलाह। आदर्शवादी लोकनि विधेयक यथार्थ अस्तित्वकेँ अस्वीकार करैत छलाह तथा भौतिकतावादी ज्ञानक उद्धेश्यकेँ।

कोलरीज सामान्य इन्द्रियबुद्धिक सहायता लैत छथि तथा कहैत छथि जे "अनुबोध जातिक रूपमे आत्माक गुण थिक।" बोधक प्राथमिक रूप, जकरा सामान्यतया इन्द्रियबुद्धि बूझल जाइछ, विधेय द्वारा रूपान्तरित बोधक एक प्रभेदकेँ छोड़ि अन्य किछु नहि थिक जे एहि स्थितिमे अनुभावीक अपनहि अस्तित्व थिक।" विद्यमान विधेय अभिज्ञ उद्धेश्यक प्रतिकृतिकेँ छोड़ि अन्य किछु नहि थिक। जानब अपन शुद्धतम रूपमे होएब (Being) थिक जखन ई काल एवं स्थानक बंधनसँ मुक्त होइत अछि। ज्ञानक अशुद्ध आनुभविक रूपमे अर्थात् जखन हम सभ भौतिक पदार्थादिकेँ पूर्णतया भिन्न रूपें जनैत छी नहि कि अपन आत्माक बहिवर्त्तनक रूपमे, कोलरीज पौलन्हि जैँ ज्ञानक सिद्धान्त शाश्वत चेतनाक वैह्य आद्य कर्मोद्योग (a priori acivity), वैह आत्म-द्विगुणीकरण वा आत्म-वहिवर्त्तन एवं आत्म-सायुज्य थिक। एहि जगतमे पदार्थ सभक अस्तित्व ईश्वरक सर्वरूपताक कारणें होइत अछि, जे शाश्वत अनन्त अहं थिकाह। ओही ईश्वरक सहायतासँ वस्तु सभकेँ जानलो जाइछ। सिद्धान्त सर्वत्र एके होइछ चाहे ओ ज्ञानक शुद्ध रूप हो, जखन उद्धेश्य अपन पूर्ण आत्माक समतुल्य होइछ अर्थात् एकर तुलना एकरा स्वयंकेँ छोड़ि आओर कोनो वस्तुक संग नहि होइछ, वा ई ज्ञानक अशुद्ध रूपमे हो जखन विधेय सीमित वस्तु होइछ तथा उद्धेश्य सीमित कर्त्ता होइछ अर्थात् परिसीमित मनस्। सीमित क्षेत्रमे ज्ञान उद्धेश्यक पूर्ण सत्व नहि भए सकैत अछि। अत: ई स्वाभाविके अछि जे ज्ञान एतए सादृश्य होइछ।

ज्ञानक अपन व्याख्यामे कोलरीजकेँ प्लेटोक समान एक महान अधिकारीक सम्बल छल। मोहर बाह्य चिह्न थिक, ओकर यथार्थ रूपकेँ बिनु ओकरा स्वयं जनने संभव नहि अछि जकर ओ बाह्य प्रतिकृति थिक। मोहर देबाक क्रिया मोहर द्वारा कएल जाइत अछि नहि कि ओकर कोनो बाह्य चिह्नक द्वारा। मोहर-चिह्न तँ कागज पर बंदी बनाओल रहैत अछि, तँ स्वयं क्रिया करबामे असमर्थ होइछ, अत: निष्क्रिय होइछ। तँ अनुबोधक सभ दशामे कोलरीज शाश्वत अहंकेँ कर्मोद्योगक पुनरावृत्ति पौलन्हि, अर्थात् श्वाश्वत चेतनाक मोहर देबाक क्रिया देखलन्हि। "सकल मानवीय बोधक जीवंत शक्ति एवं प्रमुख कारक थिक अनन्त अहंमे सृजनक शाश्वत क्रियाक परिमित मनस्मे पुनरावृत्ति।" ओ ज्ञानक निश्चितता तथा संभाव्यताकेँ देखएबाक उद्धेश्यसँ अस्तित्व एवं ज्ञानक आधारभूमिक उल्लेख करैत छथि, कारण ओ देखलन्हि जे हम सभ पृथक् एवं परिमितसँ आरम्भ करब तँ परिणाम संक्षोभ होएत।

किन्तु आनुभविक रूपसँ प्रामाणिक प्रत्यहक संसारमे उद्धेश्य एवं विधेय वियुक्त होइछ तथा जानब होएब नहि होइछ। गुलावकेँ- देखिकेँ हम गुलाब नहि भए जाइत छी। कोलरीजक एतएकहब ई हेतन्हि जे एतए 'अनन्यत्व' (Identity)क अर्थ 'सहतव' क भाव होइछ नहि कि "वैह होएब' (the same as)"

एकर मात्र एतबेक अर्थ होएत जे आत्मचेतनाक आन्तरिक सार्वलौकिक सिद्धान्त एकर द्विध्रुवीकरण प्रकटीकरणक पृष्ठभूमि वैह रहैछ। (परिमित मनस् एवं परिमित विधेय)

कोलरीज कहैत छथि जे "जानब अनुरूप होएब थिक।" मानव स्वभावक एहि मूलभूत लक्षणकेँ ओ धीयापूताक व्यवहारसँ सिखलन्हि। "हमरा सभ मानवस्वभावक ई लक्षण सहजगुण थिक - अपन 'स्व ' मेसँ निसृत होएब तथा दोसराक रूपमे अवस्थित भए जाएब।" अपन सूक्ष्म निरीक्षणसँ ओ जे सिखलन्हि से हुनक दार्शनिक तर्कसँ मेल खाइत अछि। उद्धेश्य बिनु आत्म-बहिवर्त्तन तथा विधेयक संग अपन अनन्यत्वक नहि जानि सकैत अछि। लगैत अछि जेना मनस् अपन कुहरकेँ बाहरसँ वस्तुकेँ ग्रहण करबाक लेल खोलि दैत अछि, वा मनसकेँ वस्तुक समाने आकार/साँचा (moulds) धारण कए लेबाक प्रवृत्ति होइत छैक।

भारतीय दर्शनमे मनसक बाहर होएब तथा बोध्यवस्तुक रूप गहण कए लेबाकेँ 'वृत्ति 'कहल जाइछ। एहि तथ्यकेँ स्वयं निरीक्षणसँ सिखलन्हि से हुनक वैदुष्यकेँ उच्चस्वरें घोषित करैत अछि। ई कोनो सामान्य कथा थिक जे 'वृत्ति ' क भारतीय अवधारणाक पश्चिमक एक महान चिंतक करैत छथि।

कोलरीजक निम्नलिखित कथन बहुत महत्वपूर्ण अछि: "किन्तु हमरालोकनिक सभ्य समाज एवं पठ्ल-लिखल सुसंस्कृत पुरोहित वर्गक अधिसंख्यकमे विषयासक्त एवं अयथार्थक भयावह संघात अछि। जे किछु अधिकरण सम्बन्धी (subjective) अछि अर्थात् जे किछु यथार्थ एवं एकमेव संगत अगोचर वा बोधगम्य अछि, से हुनका सभकेँ बोधगम्य नहि अछि। किन्तु अगोचरो सत्व (sulistance ipso nomine) आवश्यक रूपें अधिकरण सम्बन्धी होइत अछि; वास्तवमे एक आभास मात्रे, जे एकहि कालावच्छन्न उपस्थित दर्शक सभ द्वारा यथार्थबोधसँ जुड़ि जाइत अछि; किन्तु सार्वजनीनो आभास तँ (Apparitio communis) अन्तत: आभासे थिक, तथा ओकरा प्रत्येक व्यक्तिक लेल विभावित कएल जा' सकैछ से केवल एकर सहायक रूपमे

एक उद्धेश्यकँ अभिबंधित कएले पर एवं आभासक समूहोक रूपमे (causa sufficiens) एकर आधार निष्ठताक चिह्न एवं सम्भावनीय प्रमाण थिक।"

'बायोग्राफिया' क छठम् अध्यायमे कोलरीज अपन मतक समर्थनमे प्लोटिनसकँ उद्धृत करैत छथि: "विचारकँ सही दिशामे प्रक्षेपित करबाक लेल ई आवश्यक अछि जे व्यक्ति दृष्टवस्तुक संग स्वयंकँ सहृदय एवं एकनिष्ठ कए लिअए। Never could the eye have beheld the sun, had it not its essence been soliform" (ie, preconfigured to light by a similarity of essence with that of light)" neither can a soul not beautiful attain to an intuition of beauty."

एक आशंका एतए उठाओल जा' सकैछ। जँ जानबमे समानता हो तँ कोनाकँ प्रामाणिक ज्ञान एवं अप्रमाणिक ज्ञानकँ पृथक् कएल जा' सकैछ? कोलरीजक उत्तर सरल होएत। संसारमे पदार्थक अस्तित्व ओकर परिमित आत्माक इच्छा पर नहि, अपितु ईश्वरेच्छा पर निर्भर करैत अछि जे पूर्ण, अनन्त, शाश्वत, आध्यात्मिक उद्धेश्य थिकाह। मात्र हुनकहिमे सर्वरूपता निहित अछि। प्रकृतस्थ सकल पदार्थ हुनकहि आत्माक प्रकटीकरण (बहिवर्त्तन) थिक। ओकरा सभ यथार्थता वा वास्तविक पदार्थाश्रितताक निराकरण कोनो अव्याप्त परिमित आत्मा द्वारा नहि भए ओहन उद्धेश्य सबक जे ओकरा देखने अछि समान सहमतिसँ होइछ। ई उद्धेश्य सभ शाश्वत अहं (ईश्वर) के जे सर्वव्यापी उद्धेश्य थिकाह तनिक मात्र परिमित रूपादि थिक। एहि तरहें भ्रमक दशामे, यथा, डोरीकँ सर्प बूझब, बोधक असत्यता एहि बातमे अछि जे ओकर सत्यापन अन्य सभ द्वारा नहि भेल अछि। एहिसँ लोककँ ई विश्वास होमए लगैत छैक जे प्रमाणीकरणक सिद्धान्त हमरा सभसँ बाहर कतहु अवस्थित अछि, किन्तु एहन धारणा असत्य थिक। एहन बोधक असत्यता आत्मबहिर्वर्त्तनक प्रकृतिक असत्यतामे निहित नहि अछि। वास्तवमे ई कहिओ असत्य नहि होइत अछि कारण जे ई आत्माक पूर्वभावक शाश्वत कर्मोद्योग थिक। असत्यो ज्ञान होएबाक लेल प्रथमत: जानब आवश्यक। आत्म-बहिर्वर्त्तन एहन क्रिया थिक जे ज्ञानकँ संभव बनबैछ। असत्यताकँ तँ' पश्चात् कएल जाइछ। बोधक अवस्थामे कोनो तरहक असत्यता नहि होइछ। असत्यबोध मिथ्या साहचर्य, मिथ्यासंयुतिसँ होइछ, जेना स्मृतिमे पड़ल सर्पक भाव डोरीमे आरोपित भए जाएब। चित्तसंस्कारक रूपमे हम सभ जे ग्रहण करैत छी से वास्तवमे वस्तुसँ पृथक् होइछ, जे ओ सर्प थिक, आ' ने डोरिए। सादृश्यताक सिद्धान्तसँ जोड़ैत हम सभ डोरी पर नजरि पड़िते सर्पक संस्कार समान मानि लैत छी। अत: असत्यता दू समान चित्त संस्कारक मिथ्या-साहचर्यमे अछि। ज्ञानक पूर्वभाव रूप अर्थात् शाश्वत अहम् क कर्मोद्योगकँ एहिसँ कोनो लेना देना नहि अछि।

एहि तरहें अनुबोधक सभ अवस्थामे मनस् कोनो विशेष ज्ञानेन्द्रिय द्वारा प्रक्षेपित होइत अछि जखन कोनो वस्तु विशेष एकर बुद्धि विषयमे पड़ैत छैक। मनस् ओहि वस्तुक आकार प्राप्त कए लैत अछि, तथा यैह अनन्यता वा सादृश्य इन्द्रियबोध वा प्राथमिक बोध वा प्राथमिक ज्ञान थिक। एहन इन्द्रियबोधक पुनरावृत्ति हमरा सभकँ पूर्वक ओहने स्थितिक बोध करादैत अछि। जखन हमसभ कोनो वस्तुक नामोल्लेख सुनैत छी तँ ओहि वस्तुकँ ओहिना स्मरण कए लैत छी तथा स्मृतिमे साहचर्यक क्रियाशील नियमक द्वारा हम सभ एहि इन्द्रियबोध सभकँ जोड़ि दैत छी तथा कोनो वस्तुकँ देखैत छी। एहि प्रकारसँ हमरा सभक बोधमे सर्वप्रमुख कारक होइछ। पुनर्स्मरण, पाइथागोरस तथा प्लेटोक अनुसारें, मानव आत्माक पूर्व-अस्तित्वकँ मानैत छलाह तथा ई मानैत छलाह जे हमरा सभक ज्ञानक सार्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंग संस्मरण थिक। एहि संस्मरणादिक सर्वाधिक प्रारम्भिककँ प्लेटो जीवन्त स्फुलिंग तथा प्रज्ज्वल ईंधन कहैत छथि।"

आगाँमे चलिकँ देखब जे त्रिक्-दर्शनकँ 'प्रत्यभिज्ञा-दर्शन' कहल जाइछ तथा एक सर्वाधिक मौलिक धारणाकँ 'प्रकाश-विमर्श' कहल जाइछ।

ज्ञानक निम्नतरो स्तर पर संस्मरणे ज्ञानकँ ओकर विषय वस्तु दैछ।

एहि तरहें ई स्पष्ट होएत जे यद्यपि ज्ञानेन्द्रियादि बाह्य पदार्थादिक संचरणमे सहायक होइत अछि, ई सभ वास्तवमे प्रवेश द्वारि छोड़ि आओर किछु नहि थिक। ई मनसक पदार्थक संग ऐक्ये थिक जे ज्ञानकँ संभव बनबैछ। चिंतनक दशामे, जखन पदार्थ मनसक भीतरमे रहैत अछि, मनस्सँ प्रक्षेपण आवश्यक नहि होइत अछि तथा ज्ञानेन्द्रिय सभक कोनो प्रयोजन नहि होइछ। किन्तु ओतहु मनसक चिंत्य वस्तुसँ ऐक्य आवश्यक होइछ, कारण जानबाक यैह रीति थिक। तँ ई कहल जा सकैछ जे कोनो विशेष धारणा वा विचार वा वस्तु पर मनसक संकेन्द्रीकरण जानब थिक। कोलरीज कहैत छथि जे ई केन्द्रीकरण (Focus), शब्दक सर्वाधिक प्राथमिक रूपकँ छोड़ि आओर किछु नहि थिक, जकरा सहायतासँ हम सभ सोचैत छी। मनसक एहन संकेन्द्रीकरण बिनु चिंतनक संभव नहि अछि। तँ चरम विश्लेषणमे ई केन्द्रबिन्दु वा शब्द शाश्वत अहम्क अन्तर्प्रज्ञात्मक क्रिया थिक। एहि बिन्दु पर कोलरीजक मत उद्धृत करबा योग्य अछि:

"जखन हम वायुमे प्रकाश वा उष्णताक एक केन्द्राभिमुख किरणादि द्वारा बनाओल अग्रांशुक (Focus) चर्चा करैत छी तखन ओकरा बुझबाक लेल अहाँमे चाक्षुष विज्ञानीक बुद्धि अछि कि नहि से हम नहि जनैत छी। भए सकेत अछि जे एना हे - जे स्फुट किरणसँ भिन्न अग्रांशु एक भिन्न प्रकारक प्रभाव उत्पन्न करैत हो - तथा हमरा लोकनिक दृष्टि एवं भावनाक संग ओहिना कार्य करैत अछि मानू जेना एक ठोस यथार्थ हो। विचारक जगतमे कमोवेश हमहूँ सभ अपना लेल रचना करबाक ओहने प्रवृतिकामी अग्रांशु सत्तावान होइत छी। शून्यमे अवास्थित कोनो बिन्दुक लेल एहिमेसँ कोनो शब्द चुनि सकैत छी - मृषाबिम्ब (Fancy Image) वा संस्मृत संवेग।

विचार श्रृंखला, भावसमूह तथा स्पर्शानुभूति एवं असंख्य अतिसूक्ष्मादिक समूह हमरा सभक अवस्थितिक इन्द्रियबोधक निर्माण करैत अछि।... तथा हमरा सभक मनसक क्रियाकलापकँ एना प्रवृत्त करैत अछि जेना सम्प्रवाही सभमेसँ कोनो एक पृथक् रूपसँ सोचला पर नहि करैछ एवं ओकरा सभक मात्र सार्वजनीकरणसँ जे हमरा सभकँ प्राप्त होएत ताहिसँ किंचितों कम नैराश्य योग्य नहिं, कतबो स्पष्ट विश्लेषण द्वारा व्यक्तिकँ छलित करबाक प्रत्येक प्रयासक असंतुष्टिसँ आश्चर्य नहि होएत। नाभिक शब्द याथार्थ्यक भाव प्राप्त कए लेलक अछि- ई उष्मा दैत अछि, ज्वलित होइत अछि, अपनाकँ अनुभूत करबैत अछि। जँ हम सभ एकरा ग्रहण नहि करैत छी तँ ई हमरा सभकँ ग्रहण करैत प्रतीत होइत अछि आ' की किओ व्यक्ति अन्तर्प्रज्ञाक विरूद्ध तर्क कए सकैत अछि?"

जँ कोलरीज व्याकरणक भारतीय दर्शन पढ़ने रहितथि तथा 'स्फोट' रूपमे शब्दक प्रकृति कँ- बुझने रहितथि तँ ओ ब्राह्मण चिंतक लोकनिक प्रसंग अपन विकृत अवधारणाक दूषणकँ जनितथि। जँ कोनो विद्वान वास्तवमे कोलरीजक पाण्डुलिपि टिप्पणी सभसँ हुनक प्रस्तावित शब्द विज्ञानक पुनर्रचनाक प्रयास करथि तँ' हुनका तत्काले शब्द एवं अर्थक हिन्दू दर्शनसँ सहायता भेटतन्हि। जेना आइ. ए. रिचर्ड्स कहैत छथि पश्चिममे एखनहुँ अर्थविज्ञान बचकानिएँ अवस्थामे अछि। एकरा कदाचिते आनुभाविक रूपें विकसित कएल जा' सकैछ। तार्किक प्रत्ययवादी लोकनिक समान आधुनिक आनुभविक प्रयास दुर्दशाग्रस्त भए चुकल अछि। तार्किक प्रत्ययवादी लोकनिक आनुभविक चिंतन हुनका सभकँ एहि निष्कर्ष पर अनलक जे विशुद्ध प्रतिज्ञाक (Proposition) एक मात्र रूप पुनरूक्ति थिक। एहि लेल ओ सभ अपन विश्लेषणमे कोनो

विकास नहि कए सकलाह। हुनका सभक मूल त्रुटि अनुभववाद छल। ओ सभ शब्द एवं अर्थक परम मौलिक ऐक्यकेँ, जे शाश्वत अहम्केँ छोड़ि आओर किछु नहि थिक, नहि बूझि सकलाह। डोरोथी वर्ड्सवर्थकेँ लिखल एक पत्रमे, जाहिमे ओ एहि विषयक फिच (Fitch) महोदयक अनुवाद प्रस्तुत करैत छथि, आनुभविक प्रत्ययवादीक अन्हार खोन्हीसँ बाहर निकलबाक रास्ता कोलरीज देखबैत छथि। यद्यपि सम्पूर्ण पत्र पठ़बाक थिक तथापि हमरा सभक उद्धेश्यक पूर्त्तिक निम्नलिखित उद्धरणसँ भए जाएत :

"उदाहरणार्थ, अभिकथन (Proposition) A= A, मूलत: केवल ' I ' क लेल उपयुक्त अछि ई परमज्ञानक विज्ञानक अभिकथन 'I AM I'सँ संक्षेप कएल गेल अछि जे सभ वस्तुक 'I'मे अवस्थित सारसंक्षेप वा सत्व थिक जकरा संग एकरा युक्तियुक्त प्रयुक्त कएल जा' सकैछ तथा एकरा अन्तर्गत् जानल जा' सकैछ। 'I'मे स्थापित सत्वक अतिरिक्त 'A' तँ अन्य किछु नहि भए सकैछ तथा तँ आब अभिकथन एना भए सकैत अछि : जे 'I'मे स्थापित (सिद्ध कएल) अछि से सिद्ध अछि - अत: जँ 'A' 'I'मे सिद्ध अछि, तँ ई स्थापित अछि (अर्थात् जाबतकाल ई सिद्ध अछि चाहे संभाव्य, वा यथार्थ वा आवश्यक) तथा तखन ई अभिकथन बिनु विरोधाभासक संभावनाक सत्य अछि, जँ 'I'केँ 'I' होएबाक छैक। एहिसँ आगाँ जँ 'I' स्थापित अछि, तखन जे सभ 'I'मे स्थापित अछि से स्थापित अछि, वशर्ते कि 'A' 'I'मे स्थापित कोनो वस्तु थिक, तखन ई सिद्ध अछि, जँ ई स्थापित अछि..."

शब्द एवं अर्थक दर्शन भारतीय विद्याक परम विकसित शाखा सभमेसँ एक थिक। हम सभ इहो कहि सकैत छी जे ई अपन पराकाष्ठा पर पहुँचि गेल अछि। भारतमे साहित्यिक समालोचक सभकेँ एहि वैय्याकरण-दार्शनिक लोकनिक प्रति परम श्रद्धाक भाव छन्हि। त्रिक् दर्शनमे विश्वक बहुविधि रूपक व्याख्या करबाक एक रास्ता अछि शब्द एवं अर्थक रूपमे एकर व्याख्या करब। परमसत्ताकेँ "शब्द राशि कला मय" कहल जाइत अछि। ध्वनिक सम्पूर्ण अवधारणा, जकरा काव्यक आत्मा कहल जाइछ तथा जाहिमे 'रस' सर्वोच्च रूप थिक, 'स्फोट' रूपमे शब्द पर आधारित अछि। एकरा कोलरीजक शाश्वत आत्मचेतनाक नाभिक रूपमे जानल जा' सकैछ।

शब्दक संश्लेषणात्मक प्रकृतिक चेतनाक नाभिक रूपमे विवृत्ति शब्द निर्माण करैछ। अन्तत: विश्लेषणमे ई अफलातूनी धारणा शाष्वत चेतनासँ भिन्न नहि अछि। आत्मचेतनाकेँ सकल एवं अस्तित्वक आधारभूमि कहल गेल अछि। ई कहब बेशी नीक होएत जे ई सकल अर्थ एवं शब्दक चरम आधार थिक। शाश्वत अहम् (I AM) शब्द एवं अर्थक शाश्वत ऐक्य थिक। ई दर्पणएवं किरणकेन्द्र (Focus) दूनू तरहेँ कार्य करैछ। दर्पणक रूपमे ई अर्थ थिक; अस्तित्व, आत्मा, अभिप्रेत थिक। किरण केन्द्रक रूपमे ई शबद, ज्ञान, चेतना, कर्ता थिक। चेतना आत्माक गुण थिक तथा पूर्णतया एकरा संग स्वीकृत होइछ।

कोलरीज ध्वनिकेँ प्रकाशसँ समीकृत करैत छथि। ईश्वर, जे शब्दसँ सृजन करैत छथि, जनिक कल्पना करब उत्पन्न करब होइछ, सभ शब्द एवं अर्थक उत्स थिकाह। हुनक ईच्छा, आत्म-द्वैतीकरण मूल नाभिक विन्दु थिक। ई प्रकाश थिक। एहि तरहें शब्द एवं अर्थ, ज्ञान एवं अस्तित्वक एक मूल अछि; अथवा, अपितु ओ सभ एकहि सत्यक दू पक्ष थिक। जे बाहर जाइत अछि से वस्तुगत् यथार्थ थिक। जे अप्रकटे रहि जाइत अछि से ओ सत्व थिक जे ओहि सभ बाह्य प्रकटीकरणकेँ, जे एक केन्द्रीय सत्वक यथार्थमे रूपादि थिक, अर्थ प्रदान करैत अछि।

एक वैयक्तिक अस्तित्व होएबाक लेल कोनो शब्दकेँ ईश्वरसँ दूर होमए पड़तैक, तथापि जँ कि हुनकासँ पाछाँ हटब शून्य एवं राहित्य दिस बढ़ब होइत, एकरा प्रत्येक पद पर किंचितों किछु होएबाक लेल हुनका दिस पाछाँ घुमए पड़ैत छैक। एहि तरहेँ, प्रत्येक शब्द, जकर अस्तित्व आत्मचेतनाक एक केन्द्रीकरण पर निर्भर अछि, महत्वपूर्ण भए जाइत अछि। एही आधार पर कोलरीज कविताक महत्त्वक व्याख्या कएलन्हि। ईश्वरक साँस लेब हुनक शब्द थिक जे सभ सर्वव्याप्त धारणा वा वस्तुक आत्माक सर्वव्याप्त आधार थिक। एहि सभ आत्माकेँ देखब तखनहि संभव अछि जखन बोध कएनिहार आ' बोधगम्यक मध्य तादात्म्य स्थापित भए जाइत अछि।

जहिना कोलरीज कहैत छथि जे बाहरसँ प्राप्त इन्द्रियबोध पदार्थ केवल एकरा ग्रहण करएबाला मानसिक साँचाकेँ किंचित परिवर्त्तित करैत अछि तथा केवल साँचाक माध्यमेसँ सार्थकता प्राप्त करैत अछि, तहिना हम सभ कहि सकैत छी जे वर्ण ध्वनि मात्र रूपान्तरण करैत अछि; एहि चेतनाक नाभिक सार्थक शब्द अर्थात् अर्थयुक्त शब्द होइछ। चेतनाक संकेन्द्रणमे असमर्थ वर्णादि अर्थात् जे वर्णादि सार्थक शब्द रूपमे विन्यसित नहि अछि, अर्थहीन होइछ। यैह स्थिति वाक्यस्थ शब्दसभक होइछ। व्पक्यक शब्दादि हमरा सभक चेतनाक केन्द्रीकरणमे सहायक होइछ, अर्थात् ओ सार्थक वाक्य होइछ। बाह्य पदार्थ एवं वर्णादिक अनुबोधमे इन्द्रियबोध पदार्थ तथा चिंतनक दशामे शब्दादि मन:- संकल्पक आद्य क्रियामे गौण रहैछ, जे प्रत्येक अवस्थादिमे ऐक्य प्रदान करैछ तथा एहि तरहेँ बोध वा चिंतनकेँ सार्थकता दैत अछि।

सभ अनुबोधक आवश्यक शर्त्त थिक द्रष्टा एवं दृष्टक मध्यक तादात्म्य। कोलरीज जे एकरा मन:- संकल्पक शक्ति कहैत छथि जखन ओ एहि एकीकरणक परिमित मनस्मे चिन्तन करैत छथि। मन:- संकल्प "सकल मानवीय अनुबोधक प्रमुख करक" थिक। दिव्य बोध वा दिव्य ज्ञान तर्कशक्ति थिक, शाश्वत अहम् थिक। म:- संकल्प एकरा निकटक थिक। दिव्य मन:- संकल्पक प्रति हम सभ सम्पूर्ण विश्वक अस्तित्वक लेल आभारी छी। एही शक्ति। क्षमताक प्रति किछु निचला स्तर पर हमरा सभ विश्वक सम्बन्धमे अपन ज्ञानक लेल आभारी छी।

एहि तरहेँ हम सभ देखैत छी जे व्यक्ति शिक्षाक पूर्ण योजनामे इन्द्रियबुद्धि एवं प्रज्ञासँ महत्तर स्थान मन: संकल्पशक्तिक् अछि। इन्द्रियबोधक क्षमता पूर्णत: निष्क्रिय होइत अछि। प्रज्ञा दोसर वस्तुक संदर्भमे एक वस्तुक व्याख्या करैत अछि। ई वस्तुक व्याख्याक कारण संबन्ध द्वारा करैत अछि। किन्तु एक सविशेष वस्तु कोनो सविशेष वस्तुक पूर्णत: व्याख्या नहि दए सकैत अछि। कारणिक संबंध द्वारा प्राप्त व्याख्यामे सर्वदा एक संभाव्य घटनाक अवरोध रहैत अछि। मन:- संकल्प कोनो वस्तुकेँ दर्शक वा श्रोतासँ जोड़ैत अछि। जेना कि ऊपरमे कहल गेल अछि, हम सभ कोनहु वस्तुकेँ निरीक्षण द्वारा वा ओहि पर चिंतन कएकेँ बोध कए सकैत छी। ई चिंतन शब्दक श्रवणे द्वारा संभव अछि।

बोधकर्त्ता एवं बोध्यवस्तुक ऐक्य बोधक सार थिक एहि प्रकारसँ मन: संकल्प परिमित स्तर पर तर्कशक्ति वा अनन्त अहम् (I AM) क शाश्वत कर्मोद्योगक एकीकारक शक्ति थिक।

एहि प्रकारेँ कोलरीज बोध एवं ज्ञानमे प्राथमिक मन:- संकल्पक महत्ताकेँ स्थापित करैत छथि। जाबत तक हम सभ कोलरीज द्वारा ज्ञानक क्रियाक व्याख्यामे कएल गेल परिवर्त्तनक सार्थकताकेँ नहि बूझि लेब; जाबत तक एहि संमन्धमे लॉक एवं अपन गुरू इमानुएल कांटसँ मत भिन्नताकेँ नहि बूझि लेब, ताबत तक हम सभ हुनक द्वैतीयक मन:- संकल्पक वृतान्तकेँ नहि बूझि सकब कारण ई प्राथमिक मन:-संकल्पक केवल एक प्रतिध्वनि थिक तथा मन:- संकल्पक दूनू प्रभेदमे रूप। विधानक भेद नहि अछि। एतहि कोलरीजक

समीक्षक लोकनि हुनक यर्थाथ भाष्य करबामे असफल भए गेलाह अछि।

डदाहरणार्थ, आइ'. ए. रिचर्ड्स, जनिक कोलरीजक प्राथमिक मन:- संकल्प संबंधी अधिसंख्यक कोलरीजक समालोचक द्वारा ग्रहीत भेल अछि, एकर व्याख्या करैत कहैत छथि जे ई "सहज अनुबोध थिक जे इन्द्रिबोधक सामान्य जगतेक उत्पन्न करैत छथि

'जे जड़ भावशून्य जगत् प्रदान कएलक

दीनहीन प्रेमशून्य सतत् व्यग्र समूह कैँ,

मोटरबस, मांसखंड एवं परिचितक, वस्तुक ढ़ाँचा एवं घटनादि जाहिमे हम सभ नित्य प्रतिक अस्तित्वक निर्वाह करैत छी हमरा लोकनिक न्यूनतम अत्यावश्यकताक नैत्यिक संतुष्टिक संसार" डा. रिचर्ड्स नहि केवल कोलरीजक अन्वेषणक सार्थकतासँ वंचित रहि जाइत छथि तथा परिणामत: प्राकृतिक मन:- संकल्पक विषयक अपन धारणाक व्याख्या करबासँ रहि जाइत छथि, अपि पाठकोकैँ गलत बाट धरा दैत छथि। एहि दृष्टिकोणक सभसँ तीक्ष्ण आलोचना जॉर्ज हैव लेक "पोएटिक प्रॉसेस" (पृ.95)मे पाओल जा' सकैछ;

"ई आश्चर्यजनक अछि जे सौन्दर्यशास्त्रमे एहि पर कतेक कम ध्यान देल गेल अछि जकरा कोलरीज 'मूल एकीकरणक चेतना, आद्यबोध' कहलन्हि। कारण प्राय: कोलरीजक शब्दमे अछि- 'एकर अत्यन्त काठिन्य'। अनुबोधक सूक्ष्मतासँ जिज्ञासा करबाक असफलतासँ सौन्दर्यशास्त्र काव्य प्रक्रियाक एकहुगोट अखण्डित तोरणक व्याख्या करबामे असफल रहल। किंवा अनुबोधकैँ साहजिक किन्तु बाह्य उद्धीपकक प्रति यांत्रिक-तांत्रिकीय प्रतिक्रियाक रूपमे ग्रहण करए पड़त जाहि दशामे कलाक मूलवत्ता एवं विविधताक आकलनक कोनो साधन नहि होएत, वा ई दर्शएबामे कला 'आध्यात्मिक' क्रिया थिक- ने तँ ई तान्त्रिकी संरचना थिक आ' ने 'मेघा' द्वारा प्रभावित क्रियाकलाप-कलाक भौतिक तथा बोधात्मक चरित्रकैँ अवहेलना कएल गेल वा अस्तित्व शून्य भए गेल अछि। अनुबोधक सभ सिद्धान्त तथा किछु दार्शनिक मन सरलताक विभ्रान्तिसँ पीड़ित अछि। जटिल तथ्यक सरल उदाहरण हेरबामे ओ लोकनि विश्लेषणकैँ प्रासंगिकताक स्वरसँ नीचा लए जाइत छथि तथा सामान्यबोधसँ आरम्भ करैत छथि। एहि तरहँ एक जड़ एवं उलझल मध्यपदकैँ बोधात्मक अस्तित्वक मूलरूप् मानि लेबाक भ्रम कए लेल जाइत अछि।"

"कोलरीजक मतवादमे सर्वाधिक महत्वक विन्दु थिक जे मन:- संकल्प अन्तर्वत्ती शक्ति थिक। ई पूर्णतया क्रियाशील नहि अछि, कारण एकर प्राथमिक कार्य थिक गोचर पदार्थकैँ जानब, नहि कि चेतना वा ईश्वरकैँ जानब। शुद्ध 'I AM I' अर्थात् आत्मा एवं एकर बहिर्वर्त्तनक पूर्ण ऐक्य मात्र शुद्ध क्रिया थिक। किन्तु से तखने संभव अछि जखन आत्मा अपनाकैँ जानबाक प्रयास करैत अछि। हम सभ ईश्वर ईश्वरे भएकैँ जनैत छी, शाश्वत 'I AM I' भएकैँ जनैत छी।"

किन्तु कोलरीज कहैत छथि जे जानबाक निचलो स्तर सभ पर प्रक्रिया समाने होइछ। हम सभ समाने क्रियाकलापक पुनरावृत्ति पबैत छी। प्रत्येक स्थल पर ज्ञानक रूप 'I AM I' थिक। किन्तु गोचर जगतमे जतए ज्ञेय सविशेष पदार्थादि होइछ, शाश्वत चेतना अर्थात् शाश्वत अनंत अहम् के कर्मोद्योग, बोध वा चिंतनक वस्तु द्वारा परिमित भए जाइत अछि। यैह एकमात्र अन्तर अछि। जखन 'I AM' क्रियाकला अहम्कैँ छोड़ि अन्य किछु नहि होइछ तकरा कोलरीज तर्कशक्ति कहैत छथि तखन ज्ञानक आकार 'I AM I' क होइछ। ई शुद्ध कर्मोद्योग थिक, एतए परिमितक कोनो स्पर्श नहि होइछ, कोनहुँ जड़, नियत वा निष्क्रियक कोनो छूति नहि। तर्कशक्ति द्वारा प्राप्त ज्ञान जानबाक अपेक्षा अनुभूतिक प्रकारक होइत अछि। यैह क्रिया जखन कोनो परिमित वस्तु द्वारा रूपानतरित भए निम्नस्तरक भए जाइत अछि ज्ञानक वस्तु अशुद्धताक कारणें, ई निचला स्तरक शक्ति मन:- संकल्प (Imagination) थिक। एहि प्रकारसँ मन: संकल्प शाश्वत I AM क शुद्ध चिरन्तन जीवन एवं मानवक नैतिक जीवनक मध्यक एक कड़ी थिक, सर्वज्ञता एवं परिमित ज्ञानक मध्यक सम्पर्क सूत्र थिक। जे किओ परिमित पदार्थ- संकुल जगतमे ज्ञानक खोज करैत छथि ओ अंधकारमे व्यर्थ हाथ-पएर मारैत छथि। अस्तित्व एवं ज्ञानक स्रोत अनन्तमे निहित अछि। परिमिक ज्ञान अपरिमितेक सहायतासँ होइछ। कोलरीज दृढ़ता पूर्वक प्लूटोवादी सिद्धान्तसँ जुड़ल छलाह।

एहि प्रकारसँ मन:- संकल्प एक अन्तर्वर्ती वा सक्रिय-निष्क्रिय क्षमता थिक जे हमरा सभकैँ अज्ञानसँ ज्ञान दिस लए जाइत अछि, परिमितक जगतसँ अनन्तता दिस उन्मुख करैत अछि।

अभिनवगुप्त शाश्वत I AMकैँ सर्वत्र अनुबोधक प्रधान कारक बनबितथि। हम सभ पश्चात् चलिकैँ देखब जे ई कोलरीजक मतसँ श्रेष्ठ थिक।

सुभाष कुमार कामत
नौआबाखर, मिथिला (मधुबनी)
सम्पर्क : +91 8051919425

रक्षक बनल भक्षक

सत्ताक सभटा नंगा नाच
खुला आँखसँ देखि रहल छी
हम जानि बूझकैँ
आनहर, बौक, बहीर बनल परल छी
महगाइ सुरसा जकाँ मुह बाबि रहलय अछि
बेरोजगारी हनुमानक नागरि सन बढ़ि रहल
वर्दी-कुर्ता दुनू भ गेल मसियौत
खाइत अछि मुर्गा भात एके थारीमे
आब के हैत ?
हमर-अहाँक रक्षाक
जिनका पर भरोस छल
वैह बनल अछि भक्षक
भेल गरीब मजदूरक हाल बेहाल
आब अहीँ कहू ककरासँ करी निहोरा।

बहुरुपिया

भेल अहाँक आगू गिरगिट नतमस्तक
अहीँकैँ अपन उस्ताद मनैए आब
घुनसँ दोस्ती करि अहाँ
अर्थव्यवस्था चाटि गेलहुँ
जोंक संग रहि-रहि कए
गरीबहाक सोनित पीबनै सीख गेलौ
गिद्ध शर्म सँ सेहो भेलि लाचार
अहाँ तँ ज़िंदा सोझे नोचैं छी
छौरू मगरमच्छक लोर चुबेनै
भालू सँ कनियोंक नै कम छी
अहाँ सँ निक तँ बहुरुपी छल
घूमि घूमि सभकैँ खूब मन बहलावै छल।

अशोक कुमार मेहताक किछु प्रेमक पाँति

सुपौल जिलाक रतनपुर गामक रहनिहार प्रोफेसर अशोक कुमार मेहता पटना विश्वविद्यालय, पटनासँ पी.एच. डी. धरिक उपाधि प्राप्त कएलनि। प्रोफेसर मेहता मैथिली भाषाक कवि, कथाकार, आलोचक आ सम्पादकक रूपमे ख्यात छथि। एखनधरि तात्पर्य, व्यक्तिवाचक, सम्प्रति (संपादन) आ भाव-भूमि रसवंत (संग सम्पादन) मैथिली आलोचनाक पोथी प्रकाशित छनि। वर्तमानमे विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयमे प्राचार्य छथि आ सिंडिकेट सदस्यक अतिरिक्त निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगाक दायित्व निर्वहन क' रहल छथि।

सम्पर्क : +91 9430827941

प्रेम कोनो सौदा नइ कीनि आनब हाटसँ
प्रेम साग पोरो नइ खोंटि आनब टाटसँ
प्रेम नइ कला थिक आ नइ सुच्चे विज्ञाने
प्रेम रुसल लोक नइ बौंस आनब बाटसँ

प्रेम तँ प्रबन्ध थिक ताग आ मोती सन
प्रेम अनुबंध थिक कुरता आ धोती सन
प्रेमक इतिहास आ भूगोल असीम अछि
प्रेम संबंध थिक नयन आ ज्योति सन

प्रेम होइछ अलौकिक कथा पुराणमे
प्रेम होइछ लौकिक खेत खरिहानमे
प्रेमक लालसा संग जीबैये जीव सभ
प्रेम होइछ मधुराइन प्रिय केर ध्यानमे

प्रेम छल राधा केर विरह अनुरागमे
प्रेम छल मीरा केर त्याग आ रागमे
प्रेमक प्रतिरूप रहथि रूपमति रानी
प्रेम छल झुनकुट नानीक सोहागमे

प्रेम होइए कछेरकँ धारक प्रवाह संग
प्रेम होइए सागरकँ लहरिक उछाह संग
प्रेमक तँ रुप थिक चान आ चकोर सेहो
प्रेम होइए अद्भुत अन्हारकँ छाह संग

प्रेमक प्रतीक पुष्प कोंढ़ी गुलाब अछि
प्रेमक प्रतीक नदी उमड़ैत चिनाब अछि
प्रेमक समदियामे मेघक नइ जोड़ भेल
प्रेमक प्रतीक तँ ताज लाजबाब अछि

प्रेममे चाही सुचिता ई तँ साधना थिक
प्रेममे चाही नम्रता ई तँ आराधना थिक
प्रेम केर पुष्पलता लतरैत रहए अहर्निश
प्रेममे चाही धीरता ई तँ अभ्यर्थना थिक

प्रेम जखन चानन तँ माथमे लगाउ
प्रेम जखन आनन तँ नइ भरमाउ
प्रेमक रूपकँ चिन्हब जरूरी अछि
प्रेम जखन कानन तन मन रमाउ

प्रेमवश पर्वत जलराशि जोगौने अछि
प्रेमवश पीपर प्राणवायु बचौने अछि
प्रेम बंटैत धरती सभकिछु सहैत छथि
प्रेमवश मेंहदी लालीकेँ नुकौने अछि

प्रेम होइए झरनाक कलकल निनादमे
प्रेम होइए गीत आ गायक केर नादमे
प्रेमक स्वर अकानी डोलि रहल पातसँ
प्रेम होइए मिलनमे नइ कि विवादमे

प्रेम होइछ बेदराकँ धूरा आ गरदा संग
प्रेम छन्हि काकाकँ पान आ जरदा संग
प्रेम छी देखने काकीकँ भानस भातमे
प्रेम होइछ बूढ़कँ जीह आ औरदा संग

प्रेम अछि तँ फूलकँ डारि छै रखने पोरमे
प्रेम अछि तँ क्षितिजकँ सिंधु रखने छोरमे
प्रेमक पछोर धएने मोन आबए हृदय द्वार
प्रेम अछि तँ खुशीकँ आँखि रखने कोरमे

प्रेम होइत अछि हवाकँ गाछ-तुबल पातसँ
प्रेम होइत अछि बाटकँ उड़ि रहल पातसँ
प्रेम बाँटए पातसँ हवा बाट अपन-अपन
प्रेम होइत अछि गाछकँ खसल अपन पातसँ

प्रेम होइत अछि नाहकँ जल भरल धारसँ
प्रेम होइत अछि गामकँ अपन डीहबारसँ
प्रेम लेल जरूरी अछि मन-भाव एक हो
प्रेम होइत अछि दीपकँ आँचरक ओहारसँ

प्रेमक आखर आ पांति सभ लिखैत रही
प्रेमक बास केर आँखि-मोन पढ़ैत रही
प्रेम जनिक कर्म-धर्म से धन्य धराधाम पर
प्रेमक बाट पर निशान नित नव गढ़ैत रही

प्रेम करब क्षमासँ तँ क्षमतावान हैब
प्रेम करब दानसँ तँ दानी कहाएब
संयमसँ प्रेम करब शील रहत बाँचल
प्रेम करब पीड़ासँ प्रेमी जनाएब

प्रेम पति संग सावित्री केर छनि जगत विख्यात
प्राण घुरौलनि स्वकौशलसँ यम हाथहि साक्षात
ताहि स्मरण नारी लोकनि पुजै छथि बड़साइत
आन देशमे पति पूजन केर परम्परा किनसाइत

प्रेम घटल अछि जीवनमे कहलनि कवि आनंद
तइ पर चिंता चिंतन हो नहि बैसी भ' क' मंद
नीरस भाव नइ देखी दुनिया प्रेममय संसार
प्रेम रसायन रहनहि भेटत जीवन केर आधार

प्रेम करी कर्मसँ भाग्य खुजि जाएत
प्रेम करी साँचसँ झूठ ने लग आएत
प्रेम करी स्वंयसँ आन संग देत
प्रेम करी साहससँ डर लंक लेत

प्रेम भावकँ देवाक्षरमे रचलनि कालिदास
ऋतुसंहार मेघदूत थिक प्रेमक अद्भुत चास
जयदेवक गीतगोविन्दसँ नि:सृत प्रेम सुगन्धि
विद्यापतिक देसिल बयना थिक प्रेमक आवास

प्रेमनइचाहलककहियोकोनोअपनालेलव्यवधान
अन्हराएल चलैए सदति ई भेल बहुत सावधान
प्रेमकँ लागए ठेंस जखन हो दर्द सगर देह
मरहम-पट्टी लैत संगमे दौड़ए तत्क्षण नेह

अजित आजादक किछु कविता

मैथिलीक ख्यातिलब्ध साहित्यकार अजित आजादक 2006मे पहिल कविता संग्रह युद्धक विरोधमे बुद्धक प्रतिहिंसा प्रकाशित भेलनि। एहि किताबक अद्यावधि हिन्दीमे 'अघोषित युद्ध की भूमिका', अंग्रेज़ीमे ' वॉर अगेंस्ट वॉर', उर्दूमे 'कुदरत बेहुस्न नहीं हुई है' आ बांग्लामे 'अजित आज़ादेर कोविता' नामसँ अनुवाद पुस्तक प्रकाशित। एखन धरि कुल 30 पुस्तक मूल आ अनुवाद सहित प्रकाशित जाहिमे प्रमुख अछि पेनड्राइव मे पृथ्वी, मृत्यु थिक विचार, हम कोसिकन्हाक एकटा कवि, अनभुआर होइत समय, गाम सँ बहराइत गाम। दर्जन भरिसँ बेसी दैनिक अखबारक सम्पदान कएने छथि। वर्तमानमे मिथिला आवाज (पाक्षिक), मिथिला मिलन (मैथिली मासिक), पहचान (हिन्दी मासिक) सहित मिथिला चैप्टर चैनलमे सीईओ एवं नवारम्भ प्रकाशनक निदेशक छथि।

सम्पर्क : +91 9304349384

सम्बन्ध

डंटीसँ लगले अछि फूल
झड़ल नहि अछि भूमि पर
तोड़ल जयबाक प्रत्याशामे रहल अलगल किछु दिन
तकैत रहल फुलडाली संग ककरो
पीड़ी पर चढ़ि निरमाल होयबाक कामनामे
मौलाय गेल अछि आब
ने खोपामे लागि सकल
आ ने चढ़ि सकल कोनो शहीदक चिता पर
झड़ल जँ रहैत नीचाँ
थकुचा जाइत कोनो फुलतोड़नीक पैर तर
एहू तरहेँ पहुँचि जा सकैत छल गहबर धरि

फूल नहि थिकहुँ हम
अपना मादे सोचि नहि सकैत छी एतेक बात
खसल छी भूमि पर
रहैत आयल छी पैरे तर
थकुचा गेल अछि पोर-पोर
कहाँ पकड़ि सकलहुँ थानक बाट

डंटीसँ लागल त' अछि फूल
झड़ल त' नहि अछि नीचाँ
मौलायले सही किन्तु अछि त' सम्बन्धमे
हम त' सेहो नहि

मुइलो पर चाही एकटा सम्बन्ध-बंध
जीवितमे त' उचिते!

प्रेम-सूत्र

स्पर्शसँ वंचित हमर ठोर पर अहाँक नाम
सगबगाइत आँगुरी जनैत अछि केवल कओर बान्हब
छुबि नहि सकल अछि अहाँक गात
आँखिक कामनामे
कछमछाइत अछि एकटा चुमकी
निरभ्र आकाशसँ
आइ फेर बरिसत ओस किछु बेसिये

पीठ ओरने ठाढ़ रहब कतेक काल धरि
जाड़क भोरुका रौदमे
सगुन चिड़ै बनि उड़बा लेल उत्फाल छी कतय
गलत पता पर पहुँचल चिट्ठी
हुकरैत रहैत अछि अनुखन

सोहराबय चाहैत छी अहाँक केशराशि
एतबो सुख जँ बिलहि दितहुँ अहाँ
खएबा काल भातसँ निकलय अहाँक केश
ई दिन कहिया आओत हमर कल्पित नायिका!

बुध

रविक उपासमे
सूर्यक उत्तापसँ मारल गेल बुध
मारल गेल सोमवारीक जलढारमे बम-बम ब्रूसँ
लाल धुजासँ मारल गेल मंगल दिन तुलसी चौड़ा लग
केरा पौचक तिरपेच्छन करैत
वृहस्पतिक पियर रंगमे मारल गेल गुरु-भावसँ
खटाइ खाक' मुइल शुक्र दिन संतोखी होइत
टारि नहि सकल शनिक ग्रह
मुइल भुज्जा फँकैत-फँकैत
छबो भैयारीमे आस्था राखि गलबैत रहल अस्थि

बुद्धक दुखसँ भारी अछि
एकर दुख
दुनू कातसँ तीन-तीन भाइ
छकबैत रहैत छैक दिन-दिन
मुदा एकरा लेल धनि सन
सरकारी टीवीक एंकर जकाँ मुस्काइत रहल अनेरे

हम बुध छी
कूही होइतो
कूड़ीसँ अपनाकेँ कात करैत।

मजदूर

एहि विश्व-व्यवस्थामे
कोनो अंतर नहि अछि स्टेट बैंकक मैनेजर
आ खेत तमैत कोदरबाहमे
कतबो ग्लोरीफाइ करथु यूनिवर्सिटी प्रोफेसर
अपन ओहदाकेँ
अपने कारक ड्राइवरसँ नहि छथि बीस
भट्ठा मजदूरसँ कॉरपोरेटक सीईओ धरि
सभ छथि मजदूर
नौकरी करबैक आ नौकर नहि कहेबैक
से नहि ने मानत शब्दकोश आ कि सरकार

श्रमक मोनासिब मूल्य पायब
नहि थिक अपराध कोनो
ठेलाबला सेहो कमाइत अछि पाइ
मुदा मालिक अछि अपन
गुमटी पर जे खोलने अछि पानक दोकान
नौकर नहि थिक ककरो बापक
इच्छाक जेबीमे रखने रहैत अछि ताला-चाबी
जखन कि बेर पर छुट्टी भेटब छैक मस्किल
कोनो सिपाहीकेँ

एहि विश्व-व्यवस्थामे
स्वरोजगार थिक मुक्तिक माध्यम
जाधरि लैत रहब बोनि
ताधरि बनले रहब बोनिहार
तखन एतेक जमौटी कियैक दैत छियै गुरुजी
सभसँ बेसी नौकर अहीं द' रहल छियै देशकेँ
स्कूल थिक रजिस्टर्ड मजदूर सप्लायर।

राजीव रंजन झाक पाँचटा गजल

मैथिलीसँ एम. ए. विधि-स्नातक सहित प्रबंधन (विपणन)मे स्नातकोत्तर राजीव रंजन झाक जन्म मधुबनी जिलाक मधेपुर प्रखण्डान्तर्गत भीठ भगवानपुर गाममे 12 जून 1980कँ भेल छनि। हिन्दी-मैथिली भाषाक पत्र-पत्रिकामे हिनक छिटफुट रचना सभ प्रकाशित होइत रहल अछि। सामजिक आ राजनीतिक सरोकारकँ केन्द्रविन्दुमे राखि अपन रचनादिक माध्यमे वर्तमान सामाजिक राजनीतिक व्यवस्थामे माथ उठबैत विद्रुपता सभ पर कसगर प्रहार करब हिनक अभीष्ठ थिक। सम्प्रति भारत सरकारक प्रतिष्ठित संस्थान भारतीय जीवन बीमा निगम कार्यालयमे पदस्थापित छथि।

सम्पर्क :+91 9304324147

एक

थीर भ' बैसू कोनो अगुताइ नै ने अछि
एखनहि अयलहुँ एखनहि विदाइ नै ने अछि

आखरक बीहनि थिक कमौनी चाही जमिके
बेदम छी बुद्धि कतौ बँटाइ नै ने अछि

व्यक्तित्वक सिद्धिमे खपि जाइछ जिनगी
लुटबै छी घूसक कमाइ नै ने अछि

जुन्ना थिक जड़लो पर ऐंठी नै जायत
गउरवके कोनो दबाइ नै ने अछि

मन होइए बैसल ठाँ बाबा कहाबी
करबै की जेबीमे पाइ नै ने अछि

शोनित नै शीतल कनिओ अछि ककरो
मैथिल लग दीया सलाइ नै ने अछि

नोकर सरकारी रहियोके करियौ की
सुक्खा दरमाहा मलाइ नै ने अछि

दू

चलू बेचब हँसी ठोरक चलू बाजार बीकै छै
एतय हीरा जवाहर संगमे लाचार बीकै छै

जकर उपयोग मिसियो नै तकर उपभोग करबाबै
रहय कतबो अकाजक वस्तु बस परचार बीकै छै

नियायक आस की करतै गरीबक कोखिमे जनमल
नियम कानून पेनल कोड थानेदार बीकै छै

हमर बहुमत भने नै हो रहत कुरसी मुदा हमरे
विधायक सांसदे नै थोकमे सरकार बीकै छै

समाचारक करू नै बात सभटा हाल अछि बूझल
छपै छै बादमे पहिने सगर अखबार बीकै छै

तीन

दारू मुरुगा संग कनिआक बाली एलैए
चमचा नेताक थिक भरिसक दलाली एलैए

बुलेरो बदलि किनलक अछि फॉरच्यूनर मुखिया
दू टर्म अपने छल आब घरवाली एलैए

रोजगारक ताकमे घिसा गेलै जवानी ओकर
चुनाव एलै तखन जाके बहाली एलैए

दोकान बन्द छै शराबक थाना खूजल छै मुदा
भेंट ओकरे चढाके ओ मवाली एलैए

दंगा कोना ने भड़कौ भाषण सुनियौ ओकर
भेष नेताक मुदा लागत बवाली एलैए

फबल नै छनि किछु मंत्री नव छथि एखन
बान्ह धारक टुटलै तखन गालक लाली एलैए

सत्य बजितहुँ से ठीक मोजर कते रहितै तकर
फुसिये बजलहुँ त' की ओइ पर ताली एलैए

चारि

घारमे घार मुदा हाथमे हाथ नै छै
हृदयसँ हृदय धरि आबरजात नै छै

आँखिमे सपना भलहि नीने छै दुर्लभ
मुरुगा त' वैह मुदा ओ परात नै छै

औंठा तर हाथक यार देश दुनियाँकेर
अपनहि भैयारीसँ लाट-घाट नै छै

मेहनति करैछ कियो धोधि सटकाबय लेल
कोटि-कोटि छिपलीमे माँड़-भात नै छै

गाड़ी-बंगला सुखक भंडार छै राजीव
सभ किछु रहितहु आँखिमे लाज नै छै

पाँच

पघिलह जुनि बेसी जियान भ' जेबह भाइ
पाथर बनबह त' भगवान भ' जेबह भाइ

घामक बुन्नसँ मिझाइछ नहि आगि पेटक
शोनित पीबह पहलमान भ' जेबह भाइ

राजनेती करतै औंठा छाप छै ओ
तोँ त' पड़हल छह दरबान भ' जेबह भाइ

करबह की सुनिके व्यथा हमर मीत ई
डर अछि अनेरो अनजान भ' जेबह भाइ

दाता छह दैत रहक छिदियो जा बाँचल
सठतह त' एकदिन बइमान भ' जेबह भाइ

आँच साँचक सहत दम नहि छै कलियुगमे
बाट फूसिक धरह महान भ' जेबह भाइ

सत्ता थिक ई पंगा नहि लैह राजीव
नजरि चढलह त' मुसलमान भ' जेबह भाइ

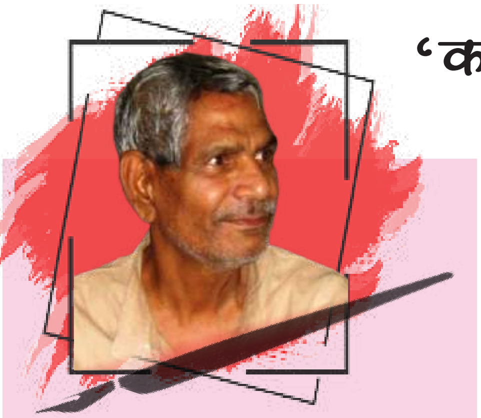

'कोढ़ियाघर स्वाहा' दन्तकथापर आधारित बाल-उपन्यास : मोहन भारद्वाज

'कोढ़ियाघर स्वाहा' ऋषि बशिष्ठक चर्चित बाल उपन्यास छनि। एहि उपन्यासकँ कतहु अग्रसारित करबाक क्रममे मोहन भारद्वाजजी द्वारा लिखल ई हस्तलेख हमरा कथाकार अशोक जीक मार्फत प्राप्त भेल, जे मोहन भारद्वाज जीक छोट बालक (हिमकर भारद्वाज) 'लल्लू'जीकँ अपन घरकँ साफ-सुथरा करबाक क्रममे भेटलनि। मैथिली साहित्यक ई मूर्धन्य आलोचक आब सदेह हमरालोकनिक बीच नहि छथि। हुनक पुण्य स्मरणमे हुनक ई दुर्लभ हस्तलेख सुधी पाठक लोकनिक लेल...

— सम्पादक

'कोढ़ियाघर स्वाहा' बाल-साहित्य अछि। लेखक छथि ऋषि बशिष्ठ। एकर प्रकाशन 2009 ई.मे भेल अछि। रचनाकारक तीनटा बाल-उपन्यास प्रकाशित छनि। ई बाल-साहित्यक समर्पित लेखक छथि।

'कोढ़ियाघर स्वाहा' एकटा दन्तकथाक आधार पर लिखित बाल-उपन्यास अछि। मैथिलीमे बाल-उपन्यासक अभाव अछि। प्रस्तुत पोथी एहि आवश्यकताक पूर्त्ति करैत अछि। विषय-वस्तु, शिल्प आ भाषा तीनू स्तर पर ई मैथिलीक बाल-साहित्यमे बेछप अछि। कोढ़ि नहि होइ, काजुल बनी- एहि पाठक महत्व सभ दिनसँ अछि, आजुक समय-सन्दर्भमे एकर प्रयोजन बढ़ि गेल अछि। अपन आलस्यकेँ झाँप देबाक लेल दोसर पर आरोप लगायब सहज-स्वाभाविक आचरण भ' गेल अछि। बच्चा सभ सेहो देखौंससँ बहाना करबामे बहादुर भेल जा रहल अछि। एकरे निदान अछि कोढ़ियाघर स्वाहा। धीया-पुता दोसरक दोष नहि देखय, अपन काज करबाक आदी भ' जाय, यैह एहि पोथीक संदेश अछि।

मुदा, ई संदेश उपदेश बनि क' नहि आयल अछि। रचनाक शिल्प-विधान ततेक सधल अछि जे एकसँ दोसर, तकरा बाद तेसर टोल कखन आ कोना टपि गेलहुँ से बालककेँ बुझबामे नहि अबैत छैक कथा-वस्तुक प्रति पहिले उत्सुकता होइत छैक, तखन जिज्ञासा जगैत छैक आ समाधान धरि पहुँचल कि खिस्सा खतम।

भाषाक सरलता, सहजता आ शालीनता अपूर्व अछि। सम्पूर्ण पोथीमे संयुक्ताक्षर वला शब्द नहि भेटत। मैथिलीक देशज शब्दक एतेक पचल प्रयोग पोथीक स्वाभाविकताकेँ रेखांकित करैत अछि।

सभसँ महत्वपूर्ण विशेषता अछि– कथ्यक प्रस्तुति बाल-मन आ बाल-बोधक अनुरूप करब। तेँ कथाक उपन्यास अत्यन्त रोचक, मनोरंजक तथा प्रभावकारी अछि।

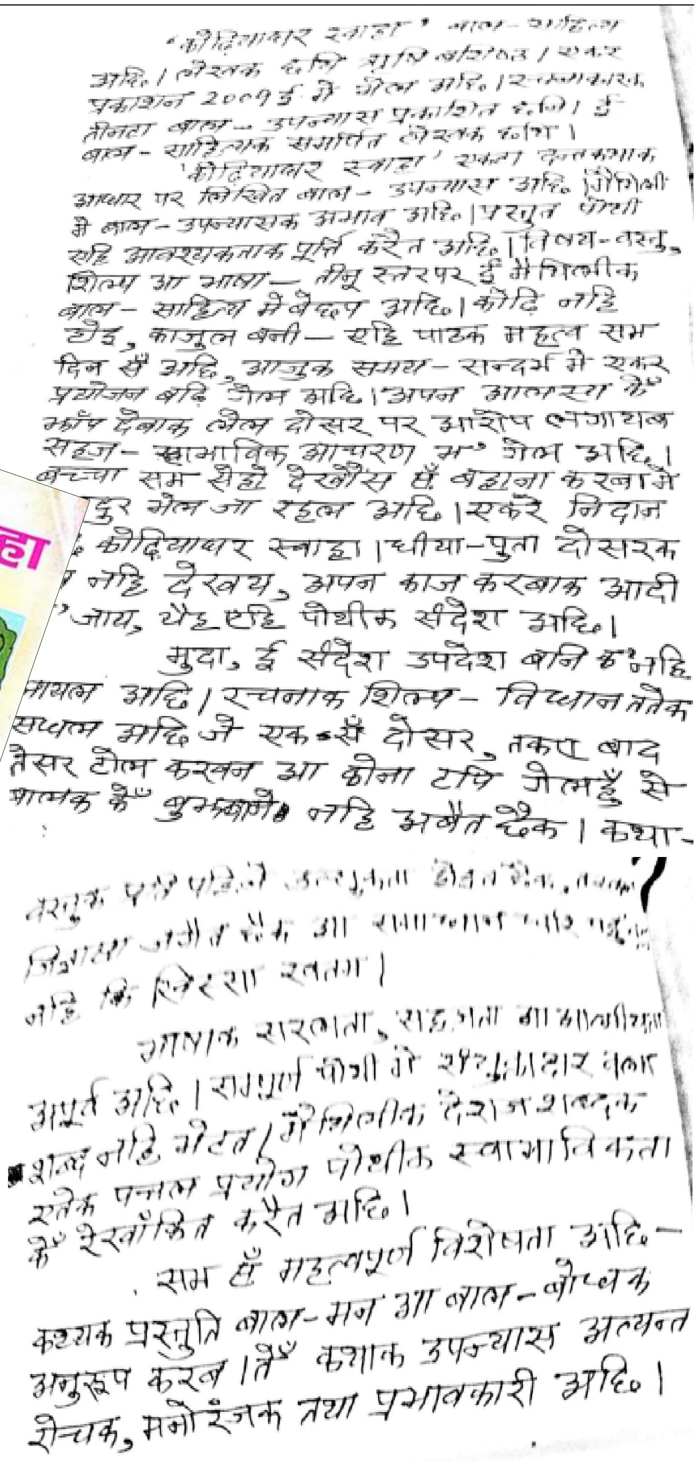
'कोढ़ियाघर स्वाहा' बाल-साहित्य
अछि। लेखक छथि ऋषि बशिष्ठ। एकर
प्रकाशन 2009 ई मे भेल अछि। रचनाकारक
तीनटा बाल-उपन्यास प्रकाशित छनि। ई
बाल-साहित्यक समर्पित लेखक छथि।
'कोढ़ियाघर स्वाहा' एकटा दन्तकथाक
आधार पर लिखित बाल-उपन्यास अछि। मैथिली
मे बाल-उपन्यासक अभाव अछि। प्रस्तुत पोथी
एहि आवश्यकताक पूर्ति करैत अछि। विषय-वस्तु,
शिल्प आ भाषा— तीनू स्तरपर ई मैथिलीक
बाल-साहित्य मे बेछप अछि। कोढ़ि नहि
होइ, काजुल बनी— एहि पाठक महत्व सभ
दिन सँ अछि, आजुक समय-सन्दर्भ मे एकर
प्रयोजन बढ़ि गेल अछि। अपन आलस्य कें
झाँप देबाक लेल दोसर पर आरोप लगायब
सहज-स्वाभाविक आचरण भ' गेल अछि।
बच्चा सभ सेहो देखौंस सँ बहाना करबामे
[illegible]दुर भेल जा रहल अछि। एकरे निदान
[illegible] कोढ़ियाघर स्वाहा। धीया-पुता दोसरक
[illegible] नहि देखय, अपन काज करबाक आदी
[illegible] जाय, यैह एहि पोथीक संदेश अछि।
मुदा, ई संदेश उपदेश बनि क' नहि
आयल अछि। रचनाक शिल्प-विधान ततेक
सधल अछि जे एक सँ दोसर, तकर बाद
तेसर टोल कखन आ कोना टपि गेलहुँ से
[illegible]क कें बुझबामे नहि अबैत छैक। कथा-
वस्तुक प्रति पहिले उत्सुकता होइत छैक, तखन
जिज्ञासा जगैत छैक आ समाधान धरि पहुँचल
नहि कि खिस्सा खतम।
भाषाक सरलता, सहजता आ शालीनता
अपूर्व अछि। सम्पूर्ण पोथी मे संयुक्ताक्षर वला
शब्द नहि भेटत। मैथिलीक देशज शब्दक
एतेक पचल प्रयोग पोथीक स्वाभाविकता
कें रेखांकित करैत अछि।
सभ सँ महत्वपूर्ण विशेषता अछि—
कथ्यक प्रस्तुति बाल-मन आ बाल-बोधक
अनुरूप करब। तें कथाक उपन्यास अत्यन्त
रोचक, मनोरंजक तथा प्रभावकारी अछि।

चल गुजरनी मिथिलाक गाम : देश-दशाक कविता

कमलानंद झा
हिंदी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़।
सम्पर्क : +91 9431694531

इन्द्रकान्त झा मैथिलीक सुपरिचित नाम छथि। कविता, आलोचना आ सम्पादन-कलाक क्षेत्रमे हिनक नाम अत्यन्त आदरसँ लेल जाइत अछि। चल गुजरनी मिथिलाक गाम हिनक नब कविताक पोथी अछि। एहि संग्रहमे 'जीवन' श्रृंखलासँ बहुत रास कविता अछि। अतय जीवनक विविध रूप आ विविध छटासँ साक्षात्कार कविक अभिप्रेत। तन्नुक जीवनसँ ल' क' चिनगारी धरि जीवनक आशय कवि एहि कविता सभमे तकलनि अछि। एहि श्रृंखलाक कविता मनुष्य जीवनक सभ तरीघट्टीसँ पाठककेँ परिचित करबैत छैक। चल गुजरनीक वैशिष्ट्य ई जे एहिमे सभ तरहक भाव-बोधक कविता अछि। भीख कवितामे भिखमँगाक प्रति अथाह संवेदना व्यक्त कायल गेल अछि। संगहि कवि इहो कहि जाइत छथि जे गरीबे गरीबक मर्म बुझैत अछि, धनिकहा त' अकड़ि क' चलि जाइत अछि। पुलिसक व्यभिचारी रूपसँ साक्षात्कार करबैत अछि हिनक कविता पुलिस। एहि कवितामे एकटा पियक्कड़केँ दूटा पुलिस टाँगिक' ओकरा घर पहुँचा जाइछै आ भरि राति ओकर पत्नीक संग बलात्कर करै छै। एहि कवितामे कवि बड़ साहससँ पुलिसक करनीकेँ जगजियार कयलनि अछि। कारण आइ-काल्हि एहन माहौल बनाओल गेल छैक जे फौजी आ पुलिस आदिक आलोचनाकेँ कखन देशद्रोहसँ जोड़ि दैल जायत तकर हिसाब नहि। सहज कवितामे कवि अपनाकेँ सहज मानैत जीवनक लाभ-हानिकेँ सहज रूपसँ लैत छथि। ई स्थिति सरिपहुँ आनंदक चरमावस्था थिक। मुदा साधारण लोक एहि 'सहजावस्था'केँ प्राप्त नहिक' सकैछ। एहि सहजावस्थाकेँ प्राप्त करबाक हेतु असहज साधना अपेक्षित। ओना, माथक उपर छत होइक, 'मैं भी भूखा न रहूँ साधु न भूखा जाय' जोगरक आर्थिक हालत रहैक, घरमे बहु-बेटी सुरक्षित रहै आ गारि-मारिक डर नहि रहौक त' सहज स्थिति प्राप्त करब सहज। अन्यथा सहज रहब असंभव। कवि इन्द्रनारायण बाबूक कवितासँ उदाहरण ल'क' कही त' 'झूठवादक प्रचार भेलैए सत्यवादक अवहेलना' एहना स्थितिमे कोनो सजग-सचेत व्यक्ति सहज नहि रहि सकैत अछि। आ यदि एहनो स्थितिमे कियो सहज अछि त' ओकरा पक्का 'सहजयानी' बुझक चाही।

हिनक एकटा कविताक अत्यंत मार्मिक पाँति अछि। 'धनी लागल छै गरीबकेँ खखोरबामे, गरीब लागल छै अमीरक हड़पबामे। एहि कवितामे अमीर आ गरीब दूनूकेँ शोषक मानल गेल अछि। दूनूक मान बराबर। एहिमे अपना सभकेँ ई विचार करय पड़त जे गरीब सभ अमीरकेँ कते शोषण क' लेतैक। आइ तक जे बड़का-बड़का अमीर बनल अछि ओ गरीबहाके शोषण क' बनल अछि। अहूसँ पैघ बात ई जे जतेक प्राकृतिक संसाधन होइछ ओहि पर सभ मनुष्यक बराबर हक होइछ, मुदा बड़का.बड़का कॉर्पोरेटर उद्योगपति सरकारसँ साँट-घाँट क' जंगल, खदान आदिकेँ टोकन एमांउट पर ल' लैत अछि। गरीब किसान सभकेँ लोभ आ भय देखा क' जमीन हड़पि लैत अछि। अमीर सभ असली शोषण एहि तरहें करैत अछि। कर-चोरी, श्रम-चोरी, अत्यंत व्यापक.स्तर पर लोन चोरी आदि त' अमीर सभहक लेल साधारण बात, चुटकी बजेबाक जोगरक। पेटक भूख मेटेबाक खातिर पाँवरोटीक चोरी और जनताक करोड़क-करोड़ उड़ा क भागि जायब, दूनू एक रंग नाहि भ' सकैछ। मुदा भगवानोक घरमे अनहेर। भगवान एहि सत्ताधारी उद्योगपति सभकेँ यमपुरी नहि पहुँचा साधारणे लोककेँ सदिखन कष्ट दैत छथिन्हि। कवि एहन भ्रष्ट लोक सभकेँ ठीके 'कुकर्मी' कहलाह अछि।

जमाना कवितामे कवि जमानाक बदलल रंग पर चोट कयलनि अछि। कविकेँ सभ किछु उलट-पुलट बूझि पड़ैत छन्हि, 'अपनाकेँ सभ बुधियार कहैए, पत्नी पतिकेँ ढहलेल बुझैए'। 'कलियुग'मे त' उलट-पुलट सहज संभव। आइ हजारों वर्षसँ पति लोकनि पत्नीकेँ ढहलेल आ बुड़बक बना क' रखलनि त' आब ओ स्वयं 'ढहलेलक' पदवी पाबि रहल अछि। कोनो जाति वा समूहकेँ बेसी दिन धरि बेवकूफ बनाक' नहि राखल जा सकैछ। आ जखन ओ समुदाय जगैत अछि, चेतनशील होइत अछि त' बेसी उग्र रुपमे जगैत अछि। मुखर प्रतिरोधी रूपमे।

गीत नामक कवितामे समाजक मादे कविक पीड़ा व्यक्त होइत अछि। स्वार्थलिप्सा, भ्रूण हत्या, नक्सलवाद आदि समस्या कविक हृदयकेँ तार-तार क' दैत अछि। कविक कहब छन्हि जे अनेक तरहक नियम बनैत अछि, मुदा ओकरा कियो ने मानैत अछि। बाहरी नियमसँ सांस्कृतिक नियम नहि बदलि सकैत अछि। उदाहरणक लेल कन्या-भ्रूण हत्या। ई कोनो नियम, कैदासं नहि बदलि सकैत अछि। कारण हमर संस्कृतिमे एक दिस पुरुषक महात्म्य वर्णित अछि त' दोसर दिस स्त्रीक हीनता। पुत्रकेँ अग्निदाता मानल गेल, मोक्ष प्राप्तिक साधन मानल गेल, स्त्रीक प्रयोजन एतबे. 'पुत्र: प्रयोजनो भार्या'। ई अमोघ विचार सांस्कृतिक अछि। तेँ कविक ई कहब उचिते जे नियम कैदासँ कन्या भ्रूण हत्या नहि रुकि सकैछ। सांस्कृतिक लड़ाई सांस्कृतिक हथियारेसँ लड़ल जा सकैछ। तेँ हमरा सभकेँ सांस्कृतिक हस्तक्षेप करय पड़त। आ स्त्रीगनकेँ भौतिक अधिकारक संग पारंपरिक आ सांस्कृतिक अधिकार देब' पड़त। विचारधाराक अस्थिरता अंतर्विरोधक जननी होइछ। कविक नारी शीर्षक कविता स्त्री सषक्तीकरणक परिचायक अछि। कविकेँ एहि बातक अपार प्रसन्नता छैक जे 'पति चान पर जा रहल अछि त' पत्नी मंगलग्रह पर, कविकेँ एहू बातक प्रसन्नता छैक जे 'दूनू तोड़ब आकाश तारा'। ई कविता आधुनिक भाव.बोध आ आधुनिक चित्तसँ लैस कविता अछि। वर्तमाने नहि भविष्यक स्त्रीक संभावनाक आकाश यैह अछि। मुदा एतेक आधुनिक कविकेँ कनियाँक भनसिया बनब अनसुहाँत बुझि पड़ैत छन्हि आ पत्नी द्वारा 'ढहलेल' बुझब अपमानजनक (जमाना) । यद्यपि बूढ़ कवितामे बूढ़ पिताक ई उक्ति थीक, मुदा कविक सम्पूर्ण आस्था चूँकि अपन बूढ़ पिताक प्रति अछि, तेँ एहि कथनकेँ कविक समर्थन बुझल जा सकैछ।

भीड़ कवितामे कवि भीड़क मानिसिकताक बहुत सुन्दर पड़ताल कयलनि अछि। कवि यत्र-तत्र भीड़ देखैत छथि। सरिपहूँ किछु वर्षसँ भीड़ बनाओल गेल अछि। भीड़क मानसिकता गढ़ल गेल अछि। कोनो बात ल'क' भीड़ कखन ककरा मारि दैत, पीट देत कहब मुश्किल। मॉब लिचिंग आजुक भयानक समस्या बनि गेल अछि। सभसँ दुखक बात ई जे सत्ता एहि भीड़क निर्माणमे सहयोग क' रहल अछि। पहिने सत्तापक्षक लगुआ-भगुआ ककरो या सत्ता विरोधीकेँ राष्ट्रद्रोही घोषित क' दैत अछि आ तकरा बाद भीड़ ओकरा कखनो मारि दैत। राष्ट्रद्रोह ककरा कही, राष्ट्रक की अवधारणा, राष्ट्र और देशमे की अन्तर, कि सकरकारक आलोचना राष्ट्रद्रोहक सीमामे अबैछ' एहि सभसँ भीड़ के कोनो मतलब नहि। भीड़ आ विचारकेँ आपसमे छत्तीसक आंकड़ा होइछ। आजुक सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितिमे कविक भीड़

कविता कयक टा प्रश्न उठबैत अछि आ तैं ई कविता आवश्यक भ' जाइछ।

कवि श्रृंखलका कवितामे डॉ झा कवि लोकनिसँ आग्रह करैत छथि जे ओ भावुकता छोड़ि यथार्थक जमीन पर उतरथि। भावनाक अतिरेक कविताकेँ कमजोर करैत अछि। ओ कविताकेँ अश्रुपूरित क' सकैत अछि, आह-आह, वाह-वाह करबा सकैत अछि मुदा कोनो तरहक परिवर्तनक माध्यम नहि बनि सकैत अछि। तैं हेतु कविक आग्रह उचित। डॉ झा कविसँ किछु बेसिये उमेद लगौने छथि। कविता वा साहित्य परिवर्तनक सुगबुगाहटि आनि सकैत अछि, पृष्ठभूमि तैयार करबामे थोड़े सहायक भ' सकैत अछि। मुदा साहित्य आमूल-चूल परिवर्तन नहि आनि सकैत अछि। गरीबीक पक्षमे लिखल केहनो नीक कविता गरीबी दूर नहि क' सकैत अछि। गगनचुंबी अट्टालिका के नहि त' कविता ढाहि सकैत अछि आ ने ककरो अकस्मात हृदय परिवर्तन क' सकैत अछि। ओहि लेल कवियो के राजनीतिक होअ पड़तैक। कविकेँ आम जनमे राजनीतिक चेतना भर' पड़तैक। राजनीतिकेँ जा धरि कवि वा भद्रजन अछोप बेझैत रहताह, लुच्चा लंफगाक धंधा मात्र बुझैत रहताहए ताबत धरि ओकरे हाथमे समाजक बागडोर रहतैक। आ ऐहना स्थितिमे कवि हूँकारे भरि सकैत अछि। डॉ झाक ई बात एकदम सही अछि जे अधिकांश रचनाकार सत्ताधारीक जुगाली क' रहलाह अछि। ठीक आहिना जेना आइ-काल्हिक मीडिया सत्ताधारीक कोरामे बइस, हुनक गुणगान करैत पगुरा रहल अछि। हम आ हमर संतान' कवितामे कवि दू पीढीक अंतर बतबैत सभटा गुण अपना पीढीक हिस्सामे लैत अपन पीढीक महात्म्य प्रदर्शन कयलनि अछि आ दोसर पीढीकेँ अवगुणक खान बतौलनि। नव पीढीक प्रति कविक एतेक नैराश्य भाव चिंतनीय। सभ पीढीमे गुण-अवगुण होइछ। हम सभ अपन-अपन मान्यताक अनुसारें गुण-अवगुणक निर्धारण करैत छी। मान्यता समयक अनुसारें बदलैत रहैत छैक। मानवीय अवगुण इर्ष्या, क्रोध, कुकर्म, स्वार्थ, लोभ, घमंड आदिसँ कोनो पीढी बचल नहि रहल अछि। आजुक विद्यार्थी, किसान, फौजी मजदूर वैज्ञानिक की कोनो कम मेहनत क' रहल अछि? यूपीएससी, इंजीनियरिंग, बैंक आदि परीक्षाक गुणवत्ता सैकडों गुना बेसी भ' गेल छैक तैय्यो हेंजक हेंज विद्यार्थी आहिमे पास करितै अछि। आजुक पीढीक उत्साहवर्धन आवश्यक। यात्री जी लिखलनि 'न'वतुरिये आबो आँगा'। नब पीढीक प्रति अथाह अनुराग आ विश्वास छलनि यात्रिजीकेँ। कवि इन्द्रनाथजी देशक राजनीतिक स्वतंत्रतासँ प्रसन्न नहि छथि। कविक ई चिंता उचित जे

'पेटे लेल राति दिन एक करै छै, तैयो ने पेट भरै छै,
ओ की जानै छै देश स्वतंत्र भेलै।'

सामाजिक आ आर्थिक स्वतंत्रताक अभावमे राजनीतिक स्वतंत्रता निष्प्रभावी भ' जाइछ। एहन स्वतंत्रतामे कविक अनुसारें, 'बलगर शासक बनलै अव्वल के शोषण केलकै।

मिथिलाक गाम श्रृंखलाक कवितामे कवि हृदयक पाट खोलि मिथिला आ मिथिलाक संस्कृतिक विलक्षणताक अभिव्यक्ति कयलनि अछि। मिथिलाक सुरम्य वातावरण आओर मिथिलाक जीवनसँ मह-मह करैत कविता मिथिला रागसँ भरल अछि। कोनो नीक कविकेँ अपन गाम, प्रांत आ देशसँ प्रेम सहजहिं। तात्पर्य ई जे मिथिलाक गाम कविक मिथिला प्रेमक विस्फोट अछि। चल गुजरनी मिथिलाक गाम संग्रहक कविता कविक अथाह सदइच्छाक परिणाम अछि। कविताक पोर-पोरमे सदइच्छा और मंगलकामनाक आकांक्षा भरल अछि। मिथिले नहि संपूर्ण देशकेँ स्वर्ग बनयबाक अभिलांषासँ ओतप्रोत अछि ई काव्य-संग्रह। कवि इन्द्रकान्त झाजीक प्रयोजन पर संदेह करब मूर्खता। मुदा कविक भोलापन कविताकेँ उपदेशवादी बना दैत अछि। कविता ने त' उपदेश होइछ आ ने नीति-वचन, कविता नहि त' क्रांतिक मशाल होइछ आ ने कविक फरमान। कविता होइत अछि यथार्थक चित्रण। हूबहू यथार्थो नहि। यथार्थमे कल्पनाशीलताक सार्थक हस्तक्षेप। भावनाक अतिरेकसँ दूर संवेदनशीलताक अतल गहराईसँ कवि यथार्थक चित्र गढैत अछि। सामान्य विषय वा सामान्य कथन कविताक विषय नहि बनि पबैत अछि। आ यदि ओ बनैत अछि त विशेष कथनभंगीसँ। कविता विशेष तरहक कथनभंगी होइछ। कविता सहज उक्ति नहि होइछ। कविता सरलीकृत सेहो होइछ मुदा कवि ओहि सरलीकरणकेँ अपन कहन-शैलीसँ ओकरा नब रूप द' दैछ। चल गुजरनी संग्रहक बहुत रास कवितामे ई गुण सभ भरल अछि, संगहि किछु कविताकेँ कवि उपदेश होयबासँ नहि बचा सकलाह। एहि थोड़ बहुत सीमाक अतिरिक्त कविता संभावनाक नब द्वार रचैत अछि, कविताक पठनीयता बेजाड़ अछि। कतेको कविताकेँ सहजतासँ गायल जा सकैत अछि। एकटा नीक आ मधुर-सरस कविता संग्रह हेतु कवि डॉ इन्द्रकान्त झाकेँ बहुत-बहुत बधाई।

पहिल छाप

रमण यादव धीरूक दूटा गजल

एक

सुनसान रातिमे दरद भरल शोर कनैत छै
बिच बाटपर अबला आँखिक नोर कनैत छै

अपसोच छै अस्तित्व नहि बचा' सकलापर
पछताबामे डूबल चान चकोर कनैत छै

नोचि फेकलकै अपना देहक एकहकटा रोइयाँ
टूटि रहल छै साँस पोरेपोर कनैत छै

कारी सियाह पहाड़ सन ई राति असहाय
नारीक विडम्बना देखि चहुओर कनैत छै

उजाड़ि देलकै जकरा ई संसार जबरदस्ती
माइ केर ओ कोखि नित भोर कनैत छै

दू

दरद लिखैत छी पियार लिखैत छी
अत्माक मिलनकेँ अटुट तार लिखैछी

आइ-काल्हि किछु खास नहि लिखैत छी हम
धरि जिनगीक उदासी भरमार लिखैत छी

रोज फ्रन्ट पेजपर छापैत छी फोटोक संग
खबर पुरने सही मुदा धारदार लिखैत छी

शहरमे सीना तानि चलैत छै खूनी
जी जाँतिए क' मुदा खबरदार लिखैत छी

टुटैत छै ताग जँ हृदयकेँ दरद नहि पुछू
पुर्णिमाक रातिमे हम अन्हार लिखैत छी

सम्पर्क : सिरहा (नेपाल)

डॉ. अरविन्द कुमार सिंह झा
मधुबनी, मिथिला (बिहार)
सम्पर्क : +91 9431694531

मैथिली साहित्यक प्रसिद्ध लेखक डॉ. अरविन्द कुमार सिंह झाक साहित्यश्री (समीक्षात्मक निबन्ध-संग्रह 1992 ई.), समालोचनाश्री (समीक्षात्मक निबन्ध-संग्रह-2020 ई.), द हेडमास्टर (अम्बिकानाथ मिश्र जन्मशती स्मृति ग्रंथ) संयुक्त सम्पादन-2022 ई. प्रकाशित छनि। मिथिला मिहिर, वैदेही, रचना, ज्ञानलोक, कोसी कुसुम, हालचाल, बसात, पुष्पांजलि, चिनगी, आँजुर, पल्लव, प्रवासक भेंट, मिथिला लोक संवाद, मिथिलांगन, आकांक्षा, समय साल, मिथिला सुरभि, पूर्वोत्तर मैथिल, घर-बाहर, मिथिला दर्शन, लहरि, मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश आदि पत्र-पत्रिका तथा मैथिली, कोसा, अमृताक्षर शोधपत्रिका, विभिन्न स्मारिका, अभिनन्दन ओ संस्मरणात्मक ग्रन्थसभमे सेहो शताधिक समीक्षात्मक आलेख प्रकाशित छनि। सम्प्रति स्नातकोत्तर सहित मैथिली विभाग, राम कृष्ण महाविद्यालय, मधुबनीक विभागाध्यक्ष छथि।

चिरस्मरणीय सुधीरजी

तारीख रहय 5 दिसम्बर, 2015 आ समय सन्ध्या छओ बजे। एकाएक एक अपरिचित व्यक्तिक फोन आएल- हम छी सुधीर कुमार झा। बी.पी. एस. सी. अपनालोकनिक रिजल्ट आइ निकालि देलक, हम पूरा बिहारमे फर्स्ट कएलहुँ आ अहाँ 'सेकेण्ड'- एखनहुँ ई शब्द रोमांचित कए रहल अछि। जीवनक अविस्मरणीय क्षण छल, ताहूमे एक पूर्णत: अनचिन्हार व्यक्तिक संवाद। 'कन्फर्म' करबाक लेल उत्सुकता बढ़ल, दसे मिनटक बाद मोबाइल पर रिजल्ट देखि पूर्णत: आश्वस्त भेलहुँ। सुधीरजीसँ हमरा कोनहुँ परिचय नहि, कालक्रमे दूनू गोटा अपन-अपन विश्वविद्यालयमे योगदान कयलहुँ। गप्प हरदम होइत रहय- साहित्यसँ सम्बद्ध, लेखनसँ सम्बद्ध, शैक्षणिक विकाससँ सम्बद्ध, 'अमृताक्षर' शोधपत्रिकासँ सम्बद्ध, मुदा कहियो भेँट नहि। एक-एक घण्टा फोनपर गप्प, लगैत छल जे कतेक बेसी परिचित छी, परन्तु साक्षात्कार नहि।

13 जनवरी, 2019कँ तिलासंक्रान्तिक पूर्वसन्ध्यापर सुधीरजी भेँट करबाक लेल हमर मधुबनी आवासपर आएल रहथि, 'मन्तव्य'क संग। हिनकासँ पहिल साक्षात्कार रहय, जे अविस्मरणीय छल। 'मन्तव्य' पोथी सनेस देलनि आ एहि प्रसंग दू-तीन घण्टा धरि गप्प चलैत रहल। एही क्रममे हिनकासँ गप्प भेल जे प्रो. मंत्रनाथ झा 'हंसराज'क अधिकांश पोथी आब नहि भेटैए। साहित्यक विकासमे विविध विधापर केन्द्रित हिनक पोथीसभ अत्यधिक महत्त्वपूर्ण अछि, जकर संकलन यदि एक ठाम भ' जाएत तँ बड़ उपकार होएत। आइए अजीत भाइ (अजित आजाद)सँ एहि प्रसंग गप्प भेल। एहि विचारसँ हमरो अत्यधिक प्रसन्नता भेल, मुदा कोरोनाक प्रभाव एकर प्रकाशनमे बाधक बनल रहल। आइ यदि सुधीरजी एकरा पुस्तकाकार देखितथि, तँ माँ मैथिलीक सेवामे समर्पित हिनक एहि संकलनसँ सुधी अध्येता अत्यधिक लाभान्वित होइतथि। ओना सुनबामे आएल अछि जे सुधीरजीक एहि सपनाकेँ साकार करबाक लेल मैथिलीक सुप्रतिष्ठित साहित्यकार ओ प्रकाशक प्रियवर अजित आजादजी तत्पर छथि।

सुधीरजीक जन्म कनकपुर (उजान, लोहनारोड, दरभंगा)मे 1 जनवरी, 1970कँ भेलनि। श्री गौरीनाथ झाक बालक सुधीर वाल्यावस्थहिसँ मेधावी छात्र रहथि। 1986 ई.मे ई माध्यमिक परीक्षा प्रथम श्रेणीसँ उत्तीर्ण भेलाह। पटना विश्वविद्यालय पटनासँ 1992 ई.मे स्नातक आ भूपेन्द्र नारायण मण्डल विश्वविद्यालय, मधेपुरासँ 1998 ई.मे स्नातकोत्तर परीक्षामे ई सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कएलनि। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित कनीय शोधवृत्ति परीक्षामे 1998 ई.मे सफलता पाबि ई जुलाइ, 1999सँ जून, 2004 धरि शोधकार्य कयल तथा प्रो. श्री इन्द्रकान्त झाक निर्देशनमे 'स्वतंत्रता पूर्व मैथिली कथा: एक विवेचन' विषयपर पीएच. डी.क उपाधि प्राप्त कयलनि। हिनका चेतना समिति, पटना द्वारा 2006 ई.मे माहेश्वरी सिंह 'महेश' ग्रंथ पुरस्कार आ विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा 2020 ई.मे डॉ. इन्द्रकान्त झा सम्मानसँ विभूषित कयल गेलनि। 30 जून, 2016कँ ई पटना विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर मैथिली विभागमे सहायक प्राध्यापकक पद पर योगदान कयलनि। सेवाक अल्पावधिएमे मैथिली विभागकँ चमकयबा-सजयबामे ई मनोयोगपूर्वक लागि गेलाह। विभागीय पुस्तकालय जीर्ण-शीर्ण अवस्थामे छल, जकर जीर्णोद्धार कय पोथीसभकँ सरियबैत बहुतो लेखक आ प्रकाशकसँ पोथी उपहारस्वरूप पाबि छात्र ओ शोधार्थीक उपकार कयल। माननीय उपराष्ट्रपति एम. वेंकैया नाइडू पटना विश्वविद्यालयक सेण्ट्रल लाइब्रेरीक स्थापना शताब्दी वर्षक अवसर पर 4 अगस्त, 2019कँ सुधीरजीसँ अत्यधिक प्रभावित भेल रहथि। पाण्डुलिपि विभागक मिथिलाक्षर शाखामे हिनकासँ गहन विमर्श भेल रहनि। 'नैक'क तैयारीमे हिनक सहभागिता प्रशंसनीय छल। 'अमृताक्षर' नामक शोधपत्रिका 2019 ई.मे मैथिली विकास कोश, पटना विश्वविद्यालयसँ प्रकाशित भेल, जकर कार्यकारी सम्पादक सुधीरजी रहथि आ एकर प्रकाशनमे हिनक महत्त्वपूर्ण भूमिका छल। एकर प्रवेशांकमे डॉ. इन्द्रकान्त झा, डॉ. सत्यनारायण मेहता, डॉ. इन्दिरा झा, डॉ.अरुणा चौधरी, डॉ. हीरा मण्डल, डॉ. विजयेन्द्र झा, डॉ. अजीत मिश्र, डॉ. अरूण कुमार ठाकुर आदि बीस गोट यशस्वी साहित्यकारक शोध आलेख अछि। गुणवत्तापूर्ण आ बहुआयामी रहबाक कारणे 'अमृताक्षर' अत्यधिक लोकप्रिय भेल। 2 मइ, 2021 हमरालोकनिक लेल अत्यधिक कष्टकर रहल, जहिया कोरोनाक युद्धमे सुधीरजी पराजित भ' गेलाह। एक सुयोग्य, कर्मठ ओ यशस्वी प्राध्यापक 'धूमकेतु'

जकाँ पटना विश्वविद्यालयकेँ पाँचे सालमे अपन उच्चकोटिक प्रतिभा प्रदर्शित कय अमर बनि गेल।

सुधीर (सुधीर कुमार झा) जीक साहित्यिक प्रतिभा तीन रूपमे भेटैत अछि- समीक्षात्मक, अनुवादक आ सम्पादक रूप मे। पाँच गोट समीक्षात्मक पोथी हिनक प्रकाशित अछि- 'परिवादिनी' (2006), 'पर्य्यवेक्षण' (2006), 'परामर्श' (2009), 'मन्तव्य' (2018), तथा 'जितेन्द्र नारायण झा' (2019)। अनूदित पोथीमे 'स्मरण : एक प्रेमक' (2013) आओर सम्पादित पोथीमे 'कथा-प्रदक्षिणा' (2009) महत्त्वपूर्ण छनि। 'हंसराज समग्र'क अतिरिक्त साहित्य अकादेमीसँ सेहो हिनक एक अनूदित पोथी मुद्रणाधीन अछि।

'परिवादिनी' विविध विषयक समीक्षात्मक निबन्धक संकलन थिक,जे सुधीरजीक पहिल प्रकाशित पोथी छनि। डॉ. आनन्द मिश्रक 'आशीर्वचन', डॉ. लेखनाथ मिश्रक 'उद्‌गार'आ डॉ. इन्द्रकान्त झाक 'शुभाशंसा' पोथीक वैशिष्ट्यकेँ उद्‌घाटित करैत अछि। वीणाक सातो तार परिवादिनी थिक, जाहिसँ विभिन्न स्वर निकलैत छैक। एहि पोथीमे सेहो सात गोट विषय (कथा, कविता, नाटक, उपन्यास, महाकाव्य, व्यक्तित्व आ पुस्तक समीक्षा)सँ सम्बद्ध एकतीस गोट निबन्ध संकलित भेल। डॉ. आनन्द मिश्र एहि पोथीक प्रसंग लिखने छथि- 'एहि संग्रह मध्य छात्रोपयोगी,अनुसन्धानात्मक एवं परिचयात्मक आलेख संगृहीत अछि, जाहिसँ ग्रंथक उपयोगिता स्वत: स्थापित भए जाइत छैक।...कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर छत्तीस प्रकारक वीणाक उल्लेख कयने छथि। 'परिवादिनी'क सभ तार विभिन्न स्वरमे बजैत छैक। एहू संग्रहमे सभ निबन्धक विभिन्न स्वर छैक।'

पोथीमे महाकवि विद्यापतिक विभिन्न पक्षकेँ व्यक्त करैत चारि गोट निबन्ध संकलित अछि। गोविन्द दासक काव्य-सौष्ठव आ कवीश्वर चन्दा झाकेँ युगप्रवर्त्तक मानबाक संग हिनक मिथिला प्रेम, कीर्तनियाँ नाटकक विकास, स्वतंत्रतापूर्व मैथिली कथाक विकास, एकर भाषा-शैली आदि पर विस्तारपूर्वक विचार कयल। 'वर्णरत्नाकर', 'मुद्रा राक्षस', 'कृष्णजन्म', 'सुन्दर संयोग', 'कनकी', 'चित्रा', 'साहित्यधारा', 'चितकाबर', 'तात्पर्य', 'नाट्यान्वाचय' आदि विशिष्ट पोथी सभक मूल्यांकन सुचारु रूपेँ भेल। मनमोहन झाक दू गोट चर्चित कथा 'झगड़ा' आ 'बोटिब्स'क समीक्षा पोथीक आकर्षण थिक। साहित्यानुरागी प्रो. धर्मानन्द सिंहक लोकप्रियता ओ व्यक्तित्व-कृतित्वक विश्लेषण अत्यधिक सारगर्भित अछि। वस्तुत: 'परिवादिनी'क माध्यमे लेखक मैथिलीक आदिकाल, मध्यकाल ओ आधुनिककालक विशिष्ट विषयपर अपन गवेषणात्मक विचार प्रस्तुत करबामे अत्यधिक सफल भेल छथि। सुधीरजीक सूक्ष्म विवेचना-शक्तिक परिचय एहिसँ भेटैत अछि।

मैथिली साहित्यक सुप्रतिष्ठित साहित्यकार प्रो. इन्द्रकान्त झाक उक्ति पूर्णत: समीचीन अछि- 'समालोचककेँ चिन्तनशील, अध्ययनशील, मनस्वी, बहुज्ञ आ प्रतिभाशाली होयबाक चाही। एहि हेतु कहल गेल अछि जे साहित्यक गूढ़ तत्त्वक व्याख्या पथ निर्देश करैत साहित्य-सृजनकेँ उचित दिशा प्रदान करब आ साहित्य-संसारक उच्छृंखलताकेँ रोकि ओकरा समुचित बाट पर आनब असली आलोचकक कर्त्तव्य होइत अछि। तेँ सत्यनिष्ठ समालोचक व्यक्तिगत राग-द्वेषसँ ऊपर उठि नीर-क्षीर विवेकी होइत छथि।... सुधीरजीमे आलोचना आ समीक्षा लिखबाक जे बीज प्रस्फुटित भेल अछि से आगू जाय हिनका निपुण आलोचक आ समीक्षकक श्रेणीमे आनत। पोथीक भाषा प्रवहमान आ उपस्थापनक शैली सराहनीय अछि।' (परिवादिनी/शुभाशंसा)

'पर्य्यवेक्षण' नओ विषयपर केन्द्रित समीक्षात्मक पोथी थिक, जे विशेष रूपेँ छात्रोपयोगी अछि। मैथिलीक आदिकालीन साहित्यक विश्लेषणक संग मैथिली कथा साहित्यक प्रारम्भिक स्वरूपक स्थिति आ तत्कालीन सामाजिक समस्याक दिग्दर्शन तीन गोट आलेखमे भेल अछि। काव्यक हेतु आ प्रयोजनपर संक्षिप्त विचार भेल। 'चाणक्य' एवं 'सूर्यास्त'क पुस्तक-समीक्षा सेहो प्रशंसनीय अछि।

'परामर्श'मे सत्रह गोट आलेख संकलित अछि। निबन्ध, समालोचना, पत्र-पत्रिका, कविता आ महाकाव्यक विकासपर विस्तारपूर्वक विचार भेल अछि। यात्री, सुमन, आचार्य रामानाथ झा तथा उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'क व्यक्तित्व-कृतित्वक मूल्यांकन सेहो कयलनि। अंकीया नाट, तिरहुता लिपिक उद्‌भव ओ विकास, मैथिलीक विभिन्न बोली तथा भारोपीय भाषा-परिवारमे मैथिलीक स्थानपर विस्तृत मन्तब्य भेटैत अछि। सुन्दर काण्ड, मधुरमणि आ 'पाछाँसँ अबैत इजोत' क परिचय सेहो पाठकलेल विशेष उपयोगी अछि। प्रत्येक निबन्धमे लेखकक नव दृष्टिकोण भेटैत अछि, जे सुधी अध्येता लेल अत्यधिक उपयोगी अछि। निश्चित रूपेँ 'परामर्श' मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धिमे महत्त्वपूर्ण स्थान रखैत अछि।

'मन्तव्य' नवारम्भ प्रकाशनक महत्त्वपूर्ण पोथी थिक, जाहिमे विविध विषयपर केन्द्रित उनतीस गोट समीक्षात्मक आलेख संकलित अछि। एहिमे प्रकाशित आलेख सभमेसँ बीस गोट आलेख 'परिवादिनी'मे तथा पाँच टा 'परामर्श'मे आबि चुकल छल, मात्र चारि गोट नव रचना एहिमे सन्निहित अछि। मुदा समग्र आलेखमे विषयक उपस्थापनकेँ आ नव तथ्यसभकेँ अद्यतन करबाक प्रयास भेल अछि।

'वर्णरत्नाकर'क विवेचनसँ लय विद्यापति, गोविन्ददास, मनबोध, चन्दा झा, यात्री, मनमोहन झा, रमानाथ झा, जीवकान्त आदिक साहित्य-सौष्ठव एहि पोथीमे उद्‌घाटित भेल। प्रो. सत्य नारायण मेहता एहि पोथीमे ठीके लिखलनि- 'साहित्यकार ब्रह्मा सदृश रचना रूपी संसारक निर्माण करैत छथि। आयुष्मान् डॉ. सुधीर कुमार झा ओहने सुधी-विज्ञ लोकनिमे एक छथि। ...एहिमे नव-पुरान रचनाकारक कृतिक आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक वर्णनक संगहि पत्र-पत्रिकादि पर गम्भीर अध्ययन प्रस्तुत कएल गेल अछि।'' (मन्तव्य/पृ.-7)

'मन्तव्य' सुधीरजीक लेखनीक विशिष्ट अवदान थिक। 'परिवादिनी' आ 'पर्य्यवेक्षण'मे अपन दृष्टिबोधसँ प्रभावित तँ कयलनि, मुदा एहिमे हिनक लेखन-दृष्टिक विस्तार भेटैछ। अपन मन्तव्यकेँ प्रमाणित करैत एक मान्य समीक्षकक रूपमे लेखक समादृत भेलाह।

'जितेन्द्र नारायण झा' सुधीर जीक अन्तिम प्रकाशित पोथी थिक। एहि बिनिबन्धक प्रकाशन सेहो नवारम्भसँ भेल, जे जितेन्द्र नारायण झाक व्यक्तित्व ओ कृतित्वकेँ नीक जकाँ उद्‌घाटित करैछ। जितेन्द्र नारायण झा (22.04.1926-25.04.2021) मैथिली आन्दोलनक प्रगतिशील कार्यकर्त्ता, यशस्वी अनुवादक आ ख्यातिप्राप्त साहित्यकार रहथि, जे 2020 ई.क साहित्य अकादेमीक अनुवाद पुरस्कारसँ (मरणोपरान्त) 'चौपाड़ि' पोथीपर सम्मानित भेलाह। वस्तुत: हिनका सन साहित्यकारकेँ सम्मानित कय अकादेमी स्वयं गौरवान्वित भेल।

एहि पोथीसँ प्रमाणित होइछ जे जितेन्द्र नारायण झा एक एहन साहित्यकार रहथि, जे 'स्वान्त: सुखाय' रचना करैत रहलाह। हिनक 'विस्मृत स्मृति', 'चान समीपे', 'कन्या कुमारीसँ', 'घृणाक फूल', 'मायाक माया' तथा 'चौपाड़ि' अनुवाद साहित्यक श्रीवृद्धिमे महत्त्वपूर्ण योगदान देलक। कथा-लेखनक दृष्टिएँ 'सरप्राइज' आ 'चित्रा-विचित्रा' हिनक प्रतिभाक द्योतक थिक। एहि पोथी सभक मूल्यांकन एहिमे विस्तारपूर्वक कयलनि। मैथिली-बंगलापर समान अधिकार राखि ई हिन्दी, मलयालम, कन्नड़, उड़ियाक संग अनेको भाषाक कथा-कविताकेँ मैथिलीमे आ मैथिलीक कथा-कविताकेँ आन भाषामे अनुवाद कय मैथिली साहित्यक प्रचार-प्रसार कयलनि। हिनका द्वारा सम्पादित प्रो. आनन्द मिश्रक अभिनन्दन ग्रंथ 'आनन्द मन्दाकिनी' साहित्यिकीक विशिष्ट प्रकाशन थिक। 'परिचय', 'वसन्त', 'श्रमदानी', 'नारी', 'स्वागत' आदि हिनक प्रमुख कविता थिक, जकर उल्लेख एहि विनिबन्धमे भेल आ एहिमेसँ अधिकांश कविता अप्रकाशित छिड़िआयल छल, जकर संकलन एहिमे आबि गेलापर सुधी

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

॥भावपूर्णश्रद्धांजलि॥

01 जनवरी 1966 – 09 जून 2022

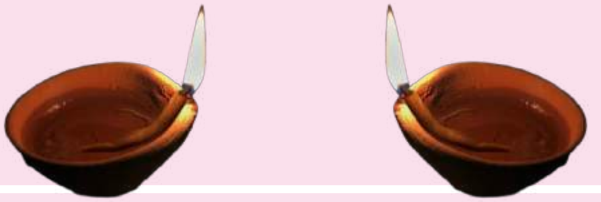

अनुप्रासक उप सम्पादक शशि कुमार शशि जीक
माता सरल स्वभावी, मिलनसार आ धार्मिक
प्रवृतिक परम आदरणीया...

उर्मिला देवी

कें देवलोक गमन पर अनुप्रास परिवारक
श्रद्धांजलि।

अध्येता लाभान्वित छथि। पोथीमे प्रो. किशोरनाथ झा, नीरजा रेणु, डॉ. केदारनाथ झा, भवनाथ झा, शैलेन्द्र आनन्द, अरविन्द कुमार सिंह झा, डॉ. अजीत मिश्र, अमल कुमार झा आदिक विचार जितेन्द्र नारायण झाक साहित्यिक योगदानक प्रसंग महत्त्वपूर्ण अछि। वस्तुत: मातृभाषाक नि:स्वार्थ सेवक जितेन्द्र नारायण झाक बहुआयामी प्रतिभासँ पाठककेँ अवगत कराय सुधीरजी बड़ उपकार कयलनि।

सिन्धी उपन्यास 'याद हिक प्यार जी' साहित्य आकदेमीसँ पुरस्कृत अछि, जकर मैथिली अनुवाद 'स्मरण : एक प्रेमक' सुधीरजी कयने छथि। एक भावुक ओ स्वाभिमानी युवती नन्दिनीक जीवनमे चारि भिन्न-भिन्न पुरुषक आगमन समय-समयपर होइत छनि आ सभ पुरुषवादी अहंकार रहबाक कारणे दैहिक सुख भोगैत क्रमिक चल जाइछ। नन्दिनीक माय सोचैत छथि जे कोनहुँ पुरुष ई सहन नहि करत जे ओकर स्त्रीक मधुर सम्बन्ध दोसर संग रहय। नन्दिनी मानैत छथि जे स्वाभिमान मात्र पुरुषेकेँ नहि, अपितु नारीकेँ सेहो होइत छैक। पछाति अनिल नामक युवक नन्दिनीक पूर्व स्थितिसँ अवगत रहितहुँ पत्नीक रूपमे ग्रहण करैत छथि। नन्दिनीक संग अनिलक सुखमय जीवन रहल, मुदा समस्त उपन्यास भावात्मकता ओ रहस्यमयतासँ युक्त अछि। अतीतक गप्प, प्रकृति आदिक सूक्ष्म चित्रण उपन्यासकेँ रोचक बनबैत अछि, पठनीय तँ अछिए।

'कथा-प्रदक्षिणा' उच्च कोटिक सत्रह गोट कथाक विशिष्ट संकलन थिक। 1919 ई.सँ 2008 ई. धरिक बीच लिखल गेल उत्कृष्ट किछु कथाक चयन करब सम्पादक डॉ. सुधीर कुमार झा लेल अवस्से कथाक प्रदक्षिणा थिक, मुदा कथाक विशाल अट्टालिकासँ संकलित कथा द्वारा आरम्भिक, मध्य आ आजुक कथामे भेल परिवर्तन नीक जकाँ उद्घाटित भेल अछि। पहिने मात्र सामाजिक आ वैवाहिक कुरीति धरि कथा केन्द्रित रहैत छल, आब एकर परिवेशमे व्यापक परिवर्तन भेल अछि। एहिमे संकलित कथा बीसम शताब्दीक दोसर, तेसर, चारिम, पाँचम, आठम आ नवम तथा एकैसम शताब्दीक पहिल दशकक कथा थिक। पं. वैद्यनाथ मिश्र 'विद्यासिन्धु'क 'धर्कट मर्कटक खटपट', कुमार गंगानन्द सिंहक 'मनुष्यक मोल', वल्लभ झाक 'भूत', जयनारायण मल्लिकक 'जीवन-पथ' आ बाबू लक्ष्मीपति सिंहक 'विषपान' मैथिलीक आद्य कथा थिक। मनमोहन झाक 'बोटिब्स', गोविन्द चौधरीक 'डकैतीक चारि अध्याय', डॉ. इन्द्रकान्त झाक 'मन्दाकिनी', विनोद अनन्तक 'अभागलि', अमरनाथक 'समानान्तर', शरदिन्दु कुमार चौधरीक 'सम्बन्ध', आशा मिश्रक 'ससरैत धरती', डॉ. नीता झाक 'आखर', विभूति आनन्दक 'संगीत', ज्योत्स्ना चन्द्रमक 'फगुआ', डॉ. इन्दिरा झाक 'फुद्दीलाल' तथा डॉ. सुधीर कुमार झाक 'हरियर साड़ी, कारी ब्लाउज आ सोनक चेन' विविध भावभूमिपर आधारित विलक्षण कथा थिक। यशस्वी प्राध्यापिका आ लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार डॉ. इन्दिरा झा एहि पोथीमे आशीर्वचनक रूपमे लिखने छथि- 'डॉ. सुधीर कुमार झा द्वारा सम्पादित 'कथा प्रदक्षिणा' कथा संग्रहक सूक्ष्म अध्ययन कयलाक उपरान्त एहन बुझना गेल जेना ई सम्पूर्ण मैथिली साहित्यक गहन अध्ययन क' परिश्रमपूर्वक उत्कृष्ट कोटिक कथाक चयन क' प्रस्तुत कथासंग्रह प्रस्तुत कयलनि अछि।... सुधीरजीक रूपमे मैथिली साहित्यकेँ एकटा कर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ सेवक प्राप्त भेलैक अछि। निरन्तर लिखैत-पढ़ैत रहब सुधीरक व्यसन छैन्हि।'

वास्तवमे सुधीर कुमार झा मैथिली-काननकेँ चमकयबा-सजयबामे पूर्ण सफल भेलाह। आजुक मैथिलीक प्राध्यापक हिनक कार्य-निपुणता ओ समर्पणक भावनासँ निश्चित रूपेँ प्रेरणा प्राप्त करैत आबि रहल छथि, ताहिमे कोनहुँ अत्युक्ति नहि। सुधीरजी 'एकेडमिक' लोक रहथि, अधिकांश प्राध्यापकमे ई गुण अत्यल्प भेटैछ। हमरा लोकनिकेँ हिनक अभाव खटकैत रहत, मुदा कीर्ति पुरुष कहियो मरैत नहि छथि। रचनाकारक रचने ओकर जीवन होइत छैक। 'सुधीर' जी सशरीर नहि रहलाह, मुदा हिनक यश:काय कालजयी भ' आलोकित रहत, चमकैत रहत।

आन्दोलन

परमेश्वर कापड़ि
जनकपुरधाम, मिथिला (नेपाल)
सम्पर्क : +977 9844022594

सबतरिक,गाम-घरकेँ गाइ-बैल, बकरी-पठरु, घोंड़ा-गदहासब विद्रोहक' जंगल ध' लेलक।

पशुसब बनरासबकेँ बजाक', सिखाबुद्धि क' क', गछा लेने रहए जे तोँसब जे जते जाति-जहमैत छे से सब मिलिक' हमरा सबकेँ छान-पगहा खोलि देबे, गरामेकेँ डोरीक मुनही छिटकाक' भगा देबे तँ ऐ साँति हम तोरासबकेँ दू पखबारे अपन-अपन दूध मङनीएमे देबौ। ओइ दूधकेँ तोँसब अपन औंटक' पिबिहे, कि दही पौड़क' खइहे, आकि खीर बना', खुवा फाड़िक' खाए-खाएक' कया-मनुआ जुरइहे।

से ऐ बातपर पौस-बनरा बीच सन्धि समझौता भ' गेल रहए आ रत्तेराति सबहक मालघरमे जा'-जा' छान पगहाकेँ मुनही छिटका देने रहए।

हलसल-फुलसल तिरपित नेहाल सबहेटा माल-जालसब लंक लागि धमक्का जंगल जुमल रहए। आ सबकेँ सब खा अधाक', मोटाक' कौल्ह, मोटगर दलगर भ' जाइ गेल।

आब तँ सब जंगल भ' गेल उम-टाम। आ' आब जंगली जानवरकेँ भ' गेल महा सकेत। पोसुआ आन्दोलनी जानवरसब जेमहर जाय, तेमहर हूँजकेँ हूँज। ओतुका सब घास-पातकेँ चरने-बझने, धङराचास उजार कएने जाय। जंगली हरीन, हाथी, घोंड़ा, घोंड़गद्दर, चितुवा, भाउल सबकेँ भ' गेल जानकेँ जबाल, महा आफत विपैत। ओमहर बाघ सिंहकेँ भ' गेल अनेरे दशो औंरी घीउमे। ले बलैया, पौ बारह। अनेरे आबि गेल, अहरा अग्गेमे।

आहि रे बा ! जा रे जा ! एमहर भिनसर अनगुतका पहरमे सब गामघरकेँ गिरहतसब अपन-अपन माल घरमे जे गेल तँ देखलक खुटुटापरकेँ सब मालजाल गाइब आ छान-पगहा ठामे धएल पड़ल। सबतैर भ' गेल हलचल हकरोस।

हँ, जाइत-जाइत सब रहए अपन-अपन गाममे ऐ आन्दोलनी बातकेँ जनतबी सूचना टाङि देने।

तब तँ सौंसे गामेकेँ की सबतरि सोहरा अंकाल भ' गेल जे मालजालसब हड़ताल क' क' जंगल ध' लेलक। आब जेकर गाइ-भैंसकेँ दूध रहै उठौना लागल से सब अलगे हाथ मलए। आ बैले नै तँ हर-गड़ी केना बहतै ? हर नै बहतै, तँ खेती-किसानी केना होत्तै ? खेती-किसकारी जे नै होत्तै तँ उपजा केना होत्तै ? उपजे नै होतै तँ लोक गुजर-बसर केना चलतै ?

तब तँ बात भ' गेलै बड़ भारी मोसकिल। समय गुदस भ' गेलै, महिना पाँच-सात। हड़ताली माङ एजेन्डा रहै, बड गढ़ुअन, लगारी।

बैल कहै— म' तोरी भला करोकेँ ! हमरा सबपर तेहन चाँखि धियाने नै रहल। हमरासबकेँ माइर-पिटक' जोतैए आ खुट्टापर बान्हिक' मुठ्ठी-खाँढ़ ओगार देत आ अपने भरि पेट्टा सपेटा मार' चलि जाएत। कहियो भरिपेट भरिमन खेनाइ-पिनाइ नै दैय'। जहिया नै सकैछी, मन ठेहिआएल पिड़ाएल रहैए, तहिया तँ आउर डेङा पिटपिटाक', नङरेठि अरपैना क'क' जोतैए। पहिने जिका आब घास भुसा ला' दूसंझी जाएत से, नइ ! बेटा-बेटी भ' गेलै इसकुलिया। कनिञा-बहुरियाकेँ कोन बात, बुढ़ियो-पुरैनिञा भ' गेलै, घरसुहबी सुखमलकी ! मेकप-सिङारस', टि.भी मोबाइलसँ' आब केकरो छुट्टी नै। जै दिनसँ' आब साँइ-पुत देश-विदेश कमाय ला' जाय लगलैए, खेती आ पौस-पालनपरसँ' धेए-धियान हटा देलकैए। तहूमे आब खेते-खेते टेक्टर थ्रेसर दौड़' गुरक' लगलैए। गड़ी-बैल आब के जोतैय ? पक्की रोडपर बस-कार आ मटरसाइकिलकेँ दौड़हा 'बिजी' भ' गेलैए।

भैंस-गाइ कहै— की कहै छी ! हमरासबकेँ दुख कोनो एहन ओहन ? पुछू नै ! हमरासँ' सबसँ' जे दूध दूह'सँ' माने मतलब राख तेहन खेनाइ आ सेवा-बानगीस' नइ। जा धरि लागू, ता धरि नेमो-नेमो करत, पन्हिआब' ला' चुचकारत। आ जहाँ बिसुकली कि लागत हनहन पटपट कर'। खनाइयो-चरनाइयोमे कमसुआल क' देत। सबसँ' सब तखैन बड़ पीड़ा मत्थन होइए, जखैन जे हमसब नठ्ठा-बहिला होइछी कि चिकबा पेरहा हाथे बेचि लेत, चमरी माउसकेँ दाममे।

बकरी कहै— ऊँ, हमरासबकेँ जे केउ पोसैए, से अपना ला'। खंसी-पाठी जनमाब' ला'। खंसी भेल तँ पोसि-पालिक' चढौना बलि चढ़ाओत, नै तँ मसुआइ ला' बाँटी लगाएत। पाठी भेल तँ बढ़ू विआउ। नै तँ बाँझ बहिला भेली तँ चिकबा हाथे बिकाउ, कटाउ। खँसी-बकरीकेँ कोनो जिनगी जान छै ! बढ़ू बिआउ, नै पोसाउ कटाउ।

हाथी घोड़ा कहैक— रे जहिया आमने-सामने जुद्ध लड़ाइ होइक यतायातकेँ साधन नै रहैक, तहिया हमरासबकेँ मान परतिस्ठा, चला-चलती रहए। लदनी, घोंड़बहल समयमे मिनहा मोजरा रहए। आब हमरासबकेँ के पुर्छए ? कतौ किछु नै।

आब तँ कसाइ आ सिकरियासब हूँजकेँ हूँज जंगल जाय आ लगले मनमाफिक सोरहिया सैकड़ामे बझा, मारिक' लाब' लागल आ खाय कम आ देश-विदेशे माउस सपलाइ करए बेसी।

ओमहर सिकरिया कसैयास' हरकल दबकल मालजालकेँ आब तँ जिनगी भ' गेल भाउर, परलय पहाड़। कतौ भगनौ पयरा नै भेटै। एमहर घर-गिरहस्तीकेँ महा दिक्कत। सबकेँ दूध-दहीकेँ ललाछुच्छी। हर-फारकेँ कमहियास', एतबे दिनमे लोककेँ कोन-कोन दुरगति, पिरोटैन नै भेलै। दुखदारुन ई भारी समसिया दुनू भर, दुतर्फी रहै।

आरे बाप रे बाप ! हौ दैब ! दैब रे दैब, मेधा-मिलान, सुहल-समझौता ला' जिल्ले जयवार उतरल ! मिडिया संचार जागल। गुगल फेसबूक, नेट-इन्टरनेटमे फरफैसी बढ़लै। भाइरस आ विक्टेरियाकेँ सक्रिय पहल रहै। दुनू भरसँ' समावेशी समानुपातिक बार्तांटोली गठन भेल। सन्धि-समझौता भेलै। तब जाक' पोसुवा पौस सबकेँ आन्दोलनी हड़ताल टुटलै। पहिने जै-जै खुट्टापरकेँ मालजाल रहै से सब तत्तँ-तत्तँ गेलै।

हँ, ऐमे असली गलती लोकेकेँ ठहरलै।

वन्दना झाक दूटा बाल कविता

गांधी नगर, गुजरात
vandanajha2998@gmail.com

स्वर केर ज्ञान

असँ अनार आसँ आम
हमर गाम मिथिला धाम,
इसँ इमली ईसँ ईनाम
सभसँ सुंदर हमर गाम,
उसँ उल्लू ऊसँ ऊन
माँ जल्दी हमर सुइटर बुन,
ऋसँ ऋषि होइत अछि
जप-तप यज्ञ करैत छथि
एसँ एड़ी ऐसँ ऐरावत
सुंदर बौआ छमछम नाचत,
ओसँ ओरहा औसँ औषधि
बेमारीमे सभ पिबय औषधि,
अंसँ अंगूर अ:सँ खाली सुन्ना
बजबय जाइ जो सभ झुनझुन्ना।

माँ

माँ हमर तूँ सभसँ दुलरी
सुंदर-सुंदर तूँ प्यारी दुलरी,
मुख पर मुस्की सदिखन शोभय
घरमे सभसँ पहिने जागय,
तोरा जागने भोर होइछ
सूरज बाबा सेहो तखने आबथि,
माँ हमर तूँ सभसँ दुलरी
हमरा खुआबय पुआ पूरी,
हमर सुंदर कपड़ा सीबय
अपन हाथसँ सुइटर बुनय,
चित्रकला सेहो हमरा सिखाबय
स्कूलक टास्क हमरा बुझाबय,
जखने करबै हम कोनो गलती
आँखि देखा क' हमरा डराबय।

खूब खेलैत छल नेना-भुटका

डॉ. अजय कुमार सिंह
मधुबनी, मिथिला (बिहार)
सम्पर्क : +91 87092 66742

खूब खेलैत छल नेना-भुटका,
बाल-बोधमे झुटका-झुटका।
गोरहाक आगिक स्वाद नहि पुछु,
पकबैत छलसभ मकैयक भूटका।

देखि परायत छल घर दिस,
जखने निकलथि काका छोटका।
जान नहि बाँचत काँपि रहल सभ,
पीठ पर गिरत लाठी मोटका।

आब तँ नहि ओ नेना छथि,
आ ने छथि ओ बाबा-पुरखा।
छथि माय-बाप कँ बिगरल बेटा,
खुब फँकैत छथि शिखर गुटखा।

नोर हमर इनहोर बनल अछि,
खोजि रहल संस्कारक धरुखा।
टुकुर-टुकुर सभ देखि रहल छथि,
मुँह बाँधि क' बाबा-पुरखा।

हमर बेटी बड्ड पियारी

शशि कुमार शशि
सिधपकला, लदानियाँ, मिथिला, मधुबनी
सम्पर्क : +91 8521907184

हमर बेटी बड्ड पियारी।
बाबाक अछि खूब दुलारी।

भोरे उठि नित फूल लोढ़ै छथि
माएक सेहो टहल करै छथि।

किनको सँ नहि करै छथि झगड़ा
माए लग मुदा, बर-बर नखरा।

बाबाक केखनो धरैछ पछोर
टॉफी लेल ओ बहबैत नोर।

कहैछ हमरा— पढ़बै पापा
पढ़ि-लिखि क' नाम करबै।

बाबाक मुंह पर मुस्कि हेतै
देशक लेल से काम करबै।

हमर बेटी बड्ड पियारी।
बाबाक अछि खूब दुलारी।

अनुप्रास प्रकाशन समूह

प्रकाशित महत्वपूर्ण पोथीसभ

इन्द्र परिसर, लहेरियागंज, मधुबनी (मिथिला) बिहार- 847211

www.anuprasprakashan.com, info@anuprasprakashan.com

+91 9430583847, 8862977228

अनुप्रास

काव्यांश बुक्स क्रिएशन

पोथी कीनए एवं प्रकाशित करएबाक लेल सन्देश पठाउ...

anuprasprakashan@gmail.com/info@anuprasprakashan.com

+91 9430583847

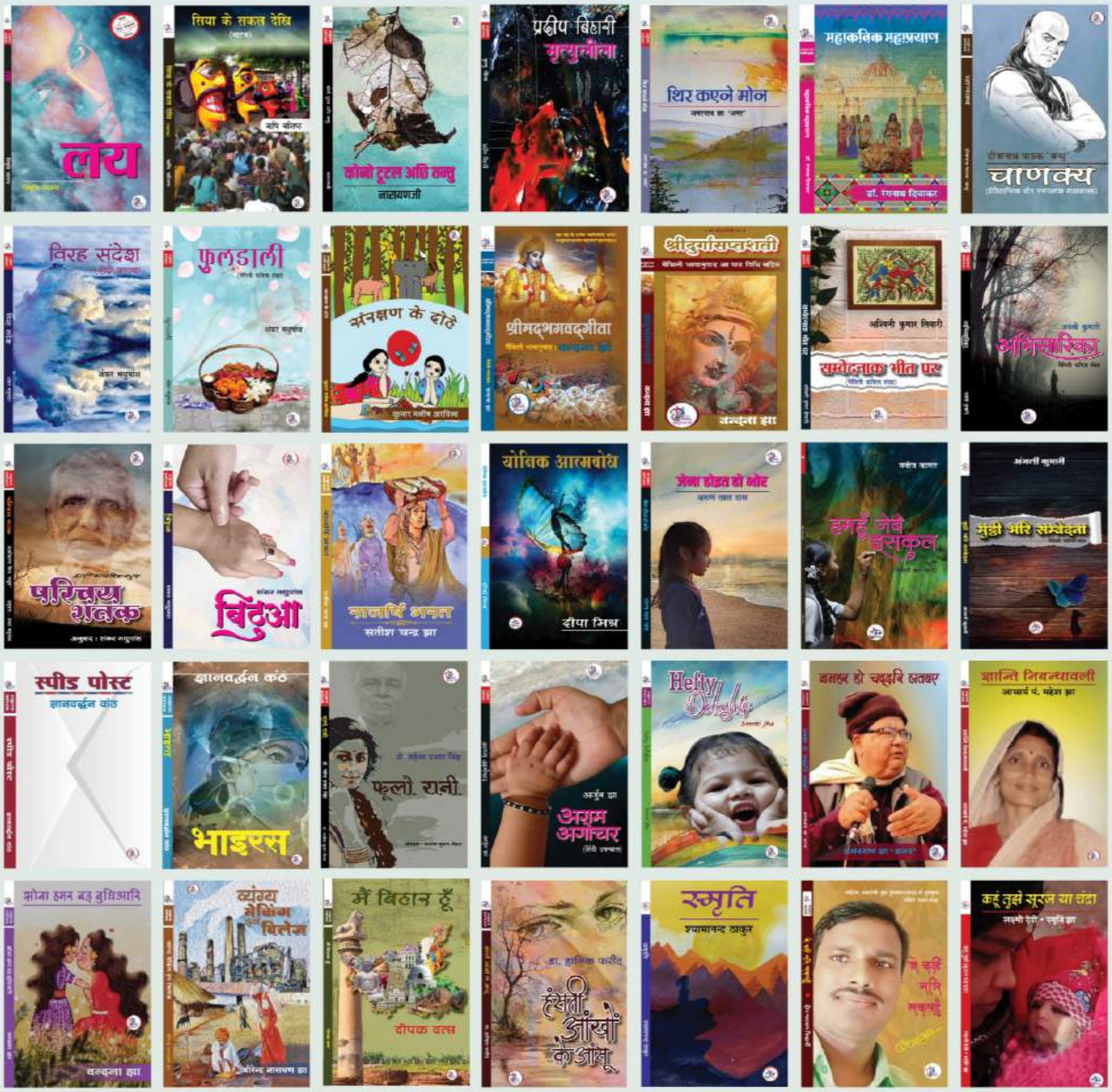

Our online partners : amazon flipkart amazon kindle Google Play

अनुप्रास प्रकाशन समूह

किताब जाहिसँ नेहाल होइछ जीवन

इन्द्र परिसर, लहेरियागंज, मधुबनी (मिथिला) बिहार- 847211
www.anuprasprakashan.com, anuprasprakashan@gmail.com

अनुप्रास प्रकाशन

काव्यांश बुक्स क्रिएशन

आकर्षक कवर डिजाइन आ सुन्दर छपाइक संग पुस्तक प्रकाशित करएबाक लेल सम्पर्क करी... +91 9430583847

अनुप्रासक उद्देश्य भाषा-साहित्यक श्रेष्ठताक वरण करब अछि। किछु महत्त्वपूर्ण साहित्यकेँ जनसुलभ करबामे अपने लोकनिक सहयोग आ परामर्शक अपेक्षा अछि।

Our online partners : amazon flipkart.com amazonkindle Google Play Books

www.anuprasprakashan.com e-mail : info@anuprasprakashan.com/anuprasprakashan@gmail .com

anuprasprakashan @anuprasprakashan +91 9430583847